Lalbhai Dalpatbhai Series No. 33

HARIBHADRA'S

NEMINĀHACARIYA

[Volume II]

Edited by

Prof. H. C. Bhayani,
M. A.; Ph. D.

Prof. M. C. Modi,
M. A.; LL. B.

LALBHAI DALPATBHAI
BHARATIYA SANSKRITI VIDYAMANDIR
AHMEDABAD-9

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Lalbhai Dalpatbhai Series

No. 33

General Editor
Dalsukh Malvania

HARIBHADRA'S

NEMINĀHACARIYA

[**Volume II**]

Edited By

Prof. H. C. Bhayani, M. A., Ph. D.
Prof. M. C. Modi, M. A., LL. B.

LALBHAI DALPATBHAI
BHARATIYA SANSKRITI VIDYAMANDIR
AHMEDABAD-9

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

First Edition : 500 Copies August 1971

Printed by Swami Tribhuvandas Shastri, Shree Ramanand Printing Press, Kankaria Road, Ahmedabad-22; and published by Dalsukh Malvania, Director, L. D. Institute of Indology, AHMEDABAD-9

Copies can be had from

L. D. Institute of Indology,	Ahmedabad-9
Motilal Banarasidass,	Patna-4, Varanasi, Delhi-7
Sarasvati Pustak Bhandar,	Hathikhana, Ratan Pole, Ahmedabad-1
Munshi Ram Manoharlal,	Nai Sarak, Delhi
Mehar Chand Lachhamandas,	Delhi-6
Chowkhamba Sanskrit Series Office,	Varanasi

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरि-हरिभद्द-सूरि-विरइउ

नेमिनाहचरिउ

[द्वितीयो भागः]

संपादक
प्राध्यापक हरिवल्लभ चू. भायाणी
प्राध्यापक मधुसूदन चि. मोदी

प्रकाशक
लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर
अहमदाबाद–९

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

FOREWORD

The L. D. Institute of Indology has great pleasure in offering to the world of scholars the second volume of Śrī Haribhadrasūri's Neminā-hacariya. In this second volume the remaining portion of the text is given.

The L. D. Institute is thankful to Prof. H. C. Bhayani and Prof. M. C. Modi for undertaking the editing of this voluminous and important Apabhraṁśa work. They have spared no pains in making it as flawless as possible. They intend to give in a separate volume the general introduction covering important topics like life and work of the author, language, metre, form of the poem etc., together with a glossary of important words occurring in the text.

It is hoped that the publication of this work will fecilitate the studies and researches in Apabhraṁśa language and literature.

L. D. Institute of Indology,
Ahmedabad-9.
15th Aug. 1971

Dalsukh Malvania
Director

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

PREFACE

This Second Volume of *Neminähacariya* contains the rest of the text of the poem. Verses 1930 to 3310 give an account of the ninth *bhava* of Naminātha. It is interwoven with the biography of Vasudeva as also of Kṛṣṇa, Balabhadra and Jarāsandha, who together constitute the ninth trio of Vāsudeva, Baladeva and Prati-Vāsudeva. The works dealing with these subjects are known as Harivaṁśa in the Jain tradition.

Verses 3311 to 3338, making up the concluding *praśasti* of the work tell us about its author, time, place and the circumstances under which it was composed. As the *Neminähacariya* was composed at the request of Pṛthvīpāla, a minister of Jayasiṁha and Kumārpāla, the well-known Chaulukya kings of Gujarat, the *praśasti* gives at some length information about his illustrious forebears and their relations with the then reigning kings of Gujarat. Thus it possesses a unique historical importance. With the publication of this volume the complete text of the *Neminähacariya* has been made available. The remaining Third Volume will be devoted mainly to the study of a few aspects of the poem from textual and historical viewpoints.

Ahmedabad,
September 1, 1971.

H. C. Bhayani
M. C. Modi

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयनिर्देशः

	पद्याङ्काः	पृष्ठाङ्काः
नेमिनाहचरिउ (नवमो भवः)	१९३०–३३१०	४३७–७४१
हरिवंशवृत्तान्तः	१९३०–२०१०	४३७–४५३
वसुदेववृत्तान्तः	२००१–२२८४	४५३–५२०
कृष्णचरितम्	२२८५–२३१५	५२०–५२८
	२४२६–२६०६	५४५–५८६
	२६१७–२९४७	५८८–६५७
	३१७१–३२८२	७०२–७२७
बालचरितम्	२२८५–२३१५	५२०–५२८
	२४२६–२५१३	५४५–५६६
यादवजरासन्धविरोधः	२५१४–२५७०	५६७–५८०
द्वारावतीनिर्माणम्	२५७१–२६०६	५८१–५८६
रुक्मिणीहरणम्	२६१७–२६४७	५८८–५९५
प्रद्युम्नचरितम्	२६४८–२७५२	५९५–६१४
जरासन्धवधः	२७५३–२९०३	६१५–६४८
कृष्णस्य अर्धचक्रित्वम्	२९०४–२९४७	६४८–६५७
द्वारावतीदहनं कृष्णबलभद्रमरणं च	३१७१–३२८२	७०२–७२७
नेमिचरितम्		
नेमिजन्म	२३१६–२४२५	५२८–५४५
नेमियौवनप्राप्तिः	२६०७–२६१६	५८६–५८८
नेमिप्रव्रज्या	२९४८–३१७०	६५७–७०२
नेमिनिर्वाणम्	३२८२–३३१०	७२७–७३४
ग्रन्थकारप्रशस्तिः	३३११–३३३८	७३५–७४१
शुद्धिपत्रम्		७४३

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरि-हरिभद्दसूरि-विरइउ

नेमिनाहचरिउ

[द्वितीयो भागः]

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिरि-हरिभद्दसूरि-विरइउ

नेमिनाहचरिउ

[१९३०]

अह समासिण नवम-भव-भावि-

वुत्तंतु नेमिहि पहुहु भण्णमाणु सुण एग-चित्तिण ।
तत्थ य किल नेमि-जिणु समवइण्णु हरि-वंसि स-कइण ॥
इय पढमं चिय अक्खियय हरि-वंसह उप्पत्ति ।
जह पुव्विल्ल-महाकइहिं भणिय अत्थि सिद्धंति ॥

[१९३१]

उसह-भरहहं वइसि अइकंत

संखाइय निव-वसह तयणु तित्थि सीयल-जिणिंदह ।
कोसंविहिं नयरियहिं आसि निवइ गुरु राय-विंदह ॥
रूव-विणिज्जिय-विसमसरु पसरिय-तेय-निहाणु ।
आ-जलनिहिहि वि वसुमइहि * सामि सुमुह-अभिहाणु ॥

[१९३२]

अवर-अवसरि रायवाडीए

गच्छंतु नराहिवइ नियइ दइय वीरय-कुविंदह ।
वणमाल-नामिण पयड मुहिण सरिस दलियारविंदह ॥
अह अणुरायाउर-मणिण अवहरेवि सा बाल ।
निवइण अंतेउरि खिविय सोहग्गेण विसाल ॥

[१९३३]

तयणु पंच वि विसय सेवेइ

सह तीए नराहिवइ गच्छमाणु दिणु निसि व अ-मुणिरु ।
अ-नियंतउ निय-दइय विरह-विहुरु वीरो वि विलविरु ॥
कह कह धरहं न परियडिउ कह कह जगि न विगुत्तु ।
वणमालह नाम-ग्गहणु कुव्वंतउ पुणरुत्तु ॥

---

* From here upto अमुणिरु in 1933 क is mostly illegible.

१९३१. १. क. उसहं·

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९३४]

*अवर-अवसरि नियय-धवलहर

वायायण-संठिइण सविह-विहिय-वणमाल-देविण ।
अवलोइउ निविण पहि परिभमंतु सह डिंभ-सहसिण ॥
परिवियलिय-अंबर-जुयलु भसमुद्धूलिय-गत्तु ।
सु जि वीरउ पुणु पुणु सुयणु वणमाल त्ति भणंतु ॥

[१९३५]

तयणु पसरिय-पच्छयावेण

नरवरिण स-पिययमिण धिसि वराउ किं एहु एरिस ।
संपत्तउ विसम दस एह मज्झ विसयम्मि अ-सरिस ॥
ता वियरेमि इमस्सु इह तरुणिय इय चिंतंतु ।
तडि-पडणिण स-पिओ वि निवु मरिऊणं डज्झंतु ॥

[१९३६]

मिहुण-भाविण हुयउ हरि-वरिसि

स-पिओ वि-हु कप्प-तरु- दिण्ण-सयल-वंछिय-समिद्धिउ ।
परिचिट्ठइ अहिलसिय- विसय-सुहिहिं ससि-सुद्ध-बुद्धिउ ॥
इयरु वि तारिस-दुह-दविण संतवियंगोवंगु ।
अंतम्मि य कह-कह-वि कय- अन्नाणिय-तव-संगु ॥

[१९३७]

पढमु सुर-घरि अप्प-रिद्धीसु

देवेसु तियसत्तणिण हुयउ तयणु जाणिवि विभंगिण ।
हरि-वरिसि सु सुमुहु निवु स-प्पिउ वि हुउ मिहुण-भाविण ॥
ता कोवारुण-नयणु तहं कुणइ निहणणोवाउ ।
चिट्ठइ पुणु मिहुणत्तणिण अ-प्पहविरु स-विसाउ ॥

* From here upto अवलो° in line 4 क is illegible.

१९३५. ७. क. तरुणि व; ख. इ चिंततु.

१९३६. ७. क. संतंविअं°.

१९३७. १. पढम.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९३८]

एत्थ-अंतरि पुरिहिं चंपाए

अणहुंत-अंगुब्भविउ चंदकित्ति-अभिहाणु नरवइ ।
पंचत्तह पत्तु अह फुरिय-दुक्ख-पब्भारि जणवइ ॥
नायर नियहिं निवइ-पयह समुचिउ पुरिस-विसेसु ।
निय-नाणिण तेण वि सुरिण जाणिवि एहु अ-सेसु ॥

[१९३९]

नणु न तीरहिं ताव निहणेउ

एयाइं मिहुणत्तणिण एत्थ जम्मि इय नियय-सत्तिण ।
तह कीरउ जिण लहहिं वहुय-दुहइं अइ-दुट्ठ-चित्तिण ॥
इय चिंतेविणु धणुह-सय- उद्धु त जुयलु करेवि ।
चंपह उववणि परिमुयइ हरिवरिसह आणेवि ॥

[१९४०]

तियसस-त्तिण तम्मि उज्जाणि

आरोवइ कप्प-दुम भणइ पुरउ नायरहं पुणु जह ।
ससि-संख-सत्थिय-कलस- पउम-कुलिस-लंछियउ एयह ॥
नयरिहि सामिउ तुब्भ-कइ हरिवरिसह आणीउ ।
चिट्ठइ इहु हरि-नामु निय- गुरु-सज्जणहं विणीउ ॥

[१९४१]

एह पुणु पिय इमह हरिणि त्ति

अभिहाणिण पायडिय इय इमेसि वट्टेज्ज विणइण ।
वियरेज्जह भोयणि वि कप्प-तरुहुं फल स-हिय तेसिण ॥
तह जह स-मइरु केवलु जि मंसु एहि भुंजंति ।
ता नायर हरिसिय-हियय तं तह पडिवज्जंति ॥

१९३८. १. अंतरिं.

१९४१. ५. The first letter after सहिय is illegible in क.
६. The first letter after स is illegible in क.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९४२]

अह सु तियसह तस्सु वयणेण
आरोविवि रह-रयणि नयर-मज्झि निउ गरुय-रिद्धिण ।
संतुट्ठउ हुयउ पुर- जणु वि सयलु निय-कज्ज-सिद्धिण ॥
कम-जोगेण य हरि-निवइ साहिय-रिउ-कुल-वूहु ।
हुयउ पसिद्धउ धरणि-यलि पणमिर-राय-समूहु ॥

[१९४३]

तियस-सत्तिण मंस-असणिण वि
हुय लहुयर-आउ-ठिइ तत्थ तस्सु हरि-धरणिरायह ।
ता मरिउण सु स-पिउ वि हुयउ ठाणु दुग्गइ-निवायह ॥
तह हरि-वंसह आणियउ जुयलु तेण हरि-वंसु ।
हरिहि व जायउ एहु इय हुउ पसिद्धु हरि-वंसु ॥

[१९४४]

हवइ एरिसु जुयल-अवहारु
पुणणंत-कालह कह-वि भणिउ एहु तित्थाहिराइहि ।
एत्तो च्चिय अच्छरिय- दसगि पढिउ परमत्थ-वाइहिं ॥
तं पुण नायव्वउं इमह गाहा-जुयह वसेण ।
सीसिण आ-वालोवचिय- जिण-उवएस-वसेण ॥

जहा —

[१९४५]

उवसग्ग-गब्भहरणं इत्थी तित्थं अ-भव्विया पुरिसा ।
कण्हस्स अवरकंका अवयरणं चंद-सूराणं ॥

[१९४६]

हरिवंस-कुलुप्पत्ती चमरुप्पाओ य अट्ठ-सय सिद्धा ।
अस्संजयाण पूया दस वि अणंतेण कालेण ॥

१९४२. The portion from after सा° in line 7 to स in line 4 in 1943 is missing in ख. १९४३. ५. क. दुग्गय. ६. ख. हरिवरिसह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९४७]

हरिहि नंदणु पुहइवइ-नामु
तत्तणउ महागिरि त्ति हिमगिरि त्ति पुणु तस्सु नंदणु ।
अहव सुरगिरि तसु वि सुउ मित्तगिरि त्ति निवु भुवण-रंजणु ॥
इय गय-संखिहि नरवइहिं समइगइहिं हरि-वंसि ।
हुउ सुमित्त-निव-भवणि मुणि सुव्वय-जिणु तेयंसि ॥

[१९४८]

तसु वि नाहह वंसि वहुएहिं
अइकंतिहिं नरवइहि नमि-जिणिंद-तित्थि प्पयट्टइ ।
सिरि-महुरहं पुरि-वरिहिं सउरि-नामु नर-नाहु वट्टइ ॥
तसु पुणु लहु-बंधवु विमल- गुण-निहाणु जुव-राउ ।
आसि सुवीरय-रूव(?) निय- अभिहाणिण विक्खाउ ॥

[१९४९]

अवर-अवसरि सउरि नर-नाहु
लहु-बंधवु तहिं पुरिहिं ठाविऊण रज्जम्मि स-हरिसु ।
गंतूण कुसट्ट-जणवयह मज्झि सयमवि हु अ-सरिसु ॥
काणण-भवण-जिणिंदघर- पसरिय-लच्छि-निहाणु ।
विणिवेसावइ नवउं पुरु सोरियपुर-अभिहाणु ॥

[१९५०]

तत्थ अंधगवण्हि-पामुक्ख
नाणा-विह-गुण-रयण भूसियंग धरणियल-मंडण ।
सिरि-सउरि-नराहिवह काल-कमिण संजाय नंदण ॥
तसु त्रि सुवीर-नरेसरह भोजवण्हि-पामुक्ख ।
जाया अंगुब्भव वहुय पिसुण-हणण-कय-लक्ख ॥

१९४७. ७. क. समगइय added margially.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९५१]

काल-जोगिण महुर-नयरीए

निक्खंति सुवीर-निवि भोजवण्हि जायउ नरेसरु ।
सउरिम्मि य गहिय-वइ सिवह पत्ति धरणियल-सुहयरु ॥
सिरि सोरिय-पुरि नयरि तहिं ससहर-विमल-सहावु ।
अंधगवण्हि-नराहिवइ हुयउ उदग्ग-पयावु ॥

[१९५२]

महुर-नयरिहिं भोजवण्हिस्सु

नर-नाहह अंग-रुहु उग्गसेण-नामिण पसिद्धउ ।
संजायउ निवइ जय- अहिय-महिमु गुण-मणि-समिद्धउ ॥
अंधगवण्हि-नराहिवइ- सिरि-समुद्द-देवीण ।
जाय तणूरुह एहि दस गुरुयण-चलण-निलीण ॥

[१९५३]

पढमो समुद्दविजओ अक्खोभो तइ-य तयणु तिमिउ त्ति ।
अह सागरो चउत्थो हिमवंतो पंचमो होइ ॥

[१९५४]

अयलो धरणो तह पूरणो ति नवमो य होइ अभिचंदो ।
दसमो उण वसुदेवो कुंती मद्दी य दो धूया ॥

[१९५५]

पंडु-निवइण कुंति परिणीया

वीवाहिय मद्दिय वि चेदि-नाह-दमघोस-निवइण ।
अह अंधगवण्हि-निवु नियय-रज्जु हत्थेण नियइण ॥
सिरि-समुद्दविजयह नियय- गुरु-तणयह वियरेइ ।
अप्पणु पुणु सुह-गुरुहु पय- सविहिहिं चरणु चरेइ ॥

१९५१. ९. क. उदग्गु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९५६]

इओ य —

जम्मि पच्छिमि चरिवि चारित्तु
पणवन्न-वच्छर-सहस जाव विविह-तव-कम्म-जोगिण ।
कय-वेयावच्च-विहि मुणि-जणस्सु सु-विसुद्ध-भाविण ॥
वाल-काल-भाविउ सरिवि अंत-दसहं दोहग्गु ।
मग्गेविणु निय-तव-फलिण रूविण सह सोहग्गु ॥

[१९५७]

अमर-मंदिरि गंतु ठिइ-खइण
चविऊण य सुर-घरह एहु जीवु तसु नंदिसेणह ।
वसुदेव-नामिण पयडु हुयउ चंदु जदु-गेह-गयणह ॥
सोहग्गिय-नर-सिरि-तिलउ माणिणि-माण-घरट्टु ।
हुउ अइरेण वि धर-वलइ पसरिय-गरुय-मरट्टु ॥

[१९५८]

इओ य —

महुर-नयरिहि नीहरंतेण
सिरि-उग्गसेणिण निविण दिट्ठु एगु वालय-तवस्सिउ ।
ता पणमिवि तसु पइहि उग्गसेणु जंपइ जसंसिउ ॥
पसिय महा-मुणि पारणउं मह भवणम्मि करेज्ज ।
जह अप्पाणु वि कुणउं हउं किं-चि कयत्थउं अज्ज ॥

[१९५९]

अह तवस्सिण तेण पडिवन्नु
कह-कहमवि निव-वयणु [तयणु] अंति निय-मास-खमणह ।
सो गयउ अह-क्कमिण दार-देसि नरनाह-भवणह ॥
न-उणो केण-वि निव-जणिण तारिस-विहिहि वसेण ।
आलविओ वि सु खमगु अह पज्जलंतु रोसेण ॥

१९५७ १. The portion from तेण to जणिण in line 6 is missing in ख. ३. क. The text is defective.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९६०]

पइहिं तेहिं वि घरह नीहरिवि
लहु गंतुज्जाण-वणि मास-खमणु आरभइ अवरु वि ।
एहु वइयरु जाणिउण उग्गसेण-निवु स-परिवारु वि ॥
निय-अवराहु खमाविउण लग्गिवि खवग-पएसु ।
भणइ भवणि मह पारणउं पत्तावसरु करेसु ।

[१९६१]

गेहि एगहं गिज्झ भिक्ख त्ति
कय-उग्गाभिग्गहु सु खवणु निवइ-उवरोह-दोसिण ।
परिसुसिय-असेस-तणु- रुहिर-मंसु वियइज्ज-मासिण ॥
पारणयह दिणि कह-वि गउ उग्गसेण-घरि जाव ।
निय-निय-कज्जाउल-मणिण जणिण न दिट्ठु वि ताव ॥

[१९६२]

तयणु मिसिमिसिमाण-वयणिल्लु
रोसारुण-नयण-दलु फुरुफुरंत-अहरुट्ठ-पल्लवु ।
नीहरिउण निव-घरह गयउ वहिहिं अवगणिय-सुह-लवु ॥
उग्गसेण-वसुहाहिवु वि आयण्णिय-वुत्तंतु ।
वाढ-धवक्किय-मण-पसरु खवग-सविहि संपत्तु ॥

[१९६३]

भणइ – मुणिवर खमसु अवराहु
एसो वि पमाय-पर- परियणस्सु मह पाव-पडियह ।
न य एरिसु दुव्विणउ पुणु वि करिसु हउं तुह सु-चरियह ॥
अह सविसेस-फुरंत-गुरु- अमरिसु खवग-तवस्सि ।
जंपइ जइ मह तवह फलु किं-चि त पाव मरिस्सि ॥

१९६०. ५. क. निव.
१९६१. २. क. °भिग्गह.
१९६३. ३. क. परिणयस्सु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९६४]

मह पहाविण अवर-जम्मे वि

इय वद्ध-नियाण-विहि अवगणेवि मुक्कउ नरिंदिण ।
ता मरिउण धारिणिहि पियह निवह तसु पुत्त-भाविण ॥
अवइन्नउ कुक्खिहिं खवगु ता तसु अणुहावेण ।
जायउ देविहि दोहलउ दुट्ठ-विवागु फलेण ॥

[१९६५]

तयणु धारिणि कसिण-पक्खम्मि

ससि-रेह व पइ-दियहु झिज्जमाण-सव्वंगुवंगिय ।
तयणु कारणु पुट्ठ नरवरिण कणय-दव-गोर-अंगिय ॥
अह दीहर-नीसास-भर- परिसुसंत-वयणिल्ल ।
कह-कहमवि धारिणि कहइ निवह दुहइं नियइल्ल ॥

[१९६६]

देव जाणहुं जइ तुहंगस्सु

उक्कत्तिवि परिगलिर- रुहिर-मंस-खंडाइं भक्खहुं ।
इय एरिसु दोहलउ निय-मुहेण तुह केम्व अक्खहुं ॥
तयणंतरु नरवइ भणइ सुयणु म खेउ करेसि ।
हउं तुह्नु पूरिसु दोहलउ सुय-मुह-कमलह रेसि ॥

[१९६७]

अवर-अवसरि सचिव मेलेवि

तहं धारिणि-दोहलउ रहि कहेइ नरवइ स-मूलु वि ।
ता निवइहि सचिव-गणु कहइ एग-वक्केण सयलु वि ॥
जह – गिह-अब्भंतरि हविवि निय-तणु उवरि ठवेवि ।
देविहि पूरसु दोहलउ छग-मंसइं वियरेवि ॥

१९६६. ८. क. तुहुं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९६८]

अहह सचिवहु जुत्तु जुत्तु त्ति
परिजंपिरु धरणिवइ अंधयारि धारिणि निवेसिवि ।
वाहरिवि महाणसिय स-तणु-उवरि छग-मंस ठाविवि ॥
अणुमन्नइ पत्थुय-विसइ ता सिक्कार-परस्सु ।
उग्गसेण-वसुहाहिवह अइ-कलुणउं रसिरस्सु ॥

[१९६९]

उवरि-देसहु मंस-खंडाइं
छग-संतिय खंडिउण निव-निउत्त धारिणिहि वियरहिं ।
इयरी वि-हु नरवइहि मंस-खंड एहि त्ति वुद्धिहिं ॥
उवभुंजइ परितुट्ठ-मण गब्भह अणुभावेण ।
अह परिपूरिय-दोहळय हूय स स-सहावेण ॥

[१९७०]

दिट्ठि-मग्गह निंघि वि अइकंति
उवसंतइ करुण-रवि मउ निघु त्ति चिंतत धारिणि ।
रइ न लहइ विलवइ य अहह हउं जि पिय-खयह कारिणि ॥
इय निय-दुक्खइं कसु कहउं को करिहइ उवयारु ।
मह वेरीण वि मा हवउ एरिसु गब्भु अ-सारु ॥

[१९७१]

गब्भ-साडण-हेउ विविहाइं
पीयंतिहि ओसहइं सत्तमम्मि दियहम्मि सुहयरु ।
किउ सज्जउ वहु-विहिहिं इय भणेउ दंसियउ नरवरु ॥
जो मह कसिण-चउद्दिसिहिं तिहिहिं मूल-रिक्खम्मि ।
विट्ठिहिं जायउ पाव-सुउ दिणि कय-वहु-दुक्खम्मि ॥

१९७१. ८. विद्धिहिं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९७२]

सो न सुंदरु इय मुणिवि कंस-
मंजूसह मज्झि वहु-		रयण कणय-आहरण-सहियउ ।
नव-जाउ वि चेडियहं		कररिहिं जमुण-सरियाए पहियउ ॥
निवह निवेइउ पुणु – तणउ मउ जायउ देवीए ।
इय रयणीए वि परिठविउ वहिहिं नेउ नयरीए ॥

[१९७३]

नइ-पवाहिण नीय मंजूस
सिरि-सोरियपुरि नयरि		गोस-समइ अह विहि-निओइण ।
सविहम्मि समागइण		तिण सुभद्द-वणिएण अइरिण ॥
जल-मज्झह कड्ढिवि गहिवि उग्घाडिय मंजूस ।
तत्थ य अवलोइय विविह- भेय-कणय-मणि-दूस ॥

[१९७४]

उग्गसेणह निवह अभिहाण-
कय-चिंध-मुद्दा-रयण-		सहिउ सो ज्जि वर-रूवु नंदणु ।
ता निंदुहु निय-पियह		करि विइन्नु सो रिद्धि-रंजणु ॥
कंसमयहं मंजूसियहं		लद्धउ इय सु-विहाणु ।
जणणी-जणइहिं वियरियउं कंसु त्ति य अभिहाणु ॥

[१९७५]

अह सुभद्दह भवणि सो वालु
गिरि-काणणि विस-तरु व लहइ वुड्ढि विग्घिहिं विवज्जिउ ।
परितावइ डिंभ-रूय		कुणइ आलि न सहेइ तज्जिउ ॥
आणावइ पिउ-मायरहं		नव नवयर उवलंभ ।
न य संसहइ स-वप्पिण वि कह-वि पयासिय डंभ ॥

Jain Education International 2010_05		For Private & Personal Use Only		www.jainelibrary.org

[१९७६]

तयणु वणिइण तिण सुभद्देण

मा एहु अणत्थु कु-वि आणवेज्ज अम्हं ति चिंतिवि ।
वसुदेवह वियरियउ कंस-कुमरु तेणावि मंतिवि ॥
जइ अच्चंत-उदार-तणु रूववंतु सागारु ।
नूण न इहु सामन्नु कु-वि दीसइ वणिय-कुमारु* ॥

[१९७७]

मित्त-भाविण पढम-दंसणिण वि

वसुदेविण संगहिउ अह दुवे-वि सम-कालु सिक्खहिं ।
बाहत्तरि कल कमिण सुयण-पिसुण-सब्भावु लक्खहिं ॥
उट्ठहिं सुयहिं रमंति सह सह पूयहिं गुरु-देव ।
राहु-ग्गह-ससहर व दु-वि अच्छहिं कंस-वसुदेव ॥

[१९७८]

अवर-अवसरि विहि-निओएण

ति-क्खंड-वसुहाहिविण नरवरेण जरसंध-नामिण ।
निय-दूयउ पेसियउ समुदविजय-नरवइहि वेगिण ॥
तेण वि भणियउं जह विजयपुर-आसन्न-पएसि ।
सिरि-सीहउरि असेस-पुर- पवरइ नयर-विसेसि ॥

[१९७९]

नियय-भुय-बल-दलिय-दुदंत-

पडिवक्खिउ सीहरह- नाम-पयडु चिट्ठेइ नरवरु ।
इय को-वि जु निवइ तसु निय-बलेण निहणिवि मडप्फरु ।
बंधेऊण य निय-करिहिं मह सविहिहिं आणेइ ।
सो मह कन्नय जीवजस तह इच्छिउ पुरु लेइ ॥

* क. ख. ग्रंथाग्रं ५०००.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९८०]

ता खणद्धिण सीहरह-उवरि
वहु-परियण-परियरिउ समुद्दविजय-नरनाहु चलियउ ।
वसुदेविण अह पइहि पडिवि कंस-सहिएण भणियउ ॥
नणु कुवियहं तुम्हहं पुरउ केत्तिय-मेत्तु सु सत्तु ।
तुह वयणिण अम्हे वि लहु आणउं एत्थ निरुत्तु ॥

[१९८१]

अह नरिंदिण गरुय-निव्वंधि
आणत्त पत्थुय-विहिहिं पउर-वलिण वसुदेव-कंसय ।
अक्खंड-पयाणइहिं वे-वि नियय-कुल-कमल-हंसय ॥
रण-रस-पुलयंचिय-तणुहिं सुहड-सइहिं संजुत्त ।
सीहरहह तसु नरवइहि देसासन्नि पहुत्त ॥

[१९८२]

तयणु निय-चर-वयण-विन्नाय-
नीसेस-वइयरु रिउ वि गरुय-दप्पु तहं समुहु चलियउ ।
वसुदेवु वि कंस-परियरिउ तस्सु रण-महिहिं मिलियउ ॥
तयणंतरु कुंजर करिहि रहिय पुणो रहिएहिं ।
तुरय तुरंगिहि भड भडिहिं जुडिय स-पहु-वयणेहिं ॥

[१९८३]

एत्थ-अंतरि असम-पसरंत-
रोसारुण-लोयणिण सारहित्तु परिहरिवि कंसिण ।
संचुन्निउ सीहरह- रहु गयाए रणि ता अमरिसिण ॥
विज्जुज्जलु रिउ-दप्प-हरु करि करवालु धरेवि ।
धावइ वेगिण सीहरहु कंसु स-लक्खु करेवि ॥

१९८०. ६. क. पुरओ.

१९८१. ७. क. संजुत्तु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९८४]

जाव खग्गिण हणिवि दो-खंडु
तसु कंसह कुणइ सिरु ताव चाव-कड्ढिय-विमुक्किण ।
वसुदेविण दुह विहिउ सत्तु-खग्गु निहणिवि खुरुप्पिण ॥
ता संपाविय-अवसरिण कंसिण वलिउ वि सत्तु ।
वंधिवि वसुदेवह पुरउ मुक्कु स-गव्व-विउत्तु ॥

[१९८५]

तयणु जायव जाय-संतोस
सिरि-सोरिय-पुरि नयरि पत्त स-वल ता समुद्दविजइण ।
अहिणंदिउ वहु-विहिहिं लहुय-वंधु वसुदेव-पमुइण ॥
काराविउ वद्धावणउं निय-नयरम्मि समग्गि ।
जायइ तारिस-रिउ-विजइ तुट्ठइ जायव-वग्गि ॥

[१९८६]

ता करेप्पिणु पासि वसुदेवु
जरसंधह सम्मुहउ समुदविजय-नरनाहु चलियउ ।
जा ताव निमित्तिएण कोट्ठुइगिण इहु निवइ भणियउ ॥
जह – तुट्ठउ जरसंध-निवु देसइ वसुदेवस्सु ।
धुवु निय-कन्नय जीवजस सा उ न सुहय अवस्सु ॥

[१९८७]

पढमु करिहइ मरणु दइयस्सु
ता जणय-सहोयरहं तयणु तासु सयलह स-वंसह ।
वसुदेवह सयलु इहु रहि कहेइ निवु तयणु कंसह ॥
दाविज्जउ धुवु जीवजस इय मंतणउं करेवि ।
समुद्दविजउ अत्थाणियहं स-परिवारु निवसेवि ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९८८]

भणइ–निसुणहु तुब्भि नरवरहु
कंसेण ता सीहरहु गहिवि समर-धरणीए वद्धउ ।
जरसंध-निवो वि इहु वणि-सुउ त्ति जाणिवि पसिद्धउ ॥
जइ निय-कन्नय जीवजस कहमवि न पयच्छेज्ज ।
ता तसु पुरउ महा-निवह इहु जणु किमु जंपेज्ज ॥

[१९८९]

तयणु पभणहिं इयर स-वियक्क
नणु देव न वणि-सुयहं हवइ एह सारीर-चंगिम ।
सूरत्तणु एहु न य न-वि य एह विन्नाण-वड्ढिम ॥
ता केणावि हु खत्तिइण कंसिण धुवु भवियव्वु ।
इय उवउत्त-परिण मणिण सामिण इहु मुणियव्वु ॥

[१९९०]

अह सुभद्दय-वणिउ तत्थेव
सद्दाविवि नरवरिण पुट्टु कंस-पुव्विल्ल-वइयरु ।
तयणंतरु अ-च्छलिउ मग्गिऊण साहेइ वणि-वरु ॥
ता मंजूस नराहिविण तत्थ वि आणावेवि ।
अवलोइय सह परियणिण जा ता तत्थ निएवि ॥

[१९९१] सिरि-उग्गसेग-नरवइ-धारिणि-नामंकियाओ मुद्दाओ ।
तह मुज्ज-खंडमेगं गाहा-जुयलेण संजुत्तं ॥

तद् यथा—

[१९९२] सिरि-उग्गसेण-नरवइ-भज्जाए गब्भ-दोहलो दुट्ठो ।
संजाओ लीलाए तत्तो पइ-पाण-रक्खट्ठा ॥

[१९९३] कंसिय-मंजूसाए खिविओ रयणाइ-संजुओ एसो ।
जउणा-नईए सलिले पवाहिओ जणय-अहिओ त्ति ॥

१९८८. ६. क. भिय. १९८९. ८. क. उवउत्तय; ख. °यरिण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९९४]

इय सुणेविणु दट्ठुमवि कंस-

वुत्तंतु स-तोस-मण समुदविजय-निव-पमुह जायव ।
अन्नोन्निण भणहिं जह सलहणिज्जु पिउ जणणि भाय व ॥
ते च्चिय हरिवंसुब्भविय जहिं सिरि-कंस-सरिच्छ ।
जायहिं ससहर-विमल-गुण-रयणावलि-पडिहच्छ ॥

[१९९५]

कहिं व उज्झिवि वंसु जायवहं

सुय-रयण कंसह सरिस होंति भुवण-असमाण-वीरिय ।
इय भणिउण सीहरहु गहिवि पुरउ कंसह कराविय ॥
सिरि-जरसंधह वियरिउण समुदविजउ साहेइ ।
जह – जय-सद्दु कु एरिसउ पागय-पुरिसु वहेइ ॥

[१९९६]

उग्गसेणह निवह तणएण

एएण कंसाभिहिण गहिउ सीहरहु समर-धरणिहिं ।
बंधेउण निय-करिहिं तयणु जीवजस-पवर-तरुणिहिं ॥
पाणि गहाविउ वित्थरिण जरसंधेण सु कंसु ।
तह जंपिउ जह–कंस तुहुं इच्छिउ पुरु मग्गेसु ॥

[१९९७]

तयणु जणणी-जणय-उवरिम्मि

परिओसु वहंतिइण महुर-नयरि कंसेण मग्गिय ।
इयरेण वि विसय-जुय सा विइण्ण तसु ता निसग्गिय ॥
उज्जालंतउ वेर-मइ कंस-हयासु सु गंतु ।
महुरहं नयरिहिं पिउ-जणणि बंधेऊण तुरंतु ॥

१९९६. १. क. पुर.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[१९९८]

वज्ज-पंजरि खिवइ घट्टंतु

पुव्विल्लइं मम्म-पय अह निएवि संसार-विलसिउ ।
सिरि-उग्गसेणह निवह जेट्ठ-पुत्तु गुरु-गुणिहिं भूसिउ ॥
आगंतूण तहा-विहहं गुरुहुं चलण-मूलम्मि ।
अयमुत्तउ चारित्तु पडिवज्जइ पवर-दिणम्मि ॥

[१९९९]

अह नियल्लय-गुणिहिं गारविउ

जरसंधिण वाइयउ तण-समाणु भुवणं पि मन्नइ ।
तत्तो वि हु लहुयतरु निवइ-निवहु माणिणवगन्नइ ॥
ता जीवजसहं कामिणिहिं सह वर-विसय-सुहाइं ।
उवभुंजंतउ कंस-निवु अइवाहइ दियहाइं ॥

[२०००]

तह सुभद्दय-वणिउ स-पिओ वि

आणाविवि इहु जणउ एह जणणि इय संपहारिवि ।
सम्माणइ आयरिण निवइ-देवि-ठाणेसु ठाविवि ॥
वसुदेवो वि-हु निय-जणिहिं सह सोरिय-पुरि गंतु ।
वहु-विणोय-कीला-रसिण परिचिट्ठइ कीलंतु ॥

अवि य–

[२००१]

कसिण-कुंतलु वियड-भालयलु

मिग-लोयणु ससि-वयणु लंव-वाहु सु-विसाल-उरयलु ।
गंभीर-नाहि-दहउ हरि-किसोर-कडि कमल-करयलु ॥
दीसइ जहिं जहिं नयर-पहि कय-निरुवम-सिंगारु ।
तहिं तहिं खोहइ तरुणि-मण सिरि-वसुदेव-कुमारु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२००२]

का-वि उज्झइ गेह-वावार

क-वि लेइ न आहरण का-वि वाल भोयणु वि न कुणइ ।
क-वि मक्कडु सुय-मिसिण कुणइ कडिहिं क-वि सुन्नु पभणइ ॥
का-वि नियंसणु सिरि ठविर सयलु हसावइ लोउ ।
क-वि नयणइं अग्गइ ठिउ वि न नियइ एहु विणोउ ॥

[२००३]

नयर-मग्गिहिं घर-गवक्खेहिं

सर-कूव-वावी-तडिहिं चडिय विविह-रूवावलंविर ।
वसुदेव-कुमार-तणु- विसय-असम-सोहग्ग-विनडिर ॥
अह वा सोरिय-पुरि भमिरि कुमरि तम्मि वहु-भेय ।
किं किं चेयहिं कामिणिउ मयणिण हरिय-विवेय ॥

[२००४]

तयणु नायर-पवर-पुरिसेहिं

विन्नत्तु नराहिवइ पत्थुयत्थ-वुत्तंत-कहणिण ।
ता मंतिवि निय-मइण भणिउ समुदविजएण निवइण ॥
कुमर भमंतह तुह नयरि हवइ कलहं वाघाउ ।
ता गेण्हसु घर-गरुडिहिं जि स-गुरुहु-सविहि कलाउ ॥

[२००५]

अह तह-च्चिय कुमरु वट्टंतु

अइवाहइ दिण कइ-वि अवर-दियहि नरनाह-दासिय ।
कक्खलिय-चंदण गहिवि हत्थि भणिय जह – मह पयासिय ॥
किं इहु कत्थ व जासि तुहुं इय साहसु वुत्तंतु ।
ता गुरु-कोविण दासडी भणइ कुमारु तुरंतु ॥

२००४. ३. क. पेत्थु°.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२००६]

नियय-दोसिहिं चेव विहगु व्व

सु-नियंतिवि मंदिरह एग-देसि मुक्को सि छउमिण ।
अह किं-चि स-विब्भमिण तेण पुट्ठ सा तयणु दासिण ॥
वसुदेवह कहमवि कहिउ पुव्व-उत्तु वुत्तंतु ।
ता लज्जइं अहिमाणिण वि कुमरु किं-चि तूरंतु ॥

[२००७]

वडुय-वेसिण घरह नीहरिवि

परिवंचिय-इयर-जण- नयण-मग्गु वसुदेवु रयणिहि ।
सोरियपुर-नयर-बहि गंतु कट्ठ मेलिवि स-पाणिहिं ॥
गोपुर-सविहिहिं चिह रइवि मडगु एगु आणेइ ।
डहिउण गोउर-थंभियहं अक्खर-पंति लिहेइ ॥

जहा—

[२००८] निसुणेइ जस्स दोसो लोयाओ गुरुयणो वि सो पुरिसो ।
उप्पाइय-गुरु-दुक्खो कह जीवइ विगय-गुण-जीवो ॥

[२००९] किं तेण सु-सीलेण वि किं वा गुणवंतएण वि नरेण ।
जस्स विरज्जइ लोओ जायइ दुक्खं च पियराण ॥

[२०१०] इच्चाइ भाविऊणं चियाए एयाए अज्ज वसुदेवो ।
पंचत्तं संपत्तो मय-किच्चं तस्स कायव्वं ॥

[२०११]

इय लिहेविणु निसि गमावेवि

एगत्थ-देवउलियहं गोसि चलिउ कमसो य पत्तउ ।
सिरि-विजयक्खेडि पुरि तहिं सुगीव-नरवरिण वुत्तउ ॥
वहु-पडिवत्ति करेवि जह परिणह भद्द इमाउ ।
मह धूयउ गुण-मणि-निहिउ साम-विजयसेणाउ ॥

२०११. ७. क. इयाओ; ८. क. निहिओ; ९. क. सेणाओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०१२]

अह सुगीवह निवह वयणेण

सुपवित्तइ लग्ग-दिणि दो-वि ताउ वसुदेवु परिणइ ।
भुंजंतउ विसय-सुह ताहिं समगु गय दियह न मुणइ ॥
कम-जोगेण य अंगरुहु हुयउ विजयसेणाए ।
दिन्नउं नामु अकूरु इय तसु सिरीए महयाए ॥

[२०१३]

अवर-वासरि कुमरु वसुदेवु

वहु-देस-दंसण-मणिउ नीहरेउ मंदिरह रयणिहिं ।
एगत्थ-महाडइहिं गउ रउद्द-जिय-भीम-धरणिहिं ॥
तत्थ जल-त्थिउ सरवरह समुहउ चल्लिउ जाव ।
उब्भिय-करु वण-कलहु तसु समुहु पहाविउ ताव ॥

[२०१४]

अहह एत्थ वि सुकय-जोगेण

कोऊहलु आगयउं इय मणम्मि चिंतंतु कुमरु वि ।
खेल्लाविवि वहु-विहिहिं खलिवि झत्ति वण-करिहि पसरु वि ॥
दंतग्गिहि अवलंविऊण करि-खंधम्मि चडेइ ।
तह चेव य किंत्तिउ वि पहु मण-वेगिण गच्छेइ ॥

[२०१५]

जाव ताव य दोहिं खयरेहिं

हरिऊण खणेण करिवन्न-नामि उज्जाणि नीयउ ।
ता खयराहिविण सिरि- असणिवेग-नामिण विणीयउ ॥
निरुवम-गुण-गण-रयण-निहि सामा नाम स-कन्न ।
तसु सोहग्गि-सिरोमणिहि वसुदेवह पविइण्ण ॥

२०१२. ३. क. ताओ.
२०१५. ९. क. पविइण्णु; ख. पविइण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०१६]

अवर-अवसरि निसिहिं सुह-सुत्तु
अंगारय-खेयरिण असणिवेग-खयरिंद-वइरिण ।
अवहरिउण गयण-यलि नीउ जाव ता कुलिस-कढिणिण ॥
पुट्ठि-पहारिण हणिउ रिउ तह जह झत्ति कराउ ।
अङ्गारय-खयरिंण कुमरु मुक्कउ ता गयणाउ ॥

[२०१७]

पडिउ चंपय-पुरिहि उज्जाणि
एगस्स महा-सरह मज्झि तयणु अखयंगुवंगउ ।
कलहंसु व भुय-जुइण सरु तरेवि वसुदेवु चंगउ ॥
पच्छइ सिरि-वसुपुज्ज-जिण- चेइयहरु अइ रम्मु ।
मज्झम्मि य पविसिवि थुणइ जिणु कय-जय-सिव-सम्मु ॥

[२०१८]

गोस-अवसरि पुणु सहेगेण
विप्पेण चंपह पुरिहि मज्झ-देसि वसुदेवु पविसइ ।
ता वीण-विणोय-कय- एग-चित्तु जुव-वग्गु पासइ ॥
पुच्छेइ य विप्पह पुरउ किह इह सयलु वि लोउ ।
चत्तेयर-वावारु निरु वीणहं कुणइ विणोउ ॥

[२०१९]

तयणु विप्पिण भणिउ – इह अत्थि
जिय-स-विहव-वेसवणु चारुदत्त-अभिहाणु वणि-वरु ।
तस्सासि असेस-गुण- रयण-खाणि सिय-कित्ति-कुलहरु ॥
धुय गंधव्वसेण इय अभिहाणिण सु-पसिद्ध ।
पागय-पुरिसहं सम्मुहु वि न नियइ कलहं समिद्ध ॥

२०१७. ८. क. मज्झमि य changed to मज्झं निय.
२०१९. ९. क. कलिहिं

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०२०]

भणइ पुणु जह – मइं सु परिणेइ

जो वीणा-वायणिण निज्जिणेइ तुम्हहं समक्खु वि ।
इय सयलु वि तरुण-जणु कामिणीए तहिं वद्ध-लक्खु वि ॥
मासह मासह अंति इह परियट्टेइ उदग्गु ।
सिरि-जसगीव-सुगीवयहं गुरुहुं सविहि अणुओगु ॥

[२०२१]

अह सुगीवह घरि समागंतु

वसुदेवु कुऊहलिण सीस-भावु तसु संपवज्जिवि ।
नीसेस-कलालउ वि अ-मुणिरत्तु अप्पुणु हु पयडिवि ॥
अणु-दियहु वि गंधव्व-कल अवहिउ अब्भस्सेइ ।
तहं चट्टहं मज्झ-ट्ठियउ न-उ अप्पउं पयडेइ ॥

[२०२२]

किर न-याणहुं वीण-गुण-ताल-

लय-मुच्छा-ठाणगहं मज्झि किं-पि इय संपयासिरु ।
तणु-तंतिं आहणिरु मूलदेसि वीण वि अ-वाइरु ॥
तयणु जडो त्ति विचिंतिउण अवहीलियउ गुरूहिं ।
तह परिणेसइ इहु जि पर तरुणि स इय भणिरेहिं ॥

[२०२३]

हसिउ चट्टिहिं वहु-पयारेहिं

अणुओग-दिणम्मि पुणु कीलणत्थु वर-कुसुम-वासिउ ।
ठिउ मंदिरि वणि-वरह महरिहम्मि आसणि निवेसिउ ॥
एत्थंतरि थिरु चंकमिर रूविण रइ विहसंत ।
सा तहिं आगय ससि-वयणि तरुणहं हियव हरंत ॥

२०२०. ३. क. समक्खु हि.

२०२१. २ क. वसुदेव; ४ क. कलालओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०२४]

अह कुमारह रूवु अ-समाणु
सच्चविवि विम्हिय-हियय नूण एहु अमरो त्ति चिंतिर ।
सयलम्मि वि तरुण-जणि आगयम्मि तह मणि वियंभिर ॥
सा तरुणिय तरुणहं कमिण वीणउ वियरावेइ ।
वसुदेवु वि सयलाउ लहु दूसिवि छड्डावेइ ॥

[२०२५]

तयणु सतरस-तंति-विणिवद्ध-
नीसेस-लक्खण-कलिय गलिय-दोस उद्दंड-दंडय ।
वसुदेवह निय-करिहिं नियय-वीण अप्पिय पयंडय ॥
अह मुच्छाविवि दाहिणिण करिण भणिउ कुमरेण ।
कहसु नियंविणि वीण इह वायहुं केण सरेण ॥

[२०२६]

ता चमक्किय-हियय-वावार
गंधव्वसेणा भणइ अमर-खयर-सामिहि जु गिज्जइ ।
सिरि-विण्हुकुमार-मुणि- पुरउ कोवु सु वि जिण विसज्जइ ॥
सो वीणा-सद्देण सरु गिज्जउ अज्ज निरुत्तु ।
कुमरेण वि तह विहिउ लहु किंतु विसेसिण जुत्तु ॥

[२०२७]

ता समग्गिण तेण लोगेण
उववूहिउ कुमरवरु तम्मि सा वि अणुरत्त वालिय ।
सुग्गीवु वि विम्हियउ तहिं जि गइय वणि-वस हियालिय ॥
किं पुण गुणिहिं इमेरिसिहिं एहु न धुवु सामन्नु ।
ता न कहं-चि वि समुचियउ एयह काउ अ-वन्नु ॥

२०२४. ५ क. माणि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०२८]

इय विचिंतिवि चारुदत्तेण

एगंत-पएसि वसुदेवु धूय-सहिइण स-संकिण ।
संलत्तउ – नर-रयण धुवु इमेण तनु-कंति-किंत्तिण ॥
नज्जसि सुर-गिरि-तुंगि कुलि कत्थ-वि तुहुं उप्पन्नु ।
लीलहं इमहं इमिहि गुणिहि न हवइ नरु सामन्नु ॥

[२०२९]

वणिय-मित्तह इमह इह धूय

गंधव्वसेण त्ति तुहुं चिंतयंतु चिट्ठसि स-चित्तिण ।
परि निसुणसु वालियह इमह कहहुं उप्पत्ति लेसिण ॥
आसि महिड्ढिउ पुर-पवरु निम्मल-सम्मद्दिट्ठि ।
अहिगय-जीवाजीव-विहि भाणु नामु इह सेट्ठि ॥

[२०३०]

तस्स भारिय पुणु सुभद्द त्ति

तेसिं तु उयाइइहिं जाउ चारुदत्तो त्ति नंदणु ।
कम-जोगिण तरुणियण- हियय-हरणु सो पत्तु जोव्वणु ॥
तयणंतरु वहु-सुहि-सहिउ कीलंतउ वहियाए ।
पेक्खइ स-पिओ वि-हु खयर- पयइं तीरि सरियाए ॥

[२०३१]

तयणुसारिण अग्ग-मग्गम्मि

वच्चंतउ कयलि-हरि नियइ कुसुम-सत्थरि मणोहरु ।
तरवारि तहोसहिहिं वलय तिन्नि पुरओ य वच्चिरु ॥
सह एगेण महा-दुमिण कीलिउ अय-कीलेहिं ।
खयरु एगु वेयण-विहुरु नियइ नियय-नयणेहिं ॥

२०२८. ८. क. सुणिहि.

२०२९. ३. क. दिंतयंतु, ख. वितयंतु; क. वत्तिण; ९ ख. सिट्ठि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०३२]

विहि-निओइण गरुय-करुणाए

घरिसेविणु ओसहिहि वलउ एगु उवरिम्मि कीलहं ।
विणिहित्तु तडत्ति करि नीहरीय कीलय वि लीलहं ॥
वीओसहि-वलएण पुणु रोहिय सयल-वणाइं ।
तइएण उ सो सज्जु हुउ अह वियसियइं सुहाइं ॥

[२०३३]

ता पयंपिउ चारुदत्तेण

नणु साहसु को सि तुहुं कह व पत्तु दस विसम एरिस ।
ता लज्जिरु खयर-नरु भणइ – कहउं किं तुज्झ सु-पुरिस ॥
तह-वि हु तुहुं मह जणय-समु जीवियव्व-दाणेण ।
इय वइयरु साहेमि तुह सुणु अवहिय-हियएण ॥

तहा हि—

[२०३४]

जंवू-दीविहिं भरह-वासम्मि

वेयड्ढ-महागिरिहिं दाहिणाए सेढीए मणहरु ।
सिवमंदिरु नाम पुरु आसि तत्थ गुरु-गुणिहिं सुंदरु ॥
सिरि-महिंदविक्कमह खयरिंदह नंदणु एगु ।
अमियगइ त्ति पसिध्दु हउं अवरावसरि सुवेगु ॥

[२०३५]

गयउ परिमिय-सार-परिवारु

हिमवंत-नामय-गिरिहिं तहिं हिरण्णरोमाभिहाणह ।
एगयरह तावसह धूय दिट्ठ मइं तयणुरागह ॥
वसिहूयउ हउं सच्चविउ निउ जणणी-जणएहिं ।
तयणंतरु परिणावियउ तसु जि रिसिहिं भणिएहिं ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०३६]

एत्थ-अंतरि धूमसिह-खयरु
मह दइयह लुद्ध-मणु निहणणत्थु छिड्डइं पलोइरु ।
परिथक्कउ कालु चिरु हउं वि अज्ज सह पियह कीलिरु ॥
पाविण तेण निरिक्खिउण मुणिउण एगागि त्ति ।
मह एयारिस दस करिवि दइय हरेवि गओ त्ति ॥

[२०३७]

इय दुवे वि-हु विविह-सुह-दुक्ख-
कह-जोगिण ठाउ खणु निय-निएसु ठाणेसु पत्तय ।
वणि-पुत्तु वि मित्तवइ- नाम स-पिय वहु-गुणिहिं जुत्तय ॥
वयणेणं पि हु नालवइ न कुणइ क-वि पडिवत्ति ।
चिट्ठइ विसयहं विमुह-मण- पसरु जहा सु मुणि त्ति ॥

[२०३८]

इहु सुणेविणु जणय-जणणीहिं
दुल्ललिय-गोट्ठिहिं तणउ खिविउ तिहिं वि निय-वुद्धि-जोगिण ।
कलिंगसेणा-गणिय- धुय-वसंतसेणा-पसंगिण ॥
वासाविउ तह कह-वि जह थोवेहिं वि वरिसेहिं ।
सोलस-कंचण-कोडियउ फेडइ सह स-जसेहिं ॥

[२०३९]

अह सु निद्धणु मुणिवि गणियाहिं
नीहारिउ निय-घरह परिभमंतु पुणु स-घरि पत्तउ ।
तयणंतरु मय-जणणि- जणउ सयल-सुहि-सयण-चत्तउ ॥
ता निय-घरिणिहि आहरण- मोल्लिण भंडु गहेवि ।
वाणिज्जिण सह माउलिण नयरंतरि गच्छेवि ॥

२०३६. ३. क. निहणत्थु, ख. निहणणुत्थु.
२०३७. १. क. इव.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०४०]

भंड-दविणिण गहिवि कप्पासु
चलियउ अह अद्ध-पहि दड्ढु सयलु सु दवग्गि-पसरिण ।
ता लक्खण-रहिउ इहु इय मुणेवि परिहरिउ सयणिण ॥
पय-चारेण पियंगु-पुरि चारुदत्तु संपत्तु ।
जा ता तत्थ निएइ सुरइंददत्तु पिउ-मित्तु ॥

[२०४१]

तिण वि निसुणिय-पुव्व-वइयरिण
पसरंत-करुणा-भरिण चारुदत्तु निय-तणय-बुद्धिण ।
अवलोइउ न-उण तहिं थक्कु चत्तु चिर-सुकय-रिद्धिण ॥
अह उद्धारइ सय-सहसु एगु गहेविणु तत्थ ।
चलिउ जउण-दीवह समुहु भरिवि विविह वोहित्थ ॥

[२०४२]

कमिण कणयह अट्ठ-कोडीउ
समुवज्जिय कह-कह-वि वहु-विहेहिं देसिहि भमंतिण ।
आगमिरह पुणु स-पुर- समुहु फुट्टु वोहित्थु अ-इरिण ॥
जल-निहि-मज्झम्मि य भमिवि सत्त अहो-रत्ताइं ।
विसहेविणु मण-तणु-जणिय- नाणाविह-दुक्खाइं ॥

[२०४३]

फलह-खंडिण उत्तरेऊण
रायउर-उज्जाण-वणि नियइ एगु तेदंडि-जोगिउ ।
उवसंतउ वहिहिं अइ- दुट्ठु अंति तसु पइहि लग्गिउ ॥
चारुदत्तु पणमिवि कहइ निय-वुत्तंतु असेसु ।
तयणु भणिउ इयरिण– करिसु हउं तुह रिद्धि-विसेसु ॥

२०४०. ८. क. इ added above the line after निए; ख. निए.
२०४२. १. क. कोडीओ.
२०४३. ४. क. उववििहिहिं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०४४]

अह दुवेहिं वि तेहिं जणवाउ
सच्चाविउ जं भणइ लोउ– एत्थ लोहिट्टु झुट्टिण ।
भामिज्जइ इय तवसि विहव-लुद्ध-वणिएण धट्टिण ॥
पारद्धउ सेवेउ अह दो वि ति सिहरि-विसेसि ।
गंतु हवेउण एगयर- विवरह उवरि-पएसि ॥

[२०४५]

भणइ तावसु— वच्छ पविसेउ
रस-कूवि एयम्मि तुहुं भरिवि रसह आणेसु तुंवउ ।
तयणंतरु अ-क्खुहिउ चारुदत्तु इच्छिरु सुवन्नउं ॥
पिच्छंतउ भीसण-सयइं गच्छंतउ अ-खलंतु ।
रस-कूविय-उवरि-ट्ठियहं गिरि-मेहलहं पहुत्तु ॥

[२०४६]

अह निवारिउ नरिण एगेण
तहिं पुव्व-पविट्ठइण जह— म भद्द तुहुं एज्ज अग्गहु ।
इह हउं वि कवालिइण इमिण खिविउ धणि कय-असग्गहु ॥
खज्जंतउ एइण रसिण कडियडु जाव विलीणु ।
चिट्ठहुं कंठ-पइट्ठ-हय- जीवियव्वु अइ-दीणु ॥

[२०४७]

किंतु दवरिण गाढु वंधेवि
रस-तुंवउं मह समुहु खिवसु जेण अप्पेमि भरिउण ।
इयरो वि तह त्ति तसु वयणु सयलु अ-वियप्पु करिउण ॥
तावस-खिवियहं दवरियहं अवलंबिवि जा पत्तु ।
रस-कूविय-तडि ता मुणिय- कावालिय-वुत्तंतु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०४८]

रसह तुंवउं कह-वि पढमयरु
अ-पयच्छिरु मग्गिउ वि फुरिय-गरुय-कोविण ति-दंडिण ।
पेल्लेविणु रस-जुउ वि खिविउ विवरि अह दुहिण चंडिण ॥
आउलु खलिर-प्पडिरु गउ मेहलहं वि हेट्ठम्मि ।
न-उ मरणंत-दुहावणइ पडियउ रसि दुट्ठम्मि ॥

[२०४९]

भीय-कंपिरु भणइ पुणु पुरउ
तसु पुव्व-पविट्ठयह अहह भाय किह नरय-सरिसह ।
एयस्स महा-दुहह उत्तरेसु ता तसु हयासह ॥
पुरउ पयंपिउ पुव्वयर- पुरिसिण जह – न उवाउ ।
चिट्ठइ मरणह अंतरिण अह पसरंत-विसाउ ॥

[२०५०]

चारुदत्तु सु भणइ पुणरुत्तु
जह – वंधव तह वि कु-वि कहसु तयणु इयरेण साहिउ ।
इह एही गोह इग तीए पुच्छि लग्गेउ अवहिउ ॥
गच्छेज्जसु विवरह वहिहिं अन्नह पुणु झिज्जंतु ।
हंत रसंतरि निवडियउ मरिसि करुणु विलवंतु ॥

[२०५१]

विहि-निओइण चारुदत्तो वि
तसु विवरह उत्तरिउ पुणु वि जाउ अप्पाणु मन्निरु ।
तसु सिहरिहि उत्तरिवि किं-चि अग्ग-मग्गम्मि गच्छिरु ॥
वण-महिसिण एगिण वि वणि जगडिज्जंतु अणाहु ।
छुट्टउ कहमवि गरुयरहं सिलहं विलंविय-वाहु ॥

२०४८. ९. क. पडिवउ.

२०५०. १. क. पुणुरुत्तु; ५. क. पुच्छ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०५२]

चिर-समज्जिय-असुह-वावार-
वस-विहलिय-सयल-विहि चारुदत्तु चिंतेइ विलविरु ।
धिसि मइं किउ पुव्व-भवि असुहु किं-पि तं जेण खिज्जिरु ॥
भमहुं महीयलि न-उण मह जायइ सुहहं लवो वि ।
न य मिउ-महुरिण वयणिण वि मइं परितायइ को वि ॥

[२०५३]

इय विचिंतिरु जणय-मित्तस्सु
भवियव्व-वसेण परिमिलिउ रुद्ददत्ताभिहाणह ।
उसुवेगवइ-त्ति-अभिहाण-नइहि तीरम्मि दुग्गह ॥
वेत्तलइय-अभिहाणयह गिरि-कूडह मज्झेण ।
कंचण-विसयासन्न दु-वि पत्त गरुय-कट्ठेण ॥

[२०५४]

तयणु निसुणिवि जणह वयणेण
जह – इत्थ अजाहं विणु छल-पवेसु जायइ मणूसहं ।
घेत्तूण य अज-जुयलु चलिय समुहु अग्गिमहं देसहं ॥
कम-जोगेण य सविह-ठिय- छगल-वसिण गय-विग्घ ।
अइ-दुल्लंघु वि छगल-पहु लंघहिं पवण व सिग्घ ॥

[२०५५]

ता पयंपिउ रुद्ददत्तेण
एत्तो वि हु कट्ठयरु अग्ग-मग्गु इय संपहारिवि ।
सविह-ट्ठिउ संगहिवि अज्ज एहु अज-जुयलु मारिवि ।'
एयच्चम्मिण भत्थडिय काउ तहुत्थल्लेवि ।
संलीणंगोवंग तहं मज्झम्मि य पविसेवि ॥

२०५२. ८. क. न मिउ.

[२०५६]

मंस-भंतिण लुद्ध-हियएहिं
भारुंड-पक्खिहिं गहिय सुहिण जाहुं सोवन्न-भूमिहिं ।
अह चारुदत्तिण भणिउ नणु सु-पुरिस नेरिसिहि कम्मिहि ॥
छिप्पहिं जं छगलहं वसिण अम्हि इहागय सिग्घु ।
ता किह कीरइ नरय-फलु एयहं एरिसु विग्घु ॥

[२०५७]

अह कुवेविणु रुद्ददत्तेण
संलत्तउं – अरिरि तुहुं धम्मिओ सि वीहसि य नरयह ।
इय चिट्ठसु इह वि ठिउ न-उग सामि एयाहं छगलहं ॥
हउं पुणु करिवि जहारुइउ गच्छिसु कणय-दीवि ।
इय जंपंतु वि परिमुयइ छुरिय-घाउ अज-गीवि ॥

[२०५८]

ता खणद्धिण करुणु विरसंतु
पंचत्तह पत्तु अजु एगु तयणु धाइउ सु वीयह ।
एत्थंतरि वज्जरिउ समुहु चारुदत्तिण स-छगलह ॥
भद्द न सक्कउं ताव हउं संपइ तइं रक्खेउ ।
तुहुं पुणु डरियह भुवणह वि रक्खण-खमु जिणु देउ ॥

[२०५९]

दस-पयारिण समण-धम्मेण
सु-पवित्तु सु-साहु-गुरु जिय-अजीव-पमुह नव-तत्तइं ।
परमेट्ठि वि पंच-विह सुगइ-सुहय जिण-इद-वुत्तइं ॥
पडिवज्जसु तह पुव्व-कय- दुकय-सयइं गरिहेसु ।
भावण एगग्गिण नियय- मण-पसरिण भावेसु ॥

२०५८. १. क. विलसंतु. ७. क. तंइं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०६०]

चारुदत्तह विविह-वयणाइं

एवंविह निसुणिरिण किं-चि समिय-सारीर-दुक्खिण ।
नवकार-परायणिण गाढ-वद्ध-जिणधम्म-लक्खिण ॥
भावाराहिय-अणसणिण जणिय-पाव-कम्मंतु ।
रुद्ददत्त-हत्थिण छगिण पाविउ जीविय-अंतु ॥

[२०६१]

तयणु अ-विरल-गलिर-रुहिरेहि

उत्थल्ल-तय-भत्थडिहिं रुद्ददत्तु पविसेइ एगहं ।
गइमन्नमपेच्छिरउ चारुदत्तु पुणु विसइ अवरहं ॥
ता भारुंड-प्पक्खिइहि दु-वि आमिसह मईए ।
उक्खिविउण नहयल-पहिण निय दूरयर-महीए ॥

[२०६२]

किं तु छुट्टिवि विहि-निओएण

भारुंड-चंचु-प्पुडह चारुदत्तु निवडिउ जलासइ ।
अह छुरियइ छिंदिउण भत्थडिं पि पसरंत-आवइ ॥
कह-कहमवि हु अगाह-जलु तरिवि पहुत्तउ तीरि ।
संपाविय-चेयन्न-लवु तहिं वायंति समीरि ॥

[२०६३]

अह अ-माणुस-अडइ-मज्झम्मि

मिणमाणु व गयणयलु तुंगु एगु पव्वउ निरिक्खइ ।
ता आरुहमाणु तहिं सणिउ सणिउ गच्छंतु लक्खइ ॥
चारण-मुणिवरु एगु अह सिरि कर-कोसु करेवि ।
अप्पु कयत्थउं मुणिरु तसु पय-पउमइं पणमेवि ॥

२०६१. २. उच्छल्लइतय.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०६४]

उचिय-आसणि ठाउ स-वियक्कु
जंपेइ य – मुणि-वसह कहसु कत्थ दिट्ठो सि तुहुं मइं ।
ता चारण-मुणि भणइ भद्द चंप-नयरीए जो तइं ॥
कंठागय-जीविउ खयरु अमियगई-अभिहाणु ।
जीवाविउ सो तइयहं वि रिउ-उद्धरण-पहाणु ॥

[२०६५]

दप्पु दलिउण नियय-सत्तुस्सु
परिवेप्पिणु निय-दइय गंतु झत्ति वेयड्ढ-सिहरिहि ।
उवभुंजिवि विसय-सुहु करिवि हरिस-पब्भारु स-सुहिहिं ॥
नियय-तणुब्भवु सीहजसु संठविऊण य रज्जि ।
अवरु वराहस्सीहु पुणु विणिवेसिवि जुव-रज्जि ॥

[२०६६]

गहिय-जिणवर-चरिय-चारित्तु
परिसीलिय-विविह-तवु कणयकुंभ-मुणिवरह सविहिहिं ।
विहरंतु सु अमियगइ कुंभकंठ-दीवम्मि सिहरिहिं ॥
कक्कोडय-नामम्मि इह एहु सु हउं चिट्ठामि ।
एत्थंतरि निव-जुवनिवइ दो-वि ति नहयल-गामि ॥

[२०६७]

पउर-परियण तत्थ संपत्त
वंदंति मुणिंद-पय गरुय-भत्ति-रोमंच-अंचिय ।
गंधव्वसेणा वि लहु- भइणि तेसि गुरु-सुहिहि संचिय ॥
निय-जणयह चारण-मुणिहि अमियगइहि तसु पासि ।
आयन्नइ वर-धम्मकह भुवणाभोग-पयासि ॥

२०६४. ८. क. तइंयहं.

२०६६. ५. क. ख. सहुहिंहिं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०६८]

अह पयंपिउ समण-रयणेण

नियं-नंदण-दुहियरहं पुरउ – भद्द एसो वि तुम्हहं ।
जणगो इव इय नमहुं अह ति भणहिं – नणु किह णु अम्हहं ॥
जणय-समाणउ एहु अह नीसेसु वि पुव्वुत्तु ।
तेसि निवेयइ मुणि-वसहु चारुदत्त-वुत्तंतु ॥

[२०६९]

ता वियासिय-नयण-तामरस

पणमंति ते तसु चलण- कमल एत्थ-अंतरि पहुत्तउ ।
गयणयलह असम-जुइ पउर-अमर-परियणिण जुत्तउ ॥
तियसाहिवइ-समाण-तणु- कंति-कलावु स-उण्णु ।
अमरु एगु पणमइ पढमु चारुदत्तु स-करुण्णु ॥

[२०७०]

तयणु पणमइ मुणिहि चलणेसु

ता झत्ति स-विब्भमिण सीहजसिण वज्जरिउ– सुंदर
किह पढमु वि मुणि-पयइं मुइवि इमहं पणओ सि सुर-वर
अह गुरु-हरिसिण सुरिण तिण भणिउ– मज्झ गुरु एहु ।
जइ पुणु कोउगु तुम्ह इह ता वइयरु निसुणेहु ॥

तहा हि—

[२०७१]

संति स-किरिय-करण-कय-लक्ख

वाणारसि-पुरवरिहि वाल-वुड्ढ-गुरु-साहु-सद्दय ।
पव्वाइय दुन्नि तहं पढम सुलस बीया सुभद्दय ॥
तहिं आगउ अवरावसरि जन्नवक्क-अभिहाणु ।
जोगिउ निययहं सयलहं वि किरियहं विसइ पहाणु ॥

२०६८. ५. क. भद्दु.

२०७१. १. क. करुण; ६. क. आगओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०७२]

अह जु जिप्पइ जेण सो तस्सु
सुस्सूस करेइ इय कय-पइण्णु वायम्मि ढुक्कइ ।
सह सुलसहं निव-सहहं न य लवं पि निय-कलहं चुक्कइ ॥
ता निज्जिय तिण सुलस तसु सुस्सूसिय संजाय ।
चिट्ठंति य दु-वि अणवगय- दिणयर-रयणि-विभाय ॥

[२०७३]

तर्हि ललंतहं चत्त-वय-भंग-
अभिमाण-दोसाहं तहं काल-कमिण संजाउ नंदणु ।
अह सुलसहं नणु जणु वि मा मुणिज्ज मह-वयह खंडणु ॥
इय चिंतेविणु पिप्पलह हेट्ठि चत्तु निय-पुत्तु ।
लोय-पवायह भइण पुणु दो-वि ति नट्ठ निरुत्तु ॥

[२०७४]

विहि-वसेण य वयणि निवडंत
भक्खंतउ पिप्पलह पिप्प वालु दिट्ठउ सुभद्दहं ।
ता घेप्पिणु निय-करिहिं अ-वितहत्थु फुरियावसद्दहं ॥
तसु तीए च्चिय वियरियउं पिप्पलाद इय नामु ।
सो उण संगोवंगइं वि वेयहं हुउ गुरु-धामु ॥

[२०७५]

तयणु सुलसह जन्नवक्कह वि
पुव्वुत्तु वइयरु सयलु परिसुणेवि वयणिण सुभद्दह ।
कोवारुण-नयण-दलु पिप्पलादु हुउ उवरि जणयहं ॥
नणु पडिवज्जिय-सील-वय किह संपइ एयाइं ।
खंडिय-सीलइं सुय-वहिण किय-पावइं जायाइं ॥

२०७२. २. क. सुस्सू left out.

[२०७६]

इय विचिंतिरु तेसि हणणत्थु
पसरंत-अमरिस-वसिण भरह-भणिय सयलि वि तिरोहिय ।
निय-चट्टहं पुरउ पुणु कहिय वेय एरिस अणारिय ॥
लग्गाविउ लोगु हि सयलु विविह-असुह-वावारि ।
जेसि वसिण अज्जु वि भमइ चउ-गइ-भव-संसारि ॥

जओ भणियं —

[२०७७] पिइमेह-माइमेहा पसुमेहा तुरयमेह-गयमेहा ।
सुयमेह-बंधुमेहा गोमेह-नरिंदमेहा य ॥

[२०७८] उट्ट-खर-विरहियाणं जीवाणियरेसिमवि-हु वह-हेऊ ।
एएऽणारिय-वेया पन्नत्ता पिप्पलाएण ॥

[२०७९]

भणिवि पुणु जण-मज्झयारम्मि
जह – जन्नि हम्मंत जिय निव्वियप्पु सग्गम्मि वच्चहिं ।
विणिवाइवि निय-जणणि- जणय हुणइ मज्झम्मि अग्गिहि ॥
इय पाविण तिण गिरि-गरुय- अहिणिवेस-नडिएण ।
पावु पयासिउ जं तमिह किज्जइ अजु-वि जणेण ॥

[२०८०]

पिप्पलायह हुयउ पुणु सीसु
अभिहाणिण वायवलि सो उ इयर-लोगम्मि पयडिउ ।
पुव्वोइय-वेय अह सत्तमम्मि नरयम्मि निवडिउ ॥
परिभमिऊण य सुइरु भवि पंच-वार छगु होउ ।
निय-मंसिण जन्निहि हयउ पोसिवि जन्निय-लोउ ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०८१]

छड्डमम्मि उ रुद्ददत्तेण

हम्मंतउ छगल-भवि टंकणम्मि विसयम्मि अ-सरणु ।
निक्कारण-कारुणिय- रुइण इमिण कारविउ सुमरणु ।।
जिणवर-धम्मह सुह-गुरुहुं नव-भेयहं तत्ताहं ।
अन्नेसिं पि तहा-विहहं जिण-पणीय-भावाहं ।।

[२०८२]

अंत-अवसरि जाय-सम्मत्तु

आलोइय-दुच्चरिउ सरिय पंच नवकारु भाविण ।
अवहत्थिय-तणु-असुहु सुद्ध-झाणु परिचत्तु जीविण ।।
जायउ सोहम्मम्मि सुर- मंदिरि देव-कुमारु ।
तक्खणमवि तसु सुर-गणिण दंसिउ सुर-सिरि-सारु ।।

[२०८३]

अवहि-नाणिण मुणिय पुव्वुत्तु

वुत्तंतु स-धम्म-गुरु- नाम-मंतु सुमरिवि स-परियणु ।
सो हउं जि इहागमिवि नमहुं इमह मिल्लेवि मुणि-जणु ।।
ता विम्हिय नहयर सयल पमुइय अमर-कुमार ।
चारुदत्त-तियसहं पुरउ पयडहिं हरिस-वियार ।।

[२०८४]

चारुदत्तह पुरउ अह अमरु

साणंदु समुल्लवइ देसु मज्झ आएसु वणि-वर ।
तयणंतरु भणइ वणि- पवरु – एज्ज सुमरियउ सुर-वर ।।
अह चारण-मुणि-वरह पय पय वणिणो वि नमेवि ।
सेवइ तियसु सु सुर-सुहइं सुर-मंदिरि गच्छेवि ।।

२०८३. ७. क. °कुमारु.
२०८४. ४. क. तियणंतरु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०८५]

चारुदत्तु वि तेहिं खयरेहिं
पणमेप्पिणु गुरु-पइहि नीउ नियय-ठाणम्मि स-हरिसु ।
ता पयडिउ निय-जणय- मइहिं असमु तसु पूय-पगरिसु ॥
अह गंधव्वसेण निय- भइणि समप्पिवि तस्सु ।
जंपिउ जह – वसुदेवु इह वीवाहिहइ अवस्सु ॥

[२०८६]

जमिह अम्हहं कहिउ चिट्ठेइ
नेमित्तिएण एरिसउं दिक्ख-गहण-समयम्मि पिउण वि ।
आइट्ठउं आसि जह ठविवि चारुदत्तस्स भवणि वि ॥
मोएयव्व कुमारि इह सो वि गरुय-रिद्धीए ।
परिणाविस्सइ वणिय-वरु नियय-धूय-वुद्धीए ॥

[२०८७]

अह गहेविणु कुमरि कय-तोसु
खयरिंद-सम्माणियउ मिलिय-रयण-धण-कणय-वित्थरु ।
तक्कालागइण तिण सुरिण दिन्न-आहरण-सुंदरु ॥
वहु-विज्जाहर-सुर-नियर- सहिउ कुमारि गहेवि ।
चंपहं पुरिहिं पहुत्तु हउं एहु सु इम वि भणेवि ॥

[२०८८]

जिणइ जो मइं वीण-वायणिण
सो परिणइ न-उ इयरु इय ललंत चिट्ठइ निरंतरु ।
चिर-कालह आगयउ तुहुं वि एत्थ सव्वंग-सुंदरु ॥
इय निसुणिवि वसुदेवु परितुट्ठउ परिणइ कन्न ।
इयरि वि तिण सह अणुहवइ विसय-सुहइं अ-सवन्न ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इओ य—

[२०८९]

महि-नियंविणि-तिलइ वेयड्ढि
सिरि-नमि-खयराहिवह वंसि गइहि गय-संख-निवइहि ।
पहसिउ खयरिंदु हुउ तसु हिरन्नवइ-नाम-दइयहि ॥
निरुवम-सिविणुवसूइयउ पसरिय-गुणहं निहाणु ।
जायउ खयराहिव-तिलउ सिरि-सुदाढ-अभिहाणु ॥

[२०९०]

तिण हराविवि सुत्तु वसुदेवु
आणाविवि निय-भवणि सुइरसिद्ध-वेयाल-पासह ।
सम्माणिउ वहु-विहिहिं पूरणत्थु निरु नियय-आसह ॥
तयणंतरु ससि-विमल-कल- निरुवम-गुण-मणि-धाम ।
नियय दुहिय भुवणब्भहिय सिरि-नीलंजस-नाम ॥

[२०९१]

सा महा-मह-पुव्वु तिण तस्सु
वसुदेवह दिन्न अह तीए समगु स-पयाव-दिणमणि ।
सो भुंजिरु विसय-सुह गमइ कालु जायव-सिरोमणि ॥
अवरम्मि उ अवसरि सरइ सिरि-हिरिमंत-नगम्मि ।
ताइं दुवे वि-हु गंतु खणु ललहिं कयलि-हरयम्मि ॥

[२०९२]

एत्थ-अंतरि चलिर-चूलिल्लु
अलि-गवल-तमाल-दल- कंठ-नाल-देसिण विहूसिउ ।
पसरंत-केकारविण पंच-वन्न-अंसिण अ-दूसिउ ॥
परिनच्चंतु सिहंडि इगु पूरिय-गरुय-कलावु ।
अवलोइउ वालियहं तहिं अमय-महुर-आलावु ॥

२०८९. २. क. विनमि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०९३]

अह पहाविय तस्सु गहणत्थु
कोऊहल-हरिय-मण वाल जाव ता पुरिस-रूविण ।
अइ-करुणउं पलविर वि नीय कह-वि तेणावि हरिउण ॥
तीए विओइ अरन्न-समु भुवणं पि-हु मन्नंतु ।
नर-विज्जाहर-सुर-तरुणि- मण-वणराइ वसंतु ॥

[२०९४]

कयलि-हरयह नीहरेऊण
तक्खणिण वि सउरि-कुल- गयण-चंदु अच्चंत-दुक्खिउ ।
तं तरुणी-रयणु निरु नियइ धरइं इयरिहिं अ-लक्खिउ ॥
कम-जोगेण य एगयरि पत्तउ पुरि जा ताव ।
वेय पढंत सुणइ दिय जि जलहर-गहिरालाव ॥

[२०९५]

तयणु पुच्छिउ तेण दिउ एगु
किं एत्थ दीसहिं दिय जि निच्चु वेय-उग्गार-पच्चल ।
अह विप्पिण भणिउ – इह अत्थि कलहं कोसल्लि निच्चल ॥
धुय सुरदेवह दिय-वरह वेय-कलाहं निहाण ।
खत्तिणि-पिय-तणु-संभविय सोमस्सिरि-अभिहाण ॥

[२०९६]

पत्त-जोव्वण भणइ सा वाल –
परिणिस्सइ सु ज्जि पर जो जिणेइ मइं वेय-विज्जहं ।
इय निसुणिवि विप्प-जणु लद्धु तसु जि परिणयण-कज्जहं ॥
एम्व निरंतरु इह नयरि वेयब्भासु करेइ ।
बंभदत्त-विप्पह पुरउ पढिय परिक्ख वि देइ ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२०९७]

वडुय-वेसिण वंभदत्तस्सु
गेहंगणि कोउगिण गंतु पुरउ तसु सउरि जंपइ ।
जह – गोयम-गुत्तु दिउ तुम्ह पुरउ पढणत्थु संपइ ॥
चिट्ठहुं पत्तउ इय पसिय मइं वि पढावहु वेय ।
तयणंतरु वंभणु भणइ वेय हवंति दु-भेय ॥

[२०९८]

तत्थ ताव य भरह-नाहेण
कय आरिय-वेय इय फुडु पुराण-सत्थिहि निसुम्मइ ।
इयरे उण जेण कय तसु सुणेह उप्पत्ति संपइ ॥
सिरि-चारणजुयलम्मि पुरि निवइ अजोहण-नामु ।
तसु पणइणि दिति-नाम पुणु असरिस-गुण-मणि-धामु ॥

[२०९९]

तेसि निय-कुल-गयण-ससिलेह
सुलस त्ति नामिण पयड धूय आसि अह अवर-वासरि ।
जणएण करावियइ तीए जोग्गि मंडवि सयंवरि ॥
रयणिहिं मंतणयम्मि निय- धूयह पुरउ भणेइ ।
जह – जुत्तिण माउलय-सुउ तइं महुपिंगु वरेइ ॥

[२१००]

खिवसि जइ पुणु कसु वि अवरस्सु
कंठम्मि वर-माल तुहुं ता महंतु मह असुहु हविहइ ।
अह सुलस समुल्लवइ जणणि-असुहु नणु को णु करिहइ ॥
सो च्चिय निय-माउलय-सुउ हउं महुपिंगु वरेसु ।
न-उण कहं-चि वि सिविणगि वि जणणिहि असुहु करेसु ॥

२०९९. २. क. पयड्ड.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१०१]

एहु सयलु वि मुणिवि मंतणउं

मंदोयरि-नामियइ चेडियाए सिरि-सयर-निवइहि ।
आगंतु कहीउ अह धरणि-नाहु संगहिउ अ-रइहिं ॥
उवविसिऊण सयंवरह मंडवि नियय-पहाए ।
वच्चावइ निय-लक्खणइं जा ता कुमर-सहाए ॥

[२१०२]

इहु निलक्खण-कुक्खि महुपिंगु

सव्वेसि निवंगयहं इमहं मज्झि इय भणिवि दढयरु ।
निद्धाडिउ तह कह-वि जह न दिट्ठु नयणिहिं वि सु कुमरु ॥
सयर-नरिंदिण पुणु सुलस वीवाहिय अइरेण ।
निय-निय-पुरि इयरे वि गय समगु स-परिवारेण ॥

[२१०३]

विण्हुरायह भवणि जाओ वि

निव-वंस-मुत्तामणि वि सिरि-सुदाढ-निव-भाइणिज्जु वि ।
सिरि-सोमवंसुब्भवु वि सुलस-तरुणि-एगंत-जुग्गु वि ॥
निद्धाडिवि वल-वड्डिमहं हउं परिखिविउ विएसि ।
लुद्धिण सयर-निवाहमिण सुलसह तरुणिहि रेसि ॥

[२१०४]

किंतु कहमवि जइसु तह जेण

सव्वे वि-हु निव-अहम एइ हुंति अच्चंत-दुक्खिय ।
इहरह कह एरिसउं पावु करिवि हविहइं सु-सिक्खिय ॥
इय चिंतिरु वि अ-पहविरउ तेस तिम्मि जम्मम्मि ।
उज्जमिउण अइ-दुक्करइ वाल-तव-क्कम्मम्मि ॥

२१०१. ६. क. सयंवरहं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१०५]

मरिवि जायउ भवण-वासीण

महकाल-अभिहाणयहं मज्झि तियस-पहु परम-अहमिउ ।
नियं-नाणिण परिमुणिवि वइयरो वि निय-पुव्व-जम्मिउ ॥
चिंतिवि जह – सयर-प्पमुह नरवइ-अहम ति सव्वि ।
नरइ निवाडिवि हरहुं मइ पर पियंयम गहियव्वि ॥

[२१०६]

मुणिवि पुणु पसु-जन्न-विहि-कहण·

अवराहिण सुत्तिमइ- पुरिहि नयर-लोइण समग्गिण ।
निव्वासिउ पव्वयगु कूर-कम्म-परिणइ-निसग्गिण ॥
सो महकाल-सुराहिवइ अहम-चरिउ महुपिंगु ।
आवइ पव्वयगह पुरउ भणइ – भणसि तुहुं चंगु ॥

[२१०७]

किंतु पाविण नयर-लोएण

अविवेय-बहुलत्तणिण तुहुं वि एम्व अवगणिउ संपइ ।
जं खीर-कयंवगु वि तुज्झ जणउ एमेव जंपइ ॥
तसु उवज्झायह पुरउ तइं मइं वि हु इहु जि सुणीउ ।
संपइ पुणु पेक्खेवि तुह नायर-जणु अ-विणीउ ॥

[२१०८]

स-गुरु-बंधव-नेह-गुण-बद्धु

हउं पत्तउ एत्थ तुह जणिण जणिउ अवमाणु पिक्खिवि ।
अह पेक्खसु जं कुणहुं इय भणेवि बहु-भेउ सिक्खिवि ॥
सुरवइ-अहमु सु पुरि सयलि जियहं विउव्वइ मारि ।
अ-सिवाणि वि नाणा-विहइं तहिं तारिसि अवगारि ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१०९]

तयणु नायर रोग-विहुरंग

सुहि-सज्जण-मरण-भय- अहर-देह पव्वयग-सविहिहिं ।
आगच्छहिं हवहिं पुणु तदुवइट्ठ-दियहाण अवहिहिं ॥
पसुमेहाइ अणेग-विह जन्न-विसेस जजंत ।
जायहिं दिव्व-वसेण गय- रोग समग्गि वि सत्त ॥

[२११०]

ता विसेसिण सयलि नायरय

संजाय-पच्चय तहिं जि पाव-कम्मि पसुमेह-पमुहइ ।
सव्वायरु उज्जमहिं अ-सिव-हरणि पव्वयग-कहियइ ॥
निच्चु वि जल-थल-नहयरह नाणाविहहं जियाहं ॥
संजायइ संहारु पइ- दियहु वि तहिं किरियाहं ॥

[२१११]

सयर-निवइहि लोउ पुणु सयलु

पीडिज्जइ बहु-विहिहि दूसहेहिं वाहिहि निरंतरु ।
पव्वयगह वयणु अणुसरिवि असुह-पब्भार-निब्भरु ॥
अट्ठुत्तरु जन्नहं सहसु कारइ दिक्खिउ होउ ।
उज्जमइ य तेण वि कमिण सयलु वि नायर-लोउ ॥

[२११२]

देइ अणु-दिणु दाणु विप्पाहं

अवहीलइ धम्मियणु कुणइ भणिउ पव्वयग-पावह ।
धण-लुद्धय बंभण वि तसु जि चेव गच्छंति सेवहं ॥
एत्थंतरि नारय-रिसिहि मित्तु दिवायर-नामु ।
खयर-कुमारु जिणाहिवइ- भणिय-किरिय-कुल-धामु ॥

२१०९. ४. ख. आगच्छहिं नूण पुणु
२०१०. ९. क. करियाहं.
२११२. ९. क. कुधामु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२११३]

जन्न-कज्जिण जीव पसु-पमुह
पव्वयगिण आणविय　　अवहरेउ जन्नाइं भंजइ ।
वाएण य पव्वयग-　　पावु जिणिवि धम्मियणु रंजइ ॥
इहु मुणिउण सुरवइ-अहमु　　तसु विज्जह अहलत्थु ।
ठाविवि रिसहेसर-पडिम　　जन्नि हणइ जिय-सत्थु ॥

[२११४]

जन्नि निहणिय जिय वि पयडेइ
गयणम्मि विमाण-गय　　ता भणइ नीसेसु लोगु वि ।
जह – जन्नि निसुंभियउ　　जाइ जीवु सग्गम्मि सयलु वि ॥
तयणु विसेसिण जणु कुणइ　　पसु-वहाइ-जन्नाइं ।
ता जा सयर-नराहिवइ　　सुलस वि तहिं हुणियाइं ॥

[२११५]

इय अणारिय-वेयहं पवित्ति
पव्वयगिण किय पढम　　तयणु तेण महुपिंग-तियसिण ।
ता पाव-मलीमसिण　　पिप्पलाय-वालय-तवस्सिण ॥
तइयहं नारय-महरिसिण　　परिणिय खयरहं धूय ।
संपइ पुणु वंसम्मि तह　　इह सोम-स्सिरि हुय ॥

[२११६]

तयणु दु-विह वि वेय अइरेण
वसुदेविण पढिय अह　　जिणिवि सोमसिरि कमल-वयणिय ।
अच्चंत- महूसविण　　दलिवि दप्पु इयरेसि परिणिय ॥
चिट्ठइ तीए सह सुइरु　　विसय-सुहइं सेवंतु ।
अवरम्मि उ अवसरि गयउ　　पुर-काणणि कीलंतु ॥

२११५. ९. क. सामस्सिरि.

Jain Education International 2010_05　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

[२११७]

जाव ता तहिं विहिय-दिय-वेसु

सच्चवियउ वहु-कवडु इंदसम्मु दहु इंदयालिउ ।
वसुदेविण तसु पुरउ गहिउ मंत-तंतोहु अणलिउ ॥
किं पुण निसिहिं चडाविउण गुरु-विमाणि वसुदेवु ।
अवहरियउ नहयल-पहिण किं तु सु अ-कय-क्खेवु ॥

[२११८]

तसु विमाणह उत्तरेऊण

तह कह-वि गयउ जह इंदसम्म-धुत्तिण वि न मुणिउ ।
तिलसोसय-नामि पुणु सन्निवेसि निय-सुकय-उवणिउ ॥
आगंतूण पुरह वहिहिं देवउलम्मि पसुत्तु ।
चिट्ठइ रयणिहिं नर-रयणु सो सुहि-सयण-विउत्तु ॥

[२११९]

एत्थ-अंतरि कणयपुर-सामि

जियसत्तु-नराहिविण नियय-पुत्तु नर-मंस-लुद्धउ ।
निद्धाडिउ निय-पुरह स-विसए वि पविसिरु निसिद्धउ ॥
सो य भमंतउ नग-नगर- गामाउल-वसुहाए ।
वावायंतु अणाह वहु माणुस मंसासाए ॥

[२१२०]

विहि-निओइण रयणि-मज्झम्मि

मंसासण-लुद्ध-मण- पसरु पत्तु वसुदेव-सविहिहिं ।
आयड्ढिवि असि-लइय जा पहारु तसु देइ अ-विहिहिं ॥
ता वसुदेविण उट्ठिउण केस-कलावि गहेवि ।
पावु सु पंचत्तह नियउ निय-खग्गिण निहणेवि

२११७. ९. क. कितु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१२१]

अह वियाणिय-पगय-वुत्तु
नीसेसु वि नयर-जणु विहिय-विविह-सम्माणु सउरिहि ।
वियरेइ महायरिण सयइं पंच निय-नियय-कुमरिहि ॥
वसुदेवो वि हु काउ निय- सत्तहं तरुणिउ ताउ ।
अयलगामि सत्थाह-घरि एगयरम्मि पराउ ॥

[२१२२]

मित्तसिरि इय नामु तसु कन्न
परिणीय महा-महिण गमइ दियह सह तीए सुक्खिण ।
अवरम्मि उ दिणि सउरि- पुरउ भणिउ एगिण मणूसिण ॥
वेयसम्म-नामम्मि पुरि निवइ कविल-अभिहाणु ।
चिट्ठइ कविला-नाम तसु धुय गुरु-गुणहं निहाणु ॥

[२१२३]

तसु निमित्तिण कहिउ हिरिमंत-
सिहरिम्मि समागयउ पाण-नाहु वसुदेव-नामगु ।
आणयण-पओयणिण इंदयालि-गुरु इंदसम्मगु ॥
तसु सविहिहिं पेसिउ निविण सो वि-हु तं गहिऊण ।
जा चलियउ ता तसु नयण- मग्गु अइक्कमिऊण ॥

[२१२४]

गयउ कत्थ-वि झत्ति वसुदेवु
इयरेण वि नरवइहिं कहिउ सयलु पुव्वुत्तु वइयरु ।
नरनाहु वि संसइउ हुयउ जाव ता भणइ इगु नरु ॥
जह – पहु तिण नेमित्तिइण अवरु वि अत्थि कहीउ ।
जा फुलिंगवयणु त्ति तुह तुरउ दमेइ गहीउ ॥

२१२१. ४. क. वियारइ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१२५]

सो ज्जि कविलह तुज्झ कन्नयह

गिण्हिस्सइ पाणि धुवु तयणु निविण नियनयरि सायरु ।
घोसाविउ जह – जु मह इहु फुलिंगवयणो त्ति हय-वरु ॥
दमिउण पट्ठिहिं आरुहइ सो ज्जि कविल परिणेइ ।
सउरि वि तसु वयणिण सयलु निय-वुत्तंतु मुणेइ ॥

[२१२६]

अह तुरंगमु दमिवि लीलाए

परिणेविणु ससि-वयणि कालु को-वि सह तीए चिट्ठिवि ।
उप्पाइवि सुय-रयणु कविल-नामु तस्सु वि पइट्ठिवि ॥
देसंतर-गमणुम्मणिउ हुउ वसुदेवु सु जाव ।
नीलकंठ-खयरेण करि- रूविण हरियउ ताव ॥

[२१२७]

तयणु मुट्ठिण कुलिस-कढिणेण

हणिऊण खयराहमु सु धरणि-वीढि पाडियउ सउरिण ।
अह उट्ठिवि नह-पहिण सो पलाणु हियएण विहुरिण ॥
वसुदेवो वि हु अ-क्खुहिय- मण-वावारु कमेण ।
सालगुहाए महा-पुरिहिं पत्तउ सुह-उदएण ॥

[२१२८]

तहिं पढाविउ सयलु धणु-वेउ

वसुदेविण आयरिण भग्गसेण-अभिहाणु नरवइ ।
पउमावइ नाम निय- धूय सरय-ससि-जुण्ह-सम-मइ ॥
वियरिय तेण नराहिविण वसुदेवह कुमरस्सु ।
गच्छंति य दिण तीए सह तसु वर-विसय-परस्सु ॥

२१२५. २. पाणि त्रुट्ट (?); ख. धुवु वयणु.
२१२८. ५. क. सेसि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१२९]

अवर-अवसरि भग्गसेणस्सु
सह जेट्ठ-सहोयरिण समरु लग्गु महसेण-नामिण ।
ता अवितह-नामु निय- ससुरु दट्ठु वसुदेव-वीरिण ॥
संगामंगणि पविसिउण मउलिय-वयण-वियासु ।
भग्ग-मडप्फरु लहु विहिउ सो महसेण-हयासु ॥

[२१३०]

ता निरिक्खिवि सउरि-माहप्पु
पडिवज्जिवि सेव तसु संहरेवि संगर-मडप्फरु ।
वसुदेवह गुण-नियरु मणि धरेवि सव्वंग-सुंदरु ॥
वेयड्ढिम वड्डिम महिम जोव्वण-रूव-निहाण ।
स-हरिसु वियरिय धूय निय आससेण-अभिहाण ॥

[२१३१]

कालु कित्तिय-मेत्तु तहिं ठाउ
कोऊहल-हरिय-मणु सउरि पुरह तसु नीहरेविणु ।
सिरि-भद्दिलपुरि-नयरि जाइ तहिं ति दयइउ मुणेविणु ॥
तप्पुर-नाहेण वि निविण नेमित्तिय-वयणेण ।
पुंड-नाम निय-धूय तसु वियरिय गरुय-महेण ॥

[२१३२]

असम-लक्खण-रयण-धरणीए
सह तीए वि विसय-सुह भुंजिरस्सु तसु देव-कुमरह ।
संजायउ अंगरुहु अणहु हेउ निय-वंस-पसरह ॥
तसु पुणु वसुदेविण गरुय- रिद्धिण जण-अभिरामु ।
किउ पंडु त्ति समग्ग-सुहि- सयणहं पयडउं नामु ॥

२१२९. ५. क. ससुर; ६. क. पविस्रिऊण.

२१३१. ५. क. जाई.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१३३]

अवर-दिणि पुणु खयर-कुमरेण

अंगारय-नामगिण सुह-पसुत्तु पडिवक्ख-दूसणु ।
कलहंस-रूव-च्छलिण अवहरेउ जायव-विहूसणु ॥
खित्तउ गंग-महानइहि सलिलि अणोरप्पारि ।
किं पुण खण-मित्तिण सउरि तरिउण सुर-सरि-वारि ॥

[२१३४]

चिर-समज्जिय-सुकय-पब्भारु

इलवद्धण-नाम-पुरि गंतु कमिण वणि विवणि-वीहिहिं ।
उवविट्ठउ कं-चि खणु हट्टि नयर-उत्तिमह सेट्ठिहि ॥
तसु अणुहाविण सेट्ठिण वि सय-सहस्सु दविणस्सु ।
ववहरमाणिण अज्जियउ मज्झि वि एग-दिणस्सु ॥

[२१३५]

तयणु सेट्ठिण स-घरि नेऊण

सम्माणिवि वहु-विहिहिं तसु विइन्न भुवण-प्पहाणिय ।
रयणवई नाम निय- धूय सरय-ससि-सोम-वयणिय ।'
तीए सह तसु चिट्ठिरह गच्छंतिहिं दियहेहिं ।
संपत्तउ तहिं सरय-रिउ सह कलहंस-सएहिं ॥

[२१३६]

अह सु कंचण-रहि समारूढु

ससुरेण सह इंद-मह- पेच्छणत्थु गउ पुरि महापुरि ।
कीलंतउ पुणु पुरह तस्सु वहिहिं उज्जाणि मणहरि ॥
पेच्छइ निय-सिरि-अवगणिय- तियसासुर-भवणाइं ।
तुंग-विसालइं धवलहर जय-जण-मणहरणाइं ॥

२१३६. ५. वहिहिं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१३७]

तयणु पुच्छइ ससुर-पासम्मि
किं एहु दीसइ अवरु नयरु किं-पि ता भणइ ससुरउ ।
इह नरवइ-कन्नयह जोग्गु रम्मु किर आसि विहियउ ॥
एहु सयंवर-मंडवउ किंतु अज्ज सा कन्न ।
दुस्सह-वाहि-समागमिण हुय गलंत-चेयन्न ॥

[२१३८]

अह नियत्तिवि सयल निव-कुमर
संजाय विवन्न-मुह निय-निएसु ठाणेसु अइगय ।
वसुदेवु वि कइ-वि पय देइ जाव ता तहिं पहुत्तय ॥
सेट्ठि-पुरोहिय-मंडलिय- सचिवाहिव-सामंत ।
उचिओचिय-ठाणिहि वि ठिय हरिसिण पुलइज्जंत ॥

[२१३९]

एत्थ-अंतरि तहिं जि संपत्तु
संतेउरु धरणिवइ किं तु भग्ग-आणाल-हत्थिण ।
कड्ढेविणु रह-वरह गहिय एग निव-कन्न सुंडिण ॥
ता हा-हा-रवि पसरियइ मिलियइ नायर-लोइ ।
तसु पुणु करि-अहमह सम्मुहु पगु वि न वियरइ कोइ ॥

[२१४०]

किं-तु सउरिण सम्मुहु धावेवि
वामोहिवि दुट्ठ-करि कड्ढिऊण वहु-दुह-करालिय ।
परिमुक्क पासाय-तलि निय-करेहिं सा निवइ-वालिय ॥
तक्खणमवि सयलहं महिहिं जायउ साहुक्कारु ।
सेट्ठिण पुणु महया महिण निय-घरि नियउ कुमारु ॥

२१४०. ६ क. गहिंहिं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१४१]

अह सिणाणिण वर-विलेवणिण
नाणाविह-भूसणिण विहिय-चारु-सिंगारु मणहरि ।
पल्लंकि निसिएइ खणु जाव सविहि संठियइ वणि-वरि ॥
ताव समागय वणि-वरह तसु मंदिरह दुवारि ।
परिवियसिय-मुह-कमल इग नरनायग-पडिहारि ॥

[२१४२]

ता पयच्छिवि हत्थि वणि-वरह
नर-नाहिण पेसियउ वहु-पसाउ साणंदु सउरिहि ।
सविहम्मि भणेइ जह सोमदत्त-नरवरिण कुमरिहि ॥
सोमस्सिरि-अभिहाणयह निय-धूयह पाउग्गि ।
कयइ सयंवर-मंडवइ निय-सिरि-अहरिय-सग्गि ॥

[२१४३]

विविह-नरवइ-कुमर आहूय
सद्दाविय सुहि-सयण गणय-पुरिस आगय अ-संखय ।
परिपिंडिय तक्खणिण वंदि-विंद वहु-संख-लक्खय ॥
अह सव्वाण-महामुणिहि केवल-नाण-महम्मि ।
चलियासणि पत्तइ खणिण तहिं जि देव-निवहम्मि ॥

[२१४४]

कत्थ एरिसु अमर-निउरुवु
मइं दिट्ठु इय चिंतिरिहि सोमसिरिहि हुउ जाइ-सुमरणु ।
ता केण समाणु इह जंपियव्वु इय करिवि दढु मणु ॥
मोण-व्वउ अवलंबिउण चिट्ठइ वियसिय-अच्छि ।
पुच्छिज्जंत वि निवइण वि किं-पि न कहइ मयच्छि ॥

२१४१. ८. क. कमलु.
२१४४. ८. क. ख. निवहणु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१४५]

तयणु आणिवि कुमरि एगंति

मइं पुच्छिय – नणु सुयणु किं न कसु वि परमत्थु साहसि ।
न-हि नियं-दुहि अ-कहियइ तुहुं वि अ-सुह-अवसाणु पावसि ॥
अह दीहरु उत्तम्मिउण सोमस्सिरि पभणेइ ।
को मह विरहिण तसु पियह दुह-अवसाणु कुणेइ ॥

जओ—

[२१४६]

आसि सत्तम-देवलोगम्मि

सुर-सामि-समाण-सिरि नंदिसेण-सुरु मज्झ पिययमु ।
तेणं च समाणु मइं विसय-सुक्खु सेविउ मणोरमु ॥
अवरम्मि उ दिणि समगु मइं नंदीसर-वरि दीवि ।
गंतु करेविणु जिण-महिम निसुणिवि गुरुहुं समीवि ॥

[२१४७]

धम्म-देसण-जणिय-जम्मंत

संचल्लिउ सत्तमह तियस-गिहह निययस्सु सम्मुहु ।
जा ताव पंचम-अमर- मंदिरस्सु सविहम्मि वहु-दुहु ॥
दिट्ठ-विणट्ठु जु हुयउ लहु पवणाहय दीवु व्व ।
तयणंतरु संजाय हउं दुह-दवग्गि-दड्ढ व्व ॥

[२१४८]

तत्थ तत्थ य भमिर कुरु-विसइ

एगयर-पुरोववणि गंतु सविहि केवलिहि एगह ।
मइं जंपिउ जह – कहसु हउं मिलेसु कइयहं स-दइयह ॥
तयणु पयंपिउ केवलिण सुंदरि भरह-क्खित्ति ।
उप्पन्नउ सो तुह दइउ हरि-वंसम्मि पवित्ति ॥

२१४५. ६. क. ख. उत्तम्मिऊण.
२१४६. ८. क. महिन.
२१४७. ९. क. ख. दड्ढव्व.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१४९]

तं पि हविहसि सोमदत्तस्सु

नर-नाहह सोमसिरि नाम धूय सुर-तरुणि-सरिसिय ।
जायम्मि य इंद-महि दुट्ठ-करिण अच्चंत-धरसिय ॥
जो सु-पुरिसु तइं रक्खिसइ नियजिउ पणु मिल्लेवि ।
सो च्चिय तुह हविहइ दइउ पिसुणहं मण सल्लेवि ॥

[२१५०]

एहु केवलि-वयणु निसुणेवि

अंतम्मि नियय-ट्ठिइहि चविवि सोमदत्तह नरिंदह ।
हउं कन्नय हूय इय विरहि तस्सु वयणारविंदह ॥
कसु अग्गइ अक्खउं दुहइं कसु व सुहइं साहेमि ।
अह पडिहारि समुल्लविवि जुइ-न ज हउं वि करेमि ॥

[२१५१]

गंतु निवइहि पाय-मूलम्मि

परिसाहइ सोमसिरि- कहिउ सयलु पुव्वुत्तु वइयरु ।
ता निवइण तक्खणि वि निव-कुमर काऊण उत्तरु ॥
निय-निय-नयरि वि सच्चविय सयमुज्जाणि पहुत्तु ।
जा ता पयडीहुयउ करि- विसइ तुम्ह वुत्तंतु ॥

[२१५२]

सोमसिरि पुणु दुट्ठ-करि-वरह

तइं तइयहं छोडिय त्ति विसम-सरिण हम्मंत संपइ ।
तह चिट्ठइ कह-वि जह तसु सरूवु सेसु वि न जंपइ ॥
इह मह मुहिण सुणावियउ तुह भणियव्व-विसेसु ।
ता निय-पाणिग्गह-कवय- दाणिण आसासेसु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१५३]

तयणु सउरिण सा वि परिणीय
ता पुव्व-जम्मह वसिण तेसि जाउ पडिवंधु अ-सरिसु ।
अह निसुणिवि निय-खयर- मुहिण सयलु वुत्तंतु एरिसु ॥
चित्तंगय-खयराहिवइ- सुय-माणसवेगेण ।
सुत्तइ सउरिहिं सोमसिरि रयणिहिं हरिवि हढेण ॥

[२१५४]

नीय निय-पुरि सिरिसुवन्नाभि
तयणंतरु वेगवइ नाम भइणि नियइल्ल वुत्तिय ।
तह कहमवि भणसु जह एह हवइ मह चेव रत्तिय ॥
वेगवईए वि सा भणिय न-उण पवज्जइ किं-पि ।
विमल-सील-चिंतामणि वि न विराहइ ईसिं पि ॥

[२१५५]

अह परुप्परु जाउ पडिवंधु
अवरम्मि उ दिणि भणिय सोमसिरिहिं वेगवइ जह – सहि ।
सो जायव-सिरि-तिलउ कह-वि मज्झ आणेउ मेलहि ॥
अह जा गयणिण वेगवइ उज्जाणुवरि पहुत्त ।
ता विम्हय-रस-भरिय-मण विहसिय-मुह-सयवत्त ॥

[२१५६]

नियय-कंतिण विजिय-दिण-इंदु
निय-रूविण जिय-मयणु चत्त-पाण-भोयण-विलेवणु ।
अवलोइय सोमसिरि सोमसिरि ति जंपंतु पुणु पुणु ॥
ढुंढुल्लंतउ तहिं जि वणि सयल-महीयल-सारु ।
परिमउलिय-वयणंवुरुहु सु जि वसुदेव-कुमारु ॥

२१५९. ४. क. नह.
२१५५. ७. क. पहुत्तु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१५७]

तयणु मयणिण विहुर वेगवइ
किं को-वि करावडिउ फल-विसेसु वियरेइ अन्नह ।
परिणयणह विणु न पुणु हवइ दइय-संगमु सु कन्नहं ॥
इय चिंतिवि विज्जा-वलिण सोमसिरिहि रूवेण ।
तसु वसुदेवह सन्निहिहिं पयडीहूय खणेण* ॥

[२१५८]

ता वियासिय-वयण-तामरसु
वसुदेवु जंपइ – अहह सुयणु सुयणु कत्तो सि पत्तिय ।
इयरी वि समुल्लवइ अज्ज-उत्त हउं तइं विउत्तिय ॥
थक्किय इत्थ वि तिन्नि दिण कुल-देवयहं सकासि ।
मोणिण ओयाइउ कयउं जं तुह कइ मइं आसि ॥

[२१५९]

किंतु अज्ज वि किं-पि कायव्वु
परिचिट्ठइ तइं जि सह किं किमित्ति पुट्ठम्मि सउरिण ।
इयरीए समुल्लविउ हियय-मज्झि पसरिइण हरिसिण ॥
अज्ज-उत्त पाणिग्गहण- विहि करेवि पुणरुत्तु ।
सेवेयव्वउं विसय-सुहु तइं सहुं अज्ज निरुत्तु ॥

[२१६०]

अह तह च्चिय निविण विहियम्मि
कयली-हरि गंतु चिरु विसय-सुहइं सेवंति दोन्नि वि ।
गच्छंति य विलसिरहं तेसि तत्थ वासर दु-तिन्नि वि ॥
तयणु सहावावन्नयहं वेगवइहिं जह वुत्तु ।
साहिउ वसुदेवह पुरउ सयलु वि नियवुत्तंतु ॥

* क. ख. ग्रन्थाग्रं ५५००

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१६१]

अह ललंतउ तीइ सह सुइरु

अइवाहइ वासरइं   अवर-समइ रयणिहिं हरेविणु ।
परिखित्तु अगाह-जलि   सुर-नईए गयणिण निएविणु ॥
विहिहि निओएण उ पडिउ   खंध-देसि खयरस्सु ।
विज्ज-सिद्धि-कइ तहिं गयहं   चंडवेग-नामस्सु ॥

[२१६२]

तयणु तुट्ठिण तेण खयरेण

संलत्तउं – सप्पुरिस   सिद्ध विज्ज मह तुह पहाविण ।
इय मग्गसु दुल्लहु वि   जेण देमि तुह अइर-कालिण ॥
ता वसुदेविण तसु सविहि   नहयल-गामिणि विज्ज ।
गहिवि निवेइय-विहिहिं लहु साहिय कय-वहु-कज्ज ॥

[२१६३]

एत्थ-अंतरि दिव्व-आहरण-

देवंगिय-वत्थ-वर-   रूव-पढम-जोव्वणिहिं चंगिय ।
ससि-विमल-कला-निलय   पयडिहूय तसु इग नयंगिय ॥
तीइ हरिवि जायव-तिलउ   सिरि-वेयड्ढ-नगम्मि ।
अहरिय-अमरावइ-विहवि   अमियधार-नयरम्मि ॥

[२१६४]

नीउ अह तसु करिवि पडिवत्ति

सिरि-दहिमुह-नामगिण   नहयरेण स जि नियय-भइणिय ।
संखेविण दिन्न अह   सउरिणा वि सा तरुणि परिणिय ॥
पत्तावसरिण पुणु पुरउ तसु जंपिउ खयरेण ।
जह विन्नत्ती सुणसु मह पसिउण एग-मणेण ॥

Jain Education International 2010_05   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

तहा हि—

[२१६५]

अत्थि एत्थ वि गिरिहिं दिवितिलय-
अभिहाणिण विस्सुयउं नयरु तत्थ हय-सत्तु-खेयरु ।
परिचिट्ठइ खयर-वइ पत्त-कित्ति नामिण तिसेहरु ॥
तस्स य केण-वि नहयरिण निम्मल-गुणहं निहाण ।
उवएसिय इह ससि-वयण मयणवेग-अभिहाण ॥

[२१६६]

तेण मग्गिय एह मह भइणि
निय-तणयह सुप्पगह हेउ न उण अम्हाण जणगिण ।
सिरि-विज्जुवेगाभिहिण तसु विइन्न तो फुरिय-कोविण ॥
वंधेवि हढिण तिसेहरिण नीउ जणउ अम्हाण ।
अम्हे वि-हु तसु भय-विहुर इह आगया पलाण ॥

[२१६७]

ता पसीउण कुणसु नर-रयण
निक्कारण-कारुणिय वंध-मोक्खु अम्हाण जणयह ।
गिण्हेसु य आउहइं मंत-सिद्ध खय-कर विवक्खहं ॥
अम्ह अउन्नहं कुल-कमिण समुवागयइ इमाइं ।
तुह चिर-संचिय-सुह-भरहं वंछियत्थ-जणयाइं ॥

जहा —

[२१६८] वंभसिरं नामत्थं अग्गेयं वारुणं च माहिंदं ।
जसदंडं ईसाणं वायव्वं वंध-मोक्खं च ॥

[२१६९] सल्लुद्धरणं वण-रोहणं च उच्छायणं च लोगस्स ।
हरणं छेयणमुज्जिभणं च सव्वत्थ-छेयं च ॥

२१६७. ३. क. ख. वंद; ७. ख. °गयई.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१७०] एयाइं अन्नाणि वि दिन्नाइं सुभूम-चक्किणा जाइं ।
ससुरस्स मेहनायस्स ताइं सयलाइं सत्थाइं ॥

[२१७१] जायव-कुल-गयणंगण-मंडण पव्वण-विहावरी-रमणो ।
दहिमुह-नहयर-पुरओ गिण्हइ जह-भणिय-विहि-पुव्वं ॥

[२१७२] अह दहिमुह-पमुहेणं नहयर-निवहेण परिवुडो चलिओ ।
वसुदेवो य खणेणं दिवितिलय-पुरम्मि ॥

[२१७३] अह तेण सत्तुणा सह जायं समरं तहिं महाघोरं ।
माहिंदत्थेण सिरं छेत्तुं च तिसेहर-निवस्स ॥

[२१७४] मोयाविउं समप्पइ पुत्ताणं विज्जुवेगमह सउरी ।
भुंजेइ सयं रज्जं तत्थ समं मयणवेगाए ॥

[२१७५] जाओ य अणाहिट्ठी नाम सुओ महियलम्मि विक्खाओ ।
अवरावसरे सिद्धाययणे वंदेउ जिण-इंदो ॥

[२१७६]

नियय-दइयहं समगु वसुदेवु

जा पत्तउ निय-नयरि ताव कह-वि सुप्पणहि-नामिण ।
भइणीए तिसेहरह नयरु सयलु जालिउ खणद्धिण ॥
अवहरिऊण य रायगिह- पुरह वहिम्मि विमुक्कु ।
सउरि-कुमरु अह ससि-विमल-कलहं कलावि अ-चुक्कु ॥

[२१७७]

गंतु सालहं जूययाराण

परिकीलिवि कं-चि खणु कोडि एग कणयह जिणेप्पिणु ।
वियरेविणु मागहहं निव-विहीए भोयणु करेप्पिणु ॥
जा परिकीलइ कं-चि खणु ता तसु पुरह पहुस्सु ।
परिसाहिउ नेमित्तिइण जह तुह नाह अवस्सु ॥

२१७३. १. क. तहि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१७८]

मरणु हविहइ सउरि-नंदणह

हत्थेहिं ता नरवरिण नियं-नरेहिं निरु संगहाविवि ।
मोयाविउ गिरिवरह गरुय-सिहरि एगहं चडाविवि ॥
निवडंतउ पुणु अद्ध-पहि झल्लिवि वेगवईए ।
निउ हिरिमंति सु-तित्थि वर- संगमि पंच-नईए ॥

[२१७९]

ता पयंपिउ पुरउ तसु – नाह

तुह वइयरु सयलु मई मुणिउ निय-विज्जाणुहाविण ।
अज्जं तु नहंगणिण वच्चिरीए हय-विहि-निओइण ॥
काउस्सग्गिण ठिउ महिहिं अक्कमियउ मुणि एगु ।
तयणु पलीणउ सयलु मह विज्ज-सत्ति-अइरेगु ॥

[२१८०]

इय अ-सक्किर नहिण वच्चेउ

परिचिट्ठहुं धरणि-गय जाव ताव तुहुं इत्थ मिलियउ
वसुदेवु वि अणुक्कमिण गयउ तावसासमि स-दइयउ ॥
अह अन्नय सह भारियहं सरियह तीरि पहुत्तु ।
नाग-पास-बद्धउं नियइ तरुणी-रयणु रुयंतु ॥

[२१८१]

अह गहेविणु वेगवइ पुच्छ

परिछिंदिवि वालियह नाग-पास वसुदेव जंपइ ।
नणु सुंदरि को णु इहु वइयरु त्ति मह कहसु संपइ ॥
अह दीहुण्हुस्सास-वस- परिसुसंत-अहरिल्ल ।
वसुदेवह सविहिहिं कहइ दुहइं सयल नियइल्ल ॥

२१७९ ६. क. काउसग्गिण.

जहा—

[२१८२]

धरणि-मंडणि गिरिहिं वेयड्ढि
सिरि-गयणवल्लहि नयरि　विनमि-निवइ-वंसम्मि वहुइहिं ।
उदिओदिय-परक्कमिहिं　अइगएहिं खयरिंद-तणइहिं ॥
संजायउ खयराहिवइ　विज्जुदाम-अभिहाणु ।
तेण य गच्छंतिण नहिण　उवसम-लच्छि-निहाणु ॥

[२१८३]

काउसग्गिण ठियउ मुणि एगु
उवसग्गिउ वहु-विहिहिं　तयणु तस्सु उवरिम्मि रुट्ठिण ।
धरणिंदिण अवहरिय　विज्ज-सत्ति सयल वि पउट्ठिण ॥
ता खयरिंदिण अणुणइउ　लग्गिवि पय-पउमेसु ।
जंपइ धरणाहिवइ जह　केसु वि मंत-पएसु ॥

[२१८४]

तुज्झ कुलह वि सिद्धि हविहइ
न उ रोहिणि-पमुह-गुरु-　विज्ज-विसइ इय भणिवि पुणु पुणु ।
धरिणिंदु स-ठाणि गउ　विज्जुदाढ-खयराहिवो उणु ॥
चिट्ठइ निय-दुक्कय-हयउ　आणिय-स-कुल-कलंकु ।
वालचंद-अभिहाण पुणु　हउं तसु धूय अ-संकु ॥

[२१८५]

मुणिय-लक्खण-छंद-साहिच्च-
सर-नट्ट-वाइत्त-विहि　गहिय-विज्ज-वर-मंत-सत्थय ।
आराहिय-गुरु-चलण　समुवलद्ध-असमाण-विज्जय ॥
जा परिसीलहुं विज्ज-विहि ताव नाग-पासेहिं ।
वंधेविणु हउं विहुर-तणु　कय भुयगह पासेहिं ॥

२१८२. ४. क. ख. पक्कमिहिं.
२१८५. ३. क. गहिए.

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[२१९४]

देवु धम्मु वि गुरु वि पर-भवु वि
अ-गणंतउ भणिउ मइं भद्द भद्द करि धम्म-कम्मइं ।
मा निवडिवि भव-गहणि सहसि दुहइं न लहसि य सम्मइं ॥
ता जंपिउ पाविण इमिण अ-वियाणिय-तत्तेहिं ।
किं वा मोहिउ सुह-मिसिण तं पि हु पहु धुत्तेहिं ॥

[२१९५]

नत्थि धम्मु वि न य अहम्मो वि
नो सुकय न दुक्कय वि ता किमित्थ गुरु-देव-धम्मिहि ।
परिचिट्ठइ जगु सयलु पंच-भूय-समुदाय-कम्मिहिं ॥
जा जीविज्जइ ता सुहिण नत्थि मरण-समु सत्तु ।
इंगालीभूयह मयह जियह पुणागमु कत्तु ॥

[२१९५]

इय पयंपिरु विविह-जुत्तीहिं
पडिसिट्ठु वि न-वि मुयइ जाव कह-वि कुग्गहु नियल्लउ ।
निद्धाडिउ ताव मइं एहु जइ वि अइ-खरउ भल्लउ ॥
तेणं चिय वइरिण इह वि एयह छिन्नउ पाउ ।
तारिस-कम्मिण पुणु असुरु लोहियक्खु इहु जाउ ॥

[२१९७]

इय सुणंतह लोहियक्खस्सु
संमत्त-चिंतारयणु जाउ तम्मि देसम्मि पत्तह ।
सेट्ठी वि सुणेवि इहु सुमरणत्थु स-महिस-चरित्तह ॥
कारावइ विच्चिवि दविणु तिण्णि देव-हरयाइं ।
महिसु ति-खुरु एगइं अवरि मिगधय-मुणि-रूवाइं ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२१९८]

देवउलियहि पुणु तइज्जाए
मज्झम्मि काराविययउं　　नियय-रूवु सह ति-खुर-महिसिण ।
अवलोएऊण पुणु　　ताइं तिन्नि देवउल सउरिण ॥
पुट्ठउ कसु वि तहाविहह नरह सविहि वुत्तंतु ।
तेण वि साहिउ तसु पुरउ सयलो वि-हु पुव्वुत्तु ॥

[२१९९]

तह पयंपिउ एहु वंसम्मि
तसु सेट्ठिहि हुयउ इह कामदत्त-अभिहाणु वणि-वरु ।
वंधुमई नाम तसु　　धूय अत्थि अह मयण-मंदिरु ॥
वत्तीसहिं दढ-अग्गलहिं अग्गलियउं जो को-इ ।
उग्घाडेइ कहं-चि सु जि वंधुमइं परिणेइ ॥

[२२००]

इय निवेइउ अत्थि एगेण
नेमित्तिय-माणविण　　सुणिवि एहु वसुदेवु सायरु ।
उग्घाडइ तक्खणि वि　　निय-करेहिं तं मयण-मंदिरु ॥
एत्थंतरि तहिं आगयउ　　मयणह पूयण-हेउ ।
सो च्चिय वणि-वरु कु सु कुमरु कामएव-कुल-केउ ॥

[२२०१]

तयणु सउरिहि दिन्न निय कन्न
तेणावि महा-महिण　　सा तहेव तत्थेव परिणिय ।
वंसम्मि मिगधयह　　एणिपुत्तु हुउ तसु वि जणणिय ॥
स-कइण जलणप्पह-सुरह घरिणित्तिण संजाय ।
तीए पसाइण निवह तसु अ-पयट्टंत-अवाय ॥

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[२२१०]

कंठ-कंदल-लुलिर-नर-मुंड
पुरिसट्ठि-मालिय-विहिय- सयल-अंगुवंगिल्ल-मंडण ।
वसुदेविण वाल इग दिट्ठ तयणु संभंत-नयणिण ॥
पुच्छिय तावस जह किह णु एरिस वालिय एह ।
चिट्ठइ रूविण एरिसिण इय पसिऊण कहेह ॥

[२२११]

ता पयंपिउ वुड्ढ-तावसिण
एगेण – महा-पुरिस एय अत्थि गरुयर कहाणिय ।
तह वि-हु सुणि एग-मणु जह कहेमि हउं जह वियाणिय ॥
सिरि-जरसंध-नराहिवइ- कुल-नहयल-ससिलेह ।
नंदिसेण-अभिहाण सिरि- जियसत्तुहु पिय एह ॥

[२२१२]

कवड-वेसिण कूड-विज्जेण
परिवायग-माणविण किण-वि कह-वि चिट्ठइ वसीकय ।
ता अवगय-वइयरिण निविण हणिउ सो एह इहागय ॥
एवं-विहु भूसणु करिवि परिवायग-अट्ठीहिं ।
चिट्ठइ सोय-जलाविलिहिं परिमिलाण-दिट्ठीहिं ॥

[२२१३]

अह खणेण वि सयलु वसियरणु
उत्तारिउ वालियह नियय-सत्ति-जोगेण सउरिण ।
वसुदेवु वि तहिं धरिउ तवसि-जणिण कय-साहुकारिण ।'
ता जियसत्तु-नराहिविण अवगय-वुत्तंतेण ।
सद्दावेविणु सउरि निय- मंदिरि स-निउत्तेण ॥

२२१३. ४. क. धरि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२१४]

देइ स-वहिणि केउमइ-नाम

पसरंत-महूसविण सुइ-मुहुत्ति हरिवंस-तिलयह ।
अह डिंभग-नामभिण *नरिण पुरउ जियसत्तु-रायह ॥
जंपिउ जह – जिण विथरियउं जीविउ तुज्झ पियाए ।
निय-कुल-नहयल-ससिपहह नंदिसेण-नामाए ॥

[२२१५]

सो जयस्सु वि परम-उवयारि

अ-विलंविण पेसवसु सन्निहाणि जरसंध-निवइहि ।
अह कंचण-रहि चडिवि चलिउ सउरि जा ताव सुहडिहि ॥
भणिवि – जरासंधेण तुहुं अज्जु वज्झु आणत्तु ।
परिवेढेविणु चउ-दिसिहिं असिहिं हणिउमाढत्तु ।

[२२१६]

तयणु पभणिउ भडिहिं जियसत्तु-

नरनाहह जह – किह णु एहु वज्झु आणत्तु देविण ।
अह जंपहि इयर जह कहिउ पहुहु नेमित्ति-पुरिसिण ॥
को-वि जु करिहइ सज्ज-तणु नंदिसेण तुह धूय ।
तसु नंदण तुह होहिसइ नूण कयंतह दूय ॥

[२२१७]

इय सुणेविणु मुणिय-निय-धूय-

वुत्तंतिण आयरिण पत्थुयत्थि जरसंध-निवइण ॥
आणत्ता अम्हि इय निहणियव्वु इहु अज्जु अइरिण ॥
एत्थंतरि पेक्खंतह वि तहं सयलहं वि भडाहं ।
अवहरिऊण [पहावइहि] नीउ मज्झि खयराहं ॥

* The portion from 2214. 5 to 2218- 4 is dropped in ख.

२२१७. ८. The letter between पहाव and हं. is wiped out in क. i. e. it is पहाव×हं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२१८]

अमर-मंदिर-रिद्धि-चोरम्मि

सिरि-गंधसमिद्धि पुरि दलिय-सयल-रिउ-राय-दप्पह ।
गंधारपिंगल-निवह सन्निहाणि नियय्स्सु वप्पह ॥
तेण वि आणंदिय-मणिण सुह-मुहुत्ति निय-कन्न ।
सा पसरंत-महूसविण सउरि-कुमारह दिन्न ॥

[२२१९]

अह ललंतउ तीए सह दट्ठु

वसुदेवु देव्वह वसिण सुप्पगेण तेणेव पाविण ।
हरिऊण गोदावरिहि नइहि तीरि परिखित्तु वेगिण ॥
इयरो वि-हु तरिऊण नइ सज्जण-कमल-सरम्मि ।
सुकय-सेन्न-परिवारियउ गउ कोल्लाग-पुरम्मि ॥

[२२२०]

तत्थ पुण सिरि-पउमरह-राय-

कुल-गयण-मयंक-पह पउम-वयण पउमसिरि-नामिय ।
परिणेइ महा-महिण सउरि-कुमरु निय-जणय-दिन्निय ॥
अह चंपा-सरवरि खिविउ हरिवि नीलकंठेण ।
तत्थ वि परिणइ निव-दुहिय सलिलु तरिवि हरिसेण ॥

[२२२१]

अह तिसेहर-सुइण तेणेव

सामरिसिण सुप्पगिण पुण-वि हरिवि सुर-सरिहिं खिवियउ ।
तत्तो वि-हु उत्तरिवि गुरु-अरन्नि पल्लीए सु गयउ ॥
तत्थ वि परिणइ पल्लिवइ- कन्नय जराकुमारि ।
तीए सह वट्टइ विसय- सुह-रसि पंच-पयारि ॥

२२१८.७. क. सुहु.

२२१९. १. क. ललंत; ८. क. परिवारिउ.

२२२१. ३. क. पुणहि. ७. क. कन्न.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२२२]

कमिण जायउं तीए सुय-रयणु
नामं च विइन्नु तसु जरकुमारु इय जगि पसिद्धउं ।
वसुदेविण पुणु भुवण- भरण-दक्खु जसु पउरु लद्धउं ॥
अह अवंतिसुंदरि तयणु सूरसेण हरिणच्छि ।
ता निव-कन्नय जीवजस वीवाहेइ मयच्छि ॥

[२२२३]

एम्व वहुविह-सेट्ठि-सत्थाह-
सामंत-नराहिवइ- खयरराय-कन्नय-सहस्सइं ।
परिणंतु अरिट्ठपुरि पत्तु दिसिहि भामिरु स-जस्सइं ॥
तत्थ य तइयहं आसि सिरि- रुहिर-नामु नर-राउ ।
तस्स उ मित्ता नाम पिय तेसिं पुणु संजाउ ॥

[२२२४]

सुकय-जोगिण सुउ हिरण्णाभ-
अभिहाणिण विस्सुयउ तह अणेग-गुण-रयण-धरणिय ।
नीसेस-कला-कुसल रोहिणि त्ति अभिहाण कुमरिय ॥
कयइ सयंवर-मंडवइ • तसु कुमरिहि पाउग्गि ।
मिलियइ सिरि-जरसंध-निव- पमुहि नराहिव-वग्गि ॥

[२२२५]

गुरु-कुऊहल-वसिण कय-रूव
परिचत्तु आउज्जियहं मज्झि होउ करि पणवु वेप्पिणु ।
जा वायइ सउरि वहु- विहिहिं सुरहमवि मणु गहेप्पिणु ॥
ता तत्थागय रंभ-रइ- लच्छिहिं सोह हरंत ।
सा रोहिणि कन्नय वि दिह- सहि-विंदिण सोहंत ॥

२२२५. ७. ख सियह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२२६]

अह पुर-ट्ठिय-अंवधाईए

सव्वे वि नरिंद-सुय रोहिणीए पिहु पिहु निदंसिय ।
न-उ कत्थ-वि रोहिणिहिं निव-कुमारि दिट्ठि वि निवेसिय ।।
एत्थंतरि पणवह रविण हरि-वंसह सिरि-केउ ।
गाढ-चमक्किय-विवुह-मणु पढइ फुडक्खरु एउ ।।

जहा—

[२२२७]

हरिण-लोयणि तुरिउ आगच्छ

पेच्छेसु निद्धिच्छणिहिं मज्झ एहु सम-विडवि सहलसु ।
तुह संगम-समूसुयउ लोउ एहु इय निरु निहालसु ।।
अह जा तं रोहिणि नियइ ता तसु तहिं तह लीण ।
दिट्ठि कहं-चि वि जह हवइ वालिज्जंती वीण ।।

[२२२८]

तयणु लोयण-कहिय-मग्गेण

सा वाल सउरिहि सविहि गइय गरुय-अणुराय-विहुरिय ।
तयणंतरु पुर-अररि- गुरु-उरम्मि तसु स वर-मालिय ।।
तीए तह परिखित्त जह वियलिय-कज्ज-वियार ।
खण-मित्तेण वि हुय सयल वसुहाहिवइ-कुमार ।।

[२२२९]

भणहिं पुणु परिफुरिय-आडोव

सविहम्मि रुहिरह निवह अहह किह णु तं-पि-हु उवेक्खसि ।
सरिया इव नीय-गइ दुहिय अहव कि न कु वि पेक्खसि ।।
जइ वा वहुइण किमियरिण इमहं नरिंदह मज्झि ।
वियरसु कसु वि नराहिवह दुहिय म विहलु वियुज्झि ।।

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२३०]

इय भणंत वि के-वि निंदंति
तं तरुणी-रयणु कि-वि अवगणंति जायव-विहूसणु ।
कि-वि हीलहिं रुहिर-निबु देंति के-वि सयलहं वि दूसणु ॥
एत्थंतरि सउरिण भणिउ किं इह रंडा-राडि ।
हवइ परिक्ख भडाहं नणु पविसंतह रण-वाडि ॥

[२२३१]

इय सुणेविणु कसु-वि जइ अत्थि
सामत्थु किं-चि वि भडह ता गहेवि करवालु हत्थिण ।
सु जि पयडीहवउ मह सविहि किं नु सुत्थयहं सत्थिण ॥
भुय-दंडेसु जि वहइ वलु भडहं न-उण वायाए ।
इय सउरिहिं वयणइं सुणिवि तुट्टइ तहि विलयाए ॥

[२२३२]

कोव-कंपिर-काय नर-राय
सव्वे-वि-हु सन्नहिवि ढुक्क दप्प-दट्टुट्ठ-पल्लव ।
वसुदेव-रुहिरा वि तहं समुहिहूय तङ्कविय-सेल्ल व ॥
एत्थंतरि दहिमुह-खयरु निय-रहवरु गिण्हेवि ।
वेगवइ वि अंगारवइ- सहिय विलंवु चएवि ॥

[२२३३]

पत्त सउरिहि सविहि अह देव्व
कोदंड तूणीर सर वियरिऊण जंपंति अइरिण ।
रह-रयणि समारुहिवि दलसु दप्पु सयलहं वि वइरिण ॥
तयणु करेविणु सारहिउ दहिमुहु खयर-कुमारु ।
सयमारुहिउण रह-रयणि सो जायव-कुल-सारु ॥

२२३१. ९. क. तुट्टह.

२२३२. ८. क. वेगवइहि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२३४]

रुहिर-नरवइ-विहिय-साहज्जु

समरंगणि पविसिउण दलइ दप्पु वहु-लक्ख-संखहं ।
कर-कलिय-महाउहहं समरि समुहु एंतहं विवक्खहं ॥
किं पुण रुहिर-नराहिवइ गंजिउ किं-चि परेहिं ।
अह एगागि वि सउरि पर- वलि वरिसेइ सरेहिं ॥

[२२३५]

ता खणेण वि घण व पवणेण

वसुदेविण एगिण वि विमुह विहिय रिउ-राय सयलि वि ।
अह गरुय-मडप्फरिण स-वलु सत्तुजय-निवइ वालिवि ॥
जंपइ वसुदेवह पुरउ अरि अरि रणि म मरेसु ।
मह वयणेण वि गंतु घरि जणणिहिं हरिसु करेसु ॥

[२२३६]

तयणु जोइवि समुहु स-विलासु

ईसीसि विहसिवि सउरि भणइ अहह एरिसिहि वयणिहि ।
तुहुं मेइणि-नाह धुवु रंजवेसि मणु नियय-घरिणिहि ॥
रंजिज्जंति भडाहं मण पुणु पुरिसक्कारेण ।
वाइण मग्गण विवुह पुणु अणह-वयण-पसरेण ॥

[२२३७]

इय पयंपिर दो-वि रण-वीर

जुज्झंति उज्झिय-करुण वहु-वियप्पु किं पुण खणद्धिण ।
वसुदेविण हणिउ रिउ पत्त-कित्ति गुरु-गुण-समिद्धिण ॥
अह पयडिय-अमरिस-पसरु दंतवक्क-नरनाहु ।
पविसइ सह सउरिण समरि पउरिण वलिण सणाहु ॥

२२३५. ५. सवल; रालिवि

२२३६. ४. क. तुंहु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२३८]

किंतु तिण सु विगलिय-संरंभु
गुसुमूरिय-समर-रसु तसिय-चित्तु संपत्त-अवजसु ।
संगहिउण निय-करिहिं खिविउ महिहिं उत्तसिय-माणसु ॥
तयणंतरु उट्ठिउ सयल- दुज्जण-माणस-सल्लु ।
तसु वसुदेवह सम्मुहउ कुविउण नरवइ सल्लु ॥

[२२३९]

तयणु सउरिण सो वि विद्दविउ
अच्चंत-महल्लउ वि वण-करि व्व केसरि-किसोरिण ।
अह मगहाहिविण जरसंध-निविण गुरु-खोह-पसरिण ॥
आइट्ठउ तिण सहुं समरि समुद्दविजय-धरणिंदु ।
अह रवि-उदयम्मि व सउरि वियसिय-मुह-अरविंदु ॥

[२२४०]

करि धरिप्पिणु दिव्वु कोदंडु
संधिप्पिणु दिव्वु सरु दलिवि दप्पु तसु वलह सयलह ।
साणंदु समुल्लवइ सविहि समुद्दविजयह भुवालह ॥
जइ – वसुहाहिव किं इमिहिं कीडय-सम-सत्तेहिं ।
चल्लि-न अब्भिडहुं दुवि वि निय-निएहिं गत्तेहिं ॥

[२२४१]

अह रणंगणि दो वि वग्गंति
पहरंति दो-वि-हु सुइरु पुरिसयारु दो-वि-हु पयंसहिं ।
रंजंति सुहडहं मणइं दो-वि दो-वि निट्ठुरउं भासहिं ॥
किं पुण पहरइ निक्करुणु समुद्दविजय-नरनाहु ।
वसुदेवो उण तसु जि सर छिंदइ अकयावाहु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२४२]

कमिण पुणु सर समुदविजयस्सु
सव्वे-वि पहीण अह जाय-गरुय-वेलक्खु निवइ सु ।
अवलोइवि निय-हियय- नीहरंत-नीसेस-अमरिसु ॥
पच्छुत्ताव-दवानलिण परिउज्झिर-सव्वंगु ।
पुव्व-लिहिय-अक्खरु मुयइ सरु जायव-कुल-चंगु ॥

[२२४३]

तह जहा तसु समुदविजयस्सु
पय-अग्गिय निवडियउ तयणु तेण विम्हइय-हियइण ।
अवलोइय-अक्खरिण संगहेवि सरु नियय-पाणिण ॥
समुदविजय-नरनायगिण पढमु विभाविय-चित्ति ।
अह वाइय गहिर-स्सरिण एरिस अक्खर-पंति ॥

जहा —

[२२४४] तुम्ह कणिट्ठो भाया छलेण जो निग्गओ अहेसि घरा ।
सो वरिस-सयाओ इह आगंतु नमेइ वसुदेवो ॥

[२२४५]

अहह जायव-वंस-जस-कलस
नर-रयण विउज्झिउण हवइ कत्थ सामत्थु निरुवमु ।
इय चिंतिरु पुणु पुणु वि समुदविजय नरवइ स-संभमु ॥
उत्तरिउण निय-रहवरह चलिउ समुहु सउरिस्सु ।
इयरु वि नियय-सरूव-धरु स-हरिसु गुरु-वंधुस्सु ॥

[२२४६]

सविहि वेगिण गंतु पय-पउम
पणमिप्पिणु भत्ति-भरु भणइ – भाय मरिसेज्ज सयलु वि ।
लहु-वंधुहु दुव्विणउ समुदविजउ पुणु भणइ विहलु कि ॥
मह वंधव जयवंतु हुउ तुह दंसणि रण-रंगु ।
दुव्विणउ वि जइ खलहं परि मउ अ-लद्धु तुह संगु ॥

२२४६. ७. क. तुहु. ख. तुहं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२४७]

इय निरिक्खिवि रुहिर-नरनाह-

पमुहाखिल-निव-निवह हरिस-भरिण मायहिं न पुहइहिं ।

तरुणी इव सउरि-गुण- रयण-माल धारहिं स-हियइहिं ॥

मागह-गणु पुणु गुण-लवु वि लेइ न इयर-भडाहं ।

जंपहिं सज्जण जह – चडइ को-इ न सउरि-वडाहं ॥

[२२४८]

तयणु सउरिण गरुय-हरिसेण

असमाण-महूसविण तरुणि-रयणु रोहिणि विवाहिय ।

संपत्तावसरु निय- सुह-दुहाइं भायहं पसाहिय ॥

अवरो उण नरवइ-निवहु निय-निय-ठाणि पहुत्तु ।

रुहिरवरोहिण सउरि ठिउ तहिं रोहिणि-संजुत्तु ॥

[२२४९]

अवर-अवसरि सुकय-जोगेण

चत्तारि महा-सिविण नियवि निसिहिं सहसत्ति उट्ठिय ।

सिरि विरइय-पाणि-पुड कहइ देवि दइयस्सु तुट्ठिय ॥

सउरी उण पभणइ – सुयणु निय-कुल-नहयल-चंदु ।

हविहइ तुह नंदण-रयणु सुयण-भमर-अरविंदु ॥

इओ य—

[२२५०]

आसि कत्थ वि पुर-विसेसम्मि

दो वंधव सरिस-सुह- दुक्ख सुदढ-नेहाणुवंधय ।

अवरम्मि दियहि गय काणणम्मि ता गहिय-कट्ठय ॥

सगडारूढ गिहागमिर मग्गि महोरगि एग ।

गंडाहर-निवडिय नियहिं दो-वि ति विसम-विवेग ॥

२२४७. ३. क. पुइहिं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२५१]

तयणु जेट्ठिण भणिउ – अरि रक्खि

सुह-सुत्त महोरगिणि ता कणिट्ठु पभणेइ – निसुणहि ।
कसरक्कउ जारिसउ हवइ चक्क-चंपियहि एयहि ॥
चोएइ य संदण-वसह तह जह कसरक्केण ।
चक्किऊण चंपेविणु निहय झत्ति महोरगि तेण ॥

[२२५२]

अह तहाविह-स-कय-जोगेण

एगम्मि महा-नयरि उरगि पवर-सेट्ठिस्स कन्नय ।
संजाय जोव्वण-समइ तिण वि पवर-वणियस्सु दिन्नय ॥
ते-वि-हु तेसिं वि-य ललिय- गंगएव-अभिहाण ।
जाया दो-वि-हु अंगरुह नियं-सुह-असुह-निहाण ॥

[२२५३]

किंतु जेट्ठउ तणउ तहिं इट्ठु

अच्चंत-अणिट्ठु लहु इय स जयइ तसु हणण-कज्जिण ।
इय मुणिउण दूरयरि घरि विमुक्कु तो नेउ जणइण ॥
अवरम्मि उ वासरि हुयइ गरुयइ पव्व-विसेसि ।
पिउ-वयणिण उवविसिवि निय-मंदिर-दार-पएसि ॥

[२२५४]

गंगएवु सु जाव भुंजेइ

ता जणणिहिं सच्चविउ तयणु पुव्व-भव-भावि वइरिण ।
निस्सारिउ अमरिसिण धरिवि पइहि निय-घरह दारिण ॥
अक्कोसिउ नाणा-विहिहिं निहणिउ विविह-पयारु ।
एत्थंतरि तहिं आगयउं मुणि-जुयलउं जय-सारु ।

२२५१. ८ क. नियह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२५५]

तयणु जणइण जिट्ठ-वंधुण वि
मुणि एगु नमंसिउण पुट्ठु – कहसु केरिसिण वइरिण ।
इह एयह सुयह निरु अवगरेइ एरिस-पयारिण ॥
तयणु नाण-दिणयरु सु मुणि साहइ तेसि अ-सेसु ।
पुव्व-जम्म-संचिउ दुसह- वइयरु वइर-विसेसु ॥

[२२५६]

अह ति वंधव दो-वि दढ-नेह
वेरग्गिण तेण तहि मुणिहि सविहि निक्खंत तक्खणि ।
वट्टंति य एगग्ग-मण चरणि जणिय-सिवमग्ग-सम्मणि ॥
अह दोहग्गिण दूमियउ गंगएवु अंतम्मि ।
कुणइ नियाणउं जय-असम-सोहग्गह विसयम्मि ॥

[२२५७]

आउ-कम्मह अंति ते दो-वि
मरिऊण महिड्ढि सुर हूय तयणु सुकयाणुहाविण ।
उवभुंजिवि तियस-गिह- उचिय-सुहइं निय-ठिइहिं अंतिण ॥
रोहिणि-कुक्खिहिं अवयरिउ सिविणुवलंभ-खणम्मि ।
ललिय-तियसु अणुकमिण पुणु निरुवम-लग्ग-दिणम्मि ॥

[२२५८]

ललिय-लक्खणु दित्त-कंतिल्लु
निय-वंसह जस-कलसु तणय-रयणु पसवेइ रोहिणि ।
समयम्मि य नंदणह नाम-करण-महिमाए कारणि ॥
सद्दावेविणु सुहि-सयण पयडिवि तहं सम्माणु ।
रामएवु इय विस्सुयउं दिण्णु सुयह अभिहाणु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२५९]

अवर-वासरि वाल-चंदाए

पुव्वोइय-वालियइ धणमइ त्ति नहयरि पठाविय ।
तसु जायव-कुल-गयण- ससिहि सविहि वेगेण आविय ॥
भणइ य जह – तइयहं ज तइं तोडिय-नाग-प्पास ।
वालचंद-नामिय-खयरि किय कय-जीविय-आस ॥

[२२६०]

सा भणावइ वेगवइ-सहिय

आगच्छह पहु पसिय को-वि कालु वेयड्ढ-सिहरिहिं ।
पुरि गयणवल्लहि तयणु भणिउ निविण सह खयर-कुमरिहिं ॥
नहयल-मग्गिण आगयउ सउरि-कुमारु खणेण ।
तयणंतरु खयराहिविण सिरि-कंचणदाढेण ॥

[२२६१]

नियय-कन्नय वालचंद त्ति

तसु वियरिय आयरिण तयणु वेगवइ-वालचंदहिं ।
सह रयण-विमाण-ठिउ पढिय-कित्ति वहु-वंदि-विंदहिं ॥
परिगिण्हइ पसरंत-वहुविह-गुण-रयण-निहाण ।
सिरि-दहिमुह-नहयर-भइणि- मयणवेग-अभिहाण ॥

[२२६२] तो सीहदाढ-धूयं नीलजसं असणिवेग-सुय-सामं ।
गिण्हइ पियंगुसुंदरि-वंधुमईओ य सावत्थि ॥

[२२६३] निव-सोमदत्त-धूयं महापुरे गिण्हए य सोमसिरिं ।
इलवद्धणम्मि नयरे सत्थाह-सुयं च रयणवइं ॥

[२२६४] भद्दिलपुरम्मि पुंडं जयपुर-नयरम्मि आससेणं च ।
सालगुहा-पउमसिरिं कविलं पुण वेयसाम-पुरे ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२६५] वणि-दुहिय-मित्तसेणं अयलग्गामम्मि गिण्हए तत्तो ।
तिलसोस-संनिवेसे गिण्हइ कन्नाणं पंच-सए ॥

[२२६६] गिरितड-गामे गिण्हइ सोमसिरिं वच्चए तओ चंपं ।
गंधव्वसेण-भज्जं अमच्च-धूयं च गिण्हेइ ॥

[२२६७] सुग्गीव-जसोग्गीवाण पुव्व-परिणीय दोन्नि धूयाओ ।
तत्थेव गिण्हिऊणं गओ पुरे विजयखेडम्मि ॥

[२२६८] सामं च विजयसेणं गिण्हिउं गिण्हए य केउमइं ।
पउमसिरिं कोल्लउरे तओ जरं पल्लि-नाहस्स ॥

[२२६९] तत्तो अवंतिसुंदरि-जीवजसा-सूरसेण-पमुहाओ ।
घेत्तूणं भज्जाओ रयण-सुवन्नय-समिद्धाओ ॥

[२२७०] उज्जोयंतो गयणं विज्जाहर-सेण्ण-परिगओ सउरी ।
सोरियपुरम्मि पत्तो परमाणंदेण वंधूणं ॥

[२२७१] वद्धावणयं विहियं गरुय-पमोएण जायवेहिं तओ ।
भज्जाहिं समं कीलइ सउरी कंसेण य पहिट्ठो ॥

[२२७२]

तयणु कंसिण महुर-नयरीए
वसुदेवु नेहिण नियउ तत्थ निच्चु कीलंति ते दु-वि ।
अवरम्मि उ दिणि सउरि कंस-निविण साणंदु पभणिवि ॥
परिणाविउ देवय-निवह कन्नय देवइ नाम ।
तसु वद्धावण-महि हुयइ परितोसिय-पुर-गाम ॥

[२२७३]

तहिं य अवसरि कंस-लहु-वंधु
अइमुत्तय-नामि रिसि पत्तु भमिरु गोयरिय-चरियहं ।
धवलहर-दुवारि अह समुहिहूय-भव-भावि-दुरियहं ॥
मइरा-मय-भर-पाडलिय- नयण सिढिल-धम्मिल्ल ।
ल्हसिर-नियंसण रणरणिरि- रसणावलि-सोहिल्ल ॥

२२६५. २. क. तिलसोस corrected as तिल्सेस; ख. तिलसोस.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२७४]

पवण-चंचल-कमल-दल-नयण
परिकंपिर-अहरदल- पाणि-पाय पीवर-पओहर ।
पिहु-जहण-नियंब-थल परिल्हसंत-उत्तरिय-अंबर ॥
कंठि विलग्गिवि जीवजस अइमुत्तयह रिसिस्सु ।
पभणइ – अवसरि आगयह मरहुं मरहुं दियरस्सु ॥

[२२७५]

गीय-वाइय कुणसु तुहुं अज्जु
हउं नच्चिसु तुह पुरउ इय भणंत कहमवि न विरमइ ।
न य कंठ-नालु विमुयइ जाव ताव महरिसि पयंपइ ॥
धिसि धिसि पाविणि जीवजसि जीए महि नच्चेसि ।
सत्तम-गब्भिण तीए तुहुं हय-जणय-प्पिय होसि ॥

[२२७६]

इय सुणंति विगलिय-मय-वेग
भय-कंपिर-पीण-थणवट्ठ मुइवि जीवजस महरिसि ।
परिसाहइ एहु सिरि- कंस-निवह अह सो वि अ-सरिसि ॥
भय-जलहिम्मि निवुड्ड-तणु सिरि-वसुदेवह पासि ।
जाइ तयणु सउरिण भणिउ कज्ज-विसेसु पयासि ॥

[२२७७]

ता पयंपिउ कंस-नरवरिण
वसुदेवह सविहि जह सत्त गब्भ देवइहि वियरह ।
अह अ-कहिवि देवइहि पत्थणत्थु अ-मुणेवि कंसह ॥
पडिवन्नउं कंसह वयणु वसुदेविण नीसेसु ।
एत्तो उण चिट्ठइ मलय- नामगु देस-विसेसु ॥

२२७७. ४. क. देवइवि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२७८]

तत्थ भद्दिलतिलय-अभिहाणि
नयरम्मि अ-मिणिय-द्विणु नागदत्त-नामोत्थि वणि-वरु ।
तसु उत्तिम-कंति-धर विणय-सील गुण-मणिहिं कुल-हरु ॥
जिणवर-धम्मुल्लसिय ससि- निम्मल-कित्ति-कलाव ।
सुलसा नाम अहेसि पिय परहुय-महुरालाव ॥

[२२७९]

बाल-कालि वि तीए पुणु कहिउ
केणावि निमित्तिइण जह – हवेसि तुहुं निंदु सुंदरि ।
तयणंतरु ससि-वयणि सा निसन्न एगत्थ जिण-हरि ॥
हरिणिगमिसि-सुरु मणि धरिवि ठिय काउस्सग्गेण ।
ता चल-कुंडल-आहरणु तहिं सु पत्तु वेगेण ॥

[२२८०]

भणइ – वंछिउ वरसु हरिणच्छि
ता सुलस समुल्लवइ निंदुयत्त-दुहु मह निहोडिसु ।
निंदुत्तणु विहिहि वसि तसु दुहाइं पुणु हउं वि फेडिसु ॥
अब्भुवगमिउण इय सुरु सु तह कहमवि-हु करेइ ।
जह देवइ सुलसा वि इग- दियहम्मि वि पसवेइ ॥

[२२८१]

तयणु सुलसह जाय-मित्ता वि
मय-नंदण अवहरिवि मुयइ नेउ देवइहि सविहिहिं ।
सुय तीए उण सुलस- सविहि नेइ निय-पाणि-पुडइहिं ॥
कंसु वि स-निउत्तय-नरिहिं मय-बालय आणेवि ।
उप्पायइ पुणु मणह सुहु सिलहं ति अप्फालेवि ॥

२२८१. ८. क. मह सुहु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२८२]

सुलस पुणु हरिणेगमेसेण
जीवाविय मज्झ सुय इय मुणंत परम-प्पमोइण ।
कीलावइ अंगरुह वड्ढमाण-बहुविह-विणोइण ॥
पत्तावसरु कलायरिय- चलण-मूलि चिट्ठंत ।
एए छस्संख वि कुमर पढहिं गुणिहिं उदयंत ॥

जहा –

[२२८३] नामेण अणीयजसो पढमो बीओ अणंतसेणो त्ति ।
तइओ य अजियसेणो अभिणय-नामो उण चउत्थो ॥

[२२८४] देवजस-सत्तुसेणो पंचम-छट्ठा य रूव-बल-कलिया ।
सिरि-वच्छंकिय-वच्छा पाविय-सप्पुरिस-माहप्पा ॥

इओ य –

[२२८५]

नियय-तणयहं मुहइं अ-नियंत
पेक्खंतिय पुत्तवइ विलय-सहस चिट्ठंत स-हरिसु ।
सिरि-देवइ-देवि निय- मणिण खेउ उव्वहइ अ-सरिसु ॥
झूरेइ य अप्पाणु जह हउं जि पाव जिय-लोइ ।
जा न मरहुं फुट्टिवि हियउं एरिसि तणय-विओइ ॥

[२२८६]

इय सु-दुस्सह-दुक्ख-पब्भार
आऊरिय-गल-सरणि गलिर-नयण जल-सित्त-वयणिय ।
कह-कहमवि उ अइगमइ कालु को-वि सा हरिण-नयणिय ॥
अवरम्मि अवसरि निसिहिं मज्झ-रत्त-समयम्मि ।
पेच्छइ सत्त महा-सिमिण सुह-निसन्न सयणम्मि ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं जहा—

[२२८७]

दरिउ कुंजरु फुरिउ हरि-पोउ

पसरंतउ जलणु जय- जंतु-जाय-मणहारि सुर-घरु ।
महु-लुद्ध-महुयर-नियरु पउम-संडु उदयंतु दिणयरु ॥
तयणु महल्लउ परिकणिर- किंकिणि-जाल-रवन्नु ।
पेच्छइ पविसिरु मुह-कमलि सयल-सिविण-मुहवन्नु ॥

[२२८८]

अह समुट्ठिवि कहइ सउरिस्सु

इयरो वि अत्थाणियहं उवविसेवि गुरु-हरिस-निब्भरु ।
निय-सिविण-पाढग-नरहं कहइ देवि-सिविणाण वित्थरु ॥
ते वि-हु एगचित्तिण हविवि परिभाविवि सत्थत्थु ।
साहहिं वसुदेवह सविहि एहु सिविण-परमत्थु ॥

[२२८९]

नाह हविहइ तुज्झ सुय-रयणु

भरहद्ध-वसुंधरह सामि-सालु संजमिय-दुज्जणु ।
जय-वज्जिर-जस-पडहु दुसह-तेउ सुहि-नयण-रंजणु ॥
अहवा किं इयरिण बहुय- विहल-वयण-जालेण ।
तुह हविहइ भुवणब्भहिउ नंदणु सुकय-फलेण ॥

[२२९०]

तयणु पमुइउ स-पिउ वसुदेवु

सुहि-सयण समुल्लसिय पगइ-लोगु अंगि वि न मायइ ।
सक्कारिय सिविण-वुह देवई वि निय-मणिण भायइ ॥
आयन्निवि सुय-रयण-गुण सरिवि कंस-वुत्तंतु ।
पेक्खिवि सत्त महा-सिविण तह रिउ-जणु आवंतु ॥

२२८७. १. सिमिण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२९१]

अह सु सत्तम-देव-लोगस्सु
चविऊण सुरिंद-समु गंगएवु देवइहि कुक्खिहिं ।
अवइन्नउ तयणु परिफुरिय-तेय चिंतेइ – अक्खिहिं ॥
जइ पेक्खिस्सइ वणिय-सुउ कंसाहमु सो पावु ।
ता हरिहइ मह अंगरुहु इहु चिर-परिचिय-गावु ॥

[२२९२]

जाइ वुड्ढिहिं पुणु विसेसयरु
सो गब्भु कंसाहमिण विहिय-रक्खु निय-भडिहिं दक्खिहिं ।
आसोय-सियट्ठमिहिं गयइ चंदि पुणु सवण-रिक्खिहिं ॥
उच्च-ट्ठाण-परिट्ठियइ सयल-ग्गह-चक्कम्मि ।
सोमग्गहिहिं निरिक्खियइ पुणु जम्मण-लग्गम्मि ॥

[२२९३]

पावएसु य गह-विसेसेसु
एक्कारसमम्मि पइ संठिएसु सव्वेसु रयणिहिं ।
सिरि-वच्छ-लंछिय-वियड- वच्छु सहिउ गुण-सहस-रयणिहिं ॥
पिसुण-पयासिय-दुव्विणय- तरु-उम्मूलण-दक्खु ।
पसवइ देवइ-देवि सुय- रयणु रूव-सहसक्खु ॥

[२२९४]

सूइ-कम्मु वि विहिउ भरहद्ध-
अहिवासिणि-देवयहिं तयणु रूवु पिक्खेवि तणयह ।
सद्दाविवि सउरि कय- कोवु भणिउ देवइहिं – वणियह ॥
कंस-हयासह तसु कि हउं मोल्लिण किरिणिय दासि ।
अहव कि कसु वि महाहवह तिण हउं रक्खिय आसि ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२९५]

खेत्त-वइरु व पत्त-वइरु व्व

मइं समगु चिट्ठेइ तसु गोत्तिओ व दाइउ व सो मह ।
अवरद्धउं किं व मइं अत्थि तस्सु हय-वणिय-जायह ॥
जाय जाय गिण्हिवि हणइ जं मह सुय सो एम्व ।
हम्महिं रण्णि नि-नायगहं पसुहु तणूरुह जेम्व ॥

[२२९६]

गरुय-विरिइ वि हय-विवक्खे वि

परियाणिय-वइयरि वि नियय-दइय-सम-सुक्ख-दुक्खि वि ।
एगम्मि वि सुय-रयणि किं न करुण कय सामि नु मइ वि ॥
अहव किमन्निण वित्थरिण एत्तिय करुण करेसु ।
एहु एगु सुय-रयणु मह गोउलि नेउ धरेसु ॥

[२२९७]

तयणु एरिसु जुत्तु जुत्तु त्ति

परिचिंतिरु जंपिरु वि सुत्ति कंस-परियणि समग्गि वि ।
अरिहंत-सिद्धहं करिवि थुइ-विसेसु उम्मग्गि लग्गिवि ॥
पाणि-पुडय-कय-सुय-रयणु सु सउण-साहिय-लाहु ।
अद्ध-भरह-देवय-धरिय- छत्तु सउरि नर-नाहु ॥

[२२९८]

पुरउ जलिरिहि कणय-दीविहिं

परिढलिरिहि चामरिहि कुसुम-पयरि मुच्चंति देविहि ।
गायंतिहि किन्नरिहि हरिस-वसिण पडिवन्न-सेविहि ॥
महुरह गोउरि जा गयउ ता चारय-रुद्धेण ।
उग्गसेण-निवइण सउरि दिट्ठउ विहिहिं वसेण ॥

२२९८. १. क. ख. जलरिहि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२२९९]

अह सु पुच्छिउ सवह-विहि-पुव्वु

किं दीसइ अच्छरिय- भूउ एहु ता सउरि जंपइ ।
जो ठविही निवइ-पइ पोट्टु संतु इह तइं जि संपइ ॥
सो वच्चइ इहु सुय-रयणु किंतु न एहु रहस्सु ।
साहेयव्वउं कसु वि तइं जिय-अंते वि अवस्सु ॥

[२३००]

तयणु अइरिण पुरह नीहरिवि

उत्तरिउण जउण-नइ गोउलम्मि गंतूण स-हरिसु ।
तह नंद-जसोययहं पासि मुयइ सुय-रयणु अ-सरिसु ॥
किंतु सउरि सुय-जम्म-खणि जाय जसोयह धूय ।
आणिवि वियरइ देवइहि अह स स-तोसीहूय ॥

[२३०१]

किं तु तक्खणि जाय-पडिवोह

ते कंस-निउत्त-नर नंद-धूय उववेत्तु वेगिण ।
संपत्त कंसह पुरउ सो वि पावु वियलिउ विवेगिण ।
चिंतइ – वितहीहुउ वयणु अइमुत्तयह रिसिस्सु ।
जं किं हउं अवलह इमह हत्थिण हणिउ मरिस्सु ॥

[२३०२]

तह नहग्गिण दलिवि नास-उडु

मेल्लाविवि देवइहि सविहि वाल निस्संकु चिट्ठइ ।
ता नंद-जसोययहिं हरिसियाहिं वसुदेवि तुट्ठइ ॥
दियहि दुवालसि गोउलि य उचिय-महिण अभिहाणु ।
तसु कण्हो त्ति विइन्नु जय- जंतु-पमोयह ठाणु ॥

२३०१. ८. क. हउं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३०३]

गिरिहि कंदरि कप्प-विडवि व्व
सिय-पक्खि रयणीयरु व विगय-विग्घु सो जाइ वुड्ढिहिं ।
ववएसु करेवि कु-वि देवई वि सु-सिणिद्ध-बुद्धिहिं ॥
वच्चइ अंतर-अंतरिण तसु सुय-रयणह पासि ।
पेक्खिवि पुणु तसु रूव-सिरि भणइ स-पियह सयासि ॥

[२३०४]

पावु किं मइं अवर-जम्मम्मि
परिसंचिउ जेण हउं पुहइ-तिलय-निय-सुय-विउत्तय ।
परिचिट्ठहुं पुत्तवइ नामु विहलु निय-मणि वहंतय ॥
अह वियरिय-थणु सुउ धरिवि खणु अप्पुणुहु सयासि ।
देवइ करुणु समुल्लविर मुयइ जसोयह पासि ॥

[२३०५]

सउरि-देवइ-पमुहि पुणु लोइ
निय-नियय-ठाणिहि गयइ भरह-अद्ध-वासिणि सुरंगण ।
परिवालहिं कण्हु कय- भत्ति-भाव अणु-दिणु वि इग-मण ॥
अह सुप्पणहिहि धूय दु-वि पूयणि-सउणी-नाम ।
सुमरिय-वसुदेवोवहय- जणय-जणिय-संगाम ॥

[२३०६]

विस-विलिंपिय-नियय-थण-वीढ
समुवागय हरि-सविहि ता खिवेइ थणु वयणि पूयण ।
सउणी उ विउव्विउण मुयइ सगडु कण्हह निसुंभण ॥
ता हरि-रक्खग-देवयहं तेणं चिय सगडेण ।
निहय रडंतिय करुण-सरु गय पंचत्ति खणेण ॥

२३०६. ६. रक्खय.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३०७]

हरिउ पुणु वि सु हरिहि वयणस्सु
परितुट्ठउ गोवि-जणु कण्ह-वयणु चुंवेइ पुणु पुणु ।
रिंखंतउ हरि कह-वि वाल-हारु पालेइ सु-निउणु ॥
तह वि-हु तसु करयलह हरि मोयाविवि अप्पाणु ।
महिउ महंतहं गोवियहं कुणइ खीर-दहि-पाणु ॥

[२३०८]

अह जसोयहं उयर-देसम्मि
उक्खलइण समगु हरि वंधिऊण परिमुक्कु दामिण ।
इय दामोयरु भणिउ जणिण तत्थ ता इमिण नामिण ॥
पयडीहूयउ जगि सयलि अज्जु वि सु सउरिहि पुत्तु ।
एत्थंतरि नियय-प्पियहु वह-वइयरिण विगुत्तु ॥

[२३०९]

खयरु सुप्पग-नामु निय-विज्ज-
सामत्थिण अज्जुणय-नाम-विडवि-जुयलउं विउव्विवि ।
हरि कलिउ वि उक्खलिण तरुहुं मज्झ-देसम्मि आणिविं ॥
जाव निवायइ भीडिउण तेण वि विडवि-जुएण ।
तासु जि ताडिउ देवयहं तिण तह कहमवि जेण ॥

[२३१०]

निहय-उत्तिम-अंगु परिगलिर-
रुहिराविल-सयल-तणु नीहरंत-मुह-कुहर-रसणउ ।
उक्खडिय-नयणंवुरुहु दलिय-नासु परिभग्ग-दसणउ ॥
अज्जुणय-दुम-जुयलिण वि कलिउ पडिवि महि-वट्टि ।
दुसह-पहारिण विहुरियउ मयउ निमीलिय-दिट्ठि ॥

२३०७. ५. वाल हाहु. ८. क. महंतह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३११]

तयणु चुन्निउ सगडु कण्हेण
खयरंगण दु-वि हणिय दलिय विडवि सुप्पगु निवाइउ ।
इय पसरिउ धरणियलि सुणिवि सउरि हरि-गरुय-भाइउ ॥
रोहिणि-देविहि अंगरुहु वलभद्दु त्ति पसिद्धु ।
कंसोवद्दव-रक्ख-कइ पेसइ गुणिहि समिद्धु ॥

[२३१२]

अह सु पत्तउ हरिहि सविहम्मि
जायम्मि य पढमयरि दंसणम्मि सो को-वि पसरिउ ।
पडिबंधु दुवेण्हमवि जो न सक्कु सुरिण वि वियारिउ ॥
ता गेण्हइ वलि-सविहि हरि सद्दाइय-गणियंत ।
सयल-कलावलि अइरिण वि निय-नामु व दिप्पंत ॥

[२३१३]

नील-उप्पल-दल-समाणम्मि
कण्हम्मि निरिक्खियइ गोवि-वग्गु मयणग्गि-दुत्थिउ ।
तसु संगम-अमय-रसु लहिवि कह-वि जइ हवइ सुत्थिउ ॥
लायण्णामय-मइउ हरि जह जह वुड्ढि लहेइ ।
तह तह गोउलि गोवियहं मयणु मणाइं दुहेइ ॥

[२३१४]

कण्हु गोउलि कील कुव्वंतु
तह कहमवि हरइ मण सह ललंत गोवीण वग्गह ।
जह नूण निमेसमवि न-वि चलेइ लायण्ण-मग्गह ॥
लग्गइ छलिण करंगुलिहि पक्खंतरिहि भमेइ ।
मयण-परव्वसु गोवियणु हरिहिं जि समगु रमेइ ॥

२३१२. १. हरिहिं; ३. क. दंसणं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३१५]

कण्हि नच्चिरि रामि गायंति

गोवीयणि ताल-रवु वियरमाणि गोवालि मिलियइ ।
तहिं गोउलि को-वि रसु हवइ जो न कहिउं पि तरियइ ॥
बालु व तरुणु व वुड्ढउ व पुरिसु व रमणियणु व्व ।
सो नत्थि च्चिय जु न भमइ हरिहि गुणिहिं रत्तु व्व ॥

इओ य–

[२३१६]

धरणि-कामिणि-तिलय-सरिसम्मि

सिरि-सोरियपुरि नयरि समुदविजय-नरनाह-भारिय ।
गुण-रयण-रोहण-वसुह पुहइ-लोय-कल्लाण-कारिय ॥
पणयागय-जय-कप्पलय उवसम-सिरिहिं समिद्ध ।
चिट्ठइ तरुणीयण-तिलय सिवदेवि त्ति पसिद्ध ॥

[२३१७]

सा य जुण्ह व रयणि-नाहस्सु

रंभ व्व सुराहिवह नियं-पियस्सु अच्चंत-वल्लह ।
चिर-संचिय-सुकय-भर अकय-सुहहं दंसणि वि दुल्लह ॥
परिसेवंती विसय-सुह अइवाहेइ दिणाइं ।
अह अन्नय चउदह नीयइ एह महा-सिमिणाइं ॥

जहा—

[२३१८] गय-वसह-सीह-अभिसेय-दाम-ससि-दिणयरं झयं कुंभं ।
पउमसर-सागर-विमाण-रयणुच्चय-सिहिं च ॥

[२३१९]

तयणु उट्ठिवि समुद्दविजयस्सु

सिर-विरइय-कर-कमल कहइ देवि सिविणइं अ-सेसि वि ।
तयणंतरु तुट्ठ-मणु भणइ समुदविजयावणिंदु वि ॥
जह – सुंदरि महि-कामिणिहि असम-विहूसण-हेउ ।
तुह धुवु हविहइ सुय-रयणु हरि-वंसह सिरि-केउ ॥

२३१५. ६. क. ख. तरुण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३२०]

अह ति रयणिहि सेसु अइगमहिं
जिणधम्म-धम्मिय-कहहिं तयणु वंदि-विंदिण पढंतिण ।
पसरंतइ मंगलिय- तूरि भिच्च-वग्गिण मिलंतिण ॥
पच्चूसम्मि समुट्ठिउण काउ गोस-कज्जाइं ।
उवविसिउण अत्थाणियहं पिहु पिहु जह-जोग्गाइं ॥

[२३२१]

नियय-माणुस पेसवेऊण
सद्दावइ सयल निय कोट्ठगाइ-सिविणय-विसारय ।
कर-कलिय-पहाण-फल ते वि तत्थ वेगेण आगय ॥
जा ता उवसम-सिरिहिं परिगूहिय-अंगोवंगु ।
परिसीलिय-दस-विह-समण- धम्म-विसेसिण चंगु ॥

[२३२२]

नियय-कंतिण हरिय-तिमिरोहु
संपीणिय-भविय-जणु मुत्तिमंतु सु-स्समण-धम्मु व ।
सेयंवर-पावरिउ दट्ठु नहह आगमिरु तरणि व ॥
मूलुत्तर-गुण-भूसियउ असरिस-पत्त-विवेगु ।
निवइण निव-घरि वाहरिउ चारण-मुणिवरु एगु ॥

[२३२३]

ता करेविणु पउर-पडिवत्ति
गुरु-हरिसु पयासिउण महरिहम्मि आसणि निवेसिवि ।
पणमिप्पिणु मुणि-पइहि उचिय-ठाणि सयमवि-हु निवसिवि ॥
सायरु उत्तिम-अंगि निय- कर-संपुडु विरएवि ।
आउच्छइ भावत्थु पिय- सिविणइं उवसाहेवि ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३२४]

तयणु निम्मल-दसण-किरणोलि-
परिधवलिय-दिसि-वलउ तसु कहेइ चारण-महा-मुणि ।
जह – नरवर अवहियउ पत्थुयत्थु भावेसु निय-मणि ।।
अंग-सुविण-सर-वंजण वि तह उप्पाय-विसेस ।
अंतरिक्ख-महि-वंजण वि अट्ठ-निमित्त-विसेस ।।

[२३२५]

हवहिं साहय सुहहं असुहहं वि
संसारिय-माणवहं तत्थ ताव इयराहं चिट्ठहुं ।
संपइ पुणु पत्थुयइं किंचि एहि सिविणाइं भन्नहुं ।।
आगमि सामन्निण भणिय वाहत्तरि एयाइं ।
तहिं अ-पवित्तइं तीस इयराइं पुणु पवराइं ।।

[२३२६]

तहिं वि तीसइ धुवु महा-सिविण
इयरे उ मज्झिम हवहिं तत्थ चक्कि-तित्थयर-मायर ।
गय-पमुह चउदस जि नियहिं सुमिण गुण-रयण-सायर ।।
सिरि-वच्छंकह जणणि पुणु सत्त महा-सिमिणाइं ।
पेक्खइ वलभद्दह जणणि पुणु चत्तारि जि ताइं ।।

[२३२७]

निवइ-तलवर-सचिव-सामंत-
सत्थाह-जणणीउ पुणु नियहिं किं-पि एक्केक्कु सिविणउं ।
सिव-देविहिं दिट्ठ पुणु जाइं सिविण तिहि हउं वियाणउं ।।
हविहइ नंदणु जय-सरणु तित्थाहिवु भयवंतु ।
अद्ध-भरह-सामिउ हरि जि पुणु चिट्ठइ वड्ढंतु ।।

२३२४. ७. °असेस.
२३२५. ५. भिन्नहुं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३२८]

इय कयत्थउ तुहुं जि नर-नाह

जसु मंदिरि अवयरिउ जय-सरन्नु तइलोय-दिणयरु ।
पणमंत-चिंतारयणु भव-समुद्द-तारणु जिणेसरु ॥
इय उववूहिरु निव-नमिउ मुणि विहरिउ अन्नत्थ ।
कय-किच्चउं अप्पउं मुणइ सिवदेवि वि सव्वत्थ ॥

[२३२९]

सिविण-दंसण-समइ पुणु संखु

अवराजिय-सुर-भवण- सुहइं भोत्तु तेत्तीस अयरइं ।
ठिइ-अंतिण परिचविवि वेत्तु तिन्नि नाणाइं पवरइं ॥
कत्तिय-किण्हहं वारसिहिं चित्ता-नक्खत्तम्मि ।
जय-बंधवु अवइन्नु तहिं सिवदेविहि गब्भम्मि ॥

[२३३०]

तयणु देविहि सविहि आगंतु

चलियासण सुर-पवर थुणहिं देवि गंभीर-वाणिहिं ।
जह – भयवइ धन्न तुहुं जीए पुत्तु सह सु-गुण-रयणिहिं ॥
हविहइ भवसायर-पडिर- जिय-उद्धरण-समत्थु ।
तित्थाहिवु वावीसमउ नेमिनाहु सु-कयत्थु ॥

[२३३१]

को णु न नमइ तुज्झ पय-पउम

जय-वच्छलि जय-जणणि जय-सरन्नि जय-अग्ग-गा*मिणि ।
जं वद्धउ एहु तई पुन्न पवइहि(?)मज्झम्मि सामिणि ॥
नहि विणु केसरिणिहि जणइ का-वि-हु सीह-किसोरु ।
न य पुव्वह विरहिण तरणि जणइ का-वि करभोरु ॥

२३२९. १. क. सिविणु. २३३०. ८. क. ख. ममत्थु.

* As the sheet numbered. 498 in the photostat of ms क, corresponding to the recto sides of folios 221 to 229 is missing, the text corresponding to these portions in the edited text has been based soely on the ms. ख.
The portion from °मिणि (2331, 3) to एंति (2335, 4) is based on ms. ख. only.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३३२]

इय +थुणेप्पिणु जिणह +उप्पत्ति
परिसाहिवि निय-नियय- सुर-घरेसु गय तियसायरिय ।
सक्केण उ मणि-कणय- अंबरेहिं भंडार पूरिय ॥
पुव्वुपन्नय वाहि-भर उवद्दवा वि उवसंत ।
पसरिय-विहव असेस-जण तहिं चिट्ठहिं विलसंत ॥

[२३३३]

तुरय-कुंजर-रयण-दाणेण
पूइज्जइ नरवइहिं समुद्दविजय-नरवइ पमोइण ।
उयर-ट्ठिय-जिण-रयण रिट्ठ-नेमिनाहाणुहाविण ॥
देवी वि-हु भत्ति-ब्भरिण विहिय-एग-चित्तेहिं ।
वंदिज्जइ सुर-नरवइहिं +पुलयंचिय-गत्तेहिं ॥

[२३३४]

कमिण सावण-+सुद्ध-पंचमिहिं
चंदम्मि चित्तहं गयइ +अद्ध-रत्ति सुह-दिण-मुहुत्तिण ।
उप्पायइ देवि सुय- रयणु रवि व पुव्व-दिसि सुक्खिण ॥
सो को-वि-हु भुवण-त्तइ वि नत्थि तम्मि समयम्मि ।
जो न पमोयावन्नु हुउ तहिं जिणवर-जम्मम्मि ॥

[२३३५]

(१५) तो +आसण-कंपिण मुणिवि तित्थु जायउ जिणु लक्खण-सय-पसत्थु ।
अह लोयह अट्ठ-दिसा-कुमारि हरिसेण एंति नियमाहिगारि ॥

२३३२. १. थुणोप्पिणु; प्पंउन्नि.

२३३३. १. पुलंयंचित्त.

२३३४. १. सावणणुद्ध. २. अट्टरत्ति.

२३३५. १. आसुंण. ४. नियहा; क. °हिमारि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३३६]

जिणु जणणि नमिवि तो चउदिसिं पि संवट्टय-पवणिण सोहयंति ।
सव्वत्थ वि जोयण-मेत्तु खेत्तु कुव्वंति य तिण-कयवरिहिं चत्तु ॥

[२३३७]

तो उड्ढ-लोय-दिसि-देवि अट्ठ परिसिंचहिं मेहिण महि पहट्ठ ।
पोरत्थिम-रुयगह दिसि-कुमारि संपत्त अट्ठ आयंस-धारि ॥

[२३३८]

ता दाहिण-रुयगह अट्ठ देवि भिंगार ठंति करयलि करेवि ।
पुणु पच्छिम-रुयगह अट्ठ पत्त तहिं ठंति धरिवि वीयण पवित्त ॥

[२३३९]

तो उत्तर-रुयगह देवि अट्ठ चामर धरंति आवेवि लट्ठ ।
अह विदिसि-रुयग-चउदिसि-कुमारि विदिसीसु ठंति सु-पईव-धारि ॥

[२३४०]

अह मज्झिम-रुयग-निवासिणीउ चउदिसि-कुमारि सु-नियंसणीउ ।
जिण-नाहि-नालु कप्पिवि पवित्तु वियरइ खिवंति रयणेहिं जुत्तु ॥

[२३४१]

हरियाल-पीढु तस्सुवरि ताउ विरयंति भत्ति-भाविय-मणाउ ।
तो जम्मण-घरह पुरत्थिमेण दाहिणिण तहेव य उत्तरेण ॥

[२३४२]

कयलीहराइं सु-मणोहराइं चउसालय-मंदिर-संजुयाइं ।
वर-रयणमइय-सिंहासणाइं कुव्वंति ताउ वेउव्वियाइं ॥

[२३४३]

तो दाहिण-कयलीहरि जिणिंदु सिवएविहिं सहुं *भवणेग+-इंदु ।
अब्भंगिवि उव्वट्टेवि +देहि तो निंति पुव्व-कयलिहर-गेहि ॥

२३३६. १. क. चउद्दिसिं.

*The portion from भ° (2343. 2.) to °मयर (2354. 3.) is based on ms. ख. only.

२३४३. २. भवण; ३. वेहि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३४४]

गंधोदय तह(?) पुप्फोदएहिं सुद्धोदएहिं सु-सुयंधएहि ।
ण्हावंति जणणि जिणु मंगलेहि भूसंति वत्थ-वर-भूसणेहिं ।।

[२३४५]

तो उत्तर-कयलीहरि नयंति गोसीसु पवरु +चंदणु दहंति ।
वंधंति रक्ख-पोट्टलिय ताण परिरक्खिय-सयल-जय-त्तयाण ।।

[२३४६]

तुहुं पव्वयाउ (?) भव इय +भणंत रयणुप्पल वायहि सवण-पत्त ।
इय ण्हवण-विलेवण-भूसणेहिं सक्कारिवि जण-मण-तोसणेहिं ।।

[२३४७]

निव्वत्तिवि सयलु वि रक्ख-कम्मु इच्छंति य नर-सुर-सिद्धि-सम्मु ।
जिणु जणणिहिं सहिउ वि निंति ताउ वास-हरि मणोहरि हरिसियाउ ।।

[२३४८]

छप्पण्ण वि तो तहिं दिसि-कुमारि गायंतिउ चिट्ठहिं जिणु जियारि ।

[२३४९]

इय सयल-कुमारिहि विविह-पयारिहि सूइ-कम्मि विहियइ जिणह ।
सोहम्म-सुरिंदहं नय-सुर-विंदह होइ कंपु सीहासणह ।।

[२३५०]

(१६) ओहि-नाणेण तो नाय-जिण-जम्मणो झत्ति-परिचत्त-रयणमय-+सीहासणो
पयइं सत्तट्ठ गंतूण परितुट्ठओ महिहिं उण नियय-लग्गंत-कर-मत्थओ ।।

[२३५१]

जिणह पणमेवि सिरि विहिय-कर-+संपुडो भणइ सक्कु त्थवं वयण-मण-संवुडो ।
करिवि गुण-गहणु जिणवरह सुर-सामिउ हरिणयन्नेसि आणवइ गय-गामिउ ।

२३४५. २. वदणु. ३. वंधति; ४. °त्तयाणं.
२३४६. १. भरणंत.
२३५०. २ सीहसिणो.
२३५१. २, संछु(बु ?)डो.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३५२]

सो वि वाएइ जोयण-मुहं सुह-मणो सुणइ घंटं सुघोसं जहा सुर-यणो ।
तीए पडिसद्द-+सम्मद्द-रहसुट्ठिओ सेस-घंटा-गणेणं[˘]खोणि-ट्ठिओ ॥

[२३५३]

सग्गि सयले वि सो व[×]उज्जिंभिओ देव-देवी-यणो ताव मणि विम्हिओ ।
तक्खणुप्पन्न-संखोह-विक्खंभणं कहइ रि[˘]णाणणो तयणु जिण-जम्मणं ॥

[२३५४]

इय समायन्निऊणं लहुं +सुर-जणा सेस-कज्जाइं मोत्तूण हरिसिय-मणा ।
के-वि करि-तुरय-नर-मयर-पट्ठि-ट्ठिया अवरि हरि-हरिण-सद्दूल-सिहि-संठिया ॥

[२३५५]

अन्नि क-वि कुंच-रह-सरह-वद्धासणा पसरियासेस-दिसि-तेय-उब्भासणा ।
के-वि वर-वइर-सारं विमाणं गया विहिय-सिंगार-वहु-अच्छरा-परिगया ॥

[२३५६]

अवरि मणि-जाण-जंपाणमारूढया देव-वग्गा समग्गा वि संवूढया ।
तयणु मणि-थोर-थंमावली-सोहयं पसरियासेस-दिसि-वलय-उज्जोइयं ॥

[२३५७]

किंकिणी-मुहल-धय-मालिया-मंडियं भुवण-लच्छीए नं भुयहिं अवगुंठियं ।
जंवुदीव-प्पमाणं विमाणं वरं कारवेऊण पूरंत-गयणंतरं ॥

[२३५८]

तत्थ आरुहिवि सहसक्खु संपट्ठिओ देव-गण-परिवुडो जिण-वरुक्कंठिओ ।
दाहिणिल्लम्मि करइ करग सेले तओ(?) संखिवंतो विमाणं स-इड्ढिं गओ ॥

२३५२. ३. समद्द.

२३५४. १. सुरसणो.

२३५६. १. क. °संपाण°.

[२३५९]

खणिण संपत्तु जिण-भवणि आखंडलो विहिय-जिण-जणणि-अइपवर-
थुइ-मंगलो ।
ठविवि पडिबिंबु दाऊण अवसोयणिं गिण्हए जिणवरं भुवण-चिंतामणिं ॥

[२३६०]

इय करयलि ठाविवि मणि परिभाविवि जिणु अणंत-गुणु भत्ति-भरि ।
कय-पंचहिं रूविहिं पवर-सरूविहिं नेइ सक्कु सुरगिरि-सिहरि ॥*

[२३६१]

(१७) पंडु-सिलायलि खीर-समुज्जलि कय-कुसुमुक्करि गय-रय-निम्मलि ।
फार-फुरंत-रयण-सीहासणि सक्कि निलीणि अंक-संठिय-जिणि ॥

[२३६२]

आसण-कंप-मुणिय-जिण-जम्मण ईसाणिंद-पमुह हरिसिय-मण ।
आगय सयल वि तत्थ सुरेसर ठिय निय-निय-सुरयण-अग्गेसर ॥

[२३६३]

जोइस-वंतर-भवण-निवासिय आगय सुर असंख तहिं हरिसिय ।
धरहिं के-वि जिणवर-सिरि छत्तइं ढालहिं चमर के-वि सु-पयत्तइं ॥

[२३६४]

धूव-कडच्छुय-वावड केइ-वि के-वि सुराहिव दप्पणु लेइवि ।
ठंति जिणिंदह अग्ग*इ सुह-मण अण्णि पढंति सजल-घण-निस्सण ॥

[२३६५]

गायहिं के-वि तियस कि-वि नच्चहिं के-वि सरसु कुसुमुक्कुरु +मुच्चहिं ।
करहिं के-वि गलगज्जिउ वंधुर तह हय-हेसिउ रव-भरियंवरु ॥

---

*ग्रंथाग्रं ६०००

२३६१. ४. निलीणिं; क. जिणिं, ख. जणि.

२३६४. * The portion from °इ (2364. 3.) to पो° (2372. 1.) is based on ms. ख. only.

२३६५. १. कि निवहिं. २. मुवहिं.

[२३६६]

इय नेमि-जिणिंदह　पणय-सुरिंदह　सवकुच्छंगि निवेसियइ ।
अग्गग्गुर(?) भत्तिहिं निय-निय-सत्तिहिं सेव करहिं हय-वम्महइ ॥

[२३६७]

(१८) अह वियसंत-वयण-सयवत्तिहि　+रोमंचुग्गम-पयडिय-भत्तिहिं ।
कुसुमंजलि उक्खित्त सुरिंदिहिं +नच्चिर-अमरविलासिणि-+विंदिहिं ॥

[२३६८]

पारियाय-[त]रु-मंजरि-मंडिय　उप्पल-कंचणार-दल-चड्डिय ।
मल्लिय-मालइ-मउलिहिं मीसिय चंदण-कप्पूरागुरु-वासिय ॥

[२३६९]

कुरवय मरुवय वहु-सेवत्तिय　चंपय वियसिय [×] पारत्तिय ।
+गंधाखित्त-भमिर-+भमरावलि मुंचहिं तहिं सुरवर कुसुमावलि ॥

[२३७०]

इय वर-कुसुमंजलि वियरिय-रय-+गणि नेमि-जिणिंदह कम-जुयलि ।
मुक्किय सुर-राइहि गुरु-अणुराइहि　जणिय-हरिस-सुरयणि सयलि ॥

[२३७१]

(१९) एत्थंतरि अच्चुय-सुरवइणा　आणत्त सयल निय-तियस-गणा ।
आणिंति ते-वि तो धवल-पहं खीरोय-महन्नव-जल-निवहं ॥

[२३७२]

तह पोक्खराइ-सायर-विमलं दह-तित्थ-कुंड-सरियाण जलं ।
सुर-पायव-मंजरि-संवलियं　आणंति चुण्ण-वासिहि कलियं ॥

२३६७. २. रोमंच; ४ निच्चिर, विदिहिं.

२३६८. १. मंजरिहिं. ३. उप्पलं. ३. मल्लिय, गउलिहिं.

२३६९. ३. गंधखित्त; भमिरावलि; कुसमावलि.

२३७०. २. मणि.

२३७१. २. मणा.

२३७२. २. क. दहिं.

Jain Education International 2010_05　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

[२३७३]

पंडग-वण-सोमणसाइगयं हिमवंत-पमुह-ठाणाणुगयं ।
सव्वोसहि-सरिसव-कुसुम-भरं आणंति तुरिउ मट्टिय-नियरं ॥

[२३७४]

हरियंदण-चुन्न-सुगंध-गणं उवणिंति सुरा ण्हवणत्थमिणं ।

[२३७५]

इय सयलहि देविहि कय-जिण-सेविहि आणंतिहि ण्हवणंग-गणु ।
अच्चुय-सुरनाहिहिं हरिस-सणाहिहिं पूरिउ दिट्ठउं सहु गयणु ॥

[२३७६]

(२०)विमल-मणि-मउड-दिप्पंत-सिर-मंडलो तयणु भत्तीए समयच्चुयाखंडलो ।
पवर-आहरण-वत्थेहिं सोहंतओ फुरिय-मणि-रयण-किरणोह-भासंतओ ॥

[२३७७]

संगरक्खो स-परिसोस-सामाणिओ लोयपालेहिं सद्धिं स-वेमाणिओ ।
सत्त-अणिएहिं अणियाहिवेहिं समं उव्वहंतो महंतं मणे संभमं ॥

[२३७८]

करिहिं उक्खिवइ निट्ठविय-भावारिणो ण्हवण-कज्जेण तित्थयर-जिण-नेमिणो ।
चित्तरूवं सहस्सं सहस्संवरं भिण्ण-भिण्णं सु-कलसाण अट्ठोत्तरं ॥

[२३७९]

मणिमया एक्कि अन्ने य सोवन्निया कलस रेहंति विबुहेहिं संवण्णिया ।
के-वि पु*णु सेय-कलहोय-निम्माविया सुकइ-पुन्नेहिं सुरवरिहिं करि पाविया ॥

[२३८०]

कणय-+रुप्पुब्भवा कणय-रयणामया के-वि पुण रयण-रुप्पेहि निप्फन्नया ।
के-वि तवणिज्ज-मणि-रयण-संपन्नया के-वि पुणु ताण मज्झम्मि मट्टिय-मया ॥

२२७३. २. सद्धि सव्वे विमाणिउ.

*The portion from °णु (2379. 3.) to जि (2389. 2.) is based on ms. ख. only.

२३८०. १. रूप्पुभवा.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३८१]

के-वि साहाविया के-वि वेउव्विया　अब्भहिय-अट्ठ-सहसाइं सव्वे ठिया ।
पवर-भिंगार-आयंस-गण-संजुया　चंदणुद्दाम-कुंभा य स-कडच्छुया ॥

[२३८२]

पुणु[××××]चंगेरि-पडलाइणो　ण्हवण-कालम्मि उक्खिवहिं सुर-राइणो ।
तयणु हरियंदणुप्पंक-चच्चिक्किया सुरहि-सिय-कुसुम-मालाहिं समलंकिया ॥

[२३८३]

अच्चुइंदेण सव्वायरं ढालिया सहहिं वर-कलस खलहल-रवुम्मालिया ॥

[२३८४]

इय विहियइ मज्जणि रंजिय-सज्जणि अच्चुय-इंदिण सुर-महिउ ।
सिरि-नेमि-जिणेसरु मुणि-अग्गेसरु रेहइ तहिं भुवणब्भहिउ ॥

[२३८५]

(२१)एएण विहाणिण तो ण्हवेइ　पाणय-कप्पिंदु वि कलस लेइ ।
तो ण्हावइ जिणु सहसार-नाहु पक्खित्त-विमल-नीर-प्पवाहु ॥

[२३८६]

तो सत्तम-कप्प-निवासि सक्कु　जिणु ण्हवइ छिण्ण-संसार-चक्कु ।
अह लंतय-कप्पह सामि हिट्ठु　अहिसिंचइ जिणु गुण-गण-गरिट्ठु ॥

[२३८७]

तो बंभ-लोय-+पहु जिण-वरिंदु　ण्हावेइ पणय-सुर-नरवरिंदु ।
माहिंदु तय[णु] +सणयंकुमारु　ईसाणु ण्हवइ तो सुरहं सारु ॥

[२३८८]

अह चमर-पमुह भवणवइ कमिण　ण्हावंति जिणिंदु विमुक्क तमिण ।
पुणु ण्हवहिं पिसायाहिवइ-पमुह　वंतर-गण-नायग सुगइ-समुह ॥

२३८४. ५. मग्गिसरु.
२३८५. २. पाणाय.
२३८७. १. पडु; ३. सयणंकुमारु.

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[२३८९]

पुणु चंदु ण्हवइ तह दिवस-नाहु जिणु नेमि निरुद्ध-+भव-प्पवाहु ।

[२३९०]

इय विहियइ मज्जणि भव-भय-भंजणि सेस-सुरिंदिहिं जिणवरहं ।
सोहम्मह सामिउ सुगइहि गामिउ जह करेइ कित्तेमि तह ॥

[२३९१]

(२२) कय-पंच-रूवु ईसाण-इंदु उववसइ अंक-कय-जिणवरिंदु ।
तो कुंद-धवल चत्तारि वसह वेउव्वइ चउ-दिसि सक्कु जिणह ॥

[२३९२]

अह ताण अट्ठ-सिंगुब्भवाउ उच्छलिवि सलिल-धारउ वराउ ।
उद्धंमुह-वर-खीर-प्पहाउ एक्कहं मिलेवि निवडंति ताउ ॥

[२३९३]

मरगय-सिल-सच्छहि नेमि-वच्छि हारावलिव्व रेहंति सच्छि ।
तो ण्हवइ जहेवच्चुय-सुरिंदु तह सक्कु वि ण्हावइ जिण-वरिंदु ॥

[२३९४]

तो सुरहि-कसाइय-चीवरेण लूहेइ अंगु सव्वायरेण ।
उवलिंपइ पवर-विलेवणेहिं भूसेइ वत्थ-वर-भूसणेहिं ॥

[२३९५]

सु-सुयंधिहिं सुरतरु-संभवेहिं पूएइ अ-संखिहिं सुमणसेहिं ।
वज्जंतिण तो दुंदुहि-गणेण पूरिज्जइ अंबरु पडिरवेण ॥

[२३९६]

इय भव-भय-गंजणु कुणहिं ज मज्जणु भत्ति-भरिण विवुहाहिव वि ।
तं सुर-गुरु-तुल्लु वि मइहिं अ-मुल्लु वि को वण्णइ जीहा-सउ वि ॥

२३८९. २. ०भवण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२३९७]

(२३)अह सयल सुरनाह　उब्भेवि निय-बाह ।
नच्चंति सु-पहिट्ठ　निय-मणिण संतुट्ठ ॥

[२३९८]

रणझणिर-मणि-वलय　थरहरिय-महि-वलय ।
गुरु-मुक्क-पय-भार　तुट्टंत-वर-हार ॥

[२३९९]

जिण-चरिय सु-समेय　गायंत-कल-गेय ।
अच्छरहं संघाय　सुह-वयण-मण-काय ॥

[२४००]

इंदाण मज्झम्मि　नच्चंत मेरुम्मि ।
पुण कुणहिं कल-गेउ　जिण-गुणिहि अ-पमेउ ॥

[२४०१]

बहु-जणिय-आणंदु　नच्चंत-सुर-विंदु ।
वरिसंति रयणेहिं　सुर के-वि *कणएहिं ॥

[२४०२]

गंधड्ढ-नीरेहिं　वर-सुरहि-कुसुमेहिं ।
उक्किट्ठ-नाएहिं　पडिसद्द-सारेहिं ॥

[२४०३]

सुर केइ वग्गंति　घण जेम्व गज्जंति ।
हय जेंव हिंसंति　हरि जिम्व निनाएंति ॥

[२४०४]

वंदि व्व उद्दामु　ति पढंति अभिरामु ।
वड्ढंत-अणुराउ　× × × × ॥

[२४०५]

सिरि-नेमि-+जिणु थुणइ　सुर-लोउ सहु सुणइ ।

* The portion from कणएहिं (2401. 4.) to निवि° (2409.3.) is based on ms. ख. only.

२४०५. १. जिण.

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

तथा –

[२४०६]

(ज्ज ?) भव-तरु-भंग-समीर गुण-मणिण नीरालय
भीम-मोह-करि-कुंभ तरुण-कंठीरवामीलाय (?)।
अंवर-विमल कलंक-पंक-वारि-भर महा-वल
चरण-नीररुहमिह नमामि तव देव कलामल ॥१

[२४०७]

कलिल-कमल-हिम-पूर-जडिम तम-भर-रवि-मंडल
केवल-बुद्धि-निवास-गेह भासुर-भा-मंडल ।
गुण-गण-धाम सु-राम काम-कंदलि-विगुणानिल
माया-वल्लि-समूल-+दाह-दारुण-दावानल ॥२

[२४०८]

परमागम-सुरसिंधु-मूलकारण-हिमगिरिवर
स-जलसंग-नव-नीरवाह-सम-सुंदर गुरुवर ।
सिद्धि-कमल-वर-भसल सुकुल-संभव भव-तारण
वंदे देव भमंत-मगल(?)कमलागम-कारण ॥३

[२४०९]

चरण-करण-करुणोरु-वद्ध-रस-रस-निर-निवारिण(?)
रामासंग-विरंग-चित्त करुणा-संधारण ।
अ-रणासंग नीरीह निविड-दम-वद्ध सु-संगम
करण-तुरंगम-रज्जु-वंध वंधुर-वंधागम ॥४

२४०६ ३. नहावल.
२४०७. ४. माह.
२४०८. ४. २. गुरुरव.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४१०]

जलरुह-दल-सच्छाय-चरण पर-वुद्धि-परायण
रागोरग-गण-गरुड लोभ-सागर-पारायण
कुनय-कुसंग-कुवास-हास-मच्छर-नग-दारण
अंतराय-परमाणु-निवह-रस-संचय-वारण ॥५

[२४११]

असम-जरामय-मरण-वार मोहारि-महा-मह
हरि-विरिंचि-हरि-वीर-मार-वल-समर-जयावह ।
किन्नरगण-दंभोलिपाणि नर-विसर-महत्तम
तव नुवामि चरणारविंदमजरामर-सत्तम ॥६

[२४१२]

अमर-निरंतर-समवसरण भू-मंडल-सुंदर
कुंद-कुसुम-दल-धवल-दंत वर-वाणी-डंवर ।
मंदरचल-रमणीय-देह गंभीरिम-सागर
सु-गुण-चित्त-सम-तुंग-चित्त जय-जंतु-दयावर ॥७

[२४१३]

सोम स-दय सु-समिद्ध सिद्ध संवुद्ध निरामय
लीला-केलि-विलास-दारु-दव सिद्धि-रमामय ।
परम-गरिम संसार-सलिल-संचय-संतारण
देव देहि भव-विरहमखिल-दंदोलि-निवारण ॥८

॥ इतींद्राष्टकं समाप्तम् ॥

[२४१४]

एवं संस्कृत-वचनैः प्राकृत-तुल्यैः प्रमोदतः स्तुत्वा ।
जिनवरमरिष्टनेमिं पंचांगं प्रणमति सुरेशः ॥

२४१०. २. मण. ४. रसंचय.
२४११.२. क. °माल° for °मारवल.°

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४१५]

इय थोऊणं सक्को नेमि-जिणं नेइ जणणि-पासम्मि ।
रयण-सुवन्ना*इ-निहाणएहिं पूरेइ जिण-भवणं ॥

[२४१६]

जंबू-पन्नत्तीओ नेयं +जम्म-मह-सेस-कारिज्जं ।
बत्तीस-सुरिंदेहिं कय-+सक्कारो पुणो नेमि ॥

[२४१७]

दट्ठुं पहाय-समए समुद्द-विजयाइणो मणे तुट्ठा ।
अह बारसम्मि दिट्ठो काऊण महूसवं गरुयं ॥

[२४१८]

चिर-रिट्ठ-रयण-मइयं जं नेमिं सुमिणए नियइ जणणी ।
पियराइं रिट्ठ-नेमि त्ति तेण नामं निवेसंति ॥

[२४१९]

अहवा +य अरिट्ठाइं नट्ठाइं जं इमेण जाएणं ।
इट्ठो व अरीणं पि-हु अरिट्ठ-फल-सामलो वा वि ॥

[२४२०]

ठावंति तेण नामं अरिट्ठ-नेमि त्ति जिण-वरिंदस्स ।
रूवेण य चरिएहिं आणंदिय-सयल-भुवणस्स ॥

[२४२१]

अह वड्ढइ सो भयवं सेविज्जंतो सुरेहिं पइ-दियहं ।
पुण्ण-परमाणु-निवहो व्व कीरमाणम्मि जिण-धम्मे ॥

* The portion from °इ-निहाण (2415. 2.) to सुमरिऊण (2425. 1) is based on ms. ख. only.

२४१६. १. जम्मामह, करिज्जं; २. सक्कार.

२४१९. १. अहवा वा; पइमेण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४२२]

इय चिट्ठइ जाव जिणो सुहेण नेमी समुद्दविजय-घरे ।
नाओ [तओ य स]यलो वुत्तंतो कण्ह-मुसलीहिं ॥

[२४२३]

अह तेसि दुवेण्हं पि-हु जाओ वयणेण अ-विसओ तोसो ।
एत्तो पुण+ महुराए सो निल्लज्जो कह-वि कंसो ॥

[२४२४]

वसुदेव-घरम्मि गओ कण्णं छिन्नेग-नासियं तत्थ ।
कीलंतिं निज्झायइ सुर(?) सो बहु-विगप्पेहिं ॥

[२४२५]

ता अ[इ]मुत्तय-महरिसि-निवेइयं सुमरिऊण वुत्तंतं ।
संजाय-गरुय-हिययासंको निय-मंदिरम्मि गओ ॥

इओ य –

[२४२६]

कंस-निवइहि भवणि संपत्तु

अट्ठंग-निमित्त-वस- मुणिय-काल-तय-भावि-वइयरु ।
नेमित्तिउ एगु अह महरिहम्मि आसणि कयायरु ॥
उववेसेवि स-संक-मणु मउलिय-मुह-अरविंदु ।
सविहिहिं तसु नेमित्तियहं पुच्छइ कंस-नरिंदु ॥

[२४२७]

भद्द साहसु हुयउं किमलीउ

तं वयणु अइमुत्तह रिसिहि भणिउ जं आसि तइयहं ।
जह सत्तमु देवइहि गब्भु मज्झ सालयहं ससुरहं ॥
संपाविय-तारुन्न-भरु निरु करिहइ संहारु ।
अहव कि क[हिं]-वि सु अत्थि रिउ अ-विहिय-वयण-वियारु ॥

२४२२ २. नाउ यलो.
२४२३. २. यण.
२४२४ २. कीलंति.
२४२७. ८. अवह, अच्छि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४२८]

नणु कहं-चि वि तरणि पच्छिमहं
संपावइ उदय-दस परिहरेइ मज्जाय जलहि वि ।
धरणीयलु थरहरइ खडहडेइ सुरराय-सिहरि वि ॥
न-उण कहं-चि महा-मुणिहिं भासिउ वितहु हवेइ ।
मइं जिम्व अ-खइउ तुह रिउ वि संनिहियउ चिट्ठेइ ॥

[२४२९]

अह धवक्किय-हियउ परिगलिर-
पस्सेय-जलाविलउ कंस-अहमु जंपेइ दीणउं ।
जह – भद्द करेसु तह कह-वि जेण हउं सच्चु जाणउं ॥
जइ पुणु अज्ज-वि कहमवि-हु रक्खिज्जइ अप्पाणु* ।
कज्जि विणट्ठइ विहि-वसि[ण किं] करेइ सु-वियाणु ॥

[२४३०]

तो निमित्तिउ भणइ – नणु हउं वि
छउमत्थु जि इय कहणु तुज्झ सत्तु सम्मउं वियाणहुं ।
सो नज्जइ लक्खणिहिं ताइं पुणु हउं [तइं य] +निवेयहुं ॥
अह जइ एम्व तइं जि सह सो दंसिउ सत्तु त्ति ।
इय कंसिण भणि[य]इ क[ह]इ इहु नेमित्ति नरु त्ति ॥

जहा ·

[२४३१]

वियड-कंधरु तिक्ख-सिंगग्गु
अइ-दुद्धर-दप्प-भरु हय-विवक्खु निरु ढिक्करंतउ ।
गो-नागु अरिट्ठ इय नामु धरणि सिंगिहि दलंतउ ॥
तह हेसा-रव-पडिहणिय-इयर-तुरंगम-थट्टु ।
केसि-नामु खर-खुरु तुरउ दुद्धर-माण-मरट्टु ॥

२४२८. ७. क. वितहु.

* The portion from °णु (2429. 7.) to स° (2435. 5.) is based on ms. ख only.

२४२९. ८–९. °वसिं करेइ.

२४३०. ५. नेवेयहुं. ८. कइइह for कहइ इहु

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४३२]

चवल-खर-खुर-खणिय-खोणियलु
अइ-कढिण-दसण-वलिहिं　विद्दवंतु जिय-वग्गु दप्पिण ।
कर-फरिसि वि उल्ललिरु　भुंकमाणु अइ-गरुय-सद्दिण ॥
दंतिहि तुंडिण पट्टइहि　जणिय-भुवण-उव्वेउ ।
पीवरु तुंगु स-दप्पु तुह　रासहु खर-कुल-केउ ॥

[२४३३]

दप्प-दुद्धरु दलिय-पडिवक्खु
अइ-चंचलु उव(?)चरणु　पूइ-गंध-मुहु मेसु चउथउ ।
विंदारय-वणि जु कु-वि　निहणिहेइ अइरिण समत्थउ ॥
आरोविस्सइ जो य तुह　धणु[ह-रयणु] दढ-दप्पु ।
सो+ मुणियव्वउ नियय-रिउ नर-वर तइं अ-वियप्पु ॥

[२४३४]

एहु निसुणिवि कंसु निव-अहमु
सद्दाविवि निय-सचिवु　भणइ – वसहु खरु तुरउ मेसु वि ।
+पुव्वुत्तु विंदार-वण-　मज्झि मुयसु जत्तेण पोसिवि ॥
जइ जो कु-वि तहं सम्मुहु वि　आगच्छइ सु हणंति ।
अप्पणयहं परहं वि जणहं　न विसेसं पि कुणंति ॥

[२४३५]

तह य +मुट्ठिग-मल्लु चाणूर-
मल्लो वि महायरिण　उव+यरेसु तह कह-वि जह लहु ।
अवलोयण-मित्तिण वि　फुरिय-दप्प निहणंति रिउ सहु ॥
सचिवो वि-हु सयलं पि इह अब्भुवगमिवि करेइ ।
कंसो उण रिउ-वह-निसिय- माणसु रइ न लहेइ ॥

२४३२. ८. तुंगु रु.

२४३३. ८. स.

२४३४. ४. पुव्वत्त; वंदारय.

२४३५. १. मट्ठिग. ३. उतपरेसु.

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[२४३६]

न-उण पावइ निद्द न य मुक्ख

निक्कारणु परिकुवइ हणइ लोउ अ-कयावराहु वि ।
अवमाणइ मंति-यणु पगइ-वग्गु दंडइ अ-दोसु वि ॥
गह-गहियम्मि व कंसि इय अंतेउर-पुर-लोउ ।
सयलु विरत्तउ भणइ – तसु जं भावइ तं होउ ॥

[२४३७]

कण्हु पुणु वलभद्द-परिकलिउ

तहिं गोउलि गोवि-यण- जणिय-हरिसु वहु-विहिहि विलसइ ।
अह सरय-समागमणि स-हल महिहिं परितुट्ठि कासइ ॥
भमिरु अरिट्ठ-सरिच्छ-पहु पीवरु वसहु अरिट्ठु ।
जियहं खयंकरु आगयउ गोउलि कण्हिण दिट्ठु ॥

[२४३८]

तयणु – अरि अरि हणसि गो-वग्गु

गोवि-यणु वित्तासिहसि विद्दवेसि घर-हट्ट-छेत्तइं ।
मारेहिसि विविह जिय निद्दलेसि पसुयाहं गत्तइं ॥
ता किह छुट्टसि मह पुरउ रिट्ठ-वसह जीवंतु ।
इय जंपिरु हरि तसु पुरउ परिकीलिरु आगंतु ॥

[२४३९]

कण्ह म-न करि कोवु एयम्मि

मा गच्छ सविहिहिं इमह किं न नियसि एएण भुवणु वि ।
विद्दवियउं इय भणिरि गोवि-वग्गि पभणइ कण्हु वि ॥
जो लीलाइ वि उक्खिवइ कोडि-सिला सु-महल्ल ।
तसु मह कित्तिय-मेत्तु इहु इय कि न मुणह गहिल्ल ॥

२४३८. ८. क. पुरओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४४०]

अह कुऊहल-वसिण सह तेण

जुज्झेविणु कं-चि खणु तयणु वसहु सो पुच्छि वेप्पिणु ।
भामेवि चक्क-भमिण कुच्छि-देसि मुट्ठिण हणिप्पिणु ॥
तह कहमवि खिवियउ महिहिं जह निल्लालिय-जीहु ।
वसह-हयासु सु निस्सरणु पडिवज्जइ पहु दीहु ॥

[२४४१]

वीय-वासरि तहिं जि विहि-वसिण

लंवोयरु तुंग-तणु विसम-उट्ठु दप्पिट्ठु दुट्ठउ ।
गुरु-दाढ-कराल मुह- *कुहरु केसि-हउ हरिण दिट्ठउ ॥
तुंडग्गिण पय-पट्टुयहिं भुवणु वि विद्दावंतु ।
हेसारव-वहिरिय-गयणु तुरिउ समुहु आवंतु ॥

[२४४२]

नियय-कुप्पर+ खिविवि वयणम्मि

तसु दुट्ठ-तुरंगमह फुरिय-दप्प-दट्टुट्ठ-पल्लवु ।
दामोयरु लीलईं जि कुणइ करिहिं दो-खंडु हय-सवु ॥
तयणु सु पीण[-प]ओहरिहिं+ तसिय-हरिण-नयणीहिं ।
आलिंगिज्जइ पुणु पुणु वि हसिवि गोव-तरुणीहिं ॥

[२४४३]

गोव-गोवी-जणिण साणंदु

थुव्वंतय वहु-विहिहिं अवर-दियहि ते दो-वि वंधव ।
विंदारय-वणि जि गय कीलणत्थु वलएव-केसव ॥
अह कहिण(?) निसुणियउं इह चिट्ठइ दुट्ठ-विवागु ।
जउण-नईए दिट्ठि-विसु दुसहउ कालिय-नागु ॥

* The portion from कुहरु (2441. 4.) to आइट्ठ (2446. 4.) is based on ms. ख only.

२४४२. १. कुप्पर; ३. फरिय. ६. पीण उहरिहिं. ९. तरुणेहिं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४४४]

तयणु पविसिवि सलिल-मज्झम्मि
उवधेत्तु निय-करयलिण जिन्न-रज्जु-खंडु व विहंडिवि ।
कड्ढेवि सरियह वहिहिं महिहि एग-देसम्मि छड्डिवि ।।
गोव-डिंभ-सहसिण सहिउ जल-कीलहं कीलेवि ।
गोउलि पत्तउ हरि जणह पहु निव्विग्घु करेवि ।।

[२४४५]

ते-वि रासह-मेस दुद्धरिस
जे आसि इयरहं जणहं दिट्ठ-मेत्त-गुरु-खेय-कारण ।
विंदारय-वण-गहणि पत्त संत पेक्खिय-जणद्दण ।।
गलिय-मडप्फर हरि-करिण पावहिं जीविय-अंतु ।
कण्हु वि तहिं मुसलिण कलिउ खणु चिट्ठइ कीलंतु ।।

इओ य –

[२४४६]

एहु वइयरु सुणिवि+ कंसेण
पसरंत-भयाउरिण जीय-रक्ख-अक्खणिय-चित्तिण ।
आइट्ठ निय-धणु-रयण- पूयणत्थु अंगिण पवित्तिण ।।
वत्थाहरण-विलेवणिहिं कय-निरुवम-सम्माण ।
नियय-भइणि वर-देह-पह सच्चहाम-अभिहाण ।।

[२४४७]

पुरि कराविय पुणु निउत्तेहिं
उग्घोसण जह – जु कु-वि सुहड-वंस-जस-कलस-सरिसउ ।
आरोवइ धणु-रयणु मज्झ भइणि परिणिवि सु अइसउ ।।
पावइ मज्झि नरामरहं पयडिय-कित्ति-कलावु ।
लहइ य रज्जह अद्धु अह इहु निसुणिवि आलावु ।।

२४४६. १. सुणवि.

[२४४८]

धणु-चडावण-महि समारद्धि

नाणाविह-मंडलिय- सचिव-सेट्ठि-सत्थाह-पुत्तय ।
तसु कंसह घर-अजिरि विहिय-चारु-सिंगार पत्तय ॥
इय निसुणिवि सोरिय-पुरह नयरह चलियउ ताहं ।
पयडु अणाहिट्ठि त्ति सुउ सउरि-मयणवेगाहं ॥

[२४४९]

वसिउ पुणु वलएव-सविहिम्मि

तहिं गोउलि गोसि पुणु अग्गिमम्मि मग्गम्मि चलियउ ।
अब्भत्थइ पुणु वलह सविहि कण्हु साहज्जि वलियउ ॥
तेण वि वियरिय अह ति दु-वि गच्छहिं अग्गिम-मग्गु ।
ता नग्गोह-महद्दुमहं साहहं तहं रहु लग्गु ॥

[२४५०]

अह विवन्नउ हुउ अणाहिट्ठि

अ-तरंतु खेडेउ रहु तयणु फुरिय-पोरिसिण कण्हिण ।
उम्मूलिउ सयलु दुमु पहरिऊण वाम-पय-पण्हिण ॥
इय वंधुहु वलु परिकलिवि सु मयणवेगह पुत्तु ।
पमुइय-मणु कण्हेण सहुं चाव-हरम्मि पहुत्तु ॥

[२४५१]

अह ति देक्खहिं दो-वि कोदंड

मणि-कंचण-मंडियउ गुरु-पहावु देवय-अहिट्ठिउ ।
पणवन्न-रयणिहिं घडिय वेइयाइ उवरि प्पइट्ठिउ ॥
तह घण-चक्कल-पीण-थण धणुहह सविहि वइट्ठ ।
स-नरामर-मण-मोहणिय सच्चहाम तिहिं दिट्ठ ॥

२४५० ४. सलु for सयलु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४५२]

*तयणु सउरिहि सुउ अणाहिट्ठि
परिखुद्धु वि वद्ध-पह- वसिण जाव कोदंडु गिण्हइ ।
ता पडियउ घुम्मिउण किण-वि भडिण नं हणिउ पण्हिइ ॥
एत्थंतरि रिउ-घर-गउ वि अकय-परिप्फंदो वि ।
तिक्ख-कडक्ख-सरावलिहिं तरुणिहिं हम्मंतो वि ॥

[२४५३]

वाम-हत्थिण गहिवि कोदंडु
आरोविवि दाहिणिण मुइवि तहिं जि मणिमइय-वेइहिं ।
अवलोइरु तरुणिय[णि] तहिं जि समुहु अणिमिसिहिं नयणिहिं ॥
सहिउ अणाहिट्ठिण सउरि- कुल-गयणयल-ससंकु ।
अलहिज्जंतउं[×] जणिण कंस-घरह नीसंकु ॥

[२४५४]

विजिय-कुंजर-वसह-कलह-
सवर-तुरय-सिहंडि-गइ कमिण कंस-निव-अहम-भवणह ।
नीहरिउण गयउ गिह- दार-देसि वसुदेव-रायह ॥
मयणवेग-देविहि तणय वयणिण तत्थ वि थक्कु ।
हरि पइसेउण परिय(?) गरुयर-हियय-चमक्कु ॥

[२४५५]

गंतु सउरिहि सविहि साणंदु
परिसाहइ जह – जणय धणुहु कंस-नरनाह-अहमह ।
आरोविउ मई खणिण मज्झि तस्सु वहु-निवइ-निवहह ॥
अह गुरु-रोसारुण-नयणु चलिर-अहरु वसुदेवु ।
जंपइ – अरि अरि पाव-मइ तुह किं रुट्ठउ दइवु ॥

*The portion from तयणु (2452. 1.) to तस्सु (2455.6.) is based on ms. ख. only.

२४५२. ५. पण्हइ.

२४५४ हरि थेइ सेंउण परिय.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४५६]

केण पेसिउ तत्थ तुहुं हंत
वाहरिउ व इत्थ किण धणु व केण कज्जिण चडाविउ ।
ता मरिहसि नूण तुहुं कंस-करिण मह भवणि आविउ ॥
धणुहारोवण-छलिण निय-रिउ-जसु अच्छइ नियंतु ।
इय हणिहइ अ-वियप्पु तइं सुणिउण धणु-वुत्तंतु ॥

[२४५७]

तयणु कंपिर-अंगुवंगिल्लु
सो जंपइ – जणय मह नूण नत्थि सामत्थु एरिसु ।
आरोविवि धणु-रयणु हरिण लद्धु इहु कित्ति-पगरिसु ॥
ता स-विसेस-ससंक-मणु सउरि भणइ तूरंतु ।
गोउलि कण्हु विमुत्तु तुहुं अच्छि सोरियपुरि गंतु ॥

[२४५८]

करिवि अ-वितहु इहु अणाहिट्ठि
नीसेसु वि अइरिण वि गमइ दियह जणओवएसिण ।
एत्थंतरि पसरियउ जण-पवाउ पुहइहिं विसेसिण ॥
जह – सोहग्गि-सिरोमणिण कण्हिण नर-रयणेण ।
आरोविउ लीलइं धणुह- रयणु नंद-तणएण ॥

[२४५९]

अह कहं नणु नंद-तणएण
गोउलिय-नराहमिण गरुय-महिम-देवय-अहिट्ठिउ ।
आरोविउ धणु-रयणु अह व मुणिसु हउं तसु वि चेट्ठिउ ॥
इय चिंततउ कंस-निवु कोव-कुडिल-रत्तच्छु ।
हरिहि विघायण-हेउ गुरु- अ-विवेइण पडिहच्छु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४६०]

महुर-नयरिहि निय-निउत्तेहिं
घोसावइ चाव-महु हट्ट-सोह कारवइ जत्तिण ।
संचावइ मंच पुर- पहिहि दाणु दावइ स-वित्तिण ॥
मल्ल-जुज्झु होइहइ इह इय ववइसिवि महल्ल ।
सद्दावइ वलवंत महि- वलइ जि निवसहिं मल्ल ॥

[२४६१]

एहु वइयरु गोव-वयणेण
निसुणेविणु केसविण भणिउ पुरउ रोहिणिहि तणयह ।
जह-वंधव चलि-न जिह गंतु तत्थ तसु कंस-रायह ॥
चावूसवु अवलोइउण स-हरिसु तेण वि दिन्न ।
वित्थारहुं नियं-जस-पसरु परिणेविणु सा कन्न ॥

[२४६२]

अह - सहोयर एत्थ किमजुत्तु
पूरेसु स-कोउहलु चलसु गंतु जिह तहिं खणद्धिण ।
पेक्खिज्जहिं विविह-निव- निवह पत्त नियं-निय-समिद्धिण ॥
इय वियरेविणु केसवह पडिउत्तरु वलभद्दु ।
नाइसन्न-ठाण-ट्ठियह कुणइ जसोयह सद्दु ॥

[२४६३]

तयणु पभणइ - ण्हाण-सामग्गि
अम्हाण पउग्ग तुहुं कुणसु तुरिउ नरराय-विहविण
इयरी वि खलिर-प्पडिर- कर त करइ जा ताव मुसलिण ।
इहु अवसरु इय चिंतिउण कय-कित्तिम-कोवेण ।
भणिउ - पावि किं लज्जिहिसि नियय-दासि-भावेण ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४६४]

किं न वेगिण कुणसि जं भणिउ
किं न नियसि ऊसुयउ एहु लोउ चलिओ त्थि महुरहं ।
अह अ-मुणिरु तारिसउ हेउ तेसि तारिसहं वयणहं ॥
जणणि-पराहव-दुह-हयउ मउलिय-मुह-कंदुट्टु ।
भाव-सिणेहिण वंधविण किं-चि वि दलिय-मरट्टु ॥

[२४६५]

हुयउ केसवु तह-वि परिविहिय-
निय-उचिय-असेस-विहि किय-सिणाण-भोयण-विलेवणु ।
वलभद्दिण सह चलिउ महुर-समुहु रहवरि चडेविणु ॥
पत्तावसरिण अद्ध-पहि पुणु मुसलिण सो वुत्तु ।
जह – किं दीससि कण्ह तुहुं गरुय-दुहिहिं संजुत्तु ॥

[२४६६]

तयणु दुम्मणु मुक्क-नीसासु
परिमउलिय-मुह-कमलु भणइ कण्हु – किं भाय जंपहुं ।
निय-सवणिहिं दुव्वयण जणणि-विसइ एरिस निसुणहुं ॥
स-गुण-सिरोमणि नय-निउणु विउसु विणीय-पहाणु ।
तुहुं वि पयंपहि एम्व इय मह कि न खंडिउ माणु ॥

[२४६७]

ता हसेविणु मुसलि जंपेइ
नणु वच्छ जसोय तुह जणणि नेय न य जणउ नंदु वि ।
तुहुं सउरि-देवइहिं सुउ इह उ मुक्कु चिट्ठसि उविंदु वि ॥
कंस-निवाहम-भएण अह कह कह कहि कहि भाय ।
इय पुच्छंतइ कण्हि वलु कहइ स-वइयर-जाय ॥

२४६५. ८. क. तुहु.
२४६७. ९. क. वइर.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४६८]

जहा –

दस-दसारहं निवहं लहु वंधु
सोहग्गि-सिरोरयणु खयर-मणुय-तरुणियण-मणहरु ।
परिसेसिय-पिसुण-जणु सुयण-जणिय-आणंद-सुंदरु ॥
अहवा भुवणब्भहिय-गुरु गुण-रयणेहिं समिद्धु ।
सिरि-वसुदेवु नराहिवइ तुह जणउ त्ति पसिद्धु ॥

[२४६९]

धूय देवय-धरणिनाहस्सु
वसुदेवह सहयरिय विजिय-भुवण-तरुणियण-चंगिम ।
नीसेस-कला-निलय सुयण-सुहय-सह-जाय-वड्ढिम ॥
महुर-पयंपिर थिरु गमिर सुंदर-गुरु-गुण-गाम ।
नारायण तुह जय-पयड जणणी देवइ-नाम ॥

[२४७०]

थोव-थोवहं दियहं अवसाणि
गो-वग्ग-पूयण-च्छलिण वाह-सलिल-पडिपुन्न-नयणिय ।
तुह वयणि खिवेइ थण- दुद्धु स जिज छण-चंद-वयणिय ॥
तह सिरि-समुद्दविजय-निवह सउरि-गरुय-वंधुस्सु ।
तिहुयण-तरुणि-सिरोमणिहिं सिवदेविहि दइयस्सु ॥

[२४७१]

तणउ सुरवर-खयर-नर-नमिउ
तयलोय-चिंतारयणु जणिय-भुवण-आणंद-वित्थरु ।
तुह वंधवु अतुल-वलु जय-सरण्णु सिरि-नेमि-जिणवरु ॥
वालत्तणि तुह रक्खणह कज्जिण जेट्ठउ वंधु ।
हउं पेसवियउ सउरिण जि पयडिय-गुरु-पडिवंधु ॥

२४६९. ६. क. विरगमिरु.
२४७०. ३. क. ख. वाहु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४७२]

इय सुणेविणु कण्हु पभणेइ
जइ एवं ता किह णु भाय तम्मि गोउलि वसिज्जइ।
तयणंतरु मुसलिण वि वच्छ तुज्झ एहु जि कहिज्जइ ॥
इय भणिरिण अइमुत्त-रिसि- कह अक्खिय पुव्वुत्त।
ता जा कंसिण हणिय तुह सरिस छ देवइ-पुत्त ॥

[२४७३]

इय सुणंतु वि वियड-भिउडिल्लु
रोसारुण-नयण-दलु भणइ कण्हु – मह जेण अवल व।
छ-स्सोयर विद्दविय सो कहिं वि दक्खेसु बंधव ॥
जइ हउं अज्जु न हणहुं रिउ नियबंधव-खय-कालु।
बाल-वुड्ढ-गुरु-घायगहं गइ ता लहहुं अयालु ॥

[२४७४]

तयणु वियसिय-वयण-हरिणंकु
गाढयरु आलिंगिउण भणइ मुसलि – इमिणेव कज्जिण।
आकुट्ठ जसोय मइं इहरहा उ कह निन्निमित्तिण ॥
तुहुं जाणहि पुच्छहि य मइं पुव्व-उत्तु वुत्तंतु।
संपइ पुणु तइं एरिसिण मणिण हउ जि सो सत्तु ॥

[२४७५]

इय करेविणु मुसलि-पच्चक्खु
गिरि-गरुय-पइन्न हरि गयउ महुर-नयरीए अइरिण।
ता अवगय-वइयरिण हरिहि रक्ख कय बहुय सउरिण ॥
समुद्दविजय-पमुहा य तहिं सद्दाविय निय-भाय।
अक्कूराइ वि सउरि-सुय समुदाइण तहिं आय ॥

२४७३. १. क. लहुहु.
२४७४. ३. क. भण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४७६]

अह ति नियं-निय-उचिय-मंचेसु
उवविट्ठ अहक्कमिण समगु इयर-नरवइ-सहस्सिण ।
कंसस्स उ दोन्नि करि- राय संति पसरिय स-तेइण ॥
रिउ-निव-करडि-मरट्ट-हरु गुरु-पोरिस-अभिरामु ।
पउमुत्तर-अभिहाणु इगु वीयउ चंपग-नामु ॥

[२४७७]

विहि-वसेण य कण्ह-हलहरहं
हणणत्थु कंसाहमिण दु-वि ति हत्थि मय-भरु लियाविय ।
स-निउत्त-आओहणिहि पुणु पओलि-दारेसु ठाविय ॥
एत्थंतरि बहु-गोव-जुय कय-असरिस-सिंगार ।
जा पविसहिं महुरहं पुरिहिं दो-वि ति सउरि-कुमार ॥

[२४७८]

ताव कुंजर गडयडेऊण
कर-डंड उब्भीकरिवि समुहु ते ति दुण्ह वि पहाविय ।
बल-हरिणुट्ठिवि दट्ठ इह असम-विरिय-सुहडत्त-भाविय ॥
निय-रह-रयणु विउज्झिउण करिहिं करेसु विलग्ग ।
पहरहिं अहरिय-करुण दु-वि पयडिय-पोरिस-मग्ग ॥

कहं वा –

[२४७९]

हणहिं मुट्ठिहिं चडहिं कुंभयडि
मुसुमूरहिं मय-पसरु दसण-मुसलि लग्गंति धाविवि ।
परिखेवहिं चक्क-भमि खंध-देसि आरुहहिं आविवि ॥
इय कंचि-वि खणु कीलिउण चुज्जु जणेवि जयस्सु ।
उप्पाडहिं लीलइं दसण- मुसल करिंद-जुयस्सु ॥

२४७६. ४. क. उं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४८०]

तेसि निट्ठुर-मुट्ठि-घाएहिं
परिजज्जर कुंभयड दलिय-दप्प तहं सीह-नाइहिं ।
अणवरय-गलंत-तणु- रुहिर-पूर असिधेणु-घाइहिं ॥
हरि-वल-उप्पाडिय-दसण गुरु-विमुक्क-चिक्कार ।
हूय कयंताजिर-अतिहि कुंजर तयणु कुमार ॥

[२४८१]

गोव-वग्गिण विहिय-सक्कार
थुव्वंत सुहि-सज्जणिहिं कय-चमक्क आरोह-हिययहं ।
उत्ताविय-पिसुण-मण मणि वसंत कामिणि-समूहहं ॥
महुरा-नयरिहिं मागहिहिं पयडिय-जय-जय-सद्द ।
अणुमग्गागच्छन्त-वहु- गोव-जणिय-संमद्द ॥

[२४८२]

चारु-चंपय-जाइ-वियइल्ल-
मुत्ताहल-मालियहिं विहिय-विविह-अवऊल-मणहरि
गंधोदय-सेग-वर- कुसुम-पयर-सव्वंग-सुंदरि ॥
उत्तिम-वत्थ-पहाण-मणि- कणय-सिला-कय-सोहि ।
सच्चहाम उक्कंठ-मण आगय विविह-निवोहि ॥

[२४८३]

मल्ल-खलयह नाइदूरम्मि
निय-सोहा-अवगणिय- सुर-विमाणि मंचम्मि एगहं ।
संपत्त ति दो-वि अह मंचि निचिइ माणुसहं चंगहं
तहिं अ-लहंत तहा-विहउं ठाणु स-भुय-दंडेहिं ।
अन्नहिं खिविउण माणुसइं कइ-वि ति ठंति सुहेहिं ॥

२४८०. ३. क. नाइहि. ८. क. अतिहिं. ९. क. कुमारू.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४८४]

तयणु अहरिय-इयर-तेयस्सु

पसरंत-देह-प्पहह वाहु-दंड-विलसंत-लच्छिहि ।
गंभीरिम-सायरह हरिहि पुरउ वियसिरिहि अच्छिहि ॥
जंपिउ वलभद्देण जह इहु सु कंसु तुह सत्तु ।
एहि ति समुदविजय-पमुह एहु सु जणउ पवित्तु ॥

[२४८५]

इय असेसि वि राय पत्तेउ

उवदंसइ वलु हरिहि जाव ताव कंसस्स वयणिण ।
नाणाविह मल्ल तहिं जुडहिं अन्नमन्नेण दप्पिण ॥
धावहिं वग्गहिं अब्भिडहिं पहरहिं मोडहिं अंग ।
टालहिं संधिअ संधिहिं वि भंजहिं अंगोवंग ॥

[२४८६]

एत्थ-अंतरि तिवइ फोडेवि

सीहारवु मेल्लिउण हणिवि सुहड खर-वयण-सिल्लिण ।
अप्फालिवि वक्करिय गुरु-मरट्ट-चाणूर-मल्लिण ॥
आकंपाविवि धरणियलु निय-पय-द्दरएण ।
भणिउ – अरिरि इह अत्थि कु-वि जायउ निय-जणएण ॥

[२५८७]

जो विहूसिउ गरुय-परकमिण

भुय-दंड-चंडिम-वहिरु मल्ल-जुज्झ-उच्छाह-सोहिरु ।
आगच्छिवि मह समुहु जुडइ समर-धरणिहिं अ-कायरु ॥
ता सूरउ ता चारहडु जा घरि सविहि पियाए ।
मइं दिट्ठउ पुणु सयलु भडु पविसइ तलि वसुहाए ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४८८]

इय सुणंतउ सवण-दुह-जणय
चाणूर-मल्लह वयण　　फुरिय-रोस-वस-अरुण-लोयणु ।
निय-मंचह उत्तरिवि　　गुरु-पयाव-अहरिय-विरोयणु ॥
सीह-किसोरु व वण-करिहि तरणि व तिमिर-भरस्सु ।
रंग-महिहिं समुहीहुयउ　　कण्हु तस्सु मल्लस्सु ॥

[२४८९]

गयणु फुडइ व धरणि विहडइ व
उल्ललइ व रयण-निहि　कणय-सिहरि व पडइ उविंदह ।
पय-पहर-प्पडिरविण　　आसणं पि चलइ व सुरिंदह ॥
इय अवइन्नउ कण्हु रण- रंगि निरिक्खिवि लोउ ।
अन्नुन्नेण समुल्लवइ　　किं-चि पयासिय-सोउ ॥

[२४९०]

पीण-खंधरु सुदढ-भुय-दंडु
कय-करणु चाणूरु इह　　एहु कण्हु पुणु बालु अज्जु वि ।
इयइ-महल्ल-काउ खमु　　हवइ कह-वि धुवु जुज्झ-कज्जु वि ॥
इय लोयहं वयणइं सुणिवि पभणइ कंसु स-कोवु ।
अरि लोयहु किं एहु मइं इह हक्कारिउ गोवु ॥

[२४९१]

दुद्ध-पाणिण मत्तु जइ एहु
उप्फिडिउण पडइ इह　　ता पडेउ किं तुम्ह सत्तिण ।
इय वयणु कंसह सुणिवि　　ठिउ लोउ मोणावलंबिण ॥
तयणंतरु गहिरक्खरिहिं　　जणह समुहु कण्हेण ।
भणिउ – दलिज्जहिं महिहर वि कि न लहुइण वज्जेण ॥

२४८८. ३. क. °लोयण.

२४८९. ४. क. पहरह.

२४९०. २. क. चाणूर; ४. क. अमहल्ल; ८. क इहु.

२४९१. ८. क. महिहरि.

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[२४९२]

जुज्झं च होइ चउहा वाया-दिट्ठी-निजूह-सत्थ-मयं ।
मोत्तूण सत्थ-जुज्झं पहाण-जुज्झाइं इयराइं ॥

[२४९३]

मल्लाण निजूह-मयं वाया-जुज्झं तु होइ वाईणं ।
सत्थ-मयं अहमाणं उत्तिम-पुरिसाणं दिट्ठि-मयं ॥

[२४९४]

एयम्मि मल्ल-जुज्झे कय-करणो चेव एस चाणूरो ।
अहयं तु अकय-करणो इय पेच्छउ अंतरं लोगो ॥

[२४९५]

इय निरिक्खिवि हरिहि पागब्भु
अइ-भीउविग्ग-मणु कंसु दुट्ठ-दिट्ठीए तोरिवि ।
वियइज्जउ हरि-हणण- हेउ खिवइ मुट्ठियग-मल्लु वि ॥
ता उट्ठंतउ दट्ठु रिउ हलहरो वि वेगेण ।
निय-मंचह उत्तरिवि हरि- सविहिहिं गयउ खणेण ॥

[२४९६]

पक्खि एगहं कण्ह-बलएव
स-परक्कम-विजिय-जय इयरि मल्ल चाणूर-मुट्ठिग ।
दट्ठु वग्गिर धाविर वि परिफुरंत-गुरु-रोस-दिट्ठिग ॥
चाणूरिण सह जुडिउ हरि हलहरु पुणु इयरेण ।
आकंपावहिं जगु वि पवि- गरुय-मुट्ठि-पहरेण ॥

[२४९७]

दलहिं महियलु दढ-चवेडाहिं
अप्फालहिं वक्करिय उरयलेसु पहरहिं विवक्खिहिं ।
खोहेहिं रंग-जणु पिसुण-हियय सल्लवहिं दुक्खिहिं ॥
अह चाणूरिण लहिवि लहु तह हरि हयउ उरम्मि ।
जह विहलंघलु परिखिवइ नयणइं दिसि-विवरम्मि ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२४९८]

तयणु किं-चि वि फुरिय-हरिसेण
तिण कंस-निवाहमिण पुण-वि हरिहि घाय-कइ पेसिउ ।
ता मुसलिण धाविउण हणिवि उरसि चाणूरु धरिसिउ ॥
तह जह पसरिय-सासु महि- विलुलिर-केस-गुलुंछु ।
सिय-पीयल-अरुणाइं वमिरु निवडिउ आगय-मुच्छु ॥

[२४९९]

अह तह च्चिय समगु मुट्ठिगिण
वलभद्दु उज्झिय-करणु वहु-वियप्पु जुज्झेउ लग्गउ ।
ता पाविय-चेयणिण अरिण समगु रण-रसि अ-भग्गउ ॥
स-विसेसयरु परिप्फुरिय- अमरिस-वस-अरुणच्छु ।
पहरइ अहरिय-करुण तह कह-वि सु सउरिहि वच्छु ॥

[२५००]

जेण नासिग-वयण-सवणाहं
विवरेहिं परिगलिर- धाउ-निवहु चाणूरु जीविण ।
परिचत्तउ हरिहि कय- अविणओ त्ति नं गरुय-भीइण ॥
ता कुविउण भय-कंपिरु वि पभणइ कंस-हयासु ।
अरि अरि इहु मह मंडियउ नूण कयंतिण पासु ॥

[२५०१]

अरिरि सुहडहु गहिवि वंधेह
मारेह य गोव दु-वि हणह नंदु स-कलत्त-पुत्तु वि ।
जो एयहं कुणइ कु-वि पक्ख-वाउ मह रिउ मुणंतु वि ॥
सो अम्हाहं वि सयणु धुवु मारेयव्वउ अज्जु ।
जह जीवंतु न कुणइ पुणु राय-विरुद्धु अ-कज्जु ॥

२४९८. ७. क. गुलुंच्छ.
२४९९. ३. क. वियप्प; ८. करण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५०२]

इय सुणेविणु भणइ हरि – पाव
पुव्वं पि-हु वंधु मह निहय आसि जे तइं अयाणुय ।
कय रक्ख अप्पह वहुय कुगइ-मग्ग-पयडणिण भाणु य ॥
पाव-तरुहं तहं सयलहं वि फलइं स-हत्थिहि लेसु ।
कि न मह अक्खिय एह कह इय पुणु म-न जंपेसु ॥

[२५०३]

इय भणंतु वि कण्हु उप्पइवि
पडिऊण य सामरिसु कंस-मंचि तसु मउडु पाडिवि ।
भय-तरलिय-नयण-दलु दलिय-देह-भूसणु निहोडिवि ॥
तह कहमवि मुट्ठिण हणिउ उत्तिम-अंगि हयासु ।
हुयउ कयंतह अतिहि जिह सो गय-जीविय-आसु ॥

[२५०४]

एत्थ-अंतरि हलहरेणावि
गुरु-कोव-वसुल्लसिय- सहस-गुणिय-वीरिय-विसेसिण ।
सो मुट्ठिग-मल्लु विणिवड्ढु समगु निय-पट्टि-देसिण ॥
गल-कंदलु सु-नियंतिउण सुदढ-जोत्त-वट्टेण ।
तह भीडिउ कडियडिण सह जह समगु मरट्टेण ॥

[२५०५]

दलिय-विग्गहु खुडिय-नयणिल्लु
परिगलिय-रुहिर-प्पवहु रुद्ध-सासु संवरिय-चेयणु ।
सु कयंतह अतिहि हुउ तयणु दट्ठु पडिवक्ख-भेयणु ॥
हरि वलभद्दु वि दुल्ललिउ करयल-कय-करवाल ।
कंसह सुहड समुच्छरिय नं अप्पह खय-काल ॥

२५०२. ५. कुमइ.
२५०५. ३. क. मुणिय; ४. क. कडिकडिण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५०६]

तयणु कण्हह समुहु समुवेंत
ते पेक्खवि हलहरिण गहिवि थंभु सु-महल्लु मंचह ।
परिताडिय तह कह-वि जह ति सयल परिटलिय संचह ॥
कुविय-कयंत-समाणु वलु पेक्खिव दिसो-दिसि जंति ।
कि-वि कि-वि विवस-असेस-तणु-इंदिय तहिं जि मरंति ॥

[२५०७]

एत्थ-अंतरि कंस-वयणेण
जरसंध-नराहिवह सेन्नु आसि जं तत्थ पत्तउं ।
तसु रक्खण-कइ तइं जि मयइं तम्मि अमरिसिय-चित्तउं ॥
लग्गउं निय-सामिहि भइण जा सन्नाहु करेउ ।
ता ति समुदविजयाइ-नर- नायग तमणुसरेउ ॥

[२५०८]

एहु अवसरु इय विभावंत
सन्नाहिय-नियय-वल जुडिय तस्सु जरसंध-सेन्नह ।
खण-मित्तिण पवण-हय- घण व नट्ठ ते सुहड अन्नहं ॥
संरुद्धम्मि य सयलह वि महुरह पुरिहि पवेसि ।
जरसंधह हय-गय-सुहड नासिवि गया विएसि ॥

[२५०९]

कंसु कण्हिण पुणु नियय-वंधु-
वह-वइयर-अमरिसिण निय-करेहिं केसहिं गहेप्पिणु ।
परिखित्तउ कड्ढिउण रंग-वहिहिं साडोवु नेप्पिणु ॥
तयणु अणाहिट्ठिउ कुमरु जायव-निव-वयणेण ।
हरि-हलहर सउरिहि भवणि आणइ रह-रयणेण ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५१०]

ता स-मंदिरि कण्ह-बलएव

समुवेंत निरिक्खिउण सउरि हरिस-रोमंच-अंचिउ ।
परिखलिर-गग्गर-गिरहिं भणिरु – अहह हउं किह णु वंचिउ ॥
एत्तिउ कालु स-नदंणहं मुह-दंसण-सुक्खेण ।
तहं अभिमुहु अब्भुट्टिउण सह जायव-लक्खेण ॥

[२५११]

करिवि केसवु नियय-उच्छंगि

अद्धासणि पुणु मुसलि सन्निसन्नु वसुदेवु आसणि ।
अह जायव-निव-निवह सयलि दूरु विम्हइय निय-मणि ॥
पुच्छहिं वसुदेवह पुरउ भणु को इहु वुत्तंतु ।
अह वइयरु सयलु वि सु तहं कहइ साइ-पज्जंतु ॥

[२५१२]

तयणु निवइण समुदविजएण

उववूहिय बहु-विहिहिं तुट्ठ-मणिण ते सउरि-नंदण ।
इगनासिय-धूय-जुय देवई वि वियसंत-लोयण ॥
तहिं आगंतु स-अंगरुहु अवगूहइ साणंदु ।
ता जायव-जणु हरिस-हिउ विम्हिय-मुह-अरविंदु ॥

[२५१३]

एग-चित्तिण महुर-नयरीए

धरणयह विमोइउण उग्गसेणु ठावइ निवत्तिण ।
तेणावि महा-महिण सच्चहाम स-दुहिय पवित्तिण ॥
दियह-मुहुत्तिण केसवह दिन्न सु-लक्खण-जुत्त ।
एत्थंतरि निसुणह इयर जारिस कह संवुत्त ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहा हि –

[२५१४]

हुयइ कंसह कित्ति-सेसत्ति
अंतेउरु पुर-जणु वि निहय-नाहु रुणुझुणइ निहुयउं ।
हा सामिय भड-तिलय सुहय-रयण किं एहु हूयउं ॥
कहिं गउ तुहुं कहिं पेक्खिसहुं आवि-न करि संभासु ।
जोइ-न तुज्झ विओइं जह जणु चिट्ठेइ निरासु ॥

[२५१५]

इय निरंतर-गलिय-नयणंसु-
जल-धोइय-मुह-कमलु मुक्क-दीह-नीसास-मंसलु ।
अंतेउरु स-पुरु तसु कंस-निवह पेक्खिवि अ-मंगलु ॥
सुमरेविणु अइमुत्तयह रिसिहि ताइं वयणाइं ।
अवलोएविणु कंसह वि विसमइं मरण-दुहाइं ॥

[२५१६]

नियय-परियण-पुरउ साडोवु
इहु पभणइ जीवजस मज्झ दइउ सिरि-कंसु निहणिवि ।
ते गोव-नंदह तणय वच्चिहिंति कहिं वसुह मिल्लिवि ॥
अह व किमन्निण पभणिइण हउं निय-जणय-करेण ।
निहणाविवि जायव मुसलि कण्ह-नंद अइरेण ॥

[२५१७]

समगामवय-सयल-सत्तूहिं
निय-दइयह देसु हउं नूण सलिल-अंजलि पयत्तिण ।
इयरह उण हुणहुं धुवु जलिर-जलणु नियएण गत्तिण ॥
इय काऊण पइन्न गिरि- गरुय विमुक्कल-केस ।
सा जीवजस हयास गय जणयह पुरउ स-रोस ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५१८]

ता कहं चि वि संठवेऊण
सा पुच्छिय नरवरिण वच्छि कहसु को एहु वइयरु ।
अह तीए निवेइयइ पत्थुयत्थि साडोवु नरवरु ॥
जंपइ – वच्छि न सुट्ठु किउ ज न कहियउं तइयावि ।
न सहिज्जइ एगु वि दियहु एरिसु खलु कइयावि ॥

जओ –

[२५१९]

दुट्ठ महिलिय वाहि वड्ढंत
आरंभिय-पसरु सिहि समुवलद्ध-अवयासु दुज्जणु ।
उग्गंतु अ-छिन्नु विस- तरु वि कुणइ भुवणह वि गंजणु ॥
इय न सुहावह हवहिं धुवु एहि उवेहिज्जंत ।
तीसेसावि(?) हु भुवणह वि वत्थु-सत्थ पुव्वुत्त ॥

[२५२०]

तह-वि दूरिण चयसु तुहुं खेउ
मह पासह वच्चिहइ कत्थ कसु वि दरिसिहइ स-वयणु ।
ते जायव गोव ति वि नंदु सो वि सु वि तेसि परियणु ॥
मइं रुट्ठइ तहं तारिसहं देइ कु संभासो वि ।
नहि मयरम्मि विरुद्धि जलि मच्छलियहं वासो वि ॥

[२५२१]

इय कहं-चि वि धूय संठविवि
जरसंध-नराहिविण समुदविजय-पमुहाण निवइहिं ।
सिरि-सोमग-दूउ निउ सिक्खिवेउ वहु-विहिहिं वयणिहिं ॥
पेसिउ सो-वि हु अइरिण वि जायव-सविहिहिं गंतु ।
जह जह जंपइ तह तह जि निसुणह साहिज्जंतु ॥

२५१७. १. क. सत्तहि, ख. सत्तुहिं; ५. क. रयणु, ख. जलुणु.
२५१९. ८. नीसेसावि.
२५२०. ३. क. कत्थ सु व. ९. क. यहं मच्छलियहं.
२५२१. ६. क. पसिओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तहा हि –

[२५२२]

तुम्ह सयलहं निवहं आइसइ

जरसंधु नरिंदु जह जेहिं मज्झ जामाउ निहणिउ ।
ते दो-वि हु कण्ह-वल पेसवेसु विक्खेवु विहणिउ ॥
दुद्धु पियंतहं गोउलि वि ताहं क लग्ग अ-विज्ज ।
मत्थह मज्झि ण उग्गलहिं मंदालोचिय कज्ज ॥

[२५२३]

दोण्ह गोवहं कज्जि तुम्हहं वि

जरसंध-नराहिविण सह विरोहु नो जुत्ति-जुत्तउ ।
दोसारिह अप्पिउण सुहिण नियय-रज्जाइं चिंतउ ॥
अह सोमग-दूयह पुरउ समुदविजय-नरनाहु ।
भणइ – सम्मु परिभावि तुहुं एयहं को अवराहु ॥

[२५२४]

विणु वि दोसहं हणिवि छ-व्वंधु

वर-लक्खण-रूव-धर जाय-मेत्त कंसिण निवाइय ।
कण्हस्स वि हणण-कइ वाल उ[ण] वि परिमुक्क घाइय ॥
पत्तावसरिण कण्हिण वि जइ निहणिउ निय-सत्तु ।
ता खत्तिय-कुल-संभविहि भन्नइ किह-णु अ-जुत्तु ॥

[२५२५]

रुट्ठु एयहं निवइ जरसंधु

जामाउइ निहणियइ तम्मि रुट्ठइ हि वंधु-घाइण ।
सो निहणिउ एगु तह सावराहु निय-पुरिसयारिण ॥
एयह वंधव हय वहुय सिसु अविहिय-अवराह ।
जुत्तु अ-जुत्तु व कवणु इय तं पि कहसु दुय-नाह ॥

२५२५. ७. क. अवराहु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५२६]

नूण निग्गह-अरिहु जरसंध-
रायस्सु वि कंसु परि पयड जस्सु दुव्विणय भुवणि वि ।
ता गरुयर-पूय-विहि मुसलि-सहिउ अरिहेइ कण्हु वि ॥
एत्थंतरि सोमगु भणइ अरिहाणरिह-वियारि ।
को हउं तुम्हाणं पि मइ का एरिसि अहिगारि ॥

[२५२७]

कज्जु सामिहि किच्चु भिच्चेहिं
अम्हेहिं तुब्भेहिमवि किं-पि जुत्तु जइ सु ज्जि मुणिसइ ।
हउं पेसिउ सज्जणइ इयरहा उ हढिण वि सु लेसइ ॥
साम-भेय-डंडेहिं पहु कुणहिं कज्जि परिवाडि ।
जे उ ति लंघहिं ते खिवहिं अप्पणु खंधि कुहाडि ॥

[२५२८]

वज्ज-दारुण वयण इय भणिरु
सो सोमगु पेक्खिउण समुदविजय-नरनाह-पमुहिहिं ।
सयलेहिं वि जायविहिं असम-रोस-वस-फुरिय-अहरिहिं ॥
गरुयामरिसु समुल्लवइ तहिं आविवि गोविंदु ।
अरि अरि सोम अ-सोम तुहुं म-न मन्नहि सु नरिंदु ॥

[२५२९]

पउर-परियणु एहि पुणु थोव
सो गरुयउ एहि लहु सो पयंडु इहि मंद-सत्तय ।
जं एगु वि पंचमुहु हणइ करिहिं सय-सहस मत्तय ॥
लहुउ वि वज्जु दलइ गिरिहिं सिहरइं गरुयाइं पि ।
दोण्ह वि पक्खहं नज्जिसहिं पुणु रणि सत्ताइं पि ॥

२५२८. ५. क. असरोस°

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५३०]

सामि-सेवग-भावु पुणु इत्थ

कइया-वि कस्सु-वि हवइ जं सु-नीइ परि कमिहि किज्जइ ।
नीई उ सु-बुद्धियहं सा उ तुम्ह गलिय त्ति नज्जइ ॥
जं दीसइ सव्वायरिण अ-विसयम्मि पारद्धु ।
उभयहं भवहं विणासयरु पत्थुयत्थि निव्वंधु ॥

[२५३१]

कयलीणं वंसाणं य होइ विणासाय जह फलं लोए ।
तह पुरिसाण अ-कज्जे पडिवंधो कुल-विणासाय ॥

[२५३२]

तयणु जल-निहि-सलिल-गंभीर

सुर-सिहरि-थिरेग-मण गयण-मग्ग-विच्छिन्न-आसय ।
अवलोइवि कण्ह-वल गहिय-वयण-विन्नाण-अइसय ॥
सो सोमगु संकिय-हियउ जा चिट्ठइ खणु एगु ।
समुदविजय-निवु ताव इहु पभणइ विमल-विवेगु ॥

[२५३३]

भणसु सोमग तुहुं जरासंधु

जह – नंदण-मग्गणउं मुइवि अम्ह आइससु सयलु वि ।
अह सोमगु भणइ – नर- नाह एहु हउं मुणहुं वालु वि ॥
जइ न समप्पह तुम्हि सुय ता अच्छउ पुहईए ।
पायालम्मि वि न हविहइ ठाणु एहु स-मईए ॥

[२५३४]

सम्मु चिंतिवि देह पडिवयणु

अरहट्टु म वट्टियहं विक्किणेह सव्वे वि मिलिउण ।
इय पुणु पुणु पभणिरह सोमगस्सु दुव्वयण सुणिउण ॥
कोव-पकंपिर-अहर-दलु अमरिस-अरुणिय-दिट्ठि ।
हरिहि वंधु सविहि ट्ठियउ पभणेइ अणाहिट्ठि ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५३५]

अरिरि सोमग तुहुं जि जरसंध

निव-भवणि असोम-करु हुयउ एम्व साहंतु अम्हहं ।
अचिरेण वि पेक्खिहिसि तुहुं वि अम्हि जं करहुं तुम्हहं ॥
इय खर-जंपिय-मुग्गरिण निहणिय-मुहु आगंतु ।
सोमगु जरसंधह पुरउ कहइ पुव्व-वुत्तंतु ॥

[२५३६]

समुदविजउ वि कण्ह-वलभद्द

सुहि-सज्जण मेलिउण वाहरेउ कोट्ठुगि निमित्तिउ ।
किं एण्हि जुत्ति-खमउं सह रिऊहिं अम्हं ति पुच्छिउ ॥
सम्मु निहालिवि साहियउं नेमित्तिण वि स-तोसु ।
जह – हरि-मुसलि वि निय-वलिण निहणिवि सत्तु स-दोसु ॥

[२५३७]

अद्ध-भरहह सामि-भावेण

निस्संसउ होहिसइं किं-तु एण्हि जायविहि सयलिहिं ।
सह वच्चह पच्छिमहं दिसिहिं तुम्हि विंझ-गिरि-सविहिहिं ॥
जलहि-तीरि जहिं हरि-दइय सच्चहांव पसवेइ ।
तणय-जुयलु तहिं अच्छिजहु नयर-निवेसु करेइ ॥

[२५३८]

इय विणिच्छिवि समुदविजयाइ

सयलो वि जायव-निवहु उग्गसेण-निव-लोय-सहियउ ।
सिरि-सोरियपुर-जणिण सूरसेण-विसइण वि कलियउ ॥
पवर-मुहुत्ति पहाण-दिणि सु-सउण-सय-जोगम्मि ।
संचल्लिउ पच्छिम-समुहु हुयइ पवरि लग्गम्मि ॥

२५३५. ८. क. पुरओ.

२५३६. ८. क. वलि.

२५३७. ३. क ख. सयलि वि, ६. क. ख. जलिहि; ७. ख. सचुहाम्ब.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५३९]

इओ य –

पुव्व-वइयरि सयलि स-विसेसि
अक्खायइ सोमगिण फुरिय-रोस-वस-अरुण-लोयणु ।
जरसंध-नरिंदु हुउ दुसहु खयह कालि व विरोयणु ॥
भणइ य – अरिरि चउद्दसिहिं जाउ अत्थि कु-वि वीरु ।
जो मह गोव निदंसिउण सियलावेइ सरीरु ॥

[२५४०]

तयणु पसरिय-गरुय-विरिएण
रिउ-दुद्धर-पोरिसिण पत्त-कित्ति-पसरिण अयालिण ।
जरसंध-नराहिवह पुरउ तसु जि नंदणिण कालिण ॥
पासि करेविणु जीवजस जंपिउ – अइराओ वि ।
हउं इह आणिसु रिउ-निवहु कइढिवि जलणाओ वि ॥

[२५४१]

अह स-हत्थिण तुट्ठ-हियएण
जरसंध-नराहिविण तसु विइन्नु कप्पूर-वीडउं ।
सह पेसिय पंच सय नरवईण अमियंतु घोडउं ॥
कुंजर-सुहड-रहाहं पुणु कालिण सह चलियाहं ।
अंतु न मुणियउ तइयहं वि हउं किं वन्नउं ताहं ॥

[२५४२]

एत्थ-अंतरि पडिउ झय-कलसु
जय-कुंजरु अत्थमिउ भग्गु दंडु पुणु पुंडरीयह ।
पडिकूलु स-सक्करउ फुरिउ अनिलु हुउ कंपु वसुहहं ॥
वामउं नयणु परिप्फुरिउ अवरि वि हुय उप्पाय ।
ता सयलि वि कालह सुहड सामल-मुह संजाय ॥

२५३९. ६. चउद्दिसिहि.

२५४०. ७. क. ख. अइराउ.

२५४१. ८. क. तइयंहं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५४३]

मरण-कारण पेक्खमाणो वि

अ-नियंतु व विहि-हयउ चलिउ कालु सुयणिहिं निसिद्धु वि ।
अ-वियाणिरु कज्ज-विहि- विसउ काल-पासेहिं वद्धु वि ॥
अहवा जं जं कारियइ पाविहिं पुव्व-कएहिं ।
तं तं जीवु करेइ धुवु किं कीरइ इयरेहिं ॥

[२५४४]

पुरउ वच्चहिं कण्ह-वलएव

नियं-जायव-परियरिय पच्छओ उ सो कालु स-वलु वि ।
अवगच्छिर दो-वि पुणु पक्ख एहु वुत्तंतु सयलु वि ॥
अइरेण य थोवंतरिण विंझ-गिरिहि सविहम्मि ।
आगय अह भरहद्ध-सुर- अंगण खुहिय मणम्मि ॥

[२५४५]

दिव्व-सत्तिण विहिय-इग-दारु

सुर-पव्वय-तुंगु गिरि दुहं वि वलहं अंतरि विउव्वइ ।
एत्थंतरि सिविर-भर- डरिय-वइरि तहिं कालु आवइ ॥
किं पुणु पिक्खइ गिरिहिं निय- पह-पिंगलिय-दिसाइं ।
सिमिसिमिसिमिरहं डज्झिरहं मडयहं चियहं सयाइं ॥

[२५४६]

अरिरि किं इहु इय विचिंतंतु

जा अग्गिम-मग्गु कु-वि अक्कमेइ ता कालु पिक्खइ ।
पढमेल्लुय-जोव्वणिय पलवमाण-वहु-संख-दुक्खइं ॥
भुवण-अहिय-निय-रूव-सिरि मउलिय-मुह-कंदुट्ट ।
जलिरह एगह चियह तडि वालिय एग दुहट्ट ॥

२५४४. १. क. पुर; वलएवु.

२५४५. ४. क. सविर corrected as सिविर; ख. सविर.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५४७]

तयणु सविहिहिं गंतु तरुणीए

एसो कालु समुल्लवइ सुयणु किह-णु तुहुं एम्व पलवसि ।
ता वालिय नीससिवि भणइ – हंत म-न किंपि पुच्छसि ।
धरि कंठ-ट्ठिय-दुक्खडा मा पयडिज्जहु लोइ ।
गरुयत्तणु परिहारियइ दुह उद्धरइ न कोइ ॥

[२५४८]

मह वि जइ क-वि सुकय-सामग्गि

पुव्वज्जिय होज्ज इह ता सहिज्ज दुह हउं कि एरिस ।
किं वहुइण एयहं जि चियहं पडिवि हउं मरिसु सु-पुरिस ॥
अह – नणु थवियहं मुत्तियहं किं कु-वि अग्घु करेइ ।
इय कालिण वुत्तइ तरुणि पडिउत्तरु वियरेइ ॥

[२५४९]

सुणसु सुंदर तुज्झ निव्वंधु

जइ इत्थ पत्थुय-कहहं ता कहेमि किं-चि वि समासिण ।
जह सोरियपुरि नयरि समुदविजय-निवु चत्तु दोसिण ॥
तसु वंधवु पुणु आसि लहु महुर-पुरिहिं वसुदेवु ।
तसु पुणु हुयउ सुय-प्पवरु कण्हु अवरु वलएवु ॥

[२५५०]

तेहिं दोहिं वि कंसु निव-अहमु

निय-वंधु-वइरिण हयउ ता कुवेउ जरसंध-निवइण ।
निय-नंदण-रयणु कु-वि काल-नामु सह पउर-सेन्निण ॥
सव्वेसिं पि-हु जायवहं हरि-हलहर-सहियाहं ।
पेसेउ गुरु-निग्गहह कइ वेगिण नासंताहं ॥

२५४७. ६. वरि.

२५४९. ५. क. निव.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५५१]

अह सु सविहागयउ निसुणेवि
पछन्न-चारहं मुहिहिं   भीय-चित्त कंपंत जायव ।
मा मरियउ रिउ-करिहि   इय मुणंत सुक्क व्व पायव ॥
तक्खण-जालिय-चिय-सहस- मज्झि अप्पु खिविऊण ।
छारुक्कुरुडीहूय लहु   चियह जलणि जलिऊण ॥

[२५५२]

भमहिं कुंजर दड्ढ-आरोह
निन्नायग पडहिं चिह-   चक्कि चवल धाविवि तुरंगम ।
परिडज्झहिं रह तुरिउ   रिउ वि पत्त इह जिह पवंगम ॥
एहि ति चिट्ठहिं जायवहं   सेन्न-निवेस अणाह ।
इय कसु कहउं कु फेडिसइ इहि मह हियडइ डाह ॥

[२५५३]

इह अहं पि-हु मुंड-निल्लाड
निभग्ग निलक्खणिय   करिसु छेहु स-दुहहं मरेविणु ।
निय-बंधव-हरि-मुसलि-   चियहं इमहं निच्छइं पडेविणु ॥
इय भणिर वि तसु पेक्खिरह   तहिं सा निवडिवि मुद्ध ।
डज्झिवि खण-मित्तिण वि हुय छारह रासि विसुद्ध ॥

[२५५४]

अहह स-जणय-भइणि-पच्चक्खु
मइं अच्छि पइन्न किय   जह अवस्सु मज्झह वि जलणह ।
कड्ढेविणु नियय-रिउ   नूण पुरउ आणिसु स-जणयह ॥
ते उण निय-दुक्कय-निहय पविसेविणु जलणम्मि ।
मया तहा जह न मुणियइ सुद्धि वि तेसि जयम्मि ॥

२५५१. ५. क. सुणंत.
२५५३. ३. क. सदुहउं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५५५]

अहव किं मह इयर-भणिएहिं

पविसेविणु एयइं जि	चियहं मज्झि ते गोव कड्ढिवि ।
हउं पियरइं मिलिसु इय	भणिवि झत्ति तहि चियहं निवडिवि ॥
कालिण खद्धउ कालु परिडज्झिर-अंगोवंगु ।
मयउ तयणु परिवारु तसु निहुयउं रुयइ समग्गु ॥

[२५५६]

जवण-पमुह वि तेण सह पत्त

सव्वे वि-हु निव-वसह	गलिय-बुद्धि-वावार-पगरिस ।
अवलोइय-नियय-पहु-	कुमर-मरण-पसरंत-अमरिस ॥
किण सहुं जुज्झहिं कु व हणहिं कहिं पयडहिं आडोवु ।
अ-नियंता वइरियहं वलु	मणि विरम्वावहिं कोवु ॥

[२५५७]

एत्थ-अंतरि तरणि अत्थमिउ

सह काल-मणोरहिहिं	फुरिउ तिमिरु सह तसु जि पाविहिं ।
अह जवण-प्पमुह निव	विगय-नाह तहिं चेव निवसहिं ॥
ता विलवंतहं तहं कह-वि	झीण रयणि नीसेस ।
उदियइ दिण-इंदम्मि पुणु	हुय-पडिवोह-विसेस ॥

[२५५८]

नियहिं न सु गिरि न त चियहं चक्कु

न त सिविरु न ते तुरय	न ति गइंद न-वि सुहड-सत्थय ।
न ति संदण न ति विडवि किं-तु सुद्ध धरणियल अइगय ॥
जा चिट्ठहिं खणु एगु तहिं ता पच्छन्न-नरेहिं ।
साहिउ जह – गच्छहिं सयल जायव परम-सुहेहिं ॥

२५५५. ३. क. चियह; ख. यहं; ९. क. निहयंउं.

२५५६. ६. क. हणइं.

२५५८. १. क. सुर गिरि.

Jain Education International 2010_05	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

[२५५९]

अह ति चिंतहिं जवण-निव-पमुह
जरसंध-नरिंद-भड अहह तेसि जायव-नरिंदह ।
निय-भुय-वल-दलिय-रिउ- वलहं तहं वि हलहर-उविंदहं ॥
भुवणस्स वि अच्छरिय-कर- सुकयहं परिणइ का-वि ।
जेसि विवक्खिय-वह-विहिहिं उज्जमंति देवा वि ॥

[२५६०]

जइ वि गच्छहुं तेसि पट्ठीए
कह-कहमवि तह-वि धुवु हवइ अम्ह सयलहं अणत्थु जि ।
कायव्वउं वुहिहिं पुणु कज्जु सयलु परिणाम-सुत्थु जि ॥
सिरि-जरसंध-नरेसरह विहल हियय-अवलेव ।
जं उदयंत-पयाव-भर नज्जहिं हरि-वलएव ॥

[२५६१]

किं व करिहइं तत्थ माणविय
जहिं पहरहिं अमर-गण सुइर-चरिय-सुकयाणुरागिण ।
इय चिंतिवि सरय-ससि- कुंद-कलिय-निम्मल-विवेगिण ॥
उत्तारिवि अवमाण-दुहु संधीरिवि अप्पाणु ।
गम्मउ सामिहि पुरउ निय- पुन्नइं काउ पमाणु ॥

[२५६२]

इय विणिच्छिवि जवण-निव-पमुह
सव्वे वि ति निव-वसह पत्त पुरउ जरसंध-निवइहिं ।
साहंति य – देव तुह तणउ सुणिवि आगमिरु पट्ठिहिं ॥
विंझ-गिरिंदह तलि चियहं चक्किहि पडिवि असेस ।
पंचत्तह संपत्त तुह रिउ जायव-वसुहेस ॥

२५५९. ५. क. वि वि.
२५६१. २. क. पहरहि.
२५६२. ६. क. गरिंदह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५६३]

काल्रु पुणु मइं किय पइन्न त्ति
जलणाउ वि कड्ढिउण नेसु सत्तु पिउ-सविह-धरणिहिं ।
इय जंपिरु वारिउ वि परियणेण बहु-विहिहि वयणिहिं ॥
हरि-रामह केरिय चियहं पडिउ तलप्फ दलेवि ।
पहु पहु किं किं एहु इय भणिर वि अम्हि मुएवि ॥

[२५६४]

ता किमेयहं चियहं अम्हे वि
संतेउर स-परियण निवडिऊण पंचत्तु पाम्वहुं ।
अहवा किं नियय-पहुहु पुरउ गंतु वइयरु निवेयहुं ॥
इय चिंतंतहं सयलहं वि वियलिय-मइ-विहवाहं ।
अत्थमियउ दिणयरु हुयउ उदउ सयल-ताराहं ॥

[२५६५]

तयणु तत्थ वि दिन्न-आवास
अइवाहिय निसि-समय जाव अम्हि वाहुल्ल-लोयण ।
अवलोयहुं दिसि-मुहइं पत्त-उदय-पाविय-विरोयण ॥
ता न सु गिरि न ति चिह-निवह न ति जायव-आवास ।
अवलोइय अम्हेहिं इय हुय अच्चंत-निरास ॥

[२५६६]

कह-कहं-चि वि पत्त पहु-पुरउ
जह-मुणियउ वइयरु वि पहुहु स विहि विन्नत्तु सयलु वि ।
अह जायव-तिलय-हरि- मुसलि-मरण-सवणेण सुहिउ वि ॥
निय-कुल-मंदिर-जस-कलस- काल-मरण-कय-दुक्खु ।
सुद्ध-धरायलि निवडिउण हुयउ झडत्ति अ-लक्खु* ॥

* क. ग्रंथाग्रं ६५००. ख. ग्रं० ६५००.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५६७]

अहह सामिय किं किमेयं ति
इय भणिरिण परियणिण कह-वि निवह चेयन्नु आणिउ ।
एयं पि-हु निव-वरहं मुहिहिं सयलु जायविहिं निसुणिउ ॥
ता गरुयर-हुय-पच्चइहिं *सुहि-महुयर-अरविंदु ।
सो नेमित्तिउ पूइयउ हरि-मुसलिहिं साणंदु ॥

[२५६८]

रूमिण अग्गिम-मग्गि गमिराहं
ससि-निम्मल-नाणु तहं मिलिउ एगु मुणि-रयणु चारणु ।
अह भाविण थुणिउ तसु चलण-जुयलु दुग्गइ-निवारणु ॥
पत्थावंतरि तिण कहिउ समुद्दविजय-निवइस्सु ।
आसि निवेइउ नमि-जिणिण हरिसेणह चक्किस्सु ॥

जहा –

[२५६९]

जंबु-दीविहिं भरह-वासम्मि
सिरि-सोरियपुरि नयरि समुद्दविजय-वसुहाहिरायह ।
सिवदेविहि उयरि सुर- राय-नमिउ हिउ जंतु-जायहं ॥
जायव-वंस-सिरोरयणु वावीसइम-जिणिंदु ।
नेमि-नाहु हविहइ भुवण- पणमिय-पय-अरविंदु ॥

[२५७०]

अद्ध-भरहह सामि-भावेण
होहिंति पुणु कण्ह-वलएव तणय वसुदेव-रायह ।
इय निसुणिवि तुट्ठ-मण थुइ करेवि मुणिवरहं पायहं ॥
अक्खंडेहि पयाणइहि जायव-निव वच्चंत ।
सोरट्ठहं रेवय-गिरिहिं अवरुत्तरहं पहुत्त ॥

* Lines २५६७. ७. to २५६८. ३. are dropped in ख.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५७१]

तयणु जायव-कुलहं कोडीण

अट्ठारस-संखयहं कमिण काउ विणिवेसु सेन्नहं ।
अन्नहं वि जहारिहइं ठाण दाउ निव-पगइ-भूवहं ॥
समुद्दविजय-नरवइ पमुह- जायव आवासंति ।
जा ता तत्थ वि ठियहं तहं जायइ दियहि पवित्ति ॥

[२५७२]

सयल-सज्जण-वणिय-धम्मियण-

सुहि-सयण-मणोरहिहिं सच्चइाम भुवणह वि सारिय ।
अ-किलेसिण सुय-जुयलु असमु जिणइ हरि-पवर-भारिय ॥
अह तहं वियरिउ जायविहिं संतोसिण अभिहाणु ।
एगह भामरु इयरह उ अवितहत्थु गुण-भाणु ॥

[२५७३]

तयणु तत्थ वि ठियहं जायवहं

संजायइ पवर-दिण- लग्ग-विहिण नेमित्ति-कहिइण ।
कय-ण्हाण-विलेव-वलि- कम्म-वत्थ-आहरण-भूसिण ॥
विहिय पूय रयणायरह तह किउ अट्ठम-भत्तु ।
कण्हिण जलनिहि-पहु तियसु सुत्थिउ हियइ धरित्तु ॥

[२५७४]

अह सु आसण-कंप-विन्नाय-

हरि-हलहर-आगमणु घेत्तु रयण-आहरण-कुसुमइं ।
संखो वि-हु पंच-मुह पंचयन्न-अभिहाणु अ-समइं ॥
अन्नाइं वि नाना-विहइं धरहं अ-संभविराइं ।
हरिहि देइ वत्थूणि सुरु सुत्थिउ हियय-हराइं ॥

२५७१. ७. क. आवासंमि.
२५७२. ९. क. अवितहत्थ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५७५]

तह सुघोसभिहाणु वरु संखु

वीइज्जउ हलहरह देइ विविह-वत्थूहिं सहियउ ।
जंपेइ य – तुट्ठु तुह किह णु कण्ह हउं तइं सुमरियउ ॥
मग्गसु जं किं-चि वि मणह तुह पडिहासइ वत्थु ।
जइ आणेविणु भुवणह वि मज्झह देमि समत्थु ॥

[२५७६]

तयणु केसवु भणइ साणंदु

संपज्जइ किं न तइं तुट्ठ-मणिण सुर-रयण दुलहु वि ।
तह भरह-खित्ति जइ वासुदेवु नवमु म्हि अहमवि ।
एसो वि-हु मज्झ गुरु- वंधु मुसलि वलएवु कहमवि ॥
तुमइ वि जइ पुव्विल्लयहं हरिहिं चउहुं किउ ठाणु ।
नयरि निवेसिवि मह वि इय तं चिय कुणसु पम्वाणु ॥

[२५७७]

पुरउ अक्खिउ आसि किर अम्ह

अइमुत्तय-महरिसिण पुव्वमवि-हु अइ-गरुय-चित्तय ।
सिरि-अयल-तिविट्ठु हलि- विण्हु-नाम निम्मल-चरित्तय ॥
सिरि-पोयणपुर-पुरवरह सलिल-कील कुव्वंत ।
सिरि-पहास-अभिहाणयइ एयहं तित्थि पहुत्त ॥

[२५७८]

विहिय-अट्ठम-तवहं पुरि ठाणु

मग्गंनहं तुह पुरउ तइं विइन्नु तहं इच्छ-माणिण ।
सविंक दह-वयणु पुणु उवलभेवि वेसमण-तियसिण ॥
मणि-कंचण-वत्थाहरण- पूरिय-धवलघरोह ।
वारवई पुरि निम्मविय जिय-अमरावइ-सोह ॥

२५७५. १. अभिहाणु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जओ भणियं –

[२५७९] तियसवइ-पेसिएणं वेसमणेणं पुरी विणिम्मविया ।
वारस-जोयण-दीहा नव-जोयण-वित्थडा रम्मा ॥

[२५८०] वारवई-अभिहाणा सा भुत्ता तेण पढम-जुयलेण ।
वीयं जुयलं हलि-केसवाण देसे सुरट्ठाए ॥

[२५८१] वारि-पुरे उप्पन्नं तेण वि भुत्ता इमा पुरी रम्मा ।
तइयं कुसट्ट-देसे महा-पुरे जुयलमुप्पन्नं ॥

[२५८२] परिभुत्ता तेणावि-हु सा नयरी तह चउत्थ-जुयलेण ।
आनट्ट-देस-सन्निउर-संभवेणावि सा भुत्ता ॥

[२५८३] जं पुण जम्म-ट्ठाणं कहिया आवस्सयम्मि वारवई ।
तिण्ह दुविट्ठु-प्पमुहाण तं पुणासन्न-भावेण ॥

[२५८४] मोत्तुं वलएव-हरी एए चउरो सुएण वि इमेसिं ।
अन्नेण नयरि भुत्ता सा वारवई महा-नयरी ॥

[२५८५] इय सोऊणं हरिणो वयणं अब्भत्थणं च पुव्वुत्तं ।
अब्भुवगमिउ तयं सुत्थिय-तियसो खणद्धेण ॥

[२५८६] ओसारइ जलनिहिणो सलिलं नयरी-निवेस-ठाणम्मि ।
इत्तो य सुहम्म-सुराहिवस्स वयणेण वेसमणो ॥

[२५८७] कुणइ अहो-रत्तेणं नयरिं रयणेहिं निम्मियं रम्मं ।
वारस-जोयण-दीहं नव-जोयण-पत्त-वित्थारं ॥

[२५८८] नव-हत्थ-भूमि-मग्गो अट्ठारस-हत्थ-विहिय-उस्सेहो ।
वित्थरओ य दुवालस-हत्थो नयरीए सव्वत्तो ॥

२५८३. १. क· तं पुण, कहिगा.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२५८९] पंचविह-रयण-मइओ वहु-जंत-निवेस-कय-महादुग्गो ।
कविसीसय-सय-सुहओ पडाय-धय-चिंचइओ ॥

[२५९०] उवरि-निहित्त-सिलोहो भीसण-निम्मविय-सीह-पडिरूवो ।
रयणट्टालय-गोउर-गवक्ख-कलिओ कओ सालो ॥

[२५९१] पायारस्स य एयस्स पासओ खाइया रयण-वद्धा ।
दो-कंड-वायविक्खंभ-रेहिरा वेइया-कलिया ॥

[२५९२] विमल-जल-पूर-पुन्ना जलयर-भीमा अणिट्ठिय-तरंगा ।
कमल-वण-संकुला पर-वलाण मणसा वि दुल्लंघा ॥

[२५९३] वर-पउमराय-मरगय-वेरुलियंकाइ-विविह-रयणेहिं ।
मणि-कंचण-फलिहेहिं य विणिम्मिया तीए पासाया ॥

[२५९४] वट्टा चउरंसा आयया य गिरिकूड-सव्वओभद्दा ।
सोत्थिय-मंदर-अवतंस-वद्धमाणाइ-णामेहिं ॥

[२५९५]
एग-भूमिय के-वि पासाय
कि-वि दोहिं भूमिहिं कलिय तिहिं वि के-वि कि-वि चउहिं भूमिहिं ।
पंचहिं छहिं सत्तहिं वि भूमियाहिं वर-रयण-घडिइहिं ॥
उववण-कीडा-सर-सिसिर- दीहिय-पुक्खरिणीहिं ।
मणि-कंचण-सिल-संचइण घडिय-केलि-सिहरीहिं ॥

[२५९६]
ण्हाण-कीलण-कोस-सयणीय-
आयरिसिय-मंतणय- दूइकम्म-आहरण-भवणिहिं ।
अंतेउर-देवहर- अंगभोग-भोयणहं ठाणिहिं ॥
धय-मालाउल-सेहरिहि रयण-मइहिं सालेहिं ।
उवसोहिय तह पिहिय-रवि- किरण-तुंग-मालेहिं ॥

२५८९. १. क. वहुं.
२५९१. १. खाइयाए.
२५९६. ३. क. भवणिहि. ८. क. उवसाहिय.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अवि य –

[२५९७]

रयण-निम्मिय-विविह-देवउल-
सिहर-ट्ठिय-कणयमय- कलस-किरण-पिंजर-दियंतर ।
पुर-उववण-पउमसर- गमिर-विहय-रव-भरिय-अंबर ॥
अहव किमन्निण भुवण-मण- हरण असेस ट्ठाण ।
वेसमणिण किय वारवइ अमरावइहि समाण ॥

[२५९८]

अह सु केसव-विहिय-सक्कारु
संपत्तउ सुर-भवणि पुरउ सक्क-तियसाहिरायह ।
तयणंतरु सुत्थिइण सुरिण हरिहि वलभद्द-भायह ॥
कोत्थुभ-रयणालंकरणु वियरिउ कय-सक्कारु ।
तह धरणियलह अब्भहिउ एहु वत्थु-पब्भारु ॥

[२५९९] सत्तिं कोमुइय-गयं नंदग-करवाल-रयण-वणमालं ।
अक्खय-तूणा-जुयलं आसीविस-वाण-संजुत्तं ॥

[२६००] सारंग-चावमसमं गरुड-ज्झय-संजुयं रहं दिव्वं ।
अन्नाइं वि वहुयाइं दिव्व-वत्थाइं वि दिन्नाइं ॥

[२६०१] रामस्स पुणु पयच्छइ तूणा-जुयलेण सह महा-चावं ।
मुसलं हलं गयं तह ताल-ज्झय-सहिय-रह-रयणं ॥

[२६०२] तो पुन्नभद्द-पमुहा जक्खा वेसमण-वयणओ तेसिं ।
दंसंति समुचियाइं गिहाइं अह तेसु निवसंति ॥

[२६०३] अद्ध-चउत्थ-दिणाणि य जक्खो वरिसंति तीए नयरीए ।
आहरण-कणय-रयणेहिं वत्थ-धण-धन्नमाईहिं ॥

[२६०४] संपुन्न-सयल-कोसो महिड्ढिओ होइ तो जणो सयलो ।
किं वहुणा सा नयरी जाया अमरावइ-पुरि व्व ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६०५] आवट्ट-कुसट्टा-सूरसेण-पमुहाण सयल-विसयाणं ।
आगंतु जणो निवसइ तीए पुरीए निसुय-कित्ती ॥

[२६०६]

कण्ह-हलहर-पमुह जायव वि
अच्चंत-पहिट्ठ-मण कीलमाण वहुविह-विणोइहिं ।
अइवाहहिं कालु कु-वि दूर-पहिण उज्झिय-विसाइहिं ॥
इयरो वि-हु कंचण-घडिय- घर-पंतिसु जह-जोग्गु ।
स-विहवि निज्जिय-वेसमणु विलसइ जायव-वग्गु ॥

[२६०७]

भुवण-वंधु वि रिट्ठ-वर-नेमि
वालो वि अ-वाल-मणु तोसमाणु सयलो वि जय-जणु ।
थुव्वंतु सुरासुरिहिं जयह सग्ग-अपवग्ग-पयडणु ॥
कइया-वि-हु छज्जइ सुरिहिं घुसिण-विलेविय-देहु ।
संझ-राय-परिपिंजरिउ नावइ सामलु मेहु ॥

[२६०८]

सहइ उरयलि हारु निक्खित्तु
नं अंजणगिरि-सिलहं परिघुलंतु सु-महल्लु निज्झरु ।
मणि-कुंडल-जुयल-कय- सोहु सहइ पहु नं पुरंदरु ॥
अहवा जं जमणंत-गुणु वन्नहुं थोव-गुणेहिं ।
तहिं तहिं अप्पु जि नडउं हउं कित्तिम-कइ-वयणेहिं ॥

[२६०९]

भुवण-समहिय-देह-माहप्पु
जय-उत्तिम-कंति-धरु असम-सुकय-निहि नाण-दिणयरु ।
पणमंत-चिंतारयणु भव-समुद्द-वोहित्थु सुंदरु ॥
अहव किमन्निण निय-गुणिहिं तह भुवणोवरि थक्कु ।
नेमि-कुमरु जह वन्नणिण तसु सक्को वि अ-सक्कु ॥

२६०६. ८. सविहव°.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६१०]

तित्थ-सामिय हवहिं इयरे वि
रूवेण अनन्न-सम भुवण-अहिय-सोहग्ग-सुंदर ।
भुवणोयर-वित्थरिय- छण-ससंक-सिय-कित्ति-मणहर ॥
किंतु जहा अज्ज-वि जणइ जणह चमक्कउ नेमि ।
तह विप्फारिय-लोयणु वि अन्नयरह न निएमि ॥

[२६११]

तयणु अणुकम-पत्त-तणु-वुड्ढि
नीलुप्पल-ललिय-पहु संख-अंकु सिरि-नेमि-सामिउ ।
उद्ध-ट्ठिउ निवसिउ वा गिह-गउ व्व पुर-पहि व गामिउ ॥
अहवा जहिं जहिं ठिइहिं ठिउ तहिं तहिं वहु-कामाहिं ।
चलिहि चलंतिहि लोयणिहि जोइज्जइ रामाहिं ॥

[२६१२]

कहहं चित्तिहिं लेप्प-कम्मेसु
गीएहिं सो ज्जि पहु तत्थ तम्मि समयम्मि नज्जइ ।
लब्भंतिहि गयवरिहिं रासहेहिं नणु काइं किज्जइ ॥
मय-भिंभल तियसंगण वि सग्गि वि सु जि झायंति ।
किन्नर-तरुणि वि सुर-गिरिहि नेमि-कुमरु गायंति ॥

[२६१३]

कह-वि न कुणहिं स-स-कम्माइं
सुर-किन्नर-नर-तरुणि भुवण-नाह-गुण-गहण-तप्पर ।
सामी उण कामिणिहिं कह वि चयइ अणुराय-सुंदर ॥
नेमि-कुमारह सुणिवि ससि- निम्मलु कित्ति-कलावु ।
अवरु वि गुण-रयणज्जणइ जयइ समुज्जल-भावु ॥

२६१२. १. क. चित्तिहि; ४. क. गयवरिहि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६१४]

नेमि-कुमरह सील-सब्भावु
अवलोइवि रत्त-मण जउ-कुमार अक्कूर-पमुह वि ।
तसु सन्निहि गुण-गहण- एग-हियय न मुयंति खणमवि ॥
जे वहु-गुण जे पंडिया जे मुणि-किरियासत्त ।
ते वि न नेमि-हियय-कमलु खणमवि मुयहिं निरुत्त ॥

[२६१५]

अह निएविणु नेमि-कुमरस्सु
सव्वंगिय-सुहय-गुण- रासि असम-संतोस-भरियउ ।
सयलेहिं वि जायवेहिं समुदविजय-नरनाहु सहियउ ॥
पुहइ-पहाणहं नरवइहिं धूयउ सयलि वि देसि ।
अवलोयइ सव्वायरिण नेमि-कुमारह रेसि ॥

[२६१६]

नेमि-कुमरु वि विजिय-कंदप्प-
महप्पु न परिणयण कह-वि कुणइ भव-भाव-विमुहउ ।
चिट्ठइ य निवेसिउण नाण-नयणु सिव-गइहि समुहउ ॥
पेच्छंतउ संसारियहं विविह विडंवण लोइ ।
भन्नंतु वि विसइय-सुहहं कह-वि न समुहीहोइ ॥

[२६१७]

एत्थ-अंतरि गयण-मग्गेण
परिवायग-वेस-धरु दढहिमाणु नारउ पहुत्तउ ।
तहिं सच्चहामह सविहि तीए अ-कय-भत्तिउ कु-चित्तउ ॥
चिंतइ – अहह निलक्खणिय इह मह कुणइ न भत्ति ।
ता मेलिसु एयह अहिय- रूव-समिद्धि सवत्ति ॥

२६.१५.६. क. पुहई.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६१८]

तयणु रोसिण धमधमेमाणु
उप्पइउण नहयलिण कुंडिणीए नयरीए पत्तउ ।
तहिं भीसम-नामु निवु आसि रज्ज-सुह-अमय-सित्तउ ॥
तसु सुउ रुप्पी-नामु निवु धूय वि रुप्पिणि-नाम ।
विमल-कलालय असम-गुण- गण-रयणावलि-धाम ॥

[२६१९]

तीए ससहर-मुहिहि भवणम्मि
जा नारउ आगयउ उवरि ताव दूरह वि उट्ठिवि ।
कय-आयरु संभमिण एहि एहि भयवं ति पभणिवि ॥
वियरइ सीहासणु पवरु तहिं उवविट्ठइ तम्मि ।
कय-सक्कारु समुल्लवइ रुप्पिणि जह – धरणिम्मि ॥

[२६२०]

परिभमंतिण कह-वि सच्चविउ
कोऊहल्लु किं-पि तइं ता भणेइ नारउ – सुलोयणि ।
पणयागय-कप्पतरु खल-कुढारु नय-पहिय-दिनमणि ॥
सोहग्गिय-तरुणाहं तिलउ निहणिय-माणिणि-माणु ।
बारवइहिं मइं सच्चविउ कोउगु हरि-अभिहाणु ॥

[२६२१]

तयणु रुप्पिणि भणइ – दंसेसु
मह कह-वि त नर-रयणु अह सु झत्ति वर-वन्न-दप्पिउ ।
सह आणिउ चित्त-पडु रूप्पिणीए नारइण अप्पिउ ॥
इयरी वि-हु अणिमिस-नयण पडउ सु जा पेक्खेइ ।
ता मयणिण डज्झंत-तणु अप्पु वि न-वि लक्खेइ ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६२२]

भणइ पुणु – तह कह-वि तुहुं कुणसु
जह अइरिण संघडइ　　मज्झ भुवण-माणिक्कु इहु पिउ ।
तयणंतरु रुप्पिणिहि　　रूवु लिहिवि केसवह दंसिउ ॥
तह कहमवि अक्खिय-गुण वि जह मुरारि संवु ु ।
तरुणी-रयणह रुप्पिणिहि　तणु-संगमि अणुरत्तु ॥

[२६२३]

तयणु रुप्पिहि निवह पासम्मि
तं मग्गइ स-पुरिसिहिं　　किंतु भणिउ रुप्पिण स-कोविण ।
संबंधु कु हवइ नणु　　अम्ह-समगु तइं हीण-जाइण ॥
कहिं सीहिणि वेसरु व कहिं कहिं वलाहु कहिं हंसि ।
निवइ-कुलुब्भव एह कहिं　कहिं सु गुयालहं वंसि ॥

[२६२४]

अवि य दिन्नी एह चिट्ठेइ
दमघोस-नराहिवइ-　　नंदणस्सु रिउ-कुल-विघायह ।
सोहग्गि-सिरोमणिहि　　पुहइ-तिलय-सिसुपाल-रायह ॥
इय जइ-वि-हु कहमवि सु इह मग्गइ नरु वाचालु ।
तह-वि न जायइ रुप्पिणिहि दइउ कण्हु गोवालु ॥

[२६२५]

एहु रुप्पिहि वयणु निसुणेवि
खण-मित्तिण गंतु रहि　　अंव-धाइ रुप्पिणिहि साहइ ।
तयणंतरु तहि पुरउ　　भणइ वाल – मइं मयणु वाहइ ॥
सउरि-सुयह विरहम्मि पुणु जइ मह लग्गइ अंगि ।
जलणु च्चिय इय चिंतवसु कु-वि उवाउ तसु संगि ॥

२६२३. ३. क. रुप्पिणि. ८. क. कुलब्भव.
२६२४. ८. क. रुप्पिहि; ख. रुणिहिं.
२६२५. ४. क. तहिं. ८. क. ख. चित्तवसु

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[२६२६]

इय मुणेविणु चित्तु हरि-समुहु
संचिल्लउ रुप्पिणिहि पुरउ धाइ जंपइ – सु-लोयणि ।
मा करिहसि असुहु तुहुं वाल-भावि जं तुज्झ कारणि ॥
मइं पुट्ठिण अइमुत्तइण साहिउ एहु अहेसि ।
धुवु हविहइ भत्तारु हरि रुप्पिणि-तरुणिहि रेसि ॥

[२६२७]

जइ-वि चूलिय चलइ सुर-गिरिहि
जइ खीरोयहि सूसइ जइ-वि तरणि पच्छिमह उग्गइ ।
तु-वि तारिस-मुणि-रयण- वयणु नेव उम्मग्गि लग्गइ ॥
इय चिंतेविणु निय-करिहिं लिहिवि लेहु वियरेसु ।
तयणंतरु तुह इच्छियउं सुयणु हउं वि पूरेसु ॥

[२६२८]

अह लिहेविणु लेहु वियरेइ
धाईए रुप्पिणि तयणु अंव-धाइ पेसवइ कण्हह ।
कण्हो वि-हु वलिण सह सम्मु मुणिवि भावत्थु लेहह ॥
वइसाहह सिय-पंचमिहि सोमवारि मज्झन्नि ।
हत्थुत्तर-जुत्तइं ससिहिं सर-पालिहिं आसन्नि ॥

[२६२९]

विउलि मणहरि जक्ख-आययणि
पुव्वागय-धाइ-जुय- रुप्पिणिम्मि संपत्तु अइरिण ।
ता दढयरु तुट्ठ-मण अंव-धाइ वलभद्द-वयणिण ॥
लहु गंधव्व-विवाह-विहि अणुसरिउण कण्हेण ।
वीवाहिय रुप्पिणि-तरुणि निरु पसरिय-हरिसेण ॥

२६२८. ५. क. जा वत्थु.

२६२९. ४. क. तुदढमणु corrected as तुद्दढमण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६३०]

अह नियत्तंते तेण नियं-संखु
आऊरिउ आयरिण तह ति नियय-माणव पठाविउ ।
सिसुपाल-भेसय-निवइ- रुप्पि-निवहं सम्मुहु भणाविउ ॥
नणु गच्छइ हरि सयमवि-हु इह रुप्पिणि परिणेउ ।
जस्सु सुहाइ न एरिसउं सो तुरंतु रणि एउ ॥

[२६३१]

अहह किं इहु इय विचिंतंतु
सिरि-भेसय-निवइ सिसुपाल-रुप्पि-सहियउ तुरंतउ ।
चउरंगिण अ-परिमिय- वलिण सविह-देसम्मि पत्तउ ॥
ता परिकंपिर-थोर-थण भय-चंचल-नयणिल्ल ।
रुप्पिणि जंपइ – तुम्हि दु जि रिउ वहु-अनुमाणिल्ल ॥

[२६३२]

किं-पि हविहइ तं न याणामि
तयणंतरु विहसिउण भणइ कण्हु – मा भाहि भामिणि ।
अवलोइसु एकु खणु किं-पि जमिह वट्टइ रणंगणि ॥
अम्हे थोडा रिउ वहुय एहु कायर जंपंति ।
नियसु नियंविणि गयणयलि रवि कित्तिय दिप्पंति ॥

[२६३३]

तीए पच्चय-हेउ लीलाए
निय-मुद्दा-रयणु दुहिं अंगुलीहिं चूरेइ अइरिण ।
तह वहुयहं पायवहं पंति लुणइ खग्गेग-घाइण ॥
ता वियसिय-मुह-अंवुरुह हुय रुप्पिणि संतुट्ठ ।
हरि पुणु पभणइ वल-पुरउ नणु एहि आगय दुट्ठ ॥

२६३०. १. क. नियत्तहं तेण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६३४]

नियय-वहुयह सविहि खणु एगु
चिट्ठिज्जसु भाय तुहुं हउं दलेमि जिह दप्पु सत्तुहुं ।
ता पभणइ मुसलि – नणु वहुय-सविहि इह किह णु चिट्ठहुं ॥
सत्तुहुं एयहं पुणु हउं वि दप्पु दलेसु निरुत्तु ।
ता चिट्ठसु वीसत्थ-मणु तुहुं रुप्पिणि रक्खंतु ॥

[२६३५] ता रुप्पिणीए भणियं भेसय-निवइं स-रुप्पियं पसिउं ।
रक्खिज्ज तुमे जइ वि-हु कुणंति ते तुम्ह अवराहो ॥

[२६३६] पडिवज्जिऊणमेयं रामो सत्तूण सम्मुहीहूओ ।
नंगल-मुसलत्थेहिं य खणेण ते तेण परिविजिया ॥

[२६३७] अह दो-वि सिद्ध-सज्झा आरुहिऊणं रहेसु अणुकमसो ।
वारवइ-सविह-देसे पत्ता जा ता पुरो हरिणो ॥

[२६३८] जंपेइ रुप्पिणी – पिय किमिमं दीसइ पुरोरुणच्छायं ।
ता वियसिय-मुह-कमलो जणद्दणो जंपए – सुयणु ॥

[२६३९] नणु एसा कंचणमय-पायार-घरोह-विवणि-जिणभवणा ।
मज्झ कए सुरवइणा कारविया वारवइ नयरी ॥

[२६४०]

तयणु रुप्पिणि भणइ – नणु नाह
इह चिट्ठहिं तुह दइय अमर-तरुणि-सम-रूव-रिद्धिय ।
हउं आणिय वंदिणि व गहिवि वेस-सिंगार-वज्जिय ॥
इय आहरिय-विहूसियहिं तरुणिहिं अहरिय-चित्तु ।
मह समुहु वि न निरिक्खिहिसि तत्थ पहुत्तु निरुत्तु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६४१]

ईसि विहसिरु भणइ हरि – सुयणु
सव्वं पि सुंदरु करिसु किंतु एत्थ मोणावलंबिण ।
चिट्ठिज्जसु सिरि-घरह मज्झि जाव हउं एमि वेगिण ॥
ता रुप्पिणिहिं तहा कयइ हरि गउ नियआवासि ।
अह पुच्छिउ सच्चहं – सुहय मह निय-दइय पयासि ॥

[२६४२]

ता पयंपइ कण्हु – नणु सुयणु
पुरि-उववण-मज्झ-ठिय- लच्छि-देवि-देउलह सविहि ।
सा चिट्ठइ उत्तरिय इय निएह नियएहिं नयणिहिं ॥
ता किं-चि वि कोऊहलिय किं-चि वि सामरिसाउ ।
गच्छहिं उववणि हरि-दइय सच्चहाम-पमुहाउ ॥

[२६४३]

न उण पेक्खहिं कहिं वि सा बाल
ता पविसहिं सिरि-घरह मज्झि तयणु सच्चवहिं रुप्पिणि ।
नणु एस नमंत-जय- सुहय सिरि ति चिंतिउण निय-मणि ॥
भत्तिहिं निय-कर-पल्लविहिं करिवि पूय-सक्कारु ।
तसु चलणिहि निवडिवि कुणहिं गहिर-सरिण नवकारु ॥

[२६४४]

पाणि-संपुडु धरिवि सिर-उवरि
जंपंति सव्वायरिण देवि देवि पसिऊण पणयहं ।
सोहग्गिण रूविण वि हीण कुणसु रुप्पिणि स अम्हहं ॥
ओयाइय-पूरणिण पुणु घुसिण-पल-स्सउ एगु ।
देसउं तह सयलाहरण- सहिउ पूय-अइरेगु ॥

२६४२. ७. क. सामरिउ. ९. क. पमुहाओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६४५]

अह पहुत्तउ कण्हु विहसंतु
जंपइ य रुप्पिणि-पुरउ सुयणु पडहि चलणिहि स-भइणिहि ।
ता रुप्पिणि भणइ – पहु पडहुं पढमु पाएसु कवणहि ॥
तयणु कण्ह-वयणिण कमिण सयलहं हरि-दइयाहं ।
रुप्पिणि पणमइ जह-विहिण सच्चहाम-पमुहाहं ॥

[२६४६]

किंतु समगु वि ताल-रव-पुव्वु
स-विलक्ख विहसिवि भणहिं सच्चहाम-पमुहाउ देविउ ।
नणु एह अम्हिहिं नमिय सिरि-मईए पूइउ विलेविउ ॥
तयणु जणद्दणु वज्जरइ पसरिय-मण-संतोसु ।
नणु पणमिय निय-भइणि जइ ता तुम्हहं को दोसु ॥

[२६४७]

एत्थ-अंतरि मंति सामंत
मंडलिय नराहिवइ पत्त दार-देसम्मि अ-सरिस ।
ता गरुय-महूसविण जंति स-घरि वल-कण्ह स-हरिस ॥
तयणु विणिज्जिय-जय-तरुणि निय-गुण-निउरुंवेण ।
अग्ग-महिसि रुप्पिणि विहिय कण्हिण साणंदेण ॥

[२६४८]

अवर-अवसरि उग्गसेणस्सु
नर-नाहह अंगरुहु सच्चहाम-देविहि सहोयरु ।
दुज्जोहणु निवइ हरि- भवणि पत्तु सव्वंग-सुंदरु ॥
ता जंपिउ सच्चहं – हवइ जइ वंधव तुह पुत्ति ।
मह सुउ ता तसु देज्ज धुवु अन्न म करिसि कु-जुत्ति ॥

२६४६. ३. क. °पमुहाहं देविओ; ४. क. अम्हिहि.

२६४७. ६. क. तय for जय ७. क. नियरुवेण; ८. क. महिसि रि°. ख. वि कय.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६४९]

इहु पवन्नउं तिण वि इत्तो य

गयणयलह अवयरिउ चाउ-नाणि सच्चविय-तिहुयणु ।
अइमुत्तय-नामु रिसि तयणु दिन्नु तसु पवरु आसणु ॥
अह वंदेविणु पय-पउम रुप्पिणि भणइ – मुणिंद ।
मह हविहइ सुउ इय कहसु जय-नय-पय-अरविंद ॥

[२६५०]

नूण हविहइ इय मुणिंदेण

संलत्ति सच्च वि भणइ मह वि कहसु हविहेइ नंदणु ।
सा महरिसि पुणु गयउ तं जि भणिवि मंडिरु नहंगणु ॥
साहिउ मह चेव य मुणिहिं नंदणु इय भणिराउ ।
कलहहिं ताउ परुप्परिण दो-वि-हु हरि-दाराउ ॥

[२६५१] ता भणइ सच्चहामा अंगरुहो जीए हविहए पढमं ।
सा निय-नंदण-वीवाह-ऊसवे जायमाणम्मि ॥

[२६५२] करिहइ इयरी-केसेहिं डब्भ-कम्माइं निरवसेसाइं ।
इय पडिवज्जिय दुण्ह वि कण्हं चिय लिंति सक्खिणयं ॥

[२६५३]

अवर-अवसरि निसिहिं सुह-सुत्त

स-मुहम्मि पविसिरु वसहु नियवि कहइ कण्हस्सु रुप्पिणि ।
ता केसवु भणइ – सुय- रयणु तुज्झ हविहेइ भामिणि ॥
सच्च वि अन्नयरम्मि दिणि अलिउ सिविणु साहेइ ।
तयणंतरु मुर-रिउ तसु वि सुय-उप्पत्ति कहेइ ॥

२६४९. ४. क. अइमुत्त; ८. क. हविइ.

२६५०. ६. क. चेव य अ; ७. क. भणिराओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६५४]

कालजोगिण जाउ सुय-रयणु

कय-उन्नह रुप्पिणिहि तयणु मुणिय-वुत्तंतु मुर-रिउ ।
अवलोइय-तणय-मुहु गहिवि करिहिं आगंतु स-तुरिउ ॥
जायव-नंदणु रुप्पिणिहि अप्पइ कय-संतोसु ।
ता अवहरिउ त सुय-रयणु किण-वि पयासिय रोसु ॥

[२६५५]

तयणु नहयलि धरहं पायालि

अवलोइय-सुय-रयणु अप्प-परिहिं नाणा-पयारिहि ।
नउ पांवइ तसु पगु वि ता गहीउ हरि गुरु-विसाइहिं ॥
रुप्पिणि पुणु तह कहमवि-हु विलवइ गलिय-विवेय ।
जह रोयावइ पायव वि किं पुण जिय वहु-भेय ॥

[२६५६]

अवर-वासरि भवणि रुप्पिणिहि

रिसि नारउ आगयउ ता करेवि तसु भत्ति वहु-विह
हरि रुप्पिणि-परिकलिउ भणइ – भयवमम्हाण साहह ॥
केण हयासिण अवहरिउ मह पेक्खंतह पुत्तु ।
अह – मा तम्महु इहु सुयह सुद्धि करेवि पहुत्तु ॥

[२६५७]

इय पवज्जिवि नहिण उप्पइवि

अवलोइवि सयल धर हरिहि पुत्तु अ-नियंतु नारउ ।
सीमंधर-जिण-पुरउ गंतु करिवि नवकारु सारउ ॥
भणइ – भदंत कहेसु मह केण हरिउ हरि-पुत्तु ।
भणइ य जिणु दसण-प्पहहं दह-दिहि उज्जोयंतु ॥

२६५५. ३. क. परिहि. ८. क. तह.
२६५७. ८. क. °प्पहुह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६५८]

नणु महारिसि जइ वि वुत्तंतु
इहु गरुयउ तह-वि तुहुं सुणसु जेण साहेमि लेसिण।
भवि पच्छिमि आसि जियसत्तु-निवह दइया स-रूविण ॥
रुप्पिणि अवरम्मि उ दियहि कोऊहलिण पउत्त।
हरिवि मऊरह किंटडउं सोलस धरइ मुहुत्त ॥

[२६५९]

तिण विवागिण हरिउ एयह वि
सुय-रयणु मिलिस्सइ य सोलसण्ह वरिसाण अवहिहिं।
सिसुणो वि-हु हरण-दुह- हेउ सुणसु साहेमि लेसिहिं ॥
उसह-पुरम्मि अहेसि मधु- निवइ दलिय-पडिवक्खु।
तसु केटभ-अभिहाणु जुवराउ सुकय-कय-लक्खु ॥

[२६६०]

अवर-अवसरि विजय-जत्ताए
गच्छंतिण महु-निविण पुर-विसेसि एगम्मि* दिट्ठिय।
सिरि-विस्ससेणह निवइ- दइय ललिय-अंगिहिं विसिट्ठिय ॥
अंतेउरि हरिउण खिविय मयण-कुमुय-चंदाभ।
चंदाभ त्ति पसिद्ध अह मधु-केटभ हुय-लाभ ॥

[२६६१]

ललिवि सयलहं धरहं कु-वि कालु
समुवागउ उसहपुरि महु-निवोह गरुयाणुरागिण।
चंदाभहं सह विसय- सुह-सयाइं सेवइ पसंगिण ॥
इत्तो उण निय-पिय-विरहि विस्ससेण-नरनाहु।
धाहावइ विहसइ रुयइ पसरिय-गुरु-आवाहु ॥

२६५८. ९. क धरहि.

२६६०. ५. क. लअंगिहिं; क. विसट्ठिय, ख. सिसिट्ठियं.

* As the writing on folio 249 B and 250 A is mostly blurred, the text of the portion from °गम्मि दिट्ठिय (2660.2) to कल्लाणकारउ (2675.5) is mostly illegible in ms. क

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६६२]

अइर-कालिण डिंभ-सय-सहिउ

परिउज्झिय-रज्ज-सिरि चत्त-लज्ज-मज्जाय-वइयरु ।
रय-पसरिण धूसरिय- अंगुवंगु परिगलिय-अंबरु ॥
महिहिं भमंतउ विहि-वसिण उसहपुरग्गि पहुत्तु ।
चंदाभे तुहुं कहिं गइय इय विलविरु पुणरुत्तु ॥

[२६६३]

महु-नरिंदिण दिट्ठु स-पिएण

वायायण-संठिइण तयणु जाय-गुरु-पच्छुताविण ।
धिसि विसम-दसाए इहु खिविउ किमिह मइं पावकारिण ॥
अहवा एयह चंदपह अप्पिसु कय-सक्कारु ।
जिह जायइ पिय-दंसणिण इहु गय-दुह-वावारु ॥

[२६६४] पडिवज्जिसमहं पुण पायच्छित्तं गुरूण पय-मूले ।
अन्नह भवंतरम्मि वि इमस्स पावस्स नो मोक्खो ॥

[२६६५] विसय-सुहासत्ता उण अवुहा न मुणंति कह-वि कज्ज-गइं ।
नियइ विराली दुद्धं फिरंतयं उवरि नउ लउडं ॥

[२६६६] छिंदंति विवेय-धणा विवेय-सत्थेण विसय-विस-तरुणो ।
इय चिंतंतस्स वि से वज्जग्गी निवडिया उवरिं ॥

[२६६७] अह सो तम्मि वि जम्मे अवलोइय-सुकय-दुक्कय-विवागो ।
भावण-विसेस-पाविय-सुकय-भरो झत्ति मरिऊणं ॥

[२६६८] आरण-कप्पे पुप्फावयंस-नामम्मि उत्तिम-विमाणे ।
इगवीस-सागराऊ महिड्ढि-तियसत्तणं पत्तो ॥

[२६६९] तत्तो चुओ समाणो रुप्पिणि-कण्हाण णंदणो जाओ ।
तह चेव य चिट्ठंतो मरिऊणं विस्ससेणो वि ॥

२६६६. २, क. विज्जग्गी.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६७०]

भमिवि चउ-गइ-भव-अरण्णम्मि
सहिऊण अणेग-दुह सुकय-वसिण केण-वि सुरत्तिण ।
संजाउ विक्खाउ पुणु धूमकेउ इय पयड-नामिण ॥
तेण वि नियनाणह वसिण सच्चविउ य नियसत्तु ।
ता अवहरिउ सिसुत्तणि वि सो रुप्पिणि-हरि-पुत्तु ॥

[२६७१] अप्फालेमि सिलाए किमु किमु वंधेमि विडवि-साहाए ।
अहवा सयं-पि मरिहीइ सो विमुक्को सिहरि-सिहरे ॥

[२६७२] इय चिंतिरो सिसु त्ति य इयर-पयारेहिं निहणिउमसत्तो ।
वेयड्ढ-गिरि-सिलाए एगाए गंतु तं मुयइ ॥

[२६७३] अह एसो पंचत्तं पत्तो च्चिय काग-विग-वगेहिं पि ।
इय परिभाविय तियसाहमो गओ सो जहा-ठाणं ॥

[२६७४]

एत्थ-अंतरि सिसुहु सुह-वसिण
गयणयलिण आगयउ तम्मि ठाणि खयरिंदु संवरु ।
ता हरिसिण वालयह उवरि खिविवि नियइल्लु अंवरु ॥
संगहिउण निय-करयलिहि तणु-तेइण दिप्पंतु ।
कणयमाल-नामह पियह तिण रहि वियरिउ पुत्त ॥

[२६७५]

भणिउ पुणु जण-मज्झयारम्मि
जह – छन्न-गब्भह पियह कणयमाल-नामियह दारउ ।
संजायउ सयल-सुहि- सयण-वग्ग-कल्लाण-कारउ ॥
पत्तावसरु पयच्छियउं पुणु तसु तणयह नामु ।
पिउ-जणणीहिं महा-महिण पज्जुन्नु त्ति ललामु ॥

२६७२. १. क. वंधेवि. ख. वंधमि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६७६] अह चरम-सरीरो सो सयलाउ कलाउ गिण्हिही अइरा ।
पिउ-जणणी वि मिलिही सोलस-वरिसाण अवसाणे ॥

[२६७७]

इय जिणिंदह सविहि सुणिऊण
नीसेसु वि तहं चरिउ गंतु गिरिहिं वेयड्ढि नारउ ।
अवलोइवि संवरह भवणि ललिरु पज्जुन्नु दारउ ॥
गुरु-हरिसिण गंतूण लहु घरि रुप्पिणि-कण्हाण ।
जिण-भासिउ सयलु वि कहइ सायरु पुच्छंताण ॥

[२६७८]

कमिण नियतणु-कंति-पब्भार-
लायण्णिहिं विजिय-जय- तरुण-रूवु पज्जुन्न-कुमरु वि ।
संपत्तउ सयलहं वि कलहं पारि अणहुंत-खेउ वि ॥
विहिहि वसेण य कुसुमसर- विहुर-कणयमालाए ।
आणेविणु पज्जुन्नु रहि भणिउ खलिर-वायाए ॥

[२६७९]

भणसि तं महु सुमुहु जणणि त्ति
नउ तं सि महंगरुहु न-वि य तुज्झ हउं जणणि सुंदर ।
नहि महुरउं कुणइ मुहु पुणु वि पुणु वि भणिया वि सक्कर ॥
इय तुहुं सुहय सरीरु मह मयणानल-संतत्तु ।
नियतणु-संग-सुहा-रसिण सिंचसु अज्ज निरुत्तु ॥

[२६८०] तयणु चमक्किय-हियओ पज्जुन्नो चिंतए – अहह किह णु ।
नत्थि पियं अ-पियं वा महिलाणं मयण-विहुराण ॥

[२६८१] इत्थी कंथारि-समा नीएहव उत्तिमे वि लग्गेइ ।
तो जुत्तीए अप्पा छोडेयव्वो त्ति चिंतेउं ॥

२६७६. १ क. सयलाओ कलाओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६८२] भणइ – तुहेरिस चित्तं जइ ता नित्तुलमिमं करिस्समहं ।
किं पुण विज्जा-गहणं करेमि जा ता विलंवेसु ॥

[२६८३] अह तीए च्चिय दिन्ना पन्नत्ती-नामिया महा-विज्जा ।
वहु-विज्जा-सहसेहिं सहिया पज्जुन्न-कुमरस्स ॥

[२६८४]
तयणु कुमरिण अइर-कालेण
उवसाहिय विज्ज जह- कहिय-विहिण साणंद-चित्तिण ।
ता पुणरवि तीए तह चेव भणिउ पज्जुन्नु अह तिण ॥
पणमिवि जंपिउ – मज्झ गुरु तुहुं विज्जा-दाणेण ।
थण-पाणेण य जणणि इय मइं न भविण एएण ॥

[२६८५]
कज्जु सिज्झइ एहु आ-काल-
वहु-भेयाणत्थयरु तयणु तित्थु सविलक्ख-माणस ।
परिवियलिय-चिहुर-भर नीहरंत-नीसास-पगरिस ॥
कररुह-दारिय-थोर-थण धाहाविर सा पाव ।
जंपइ – धावहु धावहु-न अह कय-करुण-पलाव ॥

[२६८६]
तत्थ आगय विविह-चेडीउ
संपिंडिय खयर-भड मिलिय सयल नरनाह-भारिय ।
लहु पत्तउ संवरु वि ता भणेइ सा कणयमालिय ॥
नियसु नियसु तुह वल्लहिण सुइण ज विहिय अवत्थ ।
कुणहिं न सुणय न रासह वि जणणिहि एरिसु एत्थ ॥

[२६८७] तयणु महेला-वेलविय-माणसा गहिय-आउहा सुहडा ।
संवर-वयणेण रणं गेण्हंति समं कुमारेण ॥

२६८६. १. क. चेडीओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६८८] किं पुण खणेण हरि-नंदणेण सुहडा हया अ-पज्जंता ।
संवर-पुरो य भणियं – जणय तुमं दिट्ठिमवमुयसु ॥

[२६८९] ता कुमर-चरियमिंगिय-आगारेहिं मुणेउ विमलं ति ।
नाउं च मूल-सुद्धिं कुमारमुववूहए इयरो ॥

[२६९०]
एत्थ-अंतरि कुमर-सविहम्मि
आगंतु नारउ भणइ कुसलु तुज्झ हरिवंस-भूसण ।
ता संवरु विहिय-पडिवत्ति वयइ – मह कहि निरंजण ॥
को पच्छिमु वइयरु इमह अह पुव्वुत्तु कहेउ ।
जंपइ नारय-रिसि वयणु अग्गिमु वइयरु एउ ॥

जहा–

[२६९१]
कुमरि तियसिण तेण हरियम्मि
सच्चाए वि जाउ सुउ तस्सु नामु भाणु त्ति दिन्नउं ।
संपइ तसु परिणयण- विहि समत्थि पारद्धमन्नउं ॥
करिहइ रुप्पिणि-कुंतलिहि सच्च दब्भ-कम्माइं ।
जहुचिउ कुणउ कुमारु लहु इयरिण भणियइं काइं ॥

तओ य–

[२६९२]
अभउ दाविवि कणयमालाए
अणुजाणाविवि जणउ खयर-वग्गु सयलु वि खमाविवि ।
आरुहिवि विउव्वियइ वर-विमाणि नहयलिण आविवि ॥
वारवइहि नयरिहि उवरि नारय-पुरउ भणेइ ।
नाणिण खणु पेक्खेज्ज तुहुं किंचि ज डिंभु करेइ ॥

२६८९. २. क. कुमार.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२६९३]

तह पवन्नइ रिसिण कुमरो वि

कय-वुड्ढ-दिय-रूवु लहु पत्तु सच्चहामाए सविहिहिं ।
ता खुज्ज-कुरूव-तणु चेडि एग तिण हणिय पट्ठिहिं ॥
खण-मेत्तेण य सरल-तणु तविय-कणय-गोरंग ।
सच्चह पेक्खंतिहि वि हुय चेडि चारु-सव्वंग ॥

[२६९४] सच्चविय तं च सच्चा पयंपए – विप्प मह वि पसिऊण ।
रूप्पिणि-रूवाओ अहिययरं रूव-स्सिरिं कुणसु ॥

[२६९५] तो भणइ वंभणो – नणु साहाविय-रूव-संपया तं सि ।
रूवं हवइ विरूवे जह जायं तुज्झ दासीए ॥

[२६९६] इय जइ विसेस-रूवं महसि तओ कुणसु सीस-मुंडणयं ।
जर-डंडि-खंड-वसणा वीभच्छ-तणू य हवसु लहु ॥

"उरड्ड पुरड्ड ॐ नमः स्वाहा"

[२६९७] एयं च महा-मंतं गेह-दुवार-ट्ठिया झियाएसु ।
पहर-पमाणं कालं तह दावसु भोयणं मज्झ ॥

[२६९८] अह भोइए भणेउं – इच्छियमेयस्स भोयणं देह ।
सयमवि जहुत्त-विहिणा लग्गा मंतं झियाएउं ॥

[२६९९] वियरंति सूययारा जं जं तं तं दिओ वि भुंजेइ ।
किं वहुणा भोज्ज-विहिं सयलं पि-हु तत्थ निट्ठविउं ॥

[२७००]

हंत न तरह दाउ भोयणु वि

एगस्स वि वंभणह इय भणेउ खुड्डलय-रूविण ।
सो पत्तउ रुप्पिणिहि भवणि थुणिउ तीए वि भत्तिण ॥
अह चेल्लणु भणइ–[मइं]किउ तवु सोलस-वरिसाइं ।
ता किं-चि वि वियरेसु लहु मह वंदेवई काइं ॥

After २६९६. क. उरुड्ड.
२७००. १. क. भोउ भोयणु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७०१]

तयणु रुप्पिणि भणइ साणंद
नणु चेल्लण जिणवरिहिं   तवु पणीउ उक्किट्ठु वरुछरु ।
अट्ठ-छ-मासावहि वि   विहिउ एउ पुणु तइं सु-दुक्करु ॥
नणु जइ देसि त देसु लहु हउं पुणु छुह-विहुरंगु ।
तइं सहुं तरउं न जंपिउ वि ता गमिरह मह चंगु ॥

[२७०२]

एत्थ-अंतरि वहिहि आगंतु
नरनाह-निउत्तु इगु   रुप्पिणीए अइ-दीण-वयणिहि ।
उत्तारिवि चिहुर-भरु   पेसवेइ सच्चाए देविहि ॥
सच्च वि तारिस-वेस-धर कह-वि पडिच्छइ केस ।
तयणंतरु रुप्पिणी भणइ   पसरिय-असुह-विसेस ॥

[२७०३]

हरिहि संतिय संति सु-सिणिद्ध
वर-मोयग जइ जरहिं   ता पडिच्छ चेल्लणय पसिउण ।
नणु सुइर-संचिय-तवह   मह समग्गु जरइ त्ति मुणिउण ॥
इह चिट्ठइ जं किं-चि तुह मंदिरि विगयावाहु ।
तं भद्दे वियरेसु जह   मह नासइ छुह-दाहु ॥

[२७०४]

तयणु रुप्पिणि देइ जि जि के-वि
ते मोयग तक्खणि वि तत्थ ठिउ वि विज्जाणुहाविण ।
आहारइ खुड्डलउ   अह स गहिय विम्हइणाइरिण ॥
इत्थंतरि पयडीहविवि   नारय-रिसि जंपेइ ।
नणु सुंदरि पज्जुन्नु इहु तुह अग्गइ लड्डेइ ॥

२७०१. ९. ताव.

२७०४. ३. क. ठिओ. ५. क. विम्हइण only; ख. विम्हइणोरुइण.

Jain Education International 2010_05   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[२७०५]

विज्ज-सत्तिण करिवि एरिसउं
रूवंतरु ता खणिण चलिर-कणय-कुंडल-विहूसणु ।
साहाविय-रूव-धरु नमइ चलण रुप्पिणिहि नंदणु ॥
तम्माहप्पिण रुप्पिणि वि हुय गुरु-केस-कलाव ।
अह स-विमाणि चडाविउण स-जणणि महुरालाव ॥

[२७०६] वेउव्वि पंचयन्नं संखं आऊरिऊण कुमरेण ।
भणिओ पडिहारो जह – साहसु गंतूण कण्हस्स ॥

[२७०७] नणु रुप्पिणी हरिज्जइ जइ सामत्थं समत्थि तुह किं-पि ।
ता तोलसु अप्पाणं अन्नह रक्खेज्ज तं चेव ॥

[२७०८] अह से कुढीए कण्हो स-वलो स-वहु-परियणो समुच्चलिओ ।
लग्गं च चिरं जुज्झं असज्झ-सत्ताण तेसि तओ ॥

[२७०९] एगेण वि अणेगं पज्जुन्नेणं वलं हयं हरिणो ।
रामो वि-हु विच्छाओ कओ हरि वि-हु य हय-मरट्टो ॥

[२७१०] एत्थंतरम्मि नारय-रिसिणा दोण्हं पि अंतरे होउं ।
हरिणो पुरो पयंपियमिमो सुओ तुज्झ पज्जुन्नो ॥

[२७११]

अहह मह सुय-विरहि कसु हवइ
सामत्थु एरिसु जगि वि इय भणंतु गोविंदु हरिसिण ।
आलिंगइ अंगरुहु नियइ रूवु तसु वियसियच्छिण ॥
पज्जुन्नु वि अवराह निय खामिवि पडइ पएसु ।
हरि-हलहरहं नमंत-रिउ- गलिय-मउलि-कुसुमेसु ॥

२७०५. ६. क. तम्माह.
२७०६. १. विउव्वि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७१२]

तयणु पसरिय-गरुय-आणंदु

जल-आविल-लोयणिण　　हरि कुमरु धरिऊण अंसिहि ।
निय-करयल-पल्लविहिं　　उद्धु विहिउ अह अ-सम-हरिसिहिं ॥
समुहमुवेंतिहि वहु-निविहि वारवईए पविट्ठु ।
सो पज्जुन्न-कुमार-वरु　　माणिय-सयल-विसिट्ठु ॥

तओ य –

[२७१३] मल्हंत-विलासिणि-सोहणयं नच्चंत-स-खुज्जय-वामणयं ।
दिज्जंत-पत्त-फल-चंदणयं　इय विहिउ हरिण वद्धावणयं ॥

[२७१४] नयरी-जणो य सयलो आसीसा-दाण-तप्परो जाओ ।
पज्जुन्नकुमर-मिलणे मोत्तूणं सच्चमेगं ति ॥

[२७१५] जाया य सच्चहामा हसणिज्जा सयण-परियणाणं पि
अब्भवसिएण तेणं वेसेण य तारिसेणं ति ॥

[२७१६]

अवर-अवसरि पुण-वि आगंतु

सो नारउ केसवह　　कहइ – अत्थि वेयड्ढ-सिहरिहिं ।
निय-सोहा-उवहसिय-　अमरपुरिहिं सिरि-जंवुनयरिहिं ॥
सिरि-जंवव-नामिण पयडु विज्जाहर-चक्किंदु ।
तसु सिवचंदा-नाम पिय जिइ जिउ वयणिण चंदु ॥

२७१४. २. क. मिहणे changed to मिलणे.

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[२७१७]

तेसि जायउ काल-जोगेण

सिरि-विस्सगुसेण-इय- नाम-पयडु सुय-रयणु नहयरु ।
जंववई नाम पुणु धूय-रयणु जय-तरुण-मणहरु ॥
तीसे उण रूवाइ-गुण भणिउ न सक्कइ कोइ ।
आ-जम्मंति वि विहि-वसिण सहस-मुहु वि जइ होइ ॥

[२७१८]

एम्व नारय-वयण-संजणिय-

अणुरायाउर-मणिण हरिण जंववइ-तरुणि मग्गिय ।
खयरिंदह तसु पुरउ तिण वि गरिम अ-मुइवि निसग्गिय ॥
भणिउ – अरिरि गोवाल तुहुं मग्गंतउ मह कन्न ।
नूण हसावसि धरणियलि गयणयले वि स-कन्न ॥

[२७१९]

जइ वि गरुउ खरउ खरु होइ

भुवि जुग्गु न सीहिणिहि इय मुणेवि मा करि असग्गहु ।
इय खयराहिव-वयणु निसुणिऊण सुहि-सवण-दुस्सहु ॥
कण्हु अणाहिट्ठिण सहुं रणि विजिउण खयरिंदु ।
परिणइ जंववई-तरुणि वियसिय-मुह-अरविंदु ॥

[२७२०]

कमिण पत्तउ गरुय-रिद्धीए

सिरि-वारवइहिं पुरिहिं तयणु जंववइ-तरुणि-रयणह ।
आवास वियरेइ हरि संनिहाणि रुप्पिणिहि भवणह ॥
जंववई वि-हु रुप्पिणिहिं सह वट्टइ नेहेण ।
अवर-दियहि सच्चहं भणिउ हरिहि सविहि विणएण ॥

२७१७. २. क. विस्सगुणसेण; ८. क. आजंमि वि.

२७१९. ८. क. जंबुवई; ख. missing.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७२१]

तह कहं-चि वि नाह उज्जमसु

जह मज्झ वि अंगरुहु　　हवइ सरिसु पज्जुन्न-कुमरह ।
पडिवज्जिवि कण्हु इहु　　रहि हवेउ सुमरेइ एगह ॥
तियस-विसेसह अह तिण वि सुरिण भणिउ – अइरेण ।
हविहइ कण्ह तुहंगरुहु　　सोहिउ गुण-नियरेण ॥

[२७२२]

तयणु वियरिवि हरिहि अइ-रम्मु

एक्कावलि-हारु सुरु　　गयउ नियय-ठाणम्मि गयणिण ।
पज्जुन्निण वइयरु वि　　एहु मुणिउ पन्नत्ति-जोगिण ॥
जंपिउ रुप्पिणि-सविहि जह　जइ तुहुं अंव भणेसि ।
ता उप्पायावेमि सुउ　　अप्प-सरिसु तुह रेसि ॥

[२७२३]

भणइ रुप्पिणि – वच्छ मह मुणिहिं

वालत्तणि कहिउ सुउ　　तुहुं जि एक्कु इय किमु किलेसिण ।
सामत्थु इहु अत्थि जइ　　जंववइहि ता पसिय पुत्तिण ॥
अह आमं ति पवज्जिउण　पज्जुन्निण सा देवि ।
पेसिय सविहिहि केसवह　सच्चह रूवु करेवि ॥

[२७२४]

अह पहट्ठिण हरिण स-करेहिं

एक्कावलि-हारु तहि　　दिण्णु तयणु सह तीए कीलिउ ।
सुह-सुत्तिहि पुणु पवर-　सिविण-कहिउ सो पुव्व-साहिउ ॥
महु-लहु-वंधवु आरणह　सुर-भवणह चविऊण ।
सो केटभ-सुरु जंववइ-　उयर-कमलि वसिऊण ॥

२७२४. ८. क. सुर.

[२७२५]

विमल-लक्खण-चित्त-कंतिल्लु

जय-असरिस-रूव-धरु हुयउ तणउ तसु काल-जोगिण ।
संबु त्ति पयडियउं नामु भुवण-असमाण-रिद्धिण ॥
सच्चाए वि-हु निय-समइ गयह कण्ह-सविहम्मि ।
सेविय-विसयह हुयउ सुउ भीरु नामु सु-दिणम्मि ॥

[२७२६]

अह ति वुड्ढिहिं जंति सव्वंगु

सह जणय-मणोरहिहिं किंतु संबु पज्जुन्न-विरहिण ।
रइ न लहइ खणु वि इय संति दो-वि ते गरुय-नेहिण ॥
अवरम्मि उ अवसरि हरिहि वयणिण रुप्पिणि देवि ।
कुंडिणि-नयरिहिं गंतु अइवाहइ वासर के-वि ॥

[२७२७]

पत्ति अवसरि भणइ पुणु रुप्पि-

नरनाहह सोयरह पुरउ – भाय महु सुयह वियरसु ।
वेयब्भी नाम निय धूय तयणु पसरंत-अमरिसु ॥
रुप्पि पयंपइ – तइयहं वि अम्हहं तुह अवहारि ।
तं तारिसु अवमाणु हुउ ता इह कह-वि निवारि ॥

[२७२८]

जइ वि वियरहुं धूय वेयब्भि

मायंगहं तु-वि न तुह सुयह तस्सु पज्जुन्न-नामह ।
ता रुप्पिणि निय-पुरिहिं गंतु सुत्त मज्झम्मि धामह ॥
चिट्ठेइ य निरु नीससिर भोयणं पि अ-कुणंत ।
ता सुय-पच्छिम-वइयरिण पज्जुन्निण संलत्त ॥

२७२७. ५. क. अमरिस.

२७२८. १. क. वियरहं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७२९]

अंव एत्तिय-मेत्ति कज्जम्मि
परितम्महि किह णु तुहुं तह करेसु हउं जेण अइरिण ।
तुह वंछिउ सिज्झिहइ इय भणेवि सह संव-कुमरिण ॥
मायंगहं रूविण गयउ कुंडिणीए पज्जुन्नु ।
गायइ गेउ तिरिक्ख-नर- सुर-मोहणु अ-सवन्नु ॥

[२७३०]

तयणु रंजिउ तेण पुर-लोउ
नीसेसु वि तह कइ-वि जह गहेइ तसु चेव गुण-गणु ।
आवज्जिउ नरवइ वि संगहीउ वेयब्भियह मणु ॥
ता पन्नत्ति[इ] वेरिइण रुप्पि-नरिंदिण तस्सु ।
वियरिय वेयब्भिय-तरुणि रंजिय-जय-हिययस्सु ॥

[२७३१]

अह पयासिवि नियय-आयारु
वेयब्भि विवाहिउण मलिवि माणु रुप्पिहि नरिंदह ।
उप्पाइवि नायरहं चोज्जु तेउ पोसिवि उविंदह ॥
सो हरि-रुप्पिणि-अंगरुहु वारवइहिं संपत्तु ।
संवो वि-हु नाणा-विहिहिं चिट्ठइ परिकीलंतु ॥

[२७३२]

अवर-वासरि कण्हु एगंति
सच्चाए विण्णत्तु – पिय भीरु नामु मह तणउ संविण ।
वाहिज्जइ चंदु जिह निच्च-कालु इच्छाणुरूविण ॥
इय तसु दुस्सीलह वसिण मह तणउ वि फिट्टेइ ।
ता निद्धाडहि संवु जिह मह नंदण छुट्टेइ ॥

२७३१. ५. क. पेसिवि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७३३]

हरि वि पभणइ जंववइ-सविहि
नणु सुयणु तुहंगरुहु न सुह-सीलु ता सिक्खविज्जसु ।
इयरी वि भणेइ – मह तणउ अहिउ मुणिहिं वि मुणिज्जसु ॥
तयणु परिक्खह हेउ तसु हरि आहीरत्तेण ।
आहीरी-रूवेण पुणु जंववइ वि सह तेण ॥

[२७३४]

गोस-अवसरि तक्क-दहि-दुद्ध-
भंडाइं गहेउ सिरि- वारवइहि मज्झम्मि पविसइं ।
जा ताव संवेण – नणु एहि एहि किर णेमि एयइं ॥
इय जंपंतिण करि धरिवि देवउलह मज्झम्मि ।
हढिण पवेसिय मयहरिय ता गय-संक मणम्मि ॥

[२७३५]

ईसि विहसिवि जंववइ-रूवु
अवलंवइ मयहरु वि धरइ रूवु केसवह अइरिण ।
संवो वि लज्जिरु गयउ पिहिय-वयणु वत्थेग-देसिण ॥
लज्जावसिण य हरिहि निय- मुहु दंसेउमसत्तु ।
अत्थाणम्मि न पविसरइ जंववइहि सो पुत्तु ॥

[२७३६]

अवर-वासरि कह-वि पज्जुन्न-
उवरोहिण आगयउ खयर-कीलु घडमाणु छुरियहं ।
ता पुच्छिउ हरिण – नणु किं करेसि खायर-सलायहं ॥
अह लहु संवु समुल्लवइ जो वासिउ भणिहेइ ।
तहि मुहि जंववईए सुउ इहु कीलउ खिविहेइ ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७३७] ता मोणं अवलंबिय थक्को कण्होऽवरम्मि दिणम्मि ।
सच्चाए निव्वंधे जंववई पभणिया हरिणा ॥

[२७३८] अज्जेव गहेउ सुयं आवासे लेसु नयरि वहियाए ।
सच्चाए वा गहिओ पुरीए पविसेइ जइ संवो ॥

[२७३९] अह सा संवेण समं गंतूण ठिया पुरीए उज्जाणे ।
पज्जुन्नेण य दिन्ना पन्नत्ती संव-कुमरस्स ॥

[२७४०] एत्तो उण सच्चाए पारद्धो भीरु-कुमर-वीवाहो ।
सयमेगूणं मिलियं विलयाणमिओ य संवेण ॥

[२७४१] पन्नत्ति-पहावेणं विउव्विउं तरुणि-रूवमप्पाणं ।
निवई-निव-परिवारो कडय-निवेसो य विहिओ ॥

[२७४२]

दासि-वयणिण एहु सुणिऊण
आगंतु सयमेव तहिं　　तरुणि-रयणु निव-पुरउ मग्गइ ।
निवई वि-हु भणइ – जइ इमह हत्थि तुह तणउ लग्गइ ॥
इयरीओ उ इमीए करि लग्गहिं ता गिण्हेसु ।
सच्च वि वियसिय-मुह-कमल जंपइ – इहु वि करेसु ॥

[२७४३]

अह सयं पि-हु गहिवि वाहाए
सच्चाए आणिय तरुणि　　तम्मि विउलि वीवाह-मंडवि ।
सन्निहियइ लग्गि निव-　　भणिय-विहिण सुय-पाणि-पल्लवि ॥
लग्गाविय अह सा भणइ　　सच्चा-वक्खिउ लोउ ।
नियउ तरुणि मइं संवु पुणु　　अवलोयउ इयरो उ ॥

[२७४४] अह वित्तम्मि विवाहे वियरिज्जंते चउत्थ-मंडलए ।
संवो सहाव-रूवो भेसिय निद्धाडए भीरु ॥

Jain Education International 2010_05　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

[२७४५] भणइ य सयमेगूणं तरुणिणं परिणियं मए चेव ।
परिणाविओ अहं पुण सच्चाए गहेउ वाहाए ॥

[२७४६] तत्तो सच्चा न हसइ नेय रुयइ चिट्ठए य सु-विसन्ना ।
विम्हइओ हरि-पमुहो जायव-वग्गो समग्गो वि ॥

[२७४७]

जंववई वि-हु सहिय रुप्पिणिहिं

हरिसेण न महियलि वि माइ तुट्ठु पज्जुन्नु चित्तिण ।
संवो वि-हु विस्सुयउ जाउ जगि वि निय-विमल-कित्तिण ॥
इय जायंतिण जायवहं संविहाण-सहसेण ।
कण्हो वि-हु स-सुकय-वसिण थोवेण वि कालेण ॥

[२७४८] लक्खण-नामं धूयं सिंहल-दीवाहिवस्स परिणेइ ।
अज्जवखुरीए नयरीए रट्ठवध्दण-निवस्सावि ॥

[२७४९] धूयं सुसीम-नामं परिणइ तह वीइभय-पुर-प्पहुणो ।
सिरि-मेरु-महीवइणो पियाए चंदमइ-नामाए ॥

[२७५०] गउरी-नामा धूया परिणेइ महा-महेण सउरी-सुओ ।
पउमावइं च परिणइ हिरण्णनाभस्स वर-धूयं ॥

[२७५१] गंधार-विसय-पहुणो गंधारिं दुहियरं विवाहेइ ।
अट्ठहिं वि इमाहिं समं भुंजेइ निरंतरं विसए ॥

[२७५२] तासिं अवराणं पि-हु देवीणं विमल-लक्खण-महग्घा ।
जाया सुया अणेगे महा-वला उत्तिम-प्पगई ॥

[२७५३]

अवर-अवरि जउण-दीवाउ
पोएहिं अणेग-विह वणिय विविह-कंवलिय-रयणइं
अवराइं वि तव्विसय- संभवाइं वहु-धण-कयाणइं ॥
गहिउण वहु-लाहुम्मणिय वारवइहिं संपत्त ।
विवणिहिं पयडिय-निय-नियय- वत्थु अछहिं वणि-उत्त ॥

[२७५४]

तयणु जायव-कुमर-तरुणीउ
निय-नियय-कुऊहलिण निइवि ताइं वणियहं कियाणइं ।
ओगिण्हहिं इच्छियइं तेसि दाउ मणि-कणय-दविणइं ॥
अह ति भणहिं अप्पत्त-धुर अंत-लाह वणि-उत्त ।
नणु ता पूरिय-माण-पसर- हूय इह वि संपत्त ॥

[२७५५]

जइ कह-वि वि पुणु जरासंध-
पुरि गंतु इहि दंसियइं वत्थु-सत्थ एरिसय ता लहु ।
संजायइ सय-सहस- गुणिउ लाहु अम्हाण इय वहु ॥
चिंतिर गय जरसंध-पुरि तहिं पुणु ते अलहंत ।
लाहु कवड्डिय-मित्तिउ वि चिट्ठहिं परितम्मंत ॥

[२७५६]

तयणु सयलि वि रायगिह-नयरि
गइं अन्न अलहिर वणिय पत्त वि सइ गरुयर-विसायह ।
घेत्तूण कयाणयइं जाहिं भवणि जरसंध-रायह ॥
तयणंतरु कंवल-रयण मग्गिय जीवजसाए ।
थोवयरिण मुल्लेण अह विहलिय-सयलासाए ॥

२७५४. १. क. तरुणीओ.

२७५६. २. क. अलेहिर. ६. क. रयणु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७५७]

भणहिं वणियग – अहह संसारि
निब्भग्गिय अम्हि पर जं समिद्ध-जायव-विहूसिय ।
वारवइ महा-नयरि चइवि पत्त इह स-कय-दूसिय ॥
को उज्झिवि जायव-कुमर अम्हइं इच्छिउ देइ ।
संखु वि विणु रयणायरह सदुहउं किं न रुएइ ॥

[२७५८]

अच्छहिं वहुइ वि महिहिं नर-राय
निय-रज्ज-गव्वब्भहिय स-घरि परहं अवमाण पयडिर ।
नउ जायव-निव-सरिस जेसि पइहिं सुर-असुर नित्तडिर ॥
कुणहिं समीहिय सिद्धि तहं सिर-विरइय-कर-कोस ।
सेवेहिं अणु-दिणु पय-पउम पसरिय-गुरु-संतोस ॥

[२७५९]

इय सुणेविणु जाय-आसंक
आउच्छइ जीवजस कहह कहह कहिं अच्छहिं जायव ।
इयरे वि पुव्वुल्लविउ सयलु कहहिं नियहत्थ-गयमिव ॥
तयणंतरु संभंत-मुह वियलिय-कंति-कलाव ।
ल्हसिय-चिहुर-वंधण स-दुह- पसरिय-गरुय-पलाव ॥

[२७६०]

गंतु वेगिण पडिर अक्खुडिर
जरसंध-नराहिवह कण्ह-मुसलि-वारवइ-वइयरु ।
साहेइ विसेसयरु तह कह-वि जह सो वि नरवरु ॥
अमरिस-वस-कंपिर-अहरु रोसारुण-नयणिल्लु ।
सूरसेण-सेणाहिवइ अणुनवेइ नियइल्लु ॥

२७५७. क. भणइ.
२७५८. क. महिंठिं; ६. क. समीहिंय

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७६१]

जह – लहुं पि-हु दूय पेसवसु
भरहद्ध-निवासियहं　　निवहं कह-वि तह जेण सयलि वि ।
आगच्छहिं मह सविहि　　अइरिणावि विक्खेवु मेल्लिवि ॥
तह जि कयइ सेणाहिविण आगउ निवइ-समूहु ।
किं पुण तक्खणि हुयउ जरसंधु निवइ गय-सोहु ॥

[२७६२]

तयणु सचिविहि निरु निसिद्धो वि
भवियव्व-वसेण निवु　　उक्खिवेइ जा चलणु दाहिणु ।
सहस च्चिय ताव तसु　　छीय हूय गुरु-असुह-कारणु ॥
कसिण-विरालिहि पुणु कह-वि आगंतुण पहु छिन्नु ।
राव-हत्थु पुणु रत्त-वडु　　समुहीहुयउ विवन्नु ॥

[२७६३]

तह वि कुंजरि आरुहंतस्सु
आयास-विवज्जिउ वि　　हार-रयणु परितुट्टु कंठह ।
धरणीयलि निवडियउ　　मउडु विरसु हुउ सद्दु तूरह ॥
पवणु स-सक्करु खर-फरिसु वाइउ उव्वियणिज्जु ।
भग्गु दंडु झय-छत्तहं वि　　साहिय-विवरिय-कज्जु ॥

[२७६४]

चलिरि कुंजर-तुरय-रह-सुहड-
संकिन्नइ निवइ-वलि　　खुहिय-लवण-जलरासि-सलिलि व ।
करि-तुरय निरंतरु वि　　मुयहिं विट्ठ-मुत्तइं स-रोगि व ॥
भज्जहिं अक्ख सु-संदणहं सुहड गलिय-उच्छाह ।
वरिसइ रुहिरिण नीर-धरु संजाया दिसि-दाह ॥

२७६२. ४. क. सहसच्चिय.

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[२७६५]

घरि सरोवरि विवणि-दीहीसु
पासाय-चेइय-हरहं सिहरि विरसु विरसहिं अरिट्ठय।
उद्धीकय-मुह-कुहर मुयहिं मिलिवि ओरालि सुणह य ॥
नयरब्भंतरि वासरि वि पविसहिं पसु आरन्न।
दियहि वि दीसहिं गयण-पह तारायण-संछन्न ॥

[२७६६]

एम्व वहुविह-असिव-उवइट्ठ-
मरणंत-उवद्दवु वि कंस-काल-मरणिण दुहाविउ ।
जरसंध-नराहिवइ वारवइहि समुहउ पहाविउ ॥
अणुदिण-मिलमाणिण वलिण पूरिय-वसुहाभोगु ।
पिक्खंतउ सर-सरि-सिहरि- नयरइं किं-चि स-सोगु ॥

[२७६७]

इओ य –

कहिउ नारय-रिसिण जरसंध-
वसुहाहिव-संचलण- अंतु सयलु पुव्वुत्तु वइयरु ।
आगंतु नहयल-पहिण समुद्दविजय-निवइहि स-वित्थरु ॥
साहिउ अह सो हरि-मुसलि- पमुह-सवग्ग-समेउ ।
कुट्ठुगि-नेमित्तिउ नियय- पुरिसिहिं सद्दावेउ ॥

[२७६८]

भणिउ पसरिय-हरिस-रोमंच-
पुलयंचिय-विग्गहिण समर-रसिण जायवहं वग्गिण ।
को केरिसु अम्ह जउ तेण समगु रणि तयणु इयरिण ॥
जंपिउ जह – जरसंध-निवु नित्तुलु समरि मरेइ ।
हरि पुणु निहणिय-रिउ-निवहु भरह-अद्धु भुंजेइ ॥

२७६५. २. क. चेइ marginally corrected as चेइय; ख. चेइ; ७. क. पविसहि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७६९]

तयणु चारिहिं कहिउ जरसंध-
निव-आगमु सन्निहिउ ता स-तोसु जायवहं वग्गिण।
अहिसित्तउ कण्हु रण- विजय-हेउ सुपसत्थ-लग्गिण ॥
पत्थाणइ ठिउ कंस-रिउ इयरि वि विविह-नरिंद ।
निय-निय-वलिण हरिहि मिलिय वियसिय-मुह-अरविंद ॥

[२७७०]

तयणु सीयल-सुरहि-अणुकूल-
पवणाइ-अणेगविह- पवर-सउण-सूइय-सुहोदउ ।
निग्गच्छइ वारवइ- पुरिहि समुदविजयाइ-सहियउ ॥
गंतु दिसिहिं पुव्वुत्तरहं हरि जोयण पन्नास ।
सियवल्लीए पएसि परिगिण्हइ खणु आवास ॥

[२७७१]

तयणु पिहु-पिहु नियय-नरनाह
अणुकमिण पलोइउण कुणइ तेसि सक्कारु सयलहं ।
अह भणिउ अणहिट्ठिइण सन्निहाणि हरि-चलण-कमलहं ॥
जह – चउ-जोयण-अंतरिण तुम्ह-उवरि कोवंधु ।
चिट्ठइ वहु-वल-परिकलिउ नरवइ सु जरासंधु ॥

[२७७२]

किंतु अ-पइ वि वंधु अवगणइ
उव्वेयइ मित्तयणु कुवइ पगइ-लोगहं अ-कारणु ।
परिओसु वहेइ मुणि- जणि वि तवइ अ-निमित्तु सज्जणु ॥
देव-गुरूण अवन्नयरु अवसु सचिव-तिलयाहं ।
दुम्मुहु दुम्मणु दुस्सुइउ उव्वियणिज्जु भडाहं ॥

२७७०. ५. क. समुदविजयइ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७७३]

तस्सु बंधव-जणु वि निव्विन्नु
पयईउ विरत्त-मण सचिव-निवहं न करेइ आयरु ।
जायंति उप्पाय-सय सउण-सिविण-विसउ वि न सुंदरु ।'
निवइ वि अणुवित्तीए तसु जइ परिसेव कुणंति ।
भत्ति-भएहिं उ तुह जि पर अणुरत्ता चिट्ठंति ॥

[२७७४]

एहु ठाणु वि तुम्ह निय-देस-
सीमाए कण्ह इय इह जि ठिइहि जिप्पइ अ-संसउ ।
इय निसुणिवि केसविण नियय-वलह चउ-दिसि कराविउ ॥
जंत-निवेस-महा-फरिह- पमुहु अणेगु पयत्तु ।
समुदविजय-वसुहाहिवह वयणु गहेवि सु-जुत्तु ॥

[२७७५]

तयणु अच्चुय-नाम-विक्खाउ
दंडाहिवु स-भुय-वल- दलिय-सयल-रिउ-कुल-मडप्फरु ।
निय-कडय-निवेस-चउ- दिसिहि मुक्कु वहु-सेन्न-वित्थरु ॥
एत्थंतरि जायवहं वलु तहिं आगयउं सुणेउ ।
तम्मज्झम्मि उ हरि-वल वि परिचिट्ठंति मुणेउ ॥

[२७७६]

कोव-कंपिर-अहरु जरसंधु
जंपेइ निय-परियणह पुरउ – अह[ह] पारद्ध-निहणिउ ।
वारवइहिं गंतु जि ति इह वि पत्त चिट्ठंति मह रिउ ।'
जं तइयहं मह नंदणह जामाउयह वि तेहिं ।
निहणु कुणंतिहि पाव-तरु रोविउ तसु स-करेहिं ॥

२७७३. २. क. पयईओ.
२७७४. ३. क. असंसओ.
२७७६. १. क. अहर; ३. निहिणिउ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७७७]

फलइं वियरिसु तेसि गोवाहं

वसुदेव-नंदाइयहं समुदविजय-पमुहहं वि निवइहिं ।
कहमन्नह मह वि अविणीय गोव ते धरहिं सविहिहिं ॥
अहवा जइ गोवाल मइं न मुणहिं ता म मुणंतु ।
एसो उण सुम्मइ किह-णु जायव-जणु आवंतु ॥

[२७७८]

अहव गुरुहुं वि गलिहिं वुद्धीउ

जायंति पिवीलियहं पक्ख अंति हय-विहि-निओइण ।
अह हंसग-नामगिण विउल-मइण संलत्तु* सचिविण ॥
जह जायव-निवइहिं वि वलु तुच्छउं मुणिसु म देव ।
जेसि सुरासुर-नायग वि कुणइं निरंतरु सेव ॥

अवि य –

[२७७९] किर इयर-नरेहिंतो वलं वलाण वि अ-परिमियं भणियं ।
जं पुण कण्हस्स वलं तं मह-रिसिणो कहंतेवं ॥

[२७८०] सोलस-राय-सहस्सा सव्व-वलेणं पि संकल-निवद्धं ।
अंछंति वसुदेवं अगड-तडम्मि ठियं संतं ॥

[२७८१] घेत्तूण संकलं सो वामगहत्थेण अंछमाणेण ।
भंजिज्ज व लुंपिज्ज व महुमहणं ते न चायंति ॥

[२७८२] कोडि-सिलं एक्को वि-हु करेण गहिऊण उक्खिवइ विण्हू ।
दु-गुणं तु वलं चक्किस्स केसवाओ विणिद्दिट्ठं ॥

२७७७. १. क. वियरसु; ७. क. नाम; क. मुणंत.

* The portion from °लत्तु (2778. 5.) to वलं (2779. 1.) is dropped in ख.

२७७८. १. क. वुद्धीओ.

२७८०. २. क. तडंमि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७८३] तत्तो वि-हु तित्थयरा अणंत-वल-परिगया मुणेयव्वा ।
छत्तं पुहइं दंडं तु सुर-गिरिं ते पकुव्वंति ॥

[२७८४] अहवा किं किर वहुणा लोयमलोए वि तेसि परिखिविउं ।
सामत्थं वन्निज्जइ समप्पए तेसु विरिय-कहा ॥

[२७८५] इय धुवमरिट्ठनेमी एगो वि-हु जिणइ तिहुयणमसेसं ।
जस्स य सव्वे सक्का वि किंकरा के वयं तस्स ॥

[२७८६] अन्नं चिय अइ-रहिणो महा-रहा सम-रहा य अद्ध-रहा ।
रहिणो य निवा लोए पहाणया होंति उक्कमओ ॥

[२७८७] भयवं अरिट्ठनेमी विण्हु मुसली तुमं पि-हु इयाणिं ।
एए चउरो मोत्तुं अइ-रहिओ नत्थि संसारे ॥

[२७८८] तत्तो अम्हाण वले एगो च्चिय अइ-रही तुमं देव ।
तिन्नि उ सत्तूण वले सेसाउ महारह-प्पमुहा ॥

[२७८९] एत्थ वि कि-वि-हु चिट्ठंति के-वि पुणु तहिं वि जं च सेस-वलं ।
तं कइवय-अक्खोहणि-मेत्तं ताणं पि संभवइ ॥

[२७९०] नव-सहसेहिं गयाणं लक्खेहिं नवहिं रहवराण पुणो ।
नव-कोडीहिं हयाणं नराण नव-कोडि-कोडीहिं ॥

[२७९१] अक्खोहणि त्ति भणिया तत्तो जइ वि-हु तयं अरीण वलं ।
सयलं पि नरवरस्स उ वलं न एक्कस्स वि-हु अम्हं ॥

[२७९२] तह वि-हु अरिट्ठ-नेमी जिणेइ एक्को वि तिहुयणमसेसं ।
हरि-मुसलि-प्पमुहा वि-हु तुम्ह समग्गाण वि न जोग्गा ॥

२७८३. २. क. ख. पुहई.
२७८८. १. क. वलो.
२७८९. १. क. किवि; ख. जं त.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२७९३] वसुदेवेणं विहियं सयंवरे रोहिणीए जं तइया ।
एक्कंग-मेत्तएण वि तं तुब्भे किं न संभरह ॥

[२७९४] तम्हा नेमि-जिणिंदो नमंसणिज्जो सुरासुराणं पि ।
मोत्तूण पणामं तम्मि विक्कमो कस्स वि न जुत्तो ॥

[२७९५] इय हंसगेण भणिए मगहवई भणइ – हंत जइ एवं ।
तो नेमि-जिणाइ-जुयं पि तं बलं मज्झ तणयस्स ॥

[२७९६] कालस्स भएण पलाइऊण पच्छिम-दिसाए किं लुक्कं ।
किं वा सोरिय-महुराइ-मंडलो तेहिं परिचत्तो ॥

[२७९७]

तयणु हंसगु भणइ – नणु देव

नय-मग्गु इहु एरिसउ　　सु-पुरिसाहं न य कायरत्तणु ।
जं न फलइ विक्कमु वि　　दव्व-खेत्त-कालाइयहं विणु ॥
तद्दिण-जायउ केसरि वि　　करिहिं कुंभ न दलेइ ।
न य अइ-बालउ विसहरु वि कं-पि कह वि डंकेइ ॥

[२७९८]

अवि य केसरि करइ संकोचु

मेसो वि अवक्कमइ　　हणिउ-कामु गुरुयर-पहाविण ।
इय गरुय-विचिट्ठियहं　　एरिसाहं किं पहु वियारिण ॥
कालस्स वि तहं सम्मुहहं धावंतहं किं वित्तु ।
इय परिभावउ नाहु इग- ठाणि धरेविणु चित्तु ॥

[२७९९]

एम्व[1] हंसग-सचिवि पडिवक्खु

उववन्निरि[2] पुणु पुणु वि　　जाव कुविवि निवु किं-पि पभणइ ।
ता डिंभग-नामु निव-　　पुरउ सचिवु एरिसु पयंपइ ॥
पहु न पसिद्धिण हवइ जउ किंतु सुकय-जोगेण ।
इय मुणिऊण महा-यसहं　　किमियर-भणियव्वेण ॥

२७९९. १. एंव. २. क. उववन्निरि.

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[२८००]

किंतु पुरिसिण जउ महंतेण

गहियव्वउ नीइ-पहु सो उ हवइ दुग्गावलंविण ।
दुग्गं पि-हु ति-विहु इह जाणियव्वु नय-समय-विउसिण ॥
तम्मज्झम्मि य पढमु जल- दुग्गु वीउ गिरि-दुग्गु ।
तइउ निजूह-दुग्गु इय मणि धरिऊण समग्गु ॥

[२८०१]

सम-महीयलि निवइ-वसहेहिं

कायव्वु निजूह-मउ दुग्गु अजिउ पडिवक्ख-लक्खिहिं ।
तमसेस-निजूह-वरु कहिउ अत्थि रण-रंग-दक्खिहिं ॥
पन्नासहिं नेमिहिं सहिउ सहसारय-संजुत्तु ।
कीरउ वहु-गण-निव-मइउ चक्कव्वूह निरुत्तु ॥

[२८०२]

जुत्ति-जुत्तउं एहु इय मुणिवि

जरसंध-नराहिवइ चक्कवूह-रयणाए निय-वलु ।
परिसंचइ एहु पुणु मुणिवि सयलु जायत्तिहिं अ-विचलु ॥
एरिसि चक्क-निजूहि कइ आ-भवु सत्तु-समूहु ।
दुस्सज्झउ इय चिंतिउण कारिउ गरुड-व्वूहु ॥

[२८०३]

एत्थ-अंतरि खयर-नरनाह

वसुदेव-पक्खाणुगय मिलिय खणिण वलि वासुदेवहं ।
सउरिस्स उ के-वि रिउ समुहिहूय जरसंध-सेवहं ॥
अह हविहइ दुह-सज्झु रिउ सहियउ खयर-गणेण ।
ता वसिकिज्जहुं ते खयर इय निच्छिउण मणेण ॥

२८०१. ३. क. पडिवक्खु. ८. निवइमउ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८०४]

नेमि-कुमरह मुसलि-सहियस्सु
सविहम्मि पयंपिउण वच्छ कण्हु तुम्हाण नासउ ।
मइं दिन्नु तेवड्डु परि होइ एहु जेवड्डु करिसउ ॥
इय चिंतिवि रण-रंग-भरि तह कहमवि-हु जइज्ज ।
जह अप्पडिहय-तेय-भरु हरि रिउ-लच्छि लहेज्ज ॥

[२८०५]

एहु सामिण नेमि-कुमरेण
उवरोहिण किं-चि पडिवन्नु किं-चि नियवंधु-नेहिण ।
एगंतिण गहिउ पुणु मुसलि-पमुह-जायव-समूहिण ॥
तयणंतरु नहयल-पहिण सिरि-जायव-कुल-केउ ।
गयउ सउरि वेयड्ढि निय- भुय-वल-वलिण समेउ ॥

[२८०६]

[तयणु अइरिण सुकय-जोगेण
वसुदेविण खयर-रिउ रणि जिणेउ किय-अप्प-वस-गय ।
परिणेविणु वि विविह तहं धूय गरुय-अणुराय-रत्तय ॥
अह नहयर-वल-आउलिय- नहयल-पहु वसुदेवु ।
हरिआरयणिहिं आगयउ महि-नहयर-कय-सेवु ॥]

[२८०७]

नेमि-कुमरिण वद्ध पुणु वाह
सुर-सिहरिहिं सुर-गणिण अह असत्थ-वहग त्ति तूलिय ।
तियसेहिं विइन्न जय- पहुहु एत्थ-अंतरि वियाणिय ॥
वंधु-सिणेहिण सामि-मणु रण-विहाणि सुक्कंठु ।
सक्किण मायलि सारहिउ पेसिउ समर-वरिट्ठु ॥

२८०६. This stanza is erased in क

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८०८]

तयणु हरिसिण दिव्व-संठाणु
दिव्वाउह-पूरियउं मज्झि दिव्व-कय-सीह-आसणु ।
मण-इच्छिय-पह गमिरु पत्त-पसरु पडिवक्ख-नासणु ॥
दिव्व-तुरंगमु रह-रयणु वेउव्विउण खणेण ।
सुरवइ-सारहि पहु-पुरउ पत्तु पवण-वेगेण ॥

[२८०९]

भणइ पुणु जह – नाह आरुहिवि
रह-रयणि इमम्मि लहु दलसु सयल-रिउ-कुल-मडप्फरु ।
ता नेमि-कुमारु चिर- विहिय-सुकय-अहरिय-पुरंदरु ॥
तहिं रह-रयणि समारुहइ निरुवम-कय-सिंगारु ।
तयणंतरु हरि हलहरु वि जायव-नरवइ-सारु ॥

[२८१०]

चक्क-वूहिण समुहु इंतस्सु
जरसंध-निवइ-वलह ते-वि गरुड-वूहेण जायव ।
परिसज्जिय-विउल-वल मिलिय समरि नय-कप्प-पायव ॥
ता दोण्ह-वि निव-पुंगवहं जुडिय सुहड सुहडेहिं ।
कुंजर करिहिं तुरय हइहिं रहिय पुणो रहिएहिं ॥

[२८११]

अह खणद्धिण किं-चि जरसंध-
निव-सेन्निण कण्ह-वलु दलिय-दप्पु दिसि-मुहु जुयाविउ ।
एत्थंतरि हरि-पुरउ भणइ मुसलि नय-मग्ग-भाविउ ॥
रिउ-चक्क-व्वूहेण इहु वास-सए वि अ-जेउ ।
ता कीरउ केण वि विहिण एय-निजूहह भेउ ॥

२८१०. ९. क. रहिंएहिं, ख. रहिएंहिं

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८१२]

तयणु कण्हिण एहु जुत्तु त्ति
परिचिंतिवि दाहिणहं नेमि-कुमरु विण्णविवि मुक्कउ ।
उत्तरय-दिसीए पुणु पत्थु मज्झ-देसे उ थक्कउ ॥
हय-गय-संदण-सुहड-भर- खोहिय-अरि-कुल-दिट्ठि ।
कय-सन्नाहु महा-सुहड- सहियउ सु अनाहिट्ठि ॥

[२८१३]

तयणु कण्हिण विविह-वयणेहिं
ते तिन्नि-वि तह कह-वि भणिय जेण रण-रंग-पुलइय ।
रिउ-चक्क-निजूहयहं तुंवि अरय-नेमिहिं वि संठिय ॥
पविसिवि समर-वसुंधरहं आलोडहिं पर-चक्कु ।
तह कहमवि जह अइरिण वि निरु सरणेण विमुक्कु ॥

[२८१४]

तत्थ को-वि-हु मयउ ठाणे वि
कु-वि नट्ठु दिसो-दिसिहिं को-वि सरणि पविसेइ नेमिहि ।
कु-वि गिण्हइ मुहिण तिण को-वि सविहि गउ नियय-सामिहि ॥
नेमि-कुमारिण रुप्पि-निवु निव-सय-सहस-समेउ ।
मुक्कउ लीलाइ वि जिणिवि हय-विप्पहउ करेउ ॥

[२८१५]

इय खणद्धिण तेहिं भिन्नम्मि
तिहि ठाणिहिं सत्तु-वलि जल-निहिम्मि इव सरिय-सलिलइं ।
पविसंति कयाउहइं अणुपहेण जायवहं सेन्नइं ॥
सह पंडव-निवइहिं समरु कउरव-निवहं पयट्टु ।
ता कउरव-निव-गणु मयउ गरुय-पहार-दुहट्टु ॥

२८१३. ५. निमिहिं. २८१५. २. क. ठाणिहि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८१६]

नेमि-कुमरिण वावरंतेण

पुणु पुणु वि महारहिहिं सह निवेहिं भगदत्त-पमुहिहिं ।
नच्चाविय तह कह-वि किंत्ति-रमणि संगाम-धरणिहिं ॥
जह जस-पडह-प्पडिरविण सह नज्ज-वि विरमेइ ।
भग्ग-मडप्फरु रिउ-गणु वि स-पहुहु पुरउ भणेइ ॥

[२८१७]

अहह सामि रक्खि रक्खेहि

निक्कारण-कोवियउ नेमि-कुमरु छड्डइ न किं-चि वि ।
विच्छायइ रिउहु पह दलइ दप्पु जय-सिरि वि संचिवि ॥
वियरइ गुरुहु स-वंधवह वासुदेव-नामस्सु ।
ता न इमिण रुट्ठिण हवइ जीविउ कसु-वि अवस्सु ॥

[२८१८]

तयणु सेणाहिव-हिरण्णाभ-

पमुहाण नराहिवहं अणुवलद्ध-संखहं रणंगणि ।
निसुणेविणु मरणु जरसंधु निवइ झूरेइ निय-मणि ॥
सिसुपालह सविहम्मि पुणु भणइ – किह णु भवियव्वु ।
दीसइ रिउ-कुलु गरुय-वलु इय धुवु मइं मरियव्वु ॥

[२८१९]

तयणु धीरिम करिवि सिसुपालु

साडोवु समुल्लवइ देव किमिह तुम्हहं विसाइण ।
जइ भग्गउं तुम्ह-वलु एम्व तेण सिरि-नेमिनाहिण ॥
ता किं कीरउ ज न जगि वि कु-वि वलियउ देवस्सु ।
तह-वि हु नूण न सप्पुरिसु कहमवि हवइ निरासु ॥

२८१६. २. क. महारहिं.
२८१९. ४. क. भग्गउ. ५. क. एवं. ८. क. नूण सप्पुरिसु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८२०]

इय विणिच्छिवि मह वि आएसु
पसिऊणं देह जह हउं वि किं-पि तोसेमि अप्पउं ।
तयणंतरु उव्वरिय- निव-सहस्स-दसगउं स-दप्पउं ॥
वियरिउ सिसुपालह वि जरसंधिण खुहिय-मणेण ।
कंस-काल-मरणाइं पुणु सुमरिवि विहिहि वसेण ॥

[२८२१]

समर-धरणिहिं हणिय निय-राय-
गय-संख पलोइउण गरुय-खेय-वाउलिय-माणसु ।
जरसंधु नरिंदु सयमेव चलिउ संगहिय-साहसु ॥
एत्थंतरि रण-रंग-वस- पुलइय-अंगोवंगु ।
संचल्लिउ सत्तुहु समुहु हरि हरि-वंसह चंगु ॥

[२८२२]

किंतु मगहाहिवइ कु-निमित्त-
कु-स्सिमिण-कुसउण-सय- पडिनिसिज्झमाणु वि रणंगणि ।
पविसेइ मुरारि पुणु गरुय-हरिसु उव्वहिरु निय-मणि ॥
सउण-निमित्त-उवस्सुइहिं साहिय-जय-सिरि-लाहु ।
मिलियउ जरसंधह रिउहु निव-वंधविहिं सणाहु ॥

[२८२३]

तयणु दुण्ह-वि वलहं संजाउ
रणु जायव-भड वहुय निहय खणिण मागहिय-सुहडिहि ।
अह सारण-नामगिण सउरि-सुइण असमाण-सत्तिहिं ॥
निहणिउ मगहेसरह सुउ निवइ जवण-अभिहाणु ।
तह जह तसु जीविउ खणिण दूरयरेण पलाणु ॥

२८२०. ६. क. वियरिय; ७. क. ख. जरसंधेण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८२४]

अह सु जवणह मरणु निसुणेवि

दीणा[ण]णु अमरिसिउ मगह-नाहु सयमवि समुट्ठिउ ।
तसु घाइहि जज्जरिय- अंगुवंगु अइरिण वि विहुरिउ ॥
चुण्णिय-रहवरु निहय-करि महि-निवडंत-तुरंगु ।
करुणु-रुयंत-मरंत-भडु हुउ हरि-वलु चउरंगु ॥

अवि य –

[२८२५] विमुक्क-पवर-जाणयं समुज्झियाभिमाणयं ।
गलंत-खग्ग-हत्थयं निवडंत-सुहड-सत्थयं ॥

[२८२६] विमुक्क-धीर-धीरयं विमग्गमाण-नीरयं ।
लुलंत-छत्त-चिंधयं नच्चंत-भड-कवंधयं ॥

[२८२७] स-सामिणो विरत्तयं पलायणेक्क-चित्तयं ।
मत्तेभ-संपणुल्लियं तुरंग-थट्ट-पेल्लियं ॥

[२८२८] भयालु-उज्झियत्थयं रहोह-रुद्ध-पंथयं ।
अन्नोन्न-पेल्लणुज्जयं पलाण-भीरु-वग्गयं ॥

[२८२९] मगहेस-वाण-ताडियं संगाम-भूमि-पाडियं ।
संजाय-सावसेसयं विमुक्क-जीवियासयं ॥

[२८३०] इय विहुरियम्मि सेन्ने एक्को च्चिय भुवण-लग्गण-क्खंभो ।
दिव्व-रहेणं चिट्ठइ अ-गंजिओ नेमि-कुमर-भडो ॥

[२८३१]

अह खणद्धिण सेन्नु सयलं पि

जरसंध-नराहिविण स-भुय-वलिण दिसि-मुहु जुवाविउ ।
ता दाहिण-करिण हरि नियय-धणुहु लीलइं चडाविउ ॥
जंपइ जरसंधह पुरउ फुरिय-दप्प-दट्टुट्टु ।
सुइरु निवाहम तुह जणिण जय-जय-रवु उग्घुट्टु ॥

२८२४. २. क. ख. दीणाणु.

२८३१. ६. क. पुरउ omitted.

[२८३२]

किंतु संपइ होसु खणमेग-
मुवपेत्तु कोयंडु करि मज्झ समुहु जह तुह खणद्धिण ।
जय-जय-रवु संहरहुं चिर-परूढु सह रज्ज-रिद्धिण ॥
अन्नह ढंकिवि कन्न तुहुं नाससु तुरिउ हयास ।
किं न निरिक्खसि मंडिया तणा कयंतह पास ॥

[२८३३]

इय सुणेविणु निवइ जरसंधु
रोसारुण-नयण-दलु गहिवि धणुहु साडोवु जंपइ ।
अरि वालय मरिसि तुहुं मज्झ-समरि दुक्कंतु संपइ ॥
सुत्तउ सीहु म जग्गवहि करिहि म गेण्हहि सप्पु ।
सरणु न होसइ तिहुयणु वि हउं तुह भंजिसु दप्पु ॥

[२८३४]

एहु निसुणिवि कण्हु सामरिसु
धणु-टंकारविण तह पंचयन्न-संखह निनाइण ।
विक्खोहइ सत्तु-वलु तह कहं-चि जह दुसह-मुच्छिण ॥
विहलंधलु धरणिहिं पडिवि हुउ सुयणहं सोयव्वु ।
सिरि-जरसंधु नराहिवु वि न मुणइ जं कायव्वु ॥

[२८३५]

नेमि-कुमरु वि तिसु वि भुवणेसु
दढ-सावाणुग्गहहं जो समत्थु तसु गणण केरिस ।
जरसंध-नराहिवह विसइ किंतु मन्नंतु एरिस ॥
पाव-पवित्ति महा-नरय- कारणु तह य हरीहिं ।
हम्मिहिं पडिकण्ह त्ति परिचिंतिरु ठियउ तडीहिं ॥

२८३३. ७. क. गेण्हइ.
२८३४. १. क. कण्ह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८३६]

अह जुहिट्ठिर-भीम-अज्जुणय-
नउलाइ अणेग-विह समुदविजय-पमुहा य नरवर ।
संवाहिय-नियय-वल मिलिय रिउहुं रण-विहिहिं वंधुर ॥
ता पर-वलु वण-कुंजर व मिग-जूहइं लोलंतु ।
समुदविजय-पमुहा य निव- निवह सव्वि खोहंतु ॥

[२८३७]

असम-विक्कमु दलिरु पर-चक्कु
अ-क्खोहिउ पर-भडिहिं गहिय-खग्गु सिसुपालु नरवइ ।
अरि कण्हु गोवालु कहिं कहिं सु मुसलि इय भणिरु आवइ ॥
हरि-संदण-सविहम्मि अह पसरिय-रोस-भरेण ।
जय-विम्हय-करु रणु करिवि सु वि निहणिउ कण्हेण ॥

[२८३८]

तयणु दसहिं वि निवइ-सहसेहिं
परिकलियउ अमरिसिण दट्ठ-उट्ठु मागह-नरेसरु ।
आरोविवि धणु-रयणु गहिवि वाणु पायडिय-डंवरु ॥
पहरंतह स-वलह हरिहि तह पहरेउ पयट्टु ।
जइ स-नरामरवइ-गणु वि भणइ जाय-संघट्टु ॥

[२८३९]

न हरि न मुसलि न सु जरासंधु
नो नेमि न इयर भड जमिह एत्थ संगर-सरोवरि ।
आरंभिण एरिसिण दुहं-वि वलहं एरिसि मडप्फरि ॥
निम्मज्जिहइं कहं-चि तह जह पच्छिम-लोयस्सु ।
सुद्धि वि दुल्लह होइसइ निय-निय-भडहं अवस्सु ॥

२८३६. क. संठाहिय.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८४०]

एहु निसुणिवि तह पलोएउ
रण-महिहिं अणेग-भड दुसह-घाय-निवडंत-कंधर ।
सच्चविवि कयंत-सम उभय-बलिहिं संकड वसुंधर ॥
करुणा-रस-परिसित्त-तणु निक्कारण-वच्छल्लु ।
नेमि-कुमारु समाणवइ सुर-सारहि नियइल्लु ॥

[२८४१]

अहह सुंदर दिव्वु रह-रयणु
पिल्लेसु विवक्खियहं पहरमाण-निवईण मज्झिण ।
मा अ-सरण मरहुं इहि करुण-रहिय-केसवह हत्थिण ॥
हउं पुणु साहिसु तह कह-वि जह वियलंत-मरट्ट ।
सेव पवज्जहिं अइरिण वि पयडिय-सज्जण-वट्ट ॥

[२८४२]

तयणु जो किर तियस-नाहेण
कंपंत-सीहासणिण अवहि-मुणिय-तत्तिण रणंगणि ।
पेसवियउ दिव्वु रहु आसि नेमि-कुमरस्सु तक्खणि ॥
सो तसु वयणिण मायलिण चोइउ रिउ-मज्झेण ।
अह आऊरिउ घण-गहिरु संखु नेमि-कुमरेण ॥

[२८४३]

तह करेविणु करणु वइसाहु
अप्फालिउ दिव्वु धणु- रयणु तयणु टंकार-सद्दिण ।
संखस्सय-पडिरविण तह य नेमि-कय-सीहनाइण ॥
आकंपाविउ महि-वलउ ढलिय सिहरि-सिहराइं ।
सयलि वि जल-निहि झलझलहिं निवडहिं धरणि घराइं ॥

२८४१. ९. क. सद्द.

२८४३. ७. क. टलिय; ख. पलिय. ९. धरणियराइं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८४४]

सयल पर-बलि खुहिय खोणिंद

भड निवडहिं धरणियलि तसिय तुरय मय-मुक्क कुंजर ।
संचुण्णिय रह-रयण मणुय-हणिर नासंति वेसर ॥
अहव किमियरिण जंपिइण सयलु वि मागह-सिन्नु ।
नेमि-कुमारिण एगिण वि लीलइं विहिउ विवन्नु ॥

[२८४५]

अवि य छिंदइ भडहं धणु-जीव

विणिवाडइ छत्त-झय- चिंध दलइ संदण-सहस्सइं ।
आलोडइ सत्तु-बलु लहु करेइ रिउ-मण स-वस्सइं ॥
एगु जि नेमि-कुमार-रहु नह-मंडलिण भमंतु ।
दिट्ठु अलाय-च्चक्कु जिह दुहि-वि बलिहिं दिप्पंतु ॥

[२८४६]

जलहि खोहइ जिम्व महा-मच्छु

पायालह नीहरिवि तेम्व नेमि-कुमरस्सु रह-वरु ।
एगो वि अणेग-विहु नडइ मगह-सामिस्सु बल-भरु ॥
इय अ-क्खलिय-पयावु पहु तहिं रह-वरि आरूढु ।
सिरि-हरिवंस-सिरो-रयणु नेमि-कुमरु अ-विमूढु ॥

[२८४७]

निरु पुरंदर-चाव-परिमुक्क-

दिव्वाउह-धोरणिहिं हणइ मगह-निव-बलु असेसु वि ।
तह कहमवि जह पडिय- चमरु गलिय-झउ दलिय-कलसु वि ॥
फाडिय-गुड-पक्खर-कवउ गय-छत्त-सिरत्ताणु ।
उज्झिय-आउहु चइय-रणु दूरिण गलिय-पराणु ॥

२८४६. ३. क. तेव.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८४८]

तुरय-कुंजर-सुहड-रह-रयण-
परिचुक्कउं गय-सरणु   मिग-कुलु व्व लुद्धइण रुद्धउं ।
भय-वेविर-संकुइय-   अंगुवंगु निय-दुकय-वद्धउं ॥
स-करुणु दीणु दुहावणउं   दुम्मणु सुन्न-सरीरु ।
वियलिय-दप्पु विमुक्क-भड-   वाउ निवाडिय-वीरु ॥

[२८४९]

विरल-माणुस-मेत्त-संचारु
हुउ मगहाहिवइ-बलु   निस्सिरीउ गिण्हम्मि छित्तु व ।
न य निमिसु वि चलवलइ   वयइ नेय कट्ठम्मि चित्तु व ॥
नेमि-कुमारिण मोहियउं   मोह-विज्ज-सत्थेण ।
चिट्ठइ पेक्खिरु पहु-समुहु   एगग्गिण हियएण ॥

[२८५०]

तयणु निहणिय-दोस-माहप्पु
मुसुमूरिय-तम-पडलु   रिउहुं गमिर जय-सिरि निसेहइ ।
अप्पडिहय-तेउ पहु   वाल-रवि व रण-गिरिहिं रेहइ ॥
अह सत्तुहुं वलि कि-वि भणहिं   एहु सु हरि-गोवालु ।
जो सुम्मंतउ आसि किल   काल-कंस-खय-कालु ॥

[२८५१]

अवरि पभणहिं – नणु न सो एहु
जं तस्सु न एरिसय   सत्ति पुव्व-पुरिसिहिं वि वन्निय ।
तत्तेण सुरिंदु इहु   हरिहि सेन्नि पत्तो त्ति अन्नि य ॥
जंपहिं – नणु सो कणय-पहु   इहु वेरुलिय-च्छाउ ।
किं न वियाणह तुम्हि सिरि-   नेमि हरिहि लहु भाउ ॥

२८४९. ५. कंट्ठंमि.

Jain Education International 2010_05   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[२८५२]

नमहिं एयह तियस-असुरिंद-
विज्जाहर-किन्नर वि इमिण भुवणु सयलु वि विहूसिउ ।
एयस्सु जि दुव्विणउ कुणहिं तेहिं धुवु अप्पु दूसिउ ॥
समुद्दविजय-वसुहाहिवह कुल-गयणंगण-चंदु ।
बावीसइमु जिणाहिवइ एहु सु नेमि-जिणिंदु ॥

[२८५३]

नियय-बंधुहु हरिहि नेहेण
उवरोहेण य सउरि- धरणि-पहुहु निय-जणय-बंधुहु ।
साहिज्जह हेउ इह पत्तु एहु समुहु जरसंधुहु ॥
एत्थंतरि केण-वि भणिउ नणु जइ एम्व त मूढु ।
किह जरसंधु इमेहिं सह दीसइ रणि आरूढु ॥

[२८५४]

कवणु तेहिं वि समगु रण-रंगु
जह पणमहिं सुरवर वि लहहिं विजउ तेसि जि पसाइण ।
ता इयरिण भणिउ—नणु मुयसु मुयसु किमिमिण वियारिण ॥
अट्ठि-मित्त-निम्मिय-सिरिण जो गिरि-भेइ जएइ ।
सो भंगह विणु अन्नयरु किमु केरिसउं लहेइ ॥

[२८५५]

तरिवि गिरि-नइ अप्पु कय-किच्चु
मन्नंतउ जलनिहि वि जो तरेउ बाहाहिं इच्छइ ।
सो कुविय-कयंत-घरि निव्वियप्पु किं किं न गच्छइ ॥
जहिं न मुणिज्जइ अप्प-पर- अंतरु गरुएहिं पि ।
मरियव्वउं तहिं दंगडइ नित्तुलु इयरेहिं पि ॥

२८५४. ६. क. अट्ठ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८५६]

अह गुरुहिं वि चलहिं बुद्धीउ
वियलंति य नीइ-पह गलहिं सत्त नासंति विज्जउ ।
पडिकूलइं विहिहिं इय इयर-जणिण तहिं किं नु किज्जउ ॥
सयण-निसिद्धु वि हरिय-पर- भारिउ दस-वयणो वि ।
मयउ जूय-वसणेक्क-मणु निहणिउ किं न नलो वि ॥

[२८५७]

जं जया जहिं जेम्व भवियव्वु
तं तइयहं तहिं तिम्व जि हवइ नत्थि वत्तव्वु किंचि-वि ।
इय सुणिरु वि परियणह वयण कह विरोहह वि छुड्डिवि ॥
कित्तिय-मेत्तेहिं वि सुइहिं सहिउ स-वलि विहुरम्मि ।
गंतु स-कोवु भणेइ जरसंधु रिउहुं सविहम्मि ॥

[२८५८]

अरिरि अज्ज-वि किं न ते गोव
मह वियरहु जायवहु किं न दिट्ठु तुब्भेहिं मह वलु ।
किह मूढउ सु वि समुदविजय-निवइ दुव्विणय-पच्चलु ॥
जइ-वि भग्गु मह वलु सयलु तु-वि हउं वाहु-सणाहु ।
निहणिसु नीसेसु वि खणिण जायव-वग्गु अणाहु ॥

[२८५९]

इय सनिट्ठुर-वयण निसुणंतु
ईसीसि हसंतु हरि भणइ – अरिरि जरसंध अंधु वि ।
गच्छंतु अब्भिट्टिउण कुड्डि वलइ तुहुं पुणु अणंधु वि ॥
अंधाओ वि समब्भहिउ जु नियंतो वि अणत्थ ।
निय-सुहि-सयणहं वंधुहिं वि अजु-वि न मिल्लहि सत्थ ॥

२८५६. १. क. वुद्धीओ. ९. क. क किन्न. ख. कन्न.
२८५७. २. क. तिंव.
२८५८. ३. क. किन्न.
२८५९. ६. क. ख. अंधाउ; ८. क. वंधुहि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८६०]

लहहि पइ पइ किं न अवमाण
कि न पेक्खहि सुहि-सयण रणि पडंत तुट्टंत-कंधर ।
कि न सुमरहि कंस-वहु काल-कंस-पमुह वि स-दुद्धर ॥
मज्झ पयाव-हुयासणिण परिडज्झंत-सरीर ।
हूय कयंतह पाहुणय अणुगच्छिर निय-वीर ॥

[२८६१]

नेमि-कुमरिण मज्झ बंधविण
एगेण वि रह-वरिण किं न नियहि तुह वलु असेसु वि ।
परिविहिउ अज्जु वि उवलमउ व चत्त-चेट्ठा-विसेसु ॥
अहवा सेमुहि-कंचुगिण सप्पु व तुहुं चत्तो सि ।
कहमन्नह अप्पह हणण- कइ मह रणि ढुक्को सि ॥

[२८६२]

एम्व बहु-विह हरिहि दुव्वयण
निसुणंतु दुहावियउ मगह-नाहु अमरिस-विसंठुलु ।
सह एगुणसत्तरिहिं सुयहं जुडइ मरणग्ग-पच्चलु ॥
समुहागमिरह मुर-रिउहु रह-रयणारूढस्सु ।
मगहाहिव-अढवीस-सुय पुणु मिलिया रामस्सु ॥

[२८६३]

इयरु वलु तसु समुदविजयाइ-
नरनाहहं रणि मिलिउ अह महंति संगरि पयट्टइ ।
नीलंवरु निय-हलिण गलइ धरिवि एक्केक्कु कड्ढइ ॥
मुसलेण उ चूरेइ सिरु तह जह गरुय-दुहत्त ।
अढवीस वि जरसंध-सुय जीविएण परिचत्त ॥

२८६२. ५. क. मरणमग्ग°

[२८६४]

अह विसेसिण कुविउ जरसंधु
अब्भिट्टइ हलहरह जुज्झिउं च चिर-कालु सत्तिण ।
तह पहरइ जिह मुसलि मम्म-घाय-विहुरिइण गत्तिण ॥
सोणिउ मुह-कुहरिण वमइ मुयइ दीह नीसास ।
तयणंतरु मगहाहिवह किं-चि वि पूरिय आस ॥

[२८६५]

किंतु मुसलिण पत्त-चेयणिण
निसिअग्ग-सर-धोरणिहिं सव्व-अंगु जरसंधु सल्लिउ ।
एत्तो य जणद्दणिण गरुड-वाणु नियइल्लु मिल्लिउ ॥
एगुणहत्तरि वि-हु मगहवइ-सुय खणमित्तेण ।
गमिय कयंतह पाहुणय जज्जरिइण गत्तेण ॥

[२८६६]

तेसि मरणिण जाय-विच्छाउ
परिवियलिय-रायसिरि दलिय-दप्पु जरसंधु नरवइ ।
अरि गोव मरेहि धुवु इय भणंतु हरि-सविहि आवइ ॥
तयणु पयंपइ कण्हु – अरि मूढ निलक्खण वंग ।
पेक्खंतो वि अणत्थ-सय दुच्चिट्ठिय सव्वंग ॥

[२८६७]

किं न अज्ज-वि मुणहि अप्पाणु
कि न गच्छहि निय-नयरि किं न पियहि सीयलइं पाणिय ।
कि न वासहि नियय-घरु किं न रमहि नियइल्ल रमणिय ॥
अहव कु दोसु हयास तुह मह रणि ढुक्कंतस्सु ।
दुकय-परव्वसु पाहुणउ न हवइ कु कयंतस्सु ॥

२८६५ २ क. ख निसिउग्ग; क. सिर°.
२८६६. ४. क. मरेहिं.७. क. चंग.
२८६७ ३. ५. क. ख. किन्न.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८६८]

राहु-परिहवु जलहि-विच्छोहु

देसंतर-परियडणु कि न पत्तु चंदिण कु-वुद्धिण ।
कि न निसियर-सेहरिण कालकूडु कवलियउं ईसिण ॥
सक्कु विडंविउ तावसिहिं लहइ दसाणणु मच्चु ।
हुयइ कुवुद्धिहिं कुप्पहुहुं काइं करेइ सु-भिच्चु ॥

[२८६९]

तुहुं सु खत्तिउ हउं सु गोवालु

तुहुं वुड्ढउ डिंभु हउं विहिय-समरु तुहुं हउं निवारणु ।
तुहुं मेइणि-वल्लहउ हउं सु नंद-वसुदेव-नंदणु ॥
तुहुं पयडिय-गुरु-कोव-भरु हउं गुरुयणहं नमंतु ।
इय पेक्खेज्जसु मगह-पहु तुहुं मइं रणि पहरंतु ॥

[२८७०]

एम्व गहिरइं थिरइं सामरिस-

हरि-वयणइं सुणिरु जरसंधु निवइ पसरंत-मच्छरु ।
अइ-निसिय-सर-धोरणिहिं दुसह-रोस-कंपंत-कंधरु ॥
ताडइ कण्ह-सरीरु निरु कण्हु वि निय-वाणेहिं ।
फोडिवि गद्दि स-पक्खर वि निहणइ रिउ-अंगेहिं ॥

[२८७१]

खग्ग-खणखण-राव--पसरेण

फर-फडफड-सद्दिण वि कुंभि-मुक्क-चिक्कार-घोसिण ।
रह-घणघण-आरविण तुरय-रयण-परिविहिय-हेसिण ॥
वज्जिर-रण-तूर-ज्झुणिण सुहड-सीहनाएण ।
वहिरिउ नहयलु खुहिउ रिउ पुणु कण्हह घाएण ॥

२८६८.३ क. ख. किन्न; ९. करे.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८७२]

इय ति सव्वल-सेल्ल-वावल्ल
असिधेणु-कराल-करवाल-कुंत-मुग्गर-मुसुंढिहिं ।
अवरेहिं वि आउहिहिं　　दुहिं-वि वलिहिं कय-सत्त-वेढिहिं ॥
जुज्झंतिहिं छाइउ गयणु　　भरिय धरणि नीसेस ।
करयल-कय-असि पडिय-सिर नच्चहिं सुहड-विसेस ॥

[२८७३]

वहहिं रुहिरिण महिहिं सरियाउ
भड-वयण-सरोय-धर　　फुरहिं भूय-वेयाल-साइणि ।
पसरंति य घूय-सिव-　　सद्द दिणि वि विप्फुरहिं डाइणि ॥
एक्केण वि मगहाहिविण　　धंधोलिउ हरि-सेन्नु ।
तह कहमवि जह कंचि खणु हुयउ अईव विवन्नु ॥

[२८७४]

तयणु किं-चि वि फुरिय-संतोसु
पडिवक्ख-विक्खोह-कइ　　उज्जमंतु कय-सत्तु-आवइ ।
आऊरइ गहिर-सरु　　संख-रयणु जरसंधु नरवइ ॥
तसु पडिसद्दिण विहुर-मणु　　सयलु वि जायव-वग्गु ।
रक्खि रक्खि पहु इय भणिरु हरिहि पएसु विलग्गु ॥

[२८७५]

ता खुरुप्पिण छिन्न झय-चिंध
जरसंधह केसविण　　अह सु हुयउ सविलक्ख-माणसु ।
सीसं पिव महि-वडिउ　　दट्ठु छत्तु झउ चिंधु स-कलसु ॥
तयणु पयंपिउ केसविण　　ईसि ईसि हसिरेण ।
नणु हउं तरुणउ वुड्ढु तुहुं इय किं तुह समरेण ॥

२८७२. ५. क. वलिहि. ६. क. जुज्झंतिहि.

२८७३. १. क. सरियाओ. ९. क. अइंव.

२८७५. २. क. ह only for जरसंधह; ख. जरसंध. ४. क. चडिउ.

Jain Education International 2010_05　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

[२८७६]

समर-निवडिय-सयल-सुहि-सयणु

रिउ गहिय-असेस-सिरि- लज्जमाणु परिहरिवि अज्ज-वि ।
लक्कडियहं लग्गिउण सुहिण अच्छि तुंग तुहुं स-घरि वि ॥
खंडा-हत्थिण माणविण किं बोल्लावियएण ।
ता मगहाहिव मुक्कु मइं गच्छहि रहिउ भएण ॥

[२८७७]

अरिरि वालिस तुहुं अ-संवद्धु

परिजंपिरु मरिसि धुवु इय भणेवि जरसंध-निविण वि ।
दिव्वाउह मुक्क वहु- भेय ताइं पडिहणिय हरिण वि ॥
ता निट्ठिय-आउहु मगह- सामि विसायावन्नु ।
कालवट्ठु निय-धणु-रयणु चयइ पयट्ट-अवन्नु ॥

[२८७८]

भणइ पुणु — धिसि मज्झ सामत्थु

किमु रज्जेण वि इमिण हा धिरत्थु मह सुहड-वायह ।
जं नाणाविह-समर- जलनिहिस्सु हउं गउ वि पारह ॥
गोपय-मित्ति इमम्मि रणि गोवालिण एएण ।
अहह निवोलिउ तेम्व जिम्व उज्झिस्सामि जिएण ॥

[२८७९]

इय स-खेयह मगह-नाहस्सु

रह-रयणह मज्झि लहु पत्त-उदय-रवि-बिंब-भासुरु ।
रिउ-वग्ग-विणासयरु सुर-विइन्न-माहप्प-सुंदरु ॥
दूरिण अहरिय-तिमिर-भरु चिर-कय-सुह-सय-लब्भु ।
चक्क-रयणु संपत्तु अह मगहाहिवइ पगब्भु ॥

२८७६. ५. तुहुं तुहु.
२८७९. ५. क. सुंदर.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८८०]

अरिरि बालय मरसि निस्संकु

सुमरेसु य इट्ठु कु-वि   न-उण अज्ज तुहुं मह विछुट्टसि ।
पविसंतउ मइं वि सह   समर-धरइं लज्जहं न फुट्टसि ॥
किह तुहुं मइं सहु रणि विसहि जइ-वि हु खरउ पयंडु ।
अइमत्तो-वि हु हत्थि निउ   रक्खइ सुंडा-दंडु ॥

[२८८१]

इय भणंतिण मगह-नाहेण

पडिसद्द-खोहिय-भुवणु   फुरिय-जाल-माला-विहीसणु ।
सुर-नियराहिट्ठियउं   चक्क-रयणु रिउ-तरु-निकंदणु ॥
खोहिय-सनरामर-नियरु   हरिहि समुहु परिमुक्कु ।
तयणंतरु लोगिण-विहिउ   पुक्कारवु लल्लुक्कु ॥

[२८८२]

भीय सुर-गण जक्ख संतत्थ

सिद्धा वि पलाण गय   दिसिहिं खयर-गंधव्व-किन्नर ।
जोइसिय वि टलटलिय   तियस-तरुणि सिवु सिवु ति जंपिर ॥
कंठि विलग्गहि निय-नियय- पियहं करुणु विलवंत ।
एंतु तं पेक्खहिं जायव वि अंसु-पवाहु मुयंत ॥

[२८८३]

कण्हु पुणु तहिं चक्क-रयणस्सु

समुविंतह सम्मुहइं   मुयइ दिव्व-आउहइं विविहइं ।
नीलंबरु परिखिवइ   सावलेवु हल-मुसल-सत्थइं ॥
पत्थु सवत्थ-विमुक्खणउं धम्मह नंदणु सत्ति ।
सेणाणी वि महा-फरिह भीमु महा-गय झत्ति ॥

२८८१. १. क. फुक्कारवु ललक्कु.

२८८२. ३. क. खय; ख. यखर; ४. जोइसिर.

२८८३. १. तहि. ६. सवत्थु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८८४]

नउलु कुंतिण असिण सहएवु
नाराय-सएहिं सिरि- समुदविजय-नरनाहु निहणइ ।
अवरो वि जायव-निवहु नियनिएहिं सत्थेहिं पहरइ ॥
किंतु अणक्किमिरिहि सरिहि जायव-वग्गि विसन्नि ।
पलविरि स-नरामर-तरुणि- नियरि अईव-विवन्नि ॥

[२८८५]

हरिहि उरयलि अररि-वियडम्मि
तुंवेणागंतु लहु लग्गु वज्ज-दारुण-निहाइण ।
अहियासेऊण पुणु चक्क-घाउ स-हरिस मुरारिण ॥
गहियउं निय-कर-पल्लविण चक्क-रयणु तूरंतु ।
अह तं हुयउं विसेसयर- तेय-सिरिण दिप्पंतु ॥

[२८८६]

तयणु जायव-वग्गु परितुट्ठु
आणंदिय सुर-असुर मुयहिं उवरि तसु कुसुम-वुट्ठिय ।
गायंति य कित्ति-भरु हरिहि गयणि किन्नरिय तुट्ठिय ॥
भणहिं य नहयर सुर-गण वि जह – इहु सउरिहि पुत्तु ।
वासुदेवु नवमउ जयउ आसि जि जिणिहिं पवुत्तु ॥

जओ भणियं –

[२८८७] तिविट्ठु दुविट्ठु य सयंभु पुरिसुत्तिमे पुरिससीहे ।
तह पुरिसपुंडरीए दत्ते नारायणे कण्हे ॥

[२८८८] आसग्गीवे तारए मेरए महु-केढवे निसुंभे य ।
वलि-पहराए तह रामणे य नवमे जरासंधू ॥

२८८५. ३. क. ज्जु. ख. वज्जु, ७. क. रयण.

२८८६. ९. जणिहिं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८८९] एए खलु पडि-सत्तू कित्ती-पुरिसाण वासुदेवाण ।
सव्वे वि चक्क-जोही सव्वे वि हया स-चक्केहिं ॥

[२८९०]

इय सुणेविणु खुहिउ जरसंधु
परितुट्ठउ सउरि-सुउ भणइ – अरिरि अप्पाणु मुणिउण ।
तुहुं अज्ज-वि अवसरसु मा मरेसु समरम्मि पडिउण ॥
अह मगहाहिवु सामरिसु भणइ – अरिरि गोवाल ।
मह सत्थेण वि गव्वियउ जंपहि आलम्माल ॥

[२८९१]

किंतु नूण न हउं जरासंधु
जइ चक्केण वि सहिउ मुग्गरेण तुह तणु न चूरउं ।
इय भणिरस्स वि रिउहु समुहु तेउ-पसरेण जलिरउं ॥
फेरेउण धरणी-धरिण चक्क-रयणु परिमुक्कु ।
तं पि हु तसु सिरु छिंदिउण हरि-करि आविवि थक्कु ॥

[२८९२]

अह विसेसिण खयर-सुर-सिद्ध-
गंधव्व-किन्नर-नियर हरिहि उवरि कुसुमेहिं वरिसहिं ।
वाएंति य दुंदुहिउ गहिर-सरिण जय-सद्दु घोसहिं ॥
सुणिउण मगहाहिवह वहु रोह-रुद्धु निव-विंदु ।
मुयइ नेमि करुणा-रसिण सिंचिय-मुह-अरविंदु* ॥

[२८९३]

अह ति नरवर नेमि-पय-पउम
पणमिप्पिणु भत्ति-भरु भणहिं – नाह तुह जत्थ नयण वि ।
सु-पसन्नइं वीसमहिं तत्थ होइ धुवु विजउ भुवणि वि ॥
जहिं पुणु सक्खं चिय तुहुं जि साहज्जिण वट्टेसि ।
किं किं न हवइ वंछियउं इह-पर-जम्मि वि तेसि ॥

२८९० २. क. परितुट्ठ. ९. क. जपहिं, ख. जहि.

*२८९२. क. ख. ग्रंथाग्रं ॥७०००॥

२८९३. २. रत्तिभरु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८९४]

इय जहा किउ कण्हु कय-किच्चु

तइं स^{रा}-जयावहिण नाह तेम्व अम्हे वि पसिउण ।
जीवावहि सुर-रिउहु हत्थु अम्ह पट्टीए दाउण ॥
नेमिकुमारु वि ते सयल नरवर संभूसेवि ।
रण-धरणीयल-समुचियउ आडंबरु उज्झेवि ॥

[२८९५]

तेहिं सहिउ वि चलिउ हरि-समुहु

ता कण्हु स-रह-रयणु उज्झिउण सम्मुहु पहाविवि ।
आलिंगइ नेमि अह हत्थु तेसि पट्ठिहिं दवाविवि ॥
तह मगहाहिव-अंगरुहु सहदेवु त्ति पसिद्धु ।
रज्जि ठवाविउ रायगिहि नयरि सु-गुणिहिं समिद्धु ॥

[२८९६]

एत्थ-अंतरि नेमि-कुमरेण

सो मायलि सारहिउ कय-पणामु अणुनविउ संतउ ।
तं गहिउण रह-रयणु तियसनाह-सविहम्मि पत्तउ ॥
साहेइ य नेमिहि पहुहु पुव्वुत्तइं चरियाइं ।
तह जह सयलह सुर-गणह वियसियाइं वयणाइं ॥

इओ य –

[२८९७]

निरु पयट्टिय-वण-चिगिच्छाहं

संजाय-निरुयहं भडहं सयलहं पि जायवहं सविहिहिं ।
अत्थाणुवविट्ठु सिरि-वच्छ-अंकु खयरिंद-रमणिहिं ॥
आणंदिण विन्नत्तु जह वद्धाविज्जसि देव ॥
जं सउरिण साहिय खयर तुज्झ पवज्जहिं सेव ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२८९८]

कह कहं ति य पुट्ठि कण्हेण
साहंति नहयर-विलय के-वि गहिय बंधेहि खेयर।
कि-वि पाडिय रण-महिहिं के-वि मुक्क नासिर अ-सुंदर ॥
किं पुणु पच्छिम-दिणि मिलिवि सत्तु अ-णाइय-अंत ।
ढुक्का वसुदेवह समरि विज्ज-वलिण दिप्पंत ॥

[२८९९]

तयणु गंजिवि किं-चि वसुदेवु
जोयाविउ दिसि-मुहइं जाव ताव दिव्वाणुहाविण।
गयणंगणि सुर-गणिण भणिउ – जयउ सु जि एक्कु पर जिण ॥
सिरि-वसुदेव-तणुब्भविण वासुदेव-नामेण ।
स-वलु स-नंदणु मगहवइ हउ जरसंधु खणेण ॥

[२९००]

ता समग्गि वि खयर-रिउ-राय
भय-कंपिर-देह-लय सरणि पत्त वसुदेव-रायह ।
संपइ पुणु आगमिर अछहिं पुरउ तुह चेव पायह ॥
अम्हे उण आइय पढमु तुह वद्धावण-हेउ ।
एत्थंतरि छाइय-तरणि- नहयर-निवह-समेउ ॥

[२९०१]

कण्ह-सविहिहिं पत्तु वसुदेवु
तयणंतरु नहयरिहिं हरिहि विहिय-पय-पूय वहु-विह ।
पडिवज्जिवि सेव तसु गहिय आण सीसेण दुस्सह ॥
अह केसवु हय-गय-रहिहिं सुहड-सिरिहिं वड्ढंतु ।
कसु कसु न जणइ हरिसु मणि तेय-सिरिण दिप्पंतु ॥

२९००. ६. क. अ for अम्हे.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९०२]

तयणु तम्मि वि ठाणि हरिसेण
सयलेहिं वि जायविहिं पुरउ जिणह सिरि-नेमिनाहह ।
आणंदिण नच्चियउं अह जणेण तसु वसुह-भागह ॥
सिरि-आणंदपुरु त्ति वर- नामु दिन्नु साणंदु ।
तं जि महा-तित्थु त्ति इहु घोसिज्जइ आ-चंदु ॥

[२९०३]

तेसि पुणु जरसंध-पमुहाहं
सव्वेसि वि रिउ-निवहं मयहं अंत-कायव्वु सयलु वि ।
कारावइ जीवजस तयणु खिवइ चिय-चक्कि अप्पु वि ॥
हरि पुणु धरहं ति-खंडहं वि रिउ-कुलु परिसाहंतु ।
सोलस-नरवइ-सहस-जुउ कोडि-सिलहं संपत्तु ॥

[२९०४] तेण उ निय-वल-महिमा-उवहसियासेस-सुहड-महिमेण ।
उच्चत्त-पिहुत्तेहिं जा पिहु पिहु जोयण-पमाणा ॥

[२९०५] घण-मसिण-विसाल-सिला-कलिया भरहद्ध-देवय-गणेण ।
जत्थ परिक्खंति वलं भरहद्धे साहिए हरिणो ॥

[२९०६] वाम-भुयग्गे पढमेण धारिया सा सिरम्मि वीएण ।
तइएण कंठ-देसे नीय चउत्थेण वच्छयले ॥

[२९०७] पंचमगेण उ नाही-सविहे छट्ठेण कडिय-पएसे ।
सत्तमगो उण ऊरू जाणू जो नेइ अट्ठमगो ॥

[२९०८] सउरि-तणएण हरिणा चत्तारिउ अंगुलाइं उक्खित्ता ।
ओसप्पिणीए पायं वलाइं झिज्जंति जं कमसो ॥

[२९०९] ता गयणयले सुर-गण-विज्जाहर-सिद्ध-जक्ख-निवहेहिं ।
उग्घुट्ठो जय-सद्दो मुक्काओ कुसुम-वुट्ठीओ ॥

२९०४. १. क. ओवहसिय.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९१०] इय साहिय-भरहद्धो कण्हो छम्मास-मित्त-कालेण ।
पुव्वज्जिय-सुकएहिं जय-प्पयावेहिं य समिद्धो ॥

[२९११]

तयणु केसवु फुरिय-माहप्पु
ति-क्खंडइं वसुमइहिं नियय-आण स-हरिसु पयासिवि ।
रण-विजिय-अणेग-निव उचिय-उचिय-ठाणिहि निवेसिवि ॥
अज्जिवि अइरिण पउर-सिरि साहिवि वसुह ति-खंड ।
अद्ध-चक्कि हुउ महुमहणु तोलिवि निय-भुय-दंड ॥

[२९१२]

अह अणग्घिण विहव-जोगेण
नीसेस-जायव-कुमर स-वल गंतु वारवइ-नयरिहि ।
निय-जोव्वण-रूव-सिरि- विजिय-महिम रइ-रंभ-लच्छिहिं ॥
सह ससि-वयणिहि कामिणिहि विसय-सुहइं सेवंत ।
चिट्ठहिं दोगुंदुग-सुर व गउ वि कालु अ-मुणंत ॥

[२९१३]

तह ति विलसिर-वहल-लायन्न
संपुन्न-जोव्वण-भरिण फुरिय गरुय-पडिवक्ख-खंडण ।
संतोसिय-सुहि-सयण दढ-पइन्न दुन्नय-विहंडण ॥
पोढ-निर्यविणि-माण-गुरु- तरुवर-दलण-कुढार ।
विलसहिं महिहिं महा-महिण मुररिउ-नेमिकुमार ॥

[२९१४]

पत्त-अवसरु समुदविजएण
नीसेस-जायव-जुइण लग्ग-दियहि गरुयर-समिद्धिण ।
कुट्टुगिण वि साहियइ सुह-मुहुत्ति ससि-सुद्ध-वुद्धिण ॥
ठाविउ जायव-तिलउ हरि अद्ध-भरह-रज्जम्मि ।
वलएवो उ महा-महिण ठवियउ जुव-रज्जम्मि ॥

२९१२.७. क. सेवंतु.
२९१४. २. क. जाइव.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९१५]

तयणु नहयर-निवइ-निवहेहिं

मणि-कंचण-मुत्तिइहि तुरय-हत्थि-रहवर-सुवत्थिहि ।
भरहद्धिय-तियसिहिं वि पाय-पूय कय वहु-पयत्थिहि ॥
सोलस-सहस-पमाणगिहिं मउडवद्ध-निवईहिं ।
पिहु पिहु सक्कारियउ हरि दुहिं दुहिं निय-दुहियाहिं ॥

[२९१६]

सहस सोलस हरिण परिणीय

अट्ठेव य हलहरिण सहस अट्ठ जायविहिं इयरिहिं ।
ता सामित्तणिण हरि गहिवि नमिउ सयलिहिं वि खयरिहिं ॥
अह जहरिहु सक्कारिउण कण्हिण ते सव्वे-वि ।
निय-निय-ठाणि विसज्जिया सुर-नहयर-निवई वि ॥

[२९१७]

तयणु जायव-कुमर साणंद

विलसंति सव्वे-वि वहु- विहिहिं पवर-कीला-विणोइहिं ।
माणंति उज्जाण-सिरि रमहिं समगु नर-खयर-तरुणिहिं ॥
नेमिकुमारो उण मुणिय- चउगइ-भव-भावत्थु ।
अ-कुणंतउ विसयहं कह-वि चिट्ठइ मुणि व कयत्थु ॥

[२९१८]

ता नरिंदिण समुदविजएण

सिवदेवी-परिगइण नेमि-कुमरु एगंति सायरु ।
भणियउ जह – वच्छ तुहुं भुवण-अहिय-गुण-रयण-आयरु ॥
दार-परिग्गहु जइ कुणहि ता अम्हहं संतोसु ।
जायइ अह जय-वंधवु वि भणइ पणासिय-दोसु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९१९]

दार-परिग्गहु करिसु हउं ताय
जइ लहिसु अणुरूव क-वि इयरहा उ जायइ विडंवण ।
इह पागय-रूविणिहि महिलियाहिं किं कीरए पुण ॥
जइ किज्जइ पारद्धडी मिच्छहं केरा कम्मु ।
तो वरि चित्तउ मारियइ जासु महग्घा चम्मु ॥

[२९२०] इयर महिला न रुच्चइ सुंदर-महिलाण नत्थि संपत्ती ।
एमेव वि रइ-परिवज्जिएहिं दियहा गमिज्जंति ॥

[२९२१] इय परिभाविय-नीसेस-भव-सरूवो पिऊण वयणाइ ।
गंभीर-भासिएहिं पडिसेहइ स-विणयं नेमी ॥

[२९२२]

इत्तो य –

परिचवेविणु ठिइहि अंतम्मि
अवराजिय-सुरघरह जसमईए जिउ वर-मुहुत्तिहिं ।
सिरि-उग्गसेणह निवह धारिणीए देवीए कुच्छिहिं ॥
अवयरिउण धूयत्तणिण जायउ पवर-दिणम्मि ।
ता सुय-जम्मम्मि व निविण किइ वद्धावणयम्मि ॥

[२९२३]

दिन्नु राइमइ त्ति अभिहाणु
अह वुड्ढिहिं जाइ इह सह-गुणेहिं रयणिंद-धवलिहिं ।
एत्तो य गयउरि नयरि पंडवाण भवणम्मि कालिहिं ॥
कड्ढिउ आयउ केलि-पिउ नारउ विप्प-पहाणु ।
तसु पुणु कहमवि दोवइहिं न तहा किउ सम्माणु ॥

[२९२४]

तयणु कोविण धाइ-संडम्मि
भरहस्स य दाहिणहं दिसिहिं अवरकंकाए नयरिहिं ।
थी-लोलह नरवइहि पउमनाह-नामस्सु सविहिहिं ॥
पत्तउ नारउ अह निविण अंतेउरि नेऊण ।
भणियउ – दिट्ठ कहिं पि तिय एरिस अह हसिऊण ॥

२९२४. ९. क. हसिउण, ख. हसिऊणं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९२५]

चित्त-लिहियउं रूवु दोवइहि
वियरेइ नराहिवह अह सु असम-कंदप्प-भाविउ ।
परिजंपइ – मणुय-भवि तरुणि-रयणु इहु किह णु आविउ ॥
अहवा चिट्ठइ कत्थ इय मह साहसु पसिऊण ।
अह नारउ निव-वियरियइ आसणि उवविसिऊण ॥

[२९२६]

भणइ – नणु इह जंबुदीवम्मि
सिरि-हत्थिणउरि-नयरि दइय पंच पंडवहं वालिय ।
इह दोवइ-नाम छण- रयणिरमण-सिय गुण-विसालिय ॥
तहि पुणु सेसु वि सहस-मुहु रूवु कहेउ अ-सत्तु ।
किं पुणु हउं साहेमि तुह नरवर माणुस-मेत्तु ॥

[२९२७]

अह विसेसिण मयण-विहुरंगु
आराहिवि सुर-रयणु एगु भणइ तसु पुरउ नरवरु ।
जह – दोवइ कह-वि मह आणिऊण मेलेसु अह सुरु ॥
सुह-सुत्तिय पंडवहं पिय अवहरिउण अइरेण ।
वियरइ तसु निवइहि तिण वि कय-वहु-सक्कारेण ॥

[२९२८]

चाडु-वयणिहिं वहुहिं सा भणिय
तीए वि समुल्लविउ मज्झु संति हरि-मुसलि बंधव ।
जइ तत्ति ति न करिसइं मज्झि दियहं मह कित्तियाण व ॥
ता हउं उचिउ समायरिसु इम भणेवि रोयंत ।
चिट्ठइ दोवइ भोयणु वि भन्नंत वि अ-कुणंत ॥

२९२५. १. क. रूव.

२९२६. ८. क. पुण; ९. क. माणस.

२९२८. ४. क. तत्ति न.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९२९]

इत्तो य –

गोसि पंडव दइय अ-नियंत
अच्चंताउलिय-मण धरणि-वलइ सव्वत्थ जोइवि ।
परिसाहहिं हरि-पुरउ सो वि स-वलु दढयरु विसूरिवि ॥
नणु भरहद्धि न अत्थि कु-वि माणवु वप्पिण जाउ ।
जो मई सहुं खवलिवि हरिवि दोवइ कह-वि पलाउ ॥

[२९३०]

इय विचिंतिरु कण्हु चिट्ठेइ
जा ताव नहंगणिण तत्थ विप्पु नारउ पहुत्तउ ।
ता कण्हिण पुच्छियउ कहइ सयलु वइयरु जहुत्तउ ॥
अह सुत्थिय-सुर सुमरियउ कण्हिण तत्थ पहुत्तु ।
तयणंतरु तसु साहियउ सयलु पुव्व-वुत्तंतु ॥

[२९३१]

तयणु सुत्थिय-विहिय-साहज्जु
खण-मेत्तिण छहिं रहिहिं पंडवेहिं पंचहिं वि जुत्तउ ।
दो-लक्ख-जोयणु उयहि तरिवि अवरकंकहं पहुत्तउ ॥
पउमनाभ-निवइहि पुरउ दूयउ दारुग-नामु ।
पेसइ सो-वि हु गंतु तहिं भणइ – महाबल-धामु ॥

[२९३२]

जलहि तरिउण पत्तु इह कण्हु
चिट्ठेइ पुरीए वहि सहिउ पंच-पंडव-नरिंदिहिं ।
ता दोवइ तसु भइणि सुण्ह पंडु-अभिहाण-निवइहि ॥
भारिय पंचहं पंडवहं निम्मल-सील-विसाल ।
सामिण भणिउ नरिंद तुहुं अप्पहि कण्णह वाल ॥

२९२९. ४. क. पुरओ. ७. क. माणुवि, ख. ण्णाणवु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९३३]

पउमनाभु वि भणइ – नणु हंत

सो चंदु दिवायरु व वासवु व्व चक्कि व कयंतु व ।
जो मग्गइ मह दइय स-वल-पत्त अ-मुणंत-तत्तु व ॥
अहवा अज्ज-वि वलिवि इहु नियं-ठाणह गच्छेउ ।
मा मह कोवानलि पडिवि स-वलु वि हरि डज्झेउ ॥

[२९३४]

एहु वइयरु हरिहि साहेइ

लहु दारुगु आविउण तयणु हरिण आणत्त पंडव ।
पविसंति संगर-महिहिं असम-महिम-भुय-दंड-मंडव ॥
पउमनाभ-नरवरिण सह स-वलिण किंतु खणेण ।
नासिवि पविसिवि निय-पुरिहिं मज्झि निउत्त-जणेण ॥

[२९३५]

पिहिय सयलि वि पुरिहि दाराइं

तयणंतरु केसविण फुरिय-गरुय-अमरिसिण तक्खणि ।
मिल्लेविणु रह-रयणु पय-भरेण अक्कमिय मेइणि ॥
आगच्छंतिण पुरि-समुहु तह जह पडिय गिहाइं ।
अट्टालय खडहडिय जलनिहि-जल झलहलियाइं ॥

[२९३६]

इय निरिक्खिवि धरणि कंपंत

पय-दद्दर-पडिरविण खुहिय-चित्तु पुर-लोउ सयलु वि ।
पडिवज्जइ दोवइहि सरणु एत्थ-अंतरि नरिंदु वि ॥
नियवि अयंडि वि उट्ठियउ सयल-पुरिहिं संहारु ।
तसु दोवइहि महा-सइहि पइहि करिवि नवकारु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९३७]

भणइ – सुंदरि माय तुहुं मज्झ
सरणु च्चिय तुहुं जि मह इय पसीय जीवियह रक्खहं ।
तयणंतरु दोवइहिं भणिउ एहु भणियव्व-दक्खहं ॥
जइ – नरवर मुक्काउहउ गंतु हरिहि सविहम्मि ।
मइं मुंचसु ता तूसिसइ मुर-रिउ तुह उवरिम्मि ॥

[२९३८]

अह सु दोवइ-पुरउ काऊण
गहिऊण अणेगविह- वत्थ-रयण-आहरण मणहर ।
पय-पूय करेवि तसु भणइ – मज्झ अ-विणय अ-सुंदर ॥
सव्वे-वि हु तुहुं महु खमसु तयणंतरु कण्हेण ।
वियरिउ तहिं पट्टीए करु पगइहिं पणय-पिएण ॥

[२९३९]

तयणु जलनिहि-सविह-पत्तेण
गच्छंतिण निय-धरहं पंचयन्नु निय-संखु पूरिउ ।
संख-स्सय-पडिरविण धरणि-विवरु अंबरु वि बहिरिउ ॥
अह चंपा-पुरि-वासिइण अद्ध-भरह-नाहेण ।
हरिण कविल-नामिण सुणिउ जिण-सविहम्मि ठिएण ॥

[२९४०]

तयणु – नणु मह संखु केणेस
आऊरिउ इय मुणिवि पुट्ठु पुरउ तट्ठाण-वासिहिं ।
जिण-इंदह सामिण वि कहिउ पुव्व-वइयरु विसेसिहिं ॥
अह – पहु नेमि-सहोयरह तसु कण्हह मिलिहेसु ।
इय भणिउण उट्ठिरु कविलु भणिउ जिणिण स-विसेसु ॥

२९३९. ८. क. हरि कविल.
२९४०. २. आऊरियउ ३. क. पुरओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९४१]

कण्ह न हुयउं एहु न हवेइ
न य हविहइ कहमवि हु जं मिलंति जिणवर जिणिंदहं ।
चक्काहिव चक्कियहं केसवा वि भरहद्ध-चंदहं ॥
अह स-विसेसुक्कंठ-मणु कविल-कण्हु उट्ठेवि ।
मण-पवण-व्वेगिण लवण- जलहि-तीरि गच्छेवि ॥

[२९४२]

दट्ठु कण्हह छत्त-झय-चिंध-
रह-रयणइं गच्छिरइं कविल-विण्हु निय-संखु पूरइ ।
इयरो वि-हु तस्सवण- तुट्ठु गमिरु सायरि सु-पूरइ ॥
इय अन्नोन्निण दट्ठु हरि- चिंधइं दु-वि ति विसिट्ठ ।
निय-निय-ठाणह सम्मुहय संचल्लिय संतुट्ठ ॥

[२९४३]

पउमनाहु वि विहिय-गुरु-पावु
निद्धाडिउ निय-महिहि कविल-हरिण अच्चंत-रुट्ठिण ।
अभिवंदिय जिणह पय- पउम जाय-पच्चइण तुट्ठिण ॥
हरि पुणु लवणोयहि तरिवि मागह-तित्थि पहुत्तु ।
अह पंडव गय अग्गयरि सुर-सरि-सलिलु तरित्तु ॥

[२९४४]

किंतु भीमिण केलि-नडिएण
नीसेस वि पवहणइं अवर-तित्थि मुक्काइं नेउण ।
ता कण्हिण पुट्ठ – किह तुब्भि पत्त इह सरिय तरिउण ॥
अह भीमिण संलत्तु – नइ तरियम्हिहिं वाहाहिं ।
ता करि करिउण रह-तुरय हरि वि तरइ जंघाहिं ॥

२९४१. १. कण्हु; ३. क. मिलंति जिण वरिंदहं.
२९४४. २. क. पवहणइ. ४. क. पुह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९४५]

तयणु अक्खिउ हरिहि सब्भावु

संथुणियउं हरिहि वलु तह स-तोसु भीमेण पभणिउ ।
पहु तुम्ह परिक्ख-कइ ताव कडगु मइं सयलु अवणिउ ॥
अह – अरि सत्तु परिक्खि सहु मह अज्ज-वि एण्हि ति ।
भणिवि स-कोविण केसविण ते निद्धाडिय झत्ति ॥

[२९४६]

अह ति पंच वि भइण कंपंत

नीहरिउण तक्खणि वि पंडु-विसय-मज्झम्मि आविवि ।
अमरावइ-सरिस-सिरि पंडु-महुर-पुरि पवर ठाविवि ॥
चिट्ठहिं पंच वि स-परियण- नियय-कुडुंव-समेय ।
इह-परलोइय-कज्ज-विहि- पयडण-विमल-विवेय ॥

[२९४७]

तम्मि पुणु सिरि-हत्थिणउरम्मि

सिरि-अज्जुण-निव-तणय- पुत्तु रज्ज-वावारि संठिउ ।
हरि वहुविह-निव-गणिण सुप्पसत्थ-वत्थूहिं अंचिउ ॥
कम-जोगिण सिरि-वारवइ- नयरिहिं आगंतूण ।
चिट्ठइ विसयासत्तु निय- कित्ति जगि विखिविऊण ॥

[२९४८]

अवर-वासरि कुमर-नियरेण

परियरियउ नेमि-पहु कीलमाणु आउहहं सालहं ।
संपत्तउ अह नियइ चक्कु संखु गय चावु लीलहं ॥
अवरु वि हरि-पहरण-निवहु सच्चवेइ दिप्पंतु ।
तयणंतरु कोउग-वसिण सामिउ ईसि हसंतु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९४९]

सरय-ससहर-विंव-संकास

जय-मणहर-पंच-मुह- पंचयन्न-अभिहाण-संखह ।
संचल्लिउ अभिमुहउ जाव ताव तसु कमल-अक्खह ॥
नाहह समुहु समुल्लविउ सीस-निसिय-हत्थेहिं ।
आउह-साला-संठिइहिं इ रेहि पुरिस-सत्थेहिं ॥

[२९५०]

सच्चु सामिय अतुल-बलु तं सि

परमज्ज-वि अप्प-वउ इय न तरसि तुहुं संखु घेत्तु वि ।
आऊरणु दूरि पुणु इमह मुयसु ता गहण-चित्तु वि ॥
एक्कु जि आऊरेइ इहु संख-रयणु जुय-बाहु ।
कंस-काल-जरसंध-हरु हरि भरहद्धह नाहु ॥

[२९५१]

ता विसेसिण ईसि विहसंतु

अक्कमिउण अग्ग-पहु नेमि-कुमरु वामेग-पाणिण ।
उक्खिविउण लीलइं वि कय-चमक्कु भुवणह वि स-बलिण ॥
अ-किलेसिण वियसिय-नयणु आऊरिवि हरि-संखु ।
विविह-विअप्पुवहरिय-मणु कुणइ जगु वि गय-लक्खु ॥

अवि य –

[२९५२]

संख-सद्देण स-गिरि स-समुद्द

स-ग्गामायर स-पुर स-घर धरणि सयला वि कंपिय ।
तह कहमवि जह सरहिं विंझ-गिरिहिं सिंधुर सु-दप्पिय ॥
निवडहिं कुल-सेलहं सिहर खुहियउ लवण-समुद्दु ।
सुर-सरिय वि विवरिउ वहइ फुडइ व गयणु सु-रुंदु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९५३] भवणुज्जाण-समेया गोउर-पायार-तोरणोवेया ।
सयहा पुरी न फुट्टा सा देव-विणिम्मिया जेण ॥

[२९५४] तह वि महाभवणंतर-वियंभिणा तेण संख-सद्देण ।
महु-मत्त-कामिणी इव सा चलिया सव्व-ठाणेसु ॥

[२९५५] उद्दामा वर-तुरया भमंति तुट्टंत-संकला करिणो ।
भीओ जायव-वग्गो मुच्छा-वियलो जणो जाओ ॥

[२९५६] भीओ हरी वि सहसा विगय-मओ लंगली वि संजाओ ।
संतत्थासेस-भडा गोविंदमुवागया सरणं ॥

[२९५७]

किं अयंडि वि फुट्टु¹ वंभंडु
परिखुहिउ रयण-निहि अह कयंतु कुद्धउ भयंकरु ।
जं दीसइ सयलु जगु कंपमाण-तणु खोह-दुद्धरु ॥
अहवा किं कु-वि चक्कवइ वारवइहिं उप्पन्नु ।
जं सुम्मइ इहु संख-रवु तइ-लोयह अ-सवन्नु ॥

[२९५८]

इय विचिंतिरु गरुय-भय-विहुरु
जा चिट्ठइ कण्हु खणु ताव विणय-पणमंत-अंगिण ।
तसु आउह-सालयह पालगेण माणविग एगिण ॥
आगंतूण हरिहि पुरउ कहिउ जहा – कीलाए ।
नेमि-कुमारिण संखु इहु आऊरिउ लीलाए ॥

[२९५९]

तयणु – अरि अरि रूव-रिद्धीए
सोहग्गिण लक्खणिहिं वलिण भुवणु सयलु वि विसेसइ ।
सिरि-नेमिकुमारु इय मज्झ रज्जु सयलु वि गहेसइ ॥
इय चिंततउ महुमहणु आउह-सालहं गंतु ।
पेक्खइ जय-सामिउ अ-समु चोज्जु जयस्सु कुणंतु ॥

२९५७. १. क. फुड्ड.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९६०]

अह पयंपइ कण्हु सासंकु
णु वंधव नियय-वलु दक्खवेसु मह वाहु-जुज्झिण ।
ता विहसिवि नेमि-पहु भणइ वयण – जुज्झिण णवज्जिण ॥
जुज्जइ जुज्झिउ उत्तिमहं अह जइ तुह निव्वंधु ।
ता नामिवि मह वाम-भुय भमहि स-उद्धर-खंधु ॥

[२९६१]

तयणु नेमिण वाम-भुय-लयह
तडुवियह महुमहणु करिहिं दोहिं चालणह लग्गउ ।
अ-तरंतउ तरु-सिहरि पवगु जेम्व अच्छइ विलग्गउ ॥
गयणि सुरासुर-खयर-गण- तरुणिउ मिलिवि हसंत ।
चिट्ठहिं नेमि-कुमार-वलु स-हरिस अवलोयंत ॥

[२९६२]

तयणु कण्हिण नियय-भुय-दंडु
तडुविउण धरिउ अह वाम-पाणि-पल्लविण नेमिण ।
लीलाइ वि नामिउण वलय-रूवु किउ असम-तेइण ॥
अह तियसासुर-किन्नरिहिं जक्खिहिं गंधव्वेहिं ।
कुसुमिहिं पहुवरि वरिसियउं जय-जय-झुणि-पुव्वेहिं ॥

[२९६३]

अह सरेविणु रहिण एगेण
धंधोलिउ सयलु वलु मगह-निवह सिरि-नेमि-कुमरिण ।
वालेण वि भग्गु हउं जणिउ चुज्जु भुवणह वि स-वलिण ॥
इय अ-वियप्पिण स-भुय-वल- परिणिज्जिय-तेलोक्कु ।
नेमि अद्ध-भरहाहिवइ विहलु महारउं चक्कु ॥

२९६३. ५. क. भुवहण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९६४]

इय सुणेविणु हरिहि कु-वियप्पु
वलभद्दु जंपइ – अहह कण्ह कण्ह मा इत्थ दप्पहि।
जं तिहुयण-सिरिहि निहि अद्ध-चक्कि इहु इय वियप्पहि ॥
नेमि-कुमरु वउ गिण्हिसइ तुहुं पुणु पालिसि रज्जु ।
इय परिभाविवि सिरि-दइय हवसु स-कज्जह सज्जु ॥

[२९६५]

वद्ध-लक्खु जु असम-सुहयम्मि
सिव-संगि सु किह रमइ गरुय-दुहइ संसार-सायरि ।
जो गहिहइ चरण-सिरि रज्ज-सुहि न सु रमइ दुहायरि ॥
पउणीकय-घणसार-सिरिखंड-हरिणनाहिल्लु ।
कह-वि विलिंपइ अप्पु नहि असुइ-रसेण छइल्लु ॥

[२९६६]

जं पडिच्छइ गहिय-वरमाल
जय-दुलह-तिलोय-सिरि विहुर-हियय भावाणुरागिण ।
सोहिल्लसइ किह कुहिय- काण-डुंवि सहियउ विवेगिण ॥
जं च चउद्दह-वर-सिविण- सूइउ इहु संजाउ ।
तं हविहइ वावीसइमु जिणु नमि-जिण-अक्खाउ ॥

[२९६७]

तह वि न मुयइ कह-वि कुवियप्पु
चिट्ठेइ य भय-विहुरु जाव ताव कुल-देवयाइ वि।
तह-रूवु निएवि हरि भणिउ सविह-देसम्मि आविवि ॥
नणु म-न वीहिसि कण्ह तुहुं जं सिरि-नेमिकुमारु ।
पढम-वयम्मि वि गिण्हिसइ चरणु तिलोयह सारु ॥

२९६६. १. क. अक्खाओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९६८]

तयणु केसवु मुणिय-परमत्थु

दूरुज्झिय-पाव-मणु भणइ पुरउ सिरि-नेमिकुमरह ।
जइ – वंधव जइ-वि तुहुं पगइ-विमुहु विसय-सुह-पसरह ॥
तह-वि हु मह सुहि-सयणहं वि उवरोहिण कु-वि कालु ।
विसय-सुहइं रज्जिण सहिय नेमि कुमर परिवालु ॥

[२९६९]

एम्व पुणु पुणु हरिहि भणिरस्सु

पहु हरिहि पियाहिं सह निव्वियारु वहुविह-विणोयहि ।
परिकीलइ अवर-दिणि भणिउ कण्हु जायविहि सयलिहि ॥
समुद्दविजय-नरनाहिण वि तह सिरि-सिवदेवीए ।
करिसु तहा जह उज्जमइ नेमि-विवाह-विहीए ॥

[२९७०]

ता विसेसिण भणिय कण्हेण

सिरि-रुप्पिणि-जंववइ- सच्चहाम-पमुह य स-भारिय ।
नणु कहमवि उज्जमह तह हवेह जह कज्ज-कारिय ॥
ताउ वि केलि कुणंतियउ भणहि वयण स-वियार ।
सामि वि गहिर-पयंपिइहिं ताहं करेइ निवार ॥

[२९७१]

अवर-अवसरि मुसलि-सुय निसढ-

नरनाह-अंगुब्भविउ विमल-सयल-लक्खणिहि जुत्तउ ।
सिरि-सायरचंद-अभिहाणु कमलमेलाए रत्तउ ॥
वंचेविणु महसेण-निवु परिणाविउ संवेण ।
इय जायंतिण तम्मि कुलि वहु-वुत्तंत-सएण ॥

२९६९. ५. क. सयलि वि.

२९७०. ८. भामिवि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९७२]

काल-जोगिणसेस-रिउ-पवरु

संपत्तु वसंत-महु जहिं स-तोसु सहयार-सिहरिहिं ।
निरु विहुरिय-विरहिइहिं मंजरीउ अवयंसिकीरहिं ॥
मलयानिल-संगिण भमर पसरिय-गुरु-झंकार ।
देसंतर-गमणुम्मणहं पहियहं कुणहिं निवार ॥

[२९७३]

मयण-नरवइ-रज्ज-अहिसेउ

साहंति व तिहुयणह महुर-रविहि तरु-सिहर-संठिय ।
कलयंठिय चूय-तरु- मंजरीण कवलणिण तुट्ठिय ॥
सिसिरु हयासु सु उहु गयउ कवलिउ महु-दियहेहिं ।
इय कुमुइणि-तरुणिउ हसहिं वियसिय-कुमुय-मुहेहिं ॥

[२९७४]

वउल-पायव-नियर घुम्मंति

वहु-पीय-सीयासव व अंव-तंव-पह पुणु विरायहिं ।
मज्झम्मि अ-माइयउ वहि फुरंतु नं राउ दावहिं ॥
मिउ-पवणाहय-उल्लसिय- किसलय-करहि गएण ।
लासु पयासहिं तरु-लइय भमरावलि-गीएण ॥

[२९७५]

जहिं सियाइं वि कुंद-कुसुमाइं

संजायहिं धूसरइं पिय-विओइ कामिणि-मुहाइं व ।
वियलंति य माणिणिहिं माण सविह दइयहुं दुहाइं व ॥
लुद्ध-पियंगुहिं कुसुम-सिरि चत्त चवल असइ व्व ।
सावि-हु अंकुल्लय विहिय- सिरि नव-गहिय-पइ व्व ॥

२९७२.५.क. अवयंतिसि० ६. क. संगिर ८.क. देसंतरु. २२७३.६. क.ओहु. २९७४. ४. क. अमाइयओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९७६]

नलिणि-कामिणि सिसिर-काउरिस-
विच्छाइय-तणु-लय वि पत्त-लच्छि किय महु-नरिंदिण ।
कणियार-महद्दुम वि विहिय-सोह कय कुसुम-रिद्धिण ॥
कुरुवय-तरुवर घण-थणिउ तरुणिउ आलिंगंति ।
कामिणि-गंडूसइहिं पुणु केसर कुसुमिज्जंति ॥

[२९७७]

विरह-पायव पंचमुग्गारु
निसुणेविणु कुसुम-भरु लिंति वउल विसएहिं पंचहिं ।
इय विसयासत्त जहिं तरु वि तत्थ किं कहउं अन्नहिं ॥
इय एरिसइ वसंत-महि पसरिय तरु-नियरम्मि ।
हरिसु जणंतइ भुवणह वि जायव-नर-नियरम्मि ॥

[२९७८]

रइय-असरिस-अंग-सिंगार
निय-चारु-परियण-सहिय विहिय-सयल-सुहि-सयण-मण-सुह ।
हरि-नेमिकुमार परिचलिय नयर-उज्जाण-सम्मुह ॥
तयणंतरु सिंधुर-तुरय- संदण-रयण-निलीण ।
संचल्लिय जायव-कुमर पेमवई-साहीण ॥

[२९७९]

कमिण झल्लरि-भेरि-सारंगि-
कंसाल-तालय-तिरिरि- करडि-ढक्क-तंवक्क-वुक्कहिं ।
पडु-पडह-सुसंख-वर- वंस-वेणु-काहल-हुडुक्कहिं ॥
वज्जंतिहिं तूरिहिं वहुहिं वहिरिय-मज्झ-दसास ।
गायंतिहिं गंधव्विइहिं पूरिय-तरुण-जणास ॥

२९७६. ६. क. तरुवय तरुवर. २९७७. ६. वसंतमहिं.
२९७९. ६. वज्जरिहिं. ९. क. जणासु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९८०]

पत्त उववणि नाय-पुन्नाय-
नालियरि-लवली-लयहं नायवल्लि-मुद्दिय-लवंगहं ।
खज्जूरि-सहयार गुरु- ताल-साल-पुप्फलि-असोगहं ॥
मालइ-मल्लिय-केयइहिं करुणि-कयलि-एलाहं ।
कप्पूरागुरु-चंदणहं सातलि-वियइल्लाहं ॥

[२९८१]

खणु नियंतय कुसुम-फल-रिद्धि
खणु वार-विलासिणिहिं ललिय-गीय-सुह-अमय-सित्तय ।
खणु हरिसिण मग्गणहं कुसुम-कणय-रयणाणि दिंतय ॥
खणु कारिंतय भारहिय- नट्टारंभ-विसेसु ।
खणु चिट्ठहिं पेक्खंत कलहंसय-मिहुण सरेसु ॥

[२९८२]

असम-विलसिर-वहल-लायन्न
संपुन्न-जोव्वण-भरिण फुरिय गरुय-पडिवक्ख-खंडण ।
संतोसिय-सुहि-सयण दढ-पइन्न दुन्नय-विहंडण ॥
पोढ-नियंविणि-माण-गुरु- तरुयर-दलण-कुढार ।
कीलहिं वहु-भेएहिं तहिं मुररिउ-नेमिकुमार ॥

[२९८३]

पत्त-अवसरु हरिहि वयणेण
निय-भाउज्जाय-सय- सहिउ जाय-अंदोलण-स्समु ।
सव्वंगु वि करिवि लहु समय-उचिउ सिंगारु निरुवमु ॥
समुदविजय-निव-अंगरुहु दिणयर-कर-संतत्तु ।
नेमि-कुमरु तिहुयण-तिलउ जल-कीलण-कय-चित्तु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९८४]

पउम-परिमल-सुहय-लहरिम्मि
विलसंत-सारस-सहसि चक्कवाय-कलहंस-सुंदरि ।
परिविलसिर-कमल-वणि भमिर-भमर-झंकार-मणहरि ॥
तीर-ट्ठिय-तरु-नियर-फल- कुसुम-भार-सुंदेरि ।
परिकीलिर-हरि-करि-खयर- सुर-गण-कहिय-अमेरि ॥

[२९८५]

खीर-जल-निहि-पत्त-वित्थारि
कीला-सरि पविसिउण समुदविजय-अंगरुहु स-हरिसु ।
हरि-अंतेउरिहिं सहुं मज्जमाणु सुहु लहइ अ-सरिसु ॥
अवगूढउ गोरंगियइ तरुणिहिं सामल-वन्नु ।
अंजण-सिहरि व तियस-गिरि- मेहल-कय-लायन्नु ॥

[२९८६]

सुहय जोइ-न जोइ इहु मीणु
इय जंपिर का-वि तसु वाह धरइ उरयलिण भीडिवि ।
क-वि कुमर किमेउ इय भणिर लग्ग तसु अंगि धाविवि ॥
नेमि वि निद्ध-निरिक्खणिहिं इग संभावइ जाव ।
ईसा-उद्दुंदुर-मणिहिं वहुहिं तविज्जइ ताव ॥

[२९८७]

सलिल-कीलहिं एण्हि पज्जत्तु
अरि भाउय चलहु जिह नियय-ठाणि गम्मइय जंपिरु ।
सिरि-नेमिकुमार-वरु पच्छहुत्त-चलणिहिं विसप्पिरु ॥
दाहिण-कर-अवलंवणिण कड्ढइ क-वि तरुणीउ ।
जा ता सु जि गंभीर-जलि खिवहिं पोढ-रमणीउ ॥

२९८४. क. लहरिमि.

२९८७. ५. क. चलणिहिं ९. क. रमणीओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९८८]

तहिं सरोवरि ललिवि इय सुइरु
हरि-सुंदरि-सइण सहुं लग्गु ललिउ जल-जंत-कीलहं ।
तयणंतरु कुमर-वरु विजिय-अमर-नहयरु स-लीलहं ॥
ताडिउ अ-करुणु कामिणिहिं सुरहि-सिसिर-सलिलेहिं ।
सुर-सिहरिम्मि व अमरवइ- गणिण विमल-कलसेहिं ॥

[२९८९]

नेमि-कुमरु वि काउ सिंचेइ
गंधोदय-सिंगियहं काउ हणइ वच्छयलि कमलिहिं ।
कासिं पि कुसुमाहरण देइ का-वि भूसेइ स-करिहिं ॥
किं वहुएण व छंटणय- केलि कुणंतिण तेण ।
तह आवज्जिय सुर-खयर हरि-वल जेण खणेण ॥

[२९९०]

परिमुएविणु इयर-छंटणय
कीला-रसु तहिं मिलिय नियहिं नेमि-कुमरस्सु चरियइं ।
सिवदेवि वि स-परियण- सहिय नियइ निय-वच्छ-ललियइं ॥
कीलइ एक्कहं पक्खि ठिउ एक्कु जि नेमि-कुमारु ।
अवरहं सोलस्स वि सहस हरि-अंतेउरु सारु ॥

[२९९१]

किंतु मयणु व वसइ हियएसु
सव्वासि वि रमइ सवि सव्वि हणइ निय-नयण-वाणिहिं ।
रंजेइ सव्वासि मण हरइ हियय सव्वासि वयणिहिं ॥
पाडलि-मालइ-मालियहिं पणइण क-वि वंधेइ ।
समुहागच्छिर पोढ क-वि कामिणि आलिंगेइ ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९९२]

एम्व नेमिण ति-जय-तिलएण

एगेण वि सोलस वि तरुणि-सहस तह कह-वि रंजिय ।
जह गायहिं तसु जि पर सु-चरियाइं गुरु-भत्ति-भाविय ॥
तह उब्भिय-भुय-लय-जुयल- मज्झि कुमारु करेवि ।
नच्चहिं मइरा-पाडलिय- लोयण करणु धरेवि ॥

[२९९३]

एत्थ-अंतरि हरिहि मणु मुणिवि

आलिंगिउ ताहिं पहु सामिणा वि विगयाणुरागिण ।
आलिंगिय ताउ अह भणिउ किण वि वर-तरुणि-रयणिण ॥
भुय उक्खिविउण जय-पहुहु सविहि जहा — किमणेण ।
पर-रमणी-आलिंगणिण अपय-किलेसयरेण ॥

[२९९४]

कज्जु जय तुह काम-कीलाए

ता परिणहि किं-पि वर- तरुणि-रयणु जिम्व हवहि सुहियउ ।
जं दइयहं विणु जगु वि गेह-धम्मि धुवु हवइ दुहियउ ॥
गेहासमु पालंतयह उसह-जिणह हुय सिद्धि ।
भरहह अंतेउर-ठियह हुय वर-नाण-समिद्धि ॥

[२९९५]

संति-कुंथुहि अर-जिणेणावि

चउसट्ठि-अंतेउरिय- सहस-संग-सुहु लहिवि अणुदिणु ।
कम-जोगिण सरय-ससि- किरण-विमलु चरणु वि चरेविणु॥
किं न संपाविउ सिद्धि-सुह- आहिवच्चु निरवज्जु ।
जो उ कलत्त-परिग्गहु वि न कुणइ धुवु सु अणज्जु ॥

२९९४. ६. क. गेहसमु.

२९९५. ६. कि नं. ८. क. जो कलत्त°

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[२९९६]

एहु कायर-वाल-पव्वइय-
समणेहिं भणिउ जह– वालओ वि चइयव्व महिलिय ।
जइ महिलइं विणु हवइ किं-पि केण ता जणिय धरणिय ॥
चक्कि-जिणाउ लइय विउस नो उत्तसहिं तियाहं ।
नहि देउल-पारेवडा वीहहिं तालुट्टाहं ॥

[२९९७]

तयणु रुप्पिणि-सच्चहामाइ-
हरि-दइयहिं सयलिहिं वि सम-विहिय-करताल-हसिरिहिं ।
संलत्तु – देयर किह णु अम्ह वयणु सहलसि न हरिसिहिं ॥
समुद्दविजय-नरनाहिण वि सिवदेविहिं सहिएण ।
कण्हेण वि पत्थुय-विहिहिं भणिउ सु स-कुडुंवेण ॥

अवि य –

[२९९८]

तणय सामिय वंधु सुहि सुहय
पडिवज्जसु परिणयणु किण-वि समगु वर-तरुणि-रयणिण ।
इय जणणी-जणय-भड- वंधु-मित्त-तरुणियण-वयणिण ॥
नेमि-कुमरु वर-नाण-धणु मणिण अनिच्छंतो वि ।
पडिवज्जइ परिणयण-विहि सिव-वहु-अणुरत्तो वि ॥

[२९९९]

तयणु तुट्टउ कण्हु सिवदेवि
नो माइ सरीरगि वि हरिस-पुलय-अंकुरिय जायव ।
कह कह न सहंति महि- वलइ फलिय नं कप्प-पायव ॥
रुप्पिणि-जंवुवई-पमुह हरि-अंतेउरियाउ ।
धावहिं वग्गहिं विलसहिं य हरिस-भरिय-हिययाउ ॥

२९९७. ३. विगहिय.

२९९९. ५. क. चलइ. ७. क. अंतेउरिआओ. ९. क. हिययाओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०००]

एत्थ-अंतरि सच्चहामाए

विन्नत्तउ हरि-पुरउ नाह अत्थि मह लहुय भइणिय ।
राईमइ नाम निय- रूव-विजिय-तइलोय-तरुणिय ॥
धुवु तहि अरिहइ नेमि पर नेमिहि स जि अरिहेइ ।
जइ पुणु न कुणइ एहु विहि ता अप्पउं विनडेइ ॥

[३००१]

तयणु कण्हिण निय-महामच्चु

सिरि-उग्गसेणह निवह सन्निहाणि पेसविउ तेण-वि ।
अवलोइउ राइमइ जा न सक्क वन्निउ सुरेण वि ॥
उग्गसेण-निवइहि पुरउ भणियउ पुणु – तइं दिन्न ।
नेमि-कुमारु विवाहिसइ इह राईमइ कन्न ॥

[३००२]

अहह गोरह गिहि कणय-वुट्ठि

कट मरुहुं माणस-सलिलु वपु दरिद्द-गिहि काम-धेणुय ।
जइ हविहइ तुह वयणु सच्चु एहु भवियव्व-जाणुय ॥
ता अमच्च सव्वायरिण तुहुं तह कह-वि जएसु ।
जह जायइ इहु अ-वितहु जि तुज्झ वयणु नीसेसु ॥

[३००३]

एहु सयलु वि कहइ वुत्तंतु

सचिवाहिवु केसवह तिण वि कहिउ सिरि-समुदविजयह ।
तेणावि-हु तक्खणिण गयण(?) तणउ वाहरिउ स-घरह ॥
तेण वि साहिउ सन्निहिउ लग्ग-दियहु निवइस्सु ।
नरवइणावि हु कहिउ सिवादेविहि निय-दइयस्सु ॥

३००३. ३. ख drops the portion from समुद° (३००३. ३) to परिगयह (३००४.५). ५. The letter next to गय is blurred in क.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३००४]

अह पयासिवि उग्गसेणस्सु

राईमइ-परिगयह समुदविजय-निवु लग्ग-वासरु ।
आरंभइ परिणयण विहि सुयस्सु संपत्त-अवसरु ॥
उग्गसेण-निवइ वि कह-वि हरिसिण माइ न ठाइ ।
कारवइ य वीवाह-विहि राईमइ-कन्नाइ ॥

[३००५]

तयणु कइयहं दइउ पेक्खेसु

गेण्हिस्सइ मज्झ करु कयइ कइय हउं नाहु माणिसु ।
मणि धरिहइ कइय मइं हउं वि कइय तसु हियउं वासिसु ॥
अहव सु तारिसु नर-रयणु कह कह हउं निब्भग्ग ।
इय चिंतिर राइमइ ठिय चिंता-जलहि-निमग्ग ॥

[३००६]

अह सहीयण-वयणमासज्ज

उवलद्धु जणणी-जणय- पमुह-सयण-उवएसु तरसिय ।
ससि-वयणि य कुणइ लहु ताउ ताउ किरियाउ हरिसिय ॥
नेमिकुमर-दंसण-अमय- वरिसुक्कंठिय वाल ।
वहु-विच्छित्तिहिं राइमइ कारावइ वर-माल ॥

[३००७]

तयणु विरइय-चारु-सिंगार

काराविय पुंखणय उग्गसेण-नरनाह-कन्नय ।
साहाविय-नियय-तणु- कंति-विजिय-सोवन्न-वन्नय ॥
अच्छइ पेच्छिर आयरिण नेमि-कुमारह वट्ट ।
तरुणि-दिन्न-मंगल-मुहल पढिर-फुडक्खर-भट्ट ॥

३००५. ३. क; कइयह, ख. कइयहंउं नाहु.

३००६. ५. क. ताओ ते किरियाओ. ८. क. राइमइं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३००८]

एत्थ-अंतरि विहिय-सिंगारु

कय-कोउय-मंगलिउ देवदूस-पावरण-मणहरु ।
कय-पुंखणयाइ-विहि नियय-सोह-अहरिय-पुरंदरु ॥
जाणंतउ तइलोयह वि भूय-भावि वुत्तंतु ।
तस्समयागय-सुर-असुर- हरि-मुसलिहिं सोहंतु ॥

[३००९]

तुरय-करिवर-रहवरारूढ-

नीसेस-जायव-सहिउ नेमि-कुमरु रहवरि चडेविणु ।
अणुगच्छिर-भुवण-जणु वत्थु-तत्तु निय-मणि धरेविणु ॥
चलिउ चमक्किय-सयल-जगु समुदविजय-भवणाउ ।
गंध-गउ व निय-जूह-जुउ विंझ-गिरिंद-वणाउ ॥

[३०१०]

तयणु चच्चरि तिगि चउक्कम्मि

पुर-रच्छहिं कूव-सर- सरिय-तीर-धरणियल-सिहरिहिं ।
उद्धीकय-कडचिर (?) कय-निवेस बहु-भेय-मंचिहिं ॥
घर-अवलोयण-जिण-भवण पायारुवरि निबिट्ठ ।
नयण-पहागइ कुमरि क-वि कामिणि भणइ पहिट्ठ ॥

[३०११]

भइणि अग्गलु मुयसु जिह हउं वि

अवलोइवि मुह-कमलु अकय-तवहं दुलहह कुमारह ।
उवगेण्हहुं किं-पि फलु नूण भवह एयह अ-सारह ॥
आवइ आइउ जाइ इहु इहु इहु इहु एहु त्ति ।
तरुणीयण-मण-वल्लहउ नेमिनाह-कुमरु त्ति ॥

३००९. ७. क. भवणाओ; ९. क. वणाओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०१२]

इयर पभणइ – तुह पसाएण
मइं दिट्ठउ भइणि इहु विजिय-कुसुमकम्मुय-मडप्फरु ।
हउं वन्नउं तसु जि पर सुंदरीए सोहग्ग-वित्थरु ॥
जा एरिस-वच्छयलि गुरु- नयर-पओलि-विसालि ।
सहलिय-जोव्वण-रूव-सिरि रमिहइ अज्जु वियालि ॥

[३०१३]

ईसि विहसिवि भणइ अह अन्न
जइ पिय-सहि एहु तुह मेलवेमि ता किं पयच्छहि ।
अह करयल-ताल-रव- पुव्वु भणइ – सवि तुहुं ज मग्गहि ॥
इय सहि कहमवि एहु मह सोहग्गिउ संपाडि ।
परि अम्हहं किह एरिसइं सहि लक्खणइं निलाडि ॥

[३०१४]

इय समुज्झिय-निय-नियासेस-
वावारहं सयलहं वि तिव्व-राय-विहुरिय-सरीरहं ।
पुर-तरुणीहिं विविह-मण- वयण-काय-गय-किरिय-पसरहं ॥
पेक्खंतउ परिचिट्ठियइं विम्हिय-मण-वावारु ।
उग्गसेण-निव-गिह-सविहि पत्तउ नेमि-कुमारु ॥

[३०१५]

अह तुरंतिण विविह-सहियणिण
राइमइ भणिय – सहि एहि एहि निय-नयण-पुडइहिं ।
लायन्नामउ पियसु नेमि-पहुहु आगयह सविहिहिं ॥
अह लहु हरिसूसुय-हियय जाल-गवक्खिहि कन्न ।
अवलोयंति वि पहुहु मुहु हूय सु-झामल-वन्न ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०१६]

ता धवक्किय-हियय इयरीउ
जंपंति – किं एउ सहि गरुय-हरिस-ठाणि वि विवन्नय ।
जं दीसहि अह भणइ राइमइ वि अच्चंत-सुन्नय ॥
किं-पि न-याणहुं हलि सहिउ किं पुण फुडइ व सिसु ।
तोडु पवट्टइ कुच्छिहिं वि डाह-जरिणं मीसु ॥

[३०१७]

मणु खुडुक्कइ फुरहिं नीसासु
रणरणउ समुल्लसइ दाहिणंग-नयणाइं फंदहिं ।
पेक्खंतिहि पुणु भुवण- नाहु नयण आणंदु संदहिं ॥
ता न-वि याणहुं होइसइ जं मह विहिहि वसेण ।
तयणु स-संकिण सहियणिण भणिउ – सुयणु किमणेण ॥

[३०१८]

तुह अणिट्ठिण चिंतियव्वेण
जं आइउ एहु पिउ दिट्ठु तइं वि निय-नयण-कमलिहिं ।
परिणेसइ अज्ज तइं रंजवेज्ज तुहुं पिउ सु-चरिइहिं ॥
कंकणि करयलि संठियइ सहि आरीसइं काइं ।
इय अज्ज-वि किं न तुहुं चयसि इहि संका-वयणाइं ॥

[३०१९]

इय भणंतहं ताहं स-सहीण
वयणाइं राइमइ सुणिर हियउं संधीरमाण वि ।
परिसंकिर भावि दस रुयइ चेव वारिज्जमाण वि ॥
नेमि-कुमारु वि परिणयण- विमुह-मणु वि गच्छेइ ।
जा अग्गिम-पहु कित्तिउ वि ताव झत्ति पेच्छेइ ॥

३०१६. १. क. °हिय इयरीओ; ख. इइयरीउ. ४. क. दीसइ. ९. जरेण मीसु corrected as संमीसु.

३०१७. ५. क. आणंद. ३०१८. १. क. अणट्ठिण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०२०]

ससग-संवर-हरिण-भल्लुंकि-
छग-सूयर-वणमहिस चास-चडय-तेत्तिरिय-लावय ।
अवरे-वि हु विविह जिय वाड-खित्त करुण-प्पलावय ॥
अह जाणंतु वि भुवण-गुरु सारहि-पुरउ भणेइ ।
कहसु किह णु वहुविह-जियहं करुणु सद्दु सुम्मेइ ॥

[३०२१]

तयणु सारहि विहिय-कर-कोसु
पहु-सविहिहिं विन्नवइ नाह तुज्झ वीवाह-वासरि ।
सस-सूयर-हरिण-हुड- महिस-पमुहु संपत्ति अवसरि ॥
जीववक्खाडउ करुण-रव- पसर-भरिय-जगु एहु ।
नणु हणियव्वउ जायवहं भोयण-कज्जि गहेउ ॥

[३०२२]

तयणु – धिसि धिसि निव्विवेयाहं
परिचिट्ठिउ जं कुणहिं एम्व जीव-वह-पमुह-पावइं ।
न गणंति उभय-भव- संभवंत-वहु-भेय-आवइं ॥
इय चिंतिरु निरुवम-करुण- परम-अमय-रस-सित्तु ।
नेमि भणइ – नणु सारहिय रहु लहु वालि निरुत्तु ॥

[३०२३]

अह मुयाविवि जीव-संघाउ
वालाविवि रहु कुमरु भणइ पुरउ निय-जणणि-जणयहं ।
गमियव्वु मइं सिव-पुरिहिं दाउ सलिल-अंजलिउ विसयहं ॥
ता नीलंवर-महुमहण- पमुहु सु जायव-वग्गु ।
भणइ – कुणसु तुहुं नर-रयण सु-पुरिस-सेविउ मग्गु ॥

३०२१. २. क. सविहिहि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०२४]

किंतु संपइ उग्गसेणस्सु
नरनाहह कन्नयह कुणसु तोसु निय-पाणि-गहणिण ।
जिह तूसहिं सुहि-सयण तुज्झ दिट्ठ-परिणीय-वयणिण ॥
ता करयल-पिहिय-स्सवणु नेमि-कुमारु भणेइ ।
नणु जाणिय-भव-भावि-दुहु को परिणयणु कुणेइ ॥

[३०२५]

नियहु एगह जियह परिणयण-
आरंभि वि कित्तियहं जियहं एहु संहारु मंडिउ ।
इय अ-सुहइ विसय-सुहि को-णु रमइ सु-विवेय-चड्डिउ ॥
जणणी-जणउ वि सोयरु वि परमत्थेण न कोइ ।
पडिरि कयंतह दडवडइ जो इह अंतरि होइ ॥

[३०२६]

तुम्ह पयडु वि कंसु सु नरिंदु
सो कालु नराहिवइ गुरु-मरट्टु सिसुपालु निवइ सु ।
अवहेडिय-सत्तु-कुलु दढ-मडप्पु जरसंधु राउ सु ॥
ता तहं तारिस रज्ज-सिरि सो तहं सयण-समूहु ।
किह-णु न दीसइ संपइ वि सु वि हय-रह-करिजूहु ॥

[३०२७]

भवि अणाइय-निहणि पत्ताइं
नाणाविह-सुह-दुहइं न-उण तुट्ठि विरइ वि पयट्टिय ।
तहिं रज्जि उ विक्किणिवि को रहट्टु वुहु लेइ वट्टिय ॥
नूण न सेय-क्कज्जि खमु काल-विलंवु वुहाहं ।
अवगय-चउगइ-भव-दुहहं णिगणिय-मरण-दिणाहं ॥

३०२६. २. ५. क. दढ is written over something previously written. ख. गुरु; क. राय, ख. जरसंधु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०२८]

इय विचित्तहिं वयण-रयणेहिं
सु-विणिच्छिवि पहुहु मणु मोह-पवण-तरलियउ केसवु ।
तह समुदविजय-निवइ- पमुहु सयलु स-कलत्तु जायवु ॥
निट्ठुर-नेमिकुमार-मुह- निग्गय-वयण-दुहट्टु ।
गलिय-आसु विच्छाय-मुहु अक्कंदेउ पयट्टु ॥

[३०२९]

भुवण-नाहु वि मुणिय-भव-भावु
अवगणिउण सुहि-सयण वलिवि पत्तु निययम्मि मंदिरि ।
सारस्सय-पमुह सुर अह पहुत्त निययम्मि अवसरि ॥
विहिय-पणामय विन्नवहिं जह – पहु तिहुयण-सार ।
तित्थु पयट्टहि जय-सुहय सामिय नेमि-कुमार ॥

[३०३०]

तयणु नेमिहि मणु मुणेऊण
इंदेण चलियासणिण वाहरेवि वेसमणु भणियउ ।
जह – सामिउ नेमि-जिणु वरिस-दाण-कारणिण मणियउ ॥
इय तुहुं अभिओयिय-सुरहिं वारवईए पुरीए ।
धण-कंचण-रयणाइं परिखिवहि सयल-धरणीए ॥

[३०३१] तत्तो सिंघाडग-तिग-पमुह-ट्ठाणेसु तीए नयरीए ।
देवा य जायवा वि-य कुणंति मणि-कणय-रासीउ ॥

[३०३२] वर-चरिया घोसिज्जइ किमिच्छियं दिज्जए वहु-विहीयं ।
रयणाणि य वत्थाणि य करि-तुरए वि हु जहिच्छाए ॥

[३०३३] तत्तो राइमई वि-हु विणियत्तंतं स-मंदिराभिमुहं ।
अवलोइऊण नेमिं सोऊण य दिक्ख-परिणामं ॥

३०२८. १. क. रयणाइं.

३०२९. ८. क. पयट्टइ.

३०३०. ४. Added marginally in क. ६. सुरिंहिं

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०३४]

कप्प-पायव-लय व परिछिन्न
वल्ली इव उक्खणिय खलिय-सील वर-तवसिणी इव ।
अच्चंत-विवन्न-तणु- छाय गलिय-वय कामिणी इव ॥
अइ-दुक्खिय-सहियण-विहिय-भीसण-गुरु-पुक्कार ।
गेह-गवक्खह राइमइ निवडिय नीसाहार ॥

[३०३५]

अह कहं-चि वि भियग-वग्गेण
तह विलविर-सहियणिण तेहिं तेहिं सिसिरोवयारिहिं ।
अवहेडिय-मुच्छ-दुह पीणियंग विविह-प्पयारिहिं ॥
उग्गसेण-नरवइ-दुहिय संपाविय-चेयन्न ।
कह-कहमवि चेट्ठइ पुरउ जणहं सु-दुह-संछन्न ॥

[३०३६]

पडइ उट्ठइ सुयइ नच्चेइ
अक्कंदइ विहसइ य हणइ उयरु सिरि केस तोडइ ।
संचुन्नइ आहरण करयलेहिं वलयाइं मोडइ ॥
डसणिहिं डसइ स-उट्ठ-उडु वयणिण मेल्लइ धाह ।
अक्कोसइ पइ पइ सहिय अ-प्पयडिय-अवराह ॥

अवि य–

[३०३७]

अरिरि सहियण सरिस सुह-दुक्खहं
ताय दुह-उद्धरण अहह भाय निय-भइणि-वच्छल ।
धिसि सज्जण हा जणणि मज्झ होह दुह-हरण-पच्चल ॥
विन्नाणिण दाणिण विणय- वयणिण सम्माणेवि ।
अज्जउत्तु करयलि धरिवि वालिवि इह आणेवि ॥

३०३५. ८. क. पुरओ.

३०३७. २. First few letters are illegible in क.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०३८]

तेय-दिणयर दाण-करिराय
संसार-केसरि-सरह सुगइ-नयर-संपत्ति-संदण ।
मइं मेल्लिवि कहिं गयउ समुदविजय-सिवदेवि-नंदण ॥
इय विलवंती राइमइ धरणीयलि निवडेइ ।
तुट्ट-सलिलि सरि सफरि जिम्व तल्लोवेल्लि करेइ ॥

[३०३९]

कुमरि परियण-वयण-विन्नाय-
वुत्तंतिण तेण सिरि- उग्गसेण-नरवरिण तक्खणि ।
आगंतुण राइमइ भणिय – वच्छि जय-पवर-लक्खणि ॥
विरहाउरु मणु थिरु करिवि दूरिण चयसु विसाउ ।
होसइ तुह अवरो वि वरु पयडिय-गरुय पसाउ ॥

[३०४०]

एत्थ-अंतरि सहिय-वग्गेण
ईसीसि विहसिवि भणिउ किं करेसि सहि नेमि-कुमरिण ।
अ-वियड्ढिण गय-रसिण परिविमुक्क-पुरिसाहिमाणिण ॥
जो पडिवज्जिवि निय-मुहिण आगंतु वि इह एम्व ।
रहु वालाविवि धाविउण वलिउ पवंगमु जेम्व ॥

[३०४१]

तुह हविस्सइ दइउ सो को-वि
जो सयल-भुवणब्भहिउ असम-रूव-लायन्न-रिद्धिण ।
समुवहसिय-तियस-गुरु भुवण-पयड-ससि-विमल-बुद्धिण ॥
तिहुयण-कामिणि-मण-हरणु निम्मल-गुणहं निहाणु ।
विविह-रणंगण-निज्जिणिय- नरवइ-कय-सम्माणु ॥

३०३९. ४. क. राइमइं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०४२]

अह थुड्डुंकिय-वयण राइमइ
परिमुक्क-नीसास-भर भणइ – ताय किं वहुय-वोल्लिण ।
सो मेल्लिवि नेमि-वरु मह न कज्जु इयरेण भल्लिण ॥
हलि सहियहु तुब्भे-वि इहु जंपहु किमसंवद्धु ।
तुम्हाण व किं किं-पि मइं इह चिट्ठइ अवरद्धु ॥

[३०४३]

कहह को इह तेम्व महुमहण-
भुय-दंड-वलु निद्दलइ को व निवइ दस अजु-य साहइ ।
स सुरासुर-पहुहुं पहु को व कोव-मय-माणु वाहइ ॥
मेल्लिवि समुदविजय-निवइ- नंदणु तिहुयण-सारु ।
ता मह पर-जम्मि वि सरणु सो च्चिय नेमि-कुमारु ॥

[३०४४]

तीए वइयरु एहु मुणिऊण
सविसेस-फुरिय-गिरि- गरुय-दुक्ख-पब्भार-विहुरिउ ।
हरि-हलहर-सिरि-समुदविजय-निवइ-सिवदेवि-सउरिउ ॥
अवरो वि-हु जायव-निवहु वाह-जलाविल-नेत्तु ।
कह-वि अ-पाविरु रइ-लवु वि पहु-विरहाउर-चित्तु ॥

[३०४५]

स-दुहु चिट्ठइ करुणु पलवेइ
अइ-दीहरु नीससइ भमइ पहुहु पासेसु पुणु पुणु ।
जहिं रमिहइ नेमि-जिणु तं जि थुणइ झूरेइ अप्पणु ॥
थोडइ पाणिइ मच्छु जिम्व तल्लोविल्लि कुणंतु ।
म मुयहि म मुयहि नाह इहु नियय-लोउ विलवंतु ॥

३०४२. ३. क. वहुयवोल्लिण.
३०४३. ४. क. पहुं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०४६]
एहु सयलु वि मोह-ललियं ति
मन्नंतउ अणवसरु मुणिरु तेसि पडिवोह-समयह ।
वियरंतउ इच्छियउं वरिस-दाणु सयलह वि लोयह ॥
ससहर-विमल-विवेय-गिरि- सिहरि सामि आरूढु ।
दाणु पयच्छइ वच्छरिण पुणु इहु जिण-पह-रूढु ॥

[३०४७] एगा हिरण्ण-कोडी अट्ठेव अणूणगा सय-सहस्सा ।
सूरोदय-माईयं दिज्जइ जा पायरासाओ ॥

[३०४८] तिन्नेव य कोडि-सया अट्ठासीइं च हौंति कोडीओ ।
असियं च सय-सहस्सा एयं संवच्छरे दिन्नं ॥

[३०४९] तत्तो दिक्खा-समयं आसण-कंपेण नाउ देविंदा ।
सव्वे वि पुरो पहुणो समागया सयल-रिद्धीए ॥

[३०५०] भवणवइ-वाणमंतर-जोइसियाणं असंख-कोडीओ ।
देवाणं देवीण य तेहिं समं एंति तुट्ठाओ ॥

[३०५१] ता वारवइं नयरिं आरब्भ सुरंगणा-सहस्सेहिं ।
पूरिज्जइ देवेहिं स-विमाणेहिं नहमसेसं ॥

[३०५२] वुट्ठिं च गंध-जल-कुसुम-रयण-निवहेहिं जिणहरे काउं ।
पणमंति जिण-वरं ते थुणहिं य थोत्तेहिं पवरेहिं ॥

[३०५३] कण्ह-प्पमुहो य तहिं जायव-वग्गो मिलेइ सयलो वि ।
किमिमं ति विम्हिओ अह समुद्दविजयं स-सिवदेविं ॥

[३०५४] सव्वे वि तियस-पहुणो थुणंति पीऊस-वरिस-वयणेहिं ।
जह – तुब्भे च्चिय धन्ना हरिवंसो चेव सलहिज्जो ॥

[३०५५] जत्थुप्पन्नो एसो तइलोय-दिवायरो कुमारो वि ।
निज्जिय-भुवण-त्तय-कुसुमचाव-उवहणिय-माहप्पो ॥

[३०५६] वावीसम-तित्थयरो असेस-सुरराय-पणय-पय-पउमो ।
भारह-वासे भुवणयल-भूसणो जिण-वरो नेमी ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०५७] इय थुणिय जणणि-जणया कलस-सहस्सेहिं बहु-वियप्पेहिं ।
नियं-मंदिर-मंदर-गयममरिंदा थुणहि नेमि-जिणं ॥

[३०५८] न्हाओ कय-वलि-कम्मो दिव्वालंकार-भूसिय-सरीरो ।
जय-जणिय-महच्छरिओ सिरि-नेमि-जिणेसरो भयवं ॥

[३०५९] उत्तर-कुरु-नामाए सिवियाए रयण-कणय-मइयाए ।
जायव-देव-कयाए आरुहइ पहु जहा-विहिणा ॥

[३०६०] दिव्वे य रयण-सीहासणम्मि उवविसइ उभयओ तं च ।
वीयंति चामरेहिं सोहम्मीसाण-देविंदा ॥

[३०६१] छत्तं सणं-कुमारो माहिंद-सुरेसरो पवर-खग्गं ।
वंभाहिवो सुरीसो गिण्हइ वर-दप्पणं पयओ ॥

[३०६२] कलसं लंतग-नाहो मह-सुक्को सोत्थियं सहस्सारो ।
गिण्हइ सरासण-वरं सिरिवच्छं पाणय-सुरिंदो ॥

[३०६३] नंदावत्तं पवरं तु अच्चुओ सेस-मंगले सेसा ।
नच्चंति अमर-वर-सुंदरीओ पुरओ जिणिंदस्स ॥

[३०६४] नंदी-तूरेसु तओ समंतओ सुर-वरेहिं पहएसु ।
उक्खित्ता सा सिविया सहसेणं जायव-निवाणं ॥

[३०६५] तत्तो वहंति एयं सुर-निवहा तुट्ठ-माणसा पुरओ ।
वज्जंति दुंदुहीओ पेच्छणयाइं कुणंति सुरा ॥

[३०६६] नच्चंति अच्छराओ पहसिय-हिययाओ विरह-विहुराओ ।
रोयंति जायवीओ रुप्पिणि-सिवएवि-पमुहाओ ॥

[३०६७] कण्हो समुद्दविजयाइणो य वर-सिंधुरेसु आरूढा ।
तह तुरयारूढाओ जायव-कोडीओ वच्चंति ॥

[३०६८] परिवारिऊण नेमि चउद्दिसि सुर-वरा विमाणेहिं ।
छायंति अंबर-तलं निरंतरं कय-समुज्जोयं ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०६९] गंधोदएण सिंचंति महियलं नहयलाउ मुंचंति ।
वर-सुरहि-कुसुम-वुट्ठिं पए पए तह य वंदि व्व ॥

[३०७०] सिरि-नेमि-जिण-गुणोहं निरंतरं ते पढंति तुट्ठ-मणा ।
विविहाभिप्पायाहिं देवीहि जायवीहिं च ॥

[३०७१] कय-विविह-संकहाहिं दीसंतो अहिलसिज्जमाणो य ।
सोइज्जंत-गुणोहो सलहिज्जंतो य संपत्तो ॥

[३०७२] सहसंब-वणुज्जाणे छट्ठुववासेण वड्ढमाणेहिं ।
सुद्धज्झवसाणेहिं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं ॥

[३०७३] उत्तर-कुरु-विसयाओ सिरि-नेमि-जिणेसरो समुत्तरइ ।
उब्भिय-भुय-दंडेहिं थुव्वंतो सुर-नरिंदेहिं ॥

[३०७४]

मुयइ सयलि वि कुसुमलंकार
सुरवइहि वयणेण पुणु कण्हु लेइ वत्थेग-देसिण ।
तयणंतरु नेमि-जिणु वड्ढमाणु ससि-सुद्ध-लेसिण ॥
पंचहिं मुट्ठिहिं चिहुर-भरु निरु दाहिण-आवत्तु ।
उप्पाडइ नरवइ-तणय- रयण-सहस-संजुत्तु ॥

[३०७५]

पहुहु कुंतल गहिवि पुणु सक्कु
खिविऊण खीरोयहिहिं पत्तु तहिं जि वणि तियस-सत्तिण ।
वारेइ य सयल झुणि तयणु विहिय-छट्ठमु पयत्तिण ॥
सिद्धहं नीसेसहं करिवि भाव-सारु नवकारु ।
न विहेयव्वउ कह-वि मइं सयलु पाव-वावारु ॥

३०६९. १. क. नहलाउ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०७६]

इय भणेविणु सिद्ध-पच्चक्खु
मण-नाण-रयणेण सह चित्त-रिक्ख-जुत्तम्मि ससहरि ।
सु-पसत्थि मुहुत्ति रय- रेणु-नियर-रहियम्मि अंबरि ॥
जायव-वंसुज्जोयकरु पहु तिण-मणि-सम-चित्तु ।
सावण-सिय-छट्ठिहिं तिहिहिं पडिवज्जेइ चरित्तु ॥

[३०७७]

अह सुरासुर-कण्ह-बलएव-
पामुक्खु असेसु जणु निय-निएसु ठाणेसु पत्तउ ।
भयवं पि-हु बीय-दिणि विहरमाणु मम-भाव-चत्तउ ॥
बारवइहिं नयरिहिं ठिइण पाराविउ धन्नेण ।
वरदिन्निण माहणिण गुरु- भत्तिहिं परमन्नेण ॥

[३०७८]

तयणु तसु घरि कणय-वसुहार
उक्कोसिय पडिय तह कुसुम-वुट्ठि गंधोय-वुट्ठि य ।
मणि-वुट्ठि वि दुंदुहिउ पहय चेल-अंचल वि खेविय ॥
जायउ हरिसु ति-लोयह वि सु पसंसिउ वरदिन्नु ।
विहरिउ अन्नयरइं महिहिं पहु वि असम-सोजन्नु ॥

[३०७९]

इओ य –

पहुहु उज्झिय-विहुर राइमइ
रह-नेमिण नेमि-जिण- बंधवेण साणुणउ पभणिय ।
पडिवज्जसु पसिय मइं मयण-विहुर-तणु तयणु तरुणिय ॥
धिसि धिसि इग-उयरुब्भवहं अंतरु इमहं महंतु ।
उज्झइ संतु वि विसय-सुहु इगु इगु महइ अ-संतु ॥

३०७७. ६. क. omits नयरिहिं.
३०७८. ९. क. पह.
३०७९. १. क. पहुहुं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०८०]

अहव वीयह महिहिं एक्कह वि
परिवड्ढइ मूलु अहि अंकुरो उ उड्ढम्मि वच्चइ ।
ता वत्थु-सहावु इह विसम-रूवु भुवणम्मि वट्टइ ॥
इय चिंतंती राइमइ रहनेमिहि वहु-भेउ ।
वियरइ धम्मुवएसु सिव- सुह-सय-साहण-हेउ ॥

[३०८१]

भणइ पुणु – नणु सुहय छुहियम्हि
वियरेसु य किं-पि मह भोयणु त्ति ता मोह-मूढिण ।
परमन्नु कराविउण दिन्नु तीए इयरी वि वमिउण ॥
घेत्तुण य कच्चोलइण तं जि पाउमारद्ध ।
अह – किह वमियउं पियसि इय इयरिण स उवालद्ध ॥

[३०८२]

भणइ – नणु जइ एम्व ता हउं वि
वमियम्हि नेमि-प्पहुहुं किह णु तं पि मइं रमिउमिच्छसि ।
उज्झेविणु इत्थियणु चरसु चरणु जइ सुहइं वंछसि ॥
इय जुत्तिहि नाणा-विहिहि भयवइ-राइमईए ।
सो रहनेमि विवोहिउण लाइउ चरण-रईए ॥

[३०८३]

एत्थ-अंतरि कण्हु विन्नत्तु
उज्जाण-वालग-नरिण पहु तिलोय-पहु-नेमिनाहह ।
चउपन्न-वासर-अणुक्कमिण गमिय छउमत्थ-भावह ॥
विहरिय-नाणाविह-महिहिं सु-प्पवित्त-चित्तस्सु ।
रेवय-गिरि-सहसंव-वणि वर-काणणि पत्तस्सु ॥

३०८२. ९. क चरणईए.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०८४]

कमिण अट्ठम-तवह पज्जंति

झाणंतरि वट्टिरह घाइ-कम्म-संघाइ झीणइ ।
आ-जम्मु अ-लद्धयरु चाउरंग-भव-भमणि खीणइ ॥
आसोयह अम्मावसहं चित्ता-नक्खत्तम्मि ।
गरुयर-तेइहिं ससि-रविहि जायइ सु-मुहुत्तम्मि ॥

[३०८५]

अज्जु केवल-नाणु उप्पन्नु

तयणंतरु सुर-गणिण नियय-नियय-अहिगार-जोगिण ।
अइरेण वि जय-सरणु समवसरणु किउ विविह-भंगिण ॥
ता वणयर-कय-तिदिसि-पडिबिंबु नेमि-जिण-इंदु ।
तहिं निवसिवि पुव्वाभिमुहु वियसिय-मुह-अरविंदु ॥

[३०८६]

चलिय-आसण-पत्त-सुर-असुर-

नर-नायग-सय-सहहं सुगइ-मग्गु साहंतु चिट्ठइ ।
इय उज्जाणिय-नरिण पहु-पणिहि-विसयम्मि सिट्ठइ ॥
तसु तोसिण उक्कोसियउं कणय-दाणु वियरेवि ।
गमिरागमिरिण सुर-गणिण पूरिउ गयणु निएवि ॥

[३०८७]

समुदविजइण सहिउ सिवदेवि-

परियरियउ महुमहणु फुरिय-गरुय-आणंद-वित्थरु ।
सयलेहिं वि जायविहिं समगु असम-सिंगारसुंदरु ॥
चलियउ सिरि-रहनेमि सिरि- राइमईहिं समेउ ।
हरिस-वियासिय-मुह-कमलु सामिहि वंदण-हेउ ॥

३०८५. १. क. उप्पन्नुं

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०८८]

कमिण मन्निरु अप्पु कय-किच्चु

पेक्खंतउ पुहुहु सिरि सुणिरु पुहुहु घण-गहिर-देसण ।
सुहि-सयणहं पुरउ पुणु भणिरु नियह भव-भाव-नासण ॥
रिद्धि-विसेस जिणेसरह भुवण-सिरो-रयणस्सु ।
पंच-विहाहिगमिण सविह- देसि पहुत्तु पहुस्सु ॥

[३०८९]

अह नमंसिवि सामि-पय-पउम

नीसेस-जायव-सहिउ उचिय-उचिय-आसणिहि निवसइ ।
तियसासुर-नहयरहं गणु वि नियय-ठाणेसु निवसइ ॥
तयणंतरु जिण-नायगिण भव-विराय-संवद्ध ।
जलहर-गंभीर-ज्झुणिण धम्म-क्कह पारद्ध ॥

जहा –

[३०९०]

जलिर-मंदिर-सरिसु संसारु

निरुवद्दवु मुक्ख-पुरु दुहय विसय सुह-हेउ सिव-पहु ।
तणु चंचलु धम्मु थिरु सुहउ सु-गुरु खलयणु दुहावहु ॥
अप्पु वि अ-नियंतिउ पिसुणु सु-नियंतिउ सु जि मित्तु ।
ता जइयव्वउं भवियणिण राय-दोस चइत्तु ॥

[३०९१]

इय निसामिवि धम्म-कह विविह

वरदत्तु महा-निवइ गलिय-चरण-आवरणु तक्खणि ।
दुहिं सहसिहिं निव-सुयहं समगमेव परितुट्ठु नियमणि ॥
पडिवज्जइ सामिहि पुरउ चाउज्जामु चरित्तु ।
उप्पाय-व्वय-धुव्व इय वयणइं तिन्नि गहित्तु ॥

३०८८. १. क. omits पहुत्तु; ख. स्सु for पहुस्सु. ३०९०. ४. क. तय(?)णु, ख. तयणु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०९२]

कुणइ वारस-अंगु सुय-जलहि

पुव्वज्जिय-असम-गणहारि- नामु ता नेमि-नाहिण ।
पढमिल्लु गणहरु ठविउ तियस-नाह-कय-गरुय-रिद्धिण ॥
जक्खिणि-नामिय निव-दुहिय गहिय-चरित्त पवित्त ।
विहिय पवत्तिणि सुस्समणि- सयहं मज्झि गुण-जुत्त ॥

[३०९३]

एत्थ-अंतरि पत्त-पत्थावु

सिर-विरइय-पाणि-पुडु भणइ कण्हु जह – नाह पसिउण ।
मइ साहसु किह णु इहु भुवण-सयलु तिण-लवु व कलिउण ॥
इयरु नहिलसइ राइमइ सामिय तुज्झ विओइ ।
तयणंतरु सिरि-नेमि-जिणु भणइ – कण्ह जिय-लोइ ॥

[३०९४]

हवइ नेरिसु कसु वि पाएण

परिसंचिय-नेह-भर पुव्व-जम्म-संबंध-विरहिण ।
एसा-वि हु राइमइ अट्ठ जम्म मइं सह स-कम्मिण ॥
हिंडिय दढयर-नेह-भर- सम-सुह-दुह-भावेण ।
ता किह इह भणिय वि रमइ सह पुरिसिण इयरेण ॥

[३०९५]

इय सुहा-रस-पेसलालाव

पहु-देसण निसुणिउण ईहपोह-मग्गण पविट्ठिय ।
सुमरेइ असेस-निय- जाइ राइमइ मणिण तुट्ठिय ॥
उज्झिवि धणु कणु परियणु वि तोडिवि मोहह पास ।
चरणु पवज्जइ पहु-पुरउ सिव-संगम-कय-आस ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३०९६]

तीए सह वहु-भेय-निव-दुहिय
इयराउ वि पव्वइय जे य आसि किर धण-भवाउ वि ।
धणदत्त-धणदेव-इय- नाम-पयड सोयरय पहुणु वि ॥
ते वि-हु निय-निय-पुव्व-भव- सुमरण-कय-पडिवोह ।
उज्झिय-रज्ज विमुक्क-गिह चरणु लिंति हय-मोह ॥

[३०९७]

सु वि मइप्पह-सचिवु चारित्तु
गेण्हेइ अह तिन्नि वि ति गणहरिंद हुय पहु-पसाइहिं ।
हरि मुसलि दसार दस सावयत्तु गेण्हंति सु-विहिहिं ॥
सिरि-सिवदेवि वि रोहिणिहिं देवइ-जंववईहि ।
सहिय गहेइ अणुव्वयइं सह जायविहिं वहूहिं ॥

[३०९८]

एम्व पढमि वि समवसरणम्मि
उप्पन्नि चउव्विहइ संघि तियस गय नियय-ठाणह ।
वहु-गुण-गण-रत्त-मण जायवा वि गय नयरि-सम्मुह ॥
सामि वि सरइ अइक्कमिरि धरणीयलि विहरंतु ।
मलय-विसय-चूडा-रयणि भद्दिल-पुरि संपत्तु ॥

[३०९९]

नागदत्तह वणिहि गिहिणीए
मुलसाए वेसमण- सुरिण सउरि-सुय आसि वियरिय ।
जे ते-वि विवोहिउण नेमि-जिणिण चारित्तु गाहिय ॥
तयणंतरु दसविह-समण- किरिय-विहाणासत्त ।
भाविण सेवहिं जिण-कहिय- चाउज्जाम-चरित्त ॥

३०९६. ३. क. भवाओ. ख. भवउ.
३०९७. ३. क. पह for पहु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१००]

एत्थ-अंतरि नेमि-जिण-इंदु
नीसेसाइसय-निहि विहरमाणु उज्जाणि पत्तउ ।
अह आइउ हरि पुहुहु वंदणत्थु जायविहिं जुत्तउ ॥
नमिवि मुणिवि वंदणय-फलु हरि भव-भमण-विरत्तु ।
पास-ट्ठिइण कुविंदइण वीरएण संजुत्तु ॥

[३१०१]

देइ भत्तिहिं वारसावत्तु
वंदणउं महा-मुणिहिं गरुय-गुणहं अट्टार-सहसहं ।
तयणंतरु विण्णवइ कण्हु सविहि जय-नाह-पायहं ॥
जह – पहु मइं एइण भविण किय संगाम अणेग ।
न-उण किलेसिय एरिसिण समिण कह-वि मह अंग ॥

[३१०२]

तयणु पभणइ भुवण-दिण-इंदु
नणु कण्ह फलं पि तइं पत्तु अ-समु वंदणय-दाणिण ।
जं तइया तारिसिण समगु रिउहिं संगाम-करणिण ॥
सत्तम-पुहइहि हेउ परिसंचिउ कम्मु अहेसि ।
संपइ सेसु खवेवि किउ महिहि तइज्जह रेसि ॥

[३१०३] तित्थयर-नामगोयं कम्मं च निवद्धमेण्हि हविहसि य ।
भावि-चउव्वीसाए तुमं दुवालसम-तित्थयरो ॥

[३१०४] वंदण-विरयणेण्ण हि साहूण सुयस्स हवइ उवयारो ।
भिज्जइ माण-ग्गंठी पूइज्जइ गुरुयणो विहिणा ॥

[३१०५] सिढिलिज्जंति असेसाओ-वि हु असुहाओ कम्म-पयडीओ ।
सिंचिज्जंति नरामर-सिव-सुह-फलया सुकय-तरुणो ॥

३१०२. ८. क. खवेमि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१०६] इय भुवण-कप्प-तरुणो सिरि-नेमि-जिणाहिवस्स पासम्मि ।
सोऊण पत्थुयत्थं विसाय-हरिसागओ कण्हो ॥

[३१०७] वज्जरइ जह – भयवं मुणीण वियरेमि पुण-वि वंदणयं ।
जह वच्चामि न तइयं अच्चंत-दुहावहं पुहइं ॥

[३१०८] अह भणइ जिणो – सुंदर इओ न तुह तारिसो हवइ भावो ।
तह वच्चंति अवस्सं उड्ढं रामा अहो हरिणो ॥

[३१०९]

इय सुणेविणु पहुहु उवएसु
कह-कहमवि नियय-मणु संठवेउ एगग्ग-चित्तिण ।
जिण-पवयण गुरुयणहं कुणइ पूय-सक्कारु भत्तिण ॥
चरणाचरणोदय-वसिण गहिउमसत्तु चरित्तु ।
गेण्हइ नियम-विसेस इहि सो ससि-निम्मल-चित्तु ॥

[३११०]

वउ गहंतहं कुणहुं न निवार
वासासु न परियडहुं गिहह वहिहिं धम्मत्थु मेल्लिवि ।
तयणंतरु भव-विरय- हियय स-उरि हरि मुक्कलाविवि ॥
नाणाविह जायव-कुमर दिक्खिय नेमि-जिणेण ।
हरि-भारिय वि अणेग-विह चरहिं चरणु भावेण ॥

[३१११]

भव-विरत्तउ सो-वि रहनेमि
अणुजाणाविवि कह-वि जणय-जणणि सुहि-सयण-बंधव ।
पडिवज्जइ दिक्ख पहु- पुरउ तयणु इयरे-वि माणव ॥
सव्व-विरइ गेण्हंति कि-वि के-वि हु देस-चरित्तु ।
पंचाणुव्वय के-वि कि-वि ससि-निम्मलु सम्मत्तु ॥

३११०. ६. क. नाणाविहु; ख. अवरे वि हु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३११२] धम्म-कहा-अवसाणे निय-ठाण-ठियम्मि सावय-जणम्मि ।
पत्तावसरं मुणिणो पुरीए पविसंति भिक्खाए ॥

[३११३] ते-वि हु सुलसा-नागा-नंदणा जुयलगेहिं तिहिं मुणिणो ।
देवइ-गिहम्मि कमसो भिक्खायरियाए संपत्ता ॥

[३११४] ता पण्हुइय-थणीए देवइ-देवीए वियसिय-मुहीए ।
पडिलाहिया स-तोसं सव्वे-वि हु ते महा-मुणिणो ॥

[३११५]
चरम-पोरिसि-समइ पुणु सामि-
पायारविंदहं पुरउ गंतु भणइ देवइ – निवेयह ।
किं वारवइहि पुरिहिं लहहि भिक्ख न मुणि त्ति जं मह ॥
मंदिरि एक्कु जि मुणि-जुयलु तिण्णि वार संपत्तु ।
तयणु भणइ जिणु दसण-पह- पूरिय-सयल-दियंतु ॥

[३११६] तुह चेव सुया भद्दे छप्पेएन्नोन्न-सरिसया दूरं ।
नणु कह-कह-त्ति तीए भणियम्मि पयंपए सामी ॥

[३११७] भद्दिलपुरम्मि नयरे वणिणो नागस्स सुलस-दइयाए ।
निंदूए मय-सुया वेसमणेणं तुह पुरो मुक्का ॥

[३११८] तुह तणया उण चरम-सरीरा सिरि-वच्छ-लंछिओरयला ।
कंस-भएण विमुक्का नेउं सविहम्मि सुलसाए ॥

[३११९] ता जाय-भव-विराया भद्दे मह संनिहिम्मि पव्वइया ।
सोऊणमिणं वाहुल्ल-लोयणा देवई भणइ ॥

३११४. १. क. देम्वइ·
३११५. ४. क. लहिहिं ८. क. पहु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१२०]

कहसु जय-पहु विहिउ मइं पावु
किं पुव्व-जम्मम्मि मह हुयउ जमिह सुय-विरहु एरिसु ।
ता पभणइ भुवण-गुरु भद्दि एहु लेसेण निसुणसु ।।
भवि पुव्विल्लि वसंत-पुरि सोम-नाम-निवइस्सु ।
सोमस्सिरि-नामियए तइं चंदलेह-नामस्सु ।।

[३१२१]

निय-सवत्तिहिं सत्त-रयणाइं
अवहरियइं अह कह-वि दुहिय-मणह तहिं वलवलंतिहि ।
नणु कयवर-मज्झि मइं लद्धु एहु इय तइं भणंतिहिं ।।
एक्कु रयणु वियरियउं न-उ इयराइं इय तेण ।
कम्मिण तुह छ-स्सुय-विरहु मेलावउ एगेण ।।

[३१२२] मा उण एण्हि विसूरसु जमिमे कय-लक्खणा महा-भागा ।
निट्ठविय-पाव-कम्मा सिव-सम्मं पाउणिस्संति ।।

[३१२३]

तयणु किंचि-वि विगय-संताव
पसरंत-सिणेह तहं मुणिहिं पाय-पउमइं नमंसइ ।
अणुभासिवि जिण-वयणु पुणु-वि पुणु-वि तहं गुण पसंसइ ।।
ता भवियंभोरुह-तरणि गउ अन्नहिं भयवंतु ।
तयणंतरु देवइ धरिवि मणि निय-सुय-वुत्तंतु ।।

[३१२४]

अहह एक्कु वि मइं न निय-पुत्तु
उच्छंगि चडावियउ न-वि य खणु वि लालिउ पमोइण ।
इय जंपिर अंसु-जल- पुन्न-नयण सच्चविय कण्हिण ।।
पणमेऊण य भणिउ – किह तं सु-विसन्निय माय ।
ता निय-दुह-वइयरु कहइ देवइ गरुय-विसाय ।।

३१२३. ३. क. नमंसइं.
३१२४. ८. क. कहइं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१२५]

अह पर्यपइ कण्हु मा अंब

तं कुणसु विसाउ कु-वि उज्जमेसु हउं कह-वि तह जह ।
तुह हविहइ तणउ अह भणइ देवि – निय-वाय अ-वितह ॥
कुणसु लहुं चिय कण्ह अह उववासियउ हवेवि ।
उस्सग्गिण ठिउ कण्हु मणि तियस-विसेसु धरेवि ॥

[३१२६]

तयणु तियसिण भणिउ – नणु कण्ह

तुह जणणिहि अंगरुहु नियय-महिम-निज्जिणिय-सुरवइ ।
लहु हविहइ किंतु वउ नूण अ-कय-वीवाहु गहिहइ ॥
अह जायउ एवं पि इय सिरि-देवइहि पउत्तु ।
अह वरु वियरिवि सो तियसु नियय-ट्ठाणि पहुत्तु ॥

[३१२७]

तयणु नंदणु जाउ देवइहि

सु-स्सिविणुवलद्धइयउ दिण्णु णामु तसु गरुय-रिद्धिण ।
वसुदेविण मेलिउण स-घरि सयल जायव सु-लग्गिण ॥
सिरि-गयसुकुमालो त्ति अह कम-पाविय-तारुण्णु ।
सोमसम्म-बंभण-दुहिय-रयणु वरेइ स-उण्णु ॥

[३१२८] कण्हो उण वासासुं गंतुं अंतेउरस्स मज्झम्मि ।
अइगमइ वासराइं जिय-संघायस्स रक्ख-कए ॥

[३१२९] लोगम्मि पुणु पवाओ जाओ जह सुयइ वासुदेवो त्ति ॥
नीहरिए तम्मि वहिं वासंते उट्ठइ हरि त्ति ॥

[३१३०] अह कत्तिय-एक्कारसि-तिहीए सीहासणम्मि उवविसिउं ।
पत्तेयं पत्तेयं संभालइ निय-जणं कण्हो ॥

३१२६. ७. पउत्थु.
३१२७. २. सुस्सिमिणु. क. जयसुकुमालो.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१३१] दट्ठूण वीरयं पुण भणइ – कहं हंत दुब्बलो सि तुमं ।
पडिहार-दारओ अह सिर-कय-कर-संपुडो भणइ ॥

[३१३२]

सामि अणुदिणु एहु आगंतु
वियरेविणु गुंहलिय पंच-वन्न-कुसुमोवयारु वि ।
घर-दार-पएसि खणु एगु ठाउ पहु-मुहु अ-पेक्खिवि ॥
चिट्ठइ गंतु नियम्मि घरि दिणि भोयणु अ-कुणंतु ।
संपइ चउमासहं स-पहु दिट्ठउ इमिण निरुत्तु ॥

[३१३३]

इय स-मंदिरि गंतु इच्छाए
भुंजिस्सइ एहु जइ एण्हि चेव ता कण्हु तुट्ठउ ।
अणुमन्नइ तयणु इयरो वि जाइ निय-घरि पहिट्ठउ ॥
ता परिणयणावसरि हरि- सन्निहि धूय इग पत्त ।
अह तुहुं दासि व सामिणि व हवसि हरिण इय वुत्त ॥

[३१३४]

जणणि-सिक्खहं भणइ सा बाल
हउं दासि हवेसु अह सुणिय-पुव्व-वइयरिण कण्हिण ।
अत्थाण-मंडवि नियय- सहहं भणिउ अविहिय-वियारिण ॥
निवसंतउ वयरीण वणि जिण रत्त-प्फडु नागु ।
निहउ पुहइ-सत्थिण सु इहु वीरउ खत्तिय-चंगु ॥

[३१३५] इय सव्व-मुसा-वयणेहिं संविहाणय-सएहिं स-सहाए ।
खत्तिय-तिलओ एसो त्ति साहिउं तस्स सा दिण्णा ॥

[३१३६] इयरेण वि पढमं कय-स-सत्ति-अणुरूव-गउरव-सएण ।
हरि-वयणेण उ तह कहमवि सा उव्वेइया जेण ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१३७]

गंतु कण्हह पुरउ रुयमाण

विण्णवइ जहा – जणय हउं हवेसु सामिणि न दासिय ।
ता कण्हिण नियय-घरि धरिय विविहलंकरण-भूसिय ॥
इत्तो उण सिरि-नेमि-जिणु धरणीयलि विहरंतु ।
रेवय-गिरि-उज्जाण-वणि कम-जोगिण संपत्तु ॥

[३१३८]

तयणु कण्हिण सामि-सविहम्मि

सा वाल आणीय अह मुणिवि पहुहु सद्धम्म-देसण ।
भव-भाव-विरत्त हरि- पुरउ भणइ चरणाणुरागिण ॥
अणुजाणसु मई जणय जिह संजम-भारु धरेवि ।
अप्पाणउं साहउं हउं वि जय-पहु-सेव करेवि ॥

[३१३९]

ता विसेसिण फुरिय-संतोसु

निक्खमण-महा-महिम कुणइ तीए हरि तह कहं-चि वि ।
जह वहु-निव-सचिव-सुय- धूय चरणु गेण्हंति अवरि वि ॥
अवरम्मि उ अवसरि जिणह सविहि कण्हु पुच्छेइ ।
जह – पहु संपइ उग्गयरु को तव-चरणु चरेइ ॥

[३१४०]

तयणु जिणवरु भणइ – तुह पुत्तु

अइदुक्करु तवु चरइ एण्हि ताव ढंढण-कुमारु जि ।
ता वियसिय-मुह-कमलु भणइ कण्हु – पहु कहसु एहु जि ॥
केण निमित्तिण केरिसु व तवु उग्गयरु करेइ ।
ढंढण-कुमरु सु परमु मुणि अह जिण-वरु जंपेइ ॥

३१३९ १. क. पुरिय.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१४१]

कण्ह गरुयर एह कह जइ-वि
निसुणेसु तहावि तुहुं भण्णमाण संपइ समासिण ।
पारासर-नामु दिउ आसि गामि एगम्मि अह तिण ॥
राउल-वाय-वसेण जणु सयलु वि पीडंतेण ।
वासारत्ति पहुत्ति निव- चरि खेडावंतेण ॥

[३१४२] एगम्मि दिणे छोडिज्जंतेसु हलाण पंचसु सएसु ।
पत्तेयं भत्तम्मि य पत्ते मज्झण्ह-समयम्मि ॥

[३१४३] तण्हा-छुहा-परिस्सम-दिणयर-परिताव-विहुरिय-तणूणं ।
हलिय-सयाणं पंचण्हं पुरो जंपियमरेरे ॥

[३१४४] मह छेत्तं सिंचंतं एगेगं दाउ भोयणं कुणह ।
अह तेहि मुक्क-दीहर-सासेहिं गलिय-छाएहिं ॥

[३१४५] कहकहमवि एक्केक्का पयच्छिया तेहिं हलिय-वसहेहिं ।
कय-गरुय-असुह-लंभा वंभा विप्पस्स छेत्तम्मि ॥

[३१४६] तप्पच्चयं च वहुं विप्पेणं अंतराइयं गरुयं ।
भमिउं भवे चिरं सो एसो तुह नंदणो जाओ ॥

[३१४७]

सुणिवि स-चरिउ एहु नियजाइ-
मणुसरिउण जाय-भव- विरइ चरण-माणिक्कु गिण्हइ ।
परियडइ य पडि-भवणु भिक्ख-हेउ न-उ लवु वि पाम्वइ ॥
अह नणु खेइज्जइ भमिरु मइं सहुं इयरु वि साहु ।
न-उण दुवेण्हहं एक्कह वि जायइ भिक्खा-लाहु ॥

३१४४. २. अह नेहि corrected as तत्तो in क.

३१४५. १. क. पयाच्छिया.

३१४६. २. क. नंदण, ख. नदणो.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१४८]

इय विचिंतिवि नियय-लद्धीए
भोयव्वु अवस्सु मइं   इय गहेवि दुक्करु अभिग्गहु ।
पइ-दियहु वि पडि-भवणु भमइ दूर-उज्झिय-असग्गहु ॥
न-उ भिक्खा-मेत्तु वि लहइ सकय-वसिण भमिरो वि ।
तो सु-समाहिउ गमइ दिण तण्हा-छुह-विहुरो वि ॥

[३१४९] इय एस कण्ह दुक्कर-तव-कारी संपयं विसेसेण ।
ढंढण-महारिसी जं कुणइ तवं एवमेवं ति ॥

[३१५०] तह तुट्ठ-मणो पणमिय भयवंतं चलइ वारवइ-समुहं ।
जा ताव ढंढण-रिसिं नियइ पहे जह-कहिय-रूवं ॥

[३१५१] उत्तरिय गयवराओ पयाहिणा-तय-पुरस्सरं कण्हो ।
वंदेइ भाव-सारं पयारविंदाइं से मुणिणो ॥

[३१५२] भणइ य – भयवं धन्नो कय-उण्णो तं सि जं जय-प्पहुणो ।
दुक्कर-तव-चारीणं मज्झम्मि पसंसिओ वहुहा ॥

[३१५३] अणलिय-गुण-संथवमिममुविंद-विहियं सुणेउ इब्भ-सुआ ।
एगो वियरेइ महा-मुणिणो से सीह-केसरए ॥

[३१५४] सो उण अ-रत्त-दुट्ठो आलोयइ सामिणो पुरो गंतुं ।
कण्हस्स इमा लद्धी इय भणियं भुवण-गुरुणा वि ॥

[३१५५] अह से अ-दीण-मणसस्स भयवओ मोयगे चयंतस्स ।
जायं केवल-नाणं निग्घाइय-घाइ-कम्मस्स ॥

[३१५६] अह भयवं भव-महणो तिलोय-तरणी य विहरए न्नत्थ ।
कण्हो उण परिवालइ रज्जं सज्जण-कयाणंदो ॥

३१५१. १. क. तव.°

[३१५७]

अवर-अवसरि समवसरणम्मि
वंदेउण सामि-पय चलिय समणि-जुय वसहि-अभिमुह
राईमइ समणि जा ताव वुट्ठि संजाय दुस्सह ।
अह क-वि कत्थ वि गय समणि राइमइ वि निय-वत्थ ।
उव्विल्लिर चिट्ठइ गुहह हुय जह-जाय-अवत्थ ॥

[३१५८]

एत्थ-अंतरि विहि-निओएण
रहनेमि वि तहिं गुहह मज्झि पुव्व-संठिउ जलुल्लिउ ।
पेक्खेविणु राइमइ तह-सरूव मयणेण सल्लिउ ॥
भणइ – अहह मयणानलिण चिरु मह दज्झंतस्सु ।
उवसमु तुह संगामइण हविहइ एण्हि अवस्सु* ॥

[३१५९]

ता पयंपइ राइमइ – हंत
तुहुं अंधगवण्हि-नरनाह- वंस-गयणयल-ससहरु ।
हउं भोजवण्हिहि निवह वंसि जाय इय सीलु मणहरु ॥
खंडिउ न खमु खणं पि सिव- संगम-कय-लक्खाहं ।
सुरगिरि-तुंग-कुलुब्भवहं दोण्हिं वि हु पक्खाहं ॥

[३१६०]

अवि य जोव्वणु अ-थिरु जल-लवु वि
पिय-संगु विओग-फलु विसय-सुक्ख परिणाम-दारुण ।
हिय-इच्छिय दुल्लहइं जुवइ-संग दुग्गइहिं कारण ॥
जं देहह अंतरि अछइ तं जइ वाहिरि होइ ।
ता तं काग-सिगालहं वि रक्खिउ तरइ न कोइ ॥

३१५७. ३. वसइ. ४. क. राइम ६. क. उच्चिल्लर.

३१५९. ५. क. मणहर.

*At the end क. ख. ॥ ग्रंथाग्रं ॥ ७७०० ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१६१]

ज ज निरिक्खसि नारि तुहुं मुद्ध
जइ रज्जसि तहिं तहिं जि ता लवं पि तुहुं हवसि अच्छिरु ।
सोइज्जसि सज्जणिहिं गय-सरन्नु दुग्गइहिं गच्छिरु ॥
पुणरवि दुल्लह एरिसिय धम्म-कम्म-सामग्गि ।
इय आलोइवि दुच्चरिय जिण-देसिय-पहि लग्गि ॥

[३१६२]

एम्व बहुविह राइमइ-समणि-
वयणंकुस-ताडियउ तह कहं-चि रहनेमि-कुंजरु ।
जह पच्छायाव-दव- तविय-अंगु सम्मग्ग-सुंदरु ॥
आलोइवि दुच्चरिय पडिवज्जिवि पायच्छित्तु ।
आराहिवि जिणवर-किरिय निय-मणु करिवि पवित्तु ॥

[३१६३]

कमिण अइगय-वरिस-परियाउ
उप्पाडइ नाण-धणु एम्व-कारि पुणु गारिहत्थिण ।
चउ-वरिस-सयाइं अह वरिसु एगु छउमत्थ-भाविण ॥
पंच जि वरिस-सयाइं पुणु केवलि-परियाएण ।
विहरिवि सिरि-रहनेमि-मुणि सिद्धउ कम्म-खएण ॥

[३१६४]

सु वि महा-यसु गहिय-चारित्तु
सम-सत्तु-मित्तत्तणिण केसवस्सु बंधवु कणिट्ठउ ।
उस्सग्गिण संठियउ सोमसम्म-बंभणिण दिट्ठउ ॥
ता कोवारुण-लोयणिण तिण पाविण संलत्तु ।
अरि कत्तो सि हयास तुहुं गयसुकुमाल पहुत्तु ॥

३१६३.१. क. परियाओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१६५]

मज्झ धूयहं तुज्झ अवरद्धु
किं केरिसु जेण तइं तेम्व वरिवि तइयह वि उज्झिय ।
न य घरह न वारह वि कीय एण्हि ता तुहुं कु-वुद्धिय ॥
निय-दुव्विलसिय-तरु-फलइं गेण्हसु मह हत्थेण ।
इय अवराहिउ मुणि-वसहु वयणिण अ-पसत्थेण ॥

[३१६६]

सविह-देसह गहिवि मिउ-पिंडु
आहारउ करिवि तसु सीसि खिविवि खायर-हुयासणु ।
बंधेविणु निय-करिहि मुट्ठि नट्ठु सो पाव-बंभणु ॥
तयणु सिरोवरि पज्जलिर जलणिण ताविज्जंतु ।
अणु-खणु डज्झिर-मोह-मल्लु कणगु व परिसुज्झंतु ॥

[३१६७]

भणिण सुमरइ पंच-नवकारु
आलोयइ दुक्कयइं सम्मु दुसह वेयणहियासइ ।
चिंतेइ य — सुहु दुहु वि न कु-वि कसु-वि किंचि-वि पयासइ ॥
उज्झवि पुव्व-समज्जियइं निय-सुह-असुहाइं पि ।
अरि जिय उवरि म कसु-वि तुहुं परिकुप्पहि ईसिं पि ॥

[३१६८]

इय विसुज्झिर-सुक्क-लेसस्सु
निग्घाइय-घाइयह निहय-राय-दोसावयासह ।
उज्जालिय-निय-कुलह झत्ति तुट्ट-संसार-पासह ॥
पव्वण-सारय-रयणियर- किरणावलि-संकासु ।
गयसुकुमाल-महारिसिहि हुउ वर-नाण-पयासु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१६९]

तयणु दलिउण कम्म-नियलाइं

भव-संभवि तणु चइवि तियस-विसर-पयडिय-महा-महु ।
नियकित्ति-सुहा-रसिण धवलिऊण तइलोय-गुरु-गिहु ॥
सुगहिय-नामु सुलद्ध-जसु वियलिय-सयलावाहु ।
गयसुकुमालु सिवह गयउ केवल-नाण-सणाहु ॥

[३१७०]

भुवण-वंधु वि भविय वोहंतु

चिरु विहरिवि धर-वलइ पुण वि पत्तु उज्जाणि तम्मि वि ।
ता सयलिण निय-वलिण सहिउ कण्हु आगंतु पणमिवि ॥
पय-पउमइं नेमिहि पुरउ उचियासणि उवविट्ठु ।
सुणइ स-वित्थर धम्म-कह स-परियणो वि पहिट्ठु ॥

[३१७१]

तयणु कण्हिण नियय-माहप्प-

अणुरंजिय-माणसिण भणिउ पुरउ सिरि-नेमिनाहह ।
भुवण-प्पहु कहसु मह दलिय-सयल-रिउ-विडवि-साहह ॥
किं कत्तु वि हविहइ मरणु पुरिहि वि वारवईए ।
अंतु हविस्सइ किसु कह-वि कंचण-रयण-मईए ॥

[३१७२]

ता पयंपइ नेमि-जिण-इंदु

किं केसव भव-गहणि अत्थि जं न सु-घडिउ वि विहडिउ ।
वहु-वइयर-कारिणिहिं पुव्व-कम्म-परिणइहिं विनडिउ ॥
इय तुज्झ वि निय-वंधवहं करिण जराकुमरस्सु ।
हविहइ मरणु दुवालसहं वरिसहं अंति अवस्सु ॥

३१७०. ३. क· तंनि वि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१७३]

एत्थ-अंतरि मुक्क-नीसासु
सयलो वि जायव-निवहु नियइ समुहु तसु जरकुमारह ।
इयरो वि पहु-वयणु सुणिवि गयउ गुरु-खेय-भारह ॥
निय-वयणु वि सुहि-सज्जणहं दंसेउं पि अ-सक्कु ।
धरणि-समुह-विणिहित्त-मुहु लज्जिरु मोणिण थक्कु ॥

[३१७४]

अह पुणो-वि-हु भणिउ जिणवरिण
जह — आसि इहेव पुरि नियय-किरिय-आसत्तु तावसु ।
पारासर-नामु कय- निंदु-रमणि-संगहिण अवजसु ॥
जउण-दीवि जं तसु गयह जायउं नंदणु तेण ।
दीवायण इय नामु किउ सुयह जणणि-जणएण ॥

[३१७५]

पत्त-अवसरु तेण तावसिय
पडिवज्जिय दिक्ख तह गहिउ बंभु अच्चंत-दुद्धरु ।
भोयव्वु जहन्निण वि छट्ठ-तवह इय नियमु सुंदरु ॥
अब्भुवगमिउण अणुकमिण वालिस-जण-कय-तोसु ।
संपइ अच्छइ सु वारवइ- पुरि-उज्जाणि स-दोसु ॥

[३१७६]

दाहु कारिहइ वारवइए वि
दीवायणु सु ज्जि रिसि मइर-मत्त-जर-कुमर-दोसिण ।
तयणंतरु खुहिय-मण- पसरु कण्हु परिहरिउ हरिसिण ॥
वंदिवि नेमि-जिणाहिवइ वारवइहिं गंतूण ।
सयमवि वलभद्दिण सहिउ तुरय-रयणि चडिऊण ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१७७]

सयल-नयरिहिं परियडेऊण
पडि-मंदिरु भणइ – नणु नेमि-जिणिण उवसग्गु अक्खिउ ।
परिचिट्टइ सयलह वि पुरिहि इय स-गुरु-देव-सक्खिउ ॥
अणु-गुण-वय-सिक्खा-वयइं परिवालह जत्तेण ।
गुरु-जिणवर-पय-पंकयइं थुणह एग-चित्तेण ॥

[३१७८]

तयणु वयणिण हरिहि वारवइ-
जणु सयलु वि आयरिण कुणइ धम्म-कम्माइं निच्चु वि ।
फोडेवि सुर-भायणइं चयइ सयलु मइराए किच्चु वि ॥
कण्हाएसिण पुणु सयल किण्ण-पिट्ठ-मज्जाइं ।
सह भंडिहिं सगडिहिं करिवि पुरिहि वहिहिं नीयाइं ॥

[३१७९]

अह कयंवय-नाम-वण-गहणि
कायंविर-अडइयहं पव्वयम्मि कायंविराभिहि ।
कायंवरि-नामियह गुहह सविह-देसम्मि अभिमुहि ॥
फोडिय लोगिण गिरि-सिहरि भायण नीसेसाइं ।
किन्न-मइर-पिट्ठइं वि तहिं परिउज्झिय सयलाइं ॥

इओ य –

[३१८०]

सुणिवि नेमिहि वयणु वलभद्द-
लहु-वंधु सिद्धत्थ-इय- नाम-पयडु सारहि तसु च्चिय ।
भव-भावुव्विग्ग-मणु निसिय-हियउ सिव-संगमि च्चिय ॥
भणइ – भाय पसिऊण मइं अणुमन्नसु हउं जेम्व ।
आराहिवि नेमिहि चलण न सहउं दुक्खइं एम्व ॥

३१८०. ३. सरिहि corrected as सारहि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१८१]

तयणु स-करुणु भणइ वलएवु

नणु भाय इह किमु भणहुं किंतु चरिम-चारित्त-रयणिण ।
होयव्वु अवस्सु तइं कहिं-चि ठाणि देवय-विसेसिण ॥
ता कत्थ-वि विसमहं दसहं तइं हउं रक्खेयव्वु ।
इयरु वि पडिवज्जेवि इहु तुरिउ कुणइ कायव्वु ॥

[३१८२]

ते-वि पिट्ठय-मइर-किन्नाइं

छहि मासिहि विविण-तरु- कुसुम-फलिहि मीसिय-सुयंधय ।
कायंबिरि-गुहहं गय हूय मइर अच्चंत महुरय ॥
अवरम्मि उ अवसरि विहिहि वसिण पहुत्ति वसंति ।
रेवय-गिरि-उज्जाणि जदु- कुमर-वग्गि संपत्ति ॥

[३१८३]

विज्ज-जोगिण नरिण एगेण

हिंडंतिण कह-कह-वि गरुय-तण्ह-परिसुसिय-वयणिण ।
पुव्वुज्झिय असम-रस मइर दिट्ठ सुक्कंठ-हियइण ॥
तयणंतरु तिण पीय सुर आ-कडि-कंठ-पमाण ।
आगय संवाइ णु वि तहिं जायव-कुमर-पहाण ॥

[३१८४]

तयणु तेहिं वि पीय-मइरेहिं

हिंडंतिहिं विहि-वसिण गिरि-गुहाए सो चेव तावसु ।
दीवायणु तव-सुसिउ जिण-पणीय-संभावि-अवजसु ॥
वीहंतउ वारवइ-पुरि- दाह-जणिय-पावस्सु ।
दिट्ठउ उस्सग्गेण वि उ पेक्खिरु समुहु महिस्सु ॥

३१८१. ५. क. देव्वयं.
३१८३. २. क. हिंडंतिंण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१८५]

अह समं पि-हु किलकिलंतेहिं

पसरंत-तालारविहिं मइर-मइण वियलंत-चित्तिहिं ।
अक्खुडिरिहिं पडिरिहिं वि सेल-सयल-भज्जंत-गत्तिहिं ॥
मुट्ठि-लेट्ठुक-पयंपिइहिं कह-कहमवि अवरद्धु ।
जह वारवइहि दाह-कइ कुणइ नियाणय-वंधु ॥

[३१८६]

एहु वइयरु मुणिवि महुमहणु

वलभद्दिण परियरिउ गहिय-सार-परिवारु तक्खणि ।
चडिऊण तुरंगमिहिं तम्मि चेव संपत्तु काणणि ॥
अणुणय-वयणिहिं वहु-विहिहि उवसामेउ पयट्टु ।
दीवायण-तावस-अहमु भणइ य रोस-वसट्टु ॥

[३१८७]

हंत पाविहिं तुज्झ तणएहिं

मिलिऊण सव्वेहिं हउं नियय-झाण-अज्झयण-लीणउ ।
निक्कारणि ताडियउ लट्ठि-मुट्ठि-घाएहिं दीणउ ॥
सु-विसेसिण दुव्वयण-सय- खग्गिण हणियउ तेम्व ।
तइं मुसलि वि मिल्लेवि पुरि इह डहेसु हउं जेम्व ॥

ततश्च—

[३१८८]

अहह मुर-रिउ करिसि म खेउ

इयरस्सु कस्सु वि उवरि विहिहि वसिण कु व कु व न पावइ ।
भव-विवणि दुहावणइ मण-अगोयर वि विविह-आवइ ॥
निय-सुह-असुहइं पुव्व-भव- समुवज्जियइं चएवि ।
को गेण्हइ जसु अवजसु व भद्दु अ-भद्दु व देवि ॥

३१८५ ६. क. ख. लेट्टुक.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१८९]

पाव-तावसु इमु वि पडि पिउहु

जं रोयइ तं कुणहु एम्व कण्हु अणुसिट्ठु मुसलिण ।
वारवइहिं गंतु दिण गमइ के-वि ता जणिण पउरिण ॥
नेमि-जिणेसर-पय-पुरउ पडिवन्नउं चारित्तु ।
दीवायण-अहमाहमु वि पुरि-वह-अविरय-चित्तु ॥

[३१९०]

मरिवि पत्तउ अग्गि-कुमरेसु

ता निययन्नाण-वल- मुणिय-पुव्व-भव-भावि वइयरु ।
अलहंतउं धम्म-पर- नयर-जणहं संहरण-अवसरु ॥
अप्पु पयासिवि गउ पुरिहि अह वारस-वरिसाणि ।
अइवाहइ कुव्वंतु पुर- लोउ धम्म-कम्माणि ॥

[३१९१]

कण्ह-हलहर-कहिय-विहि-पुव्वु

तयणंतरु अइगयउ अम्ह एहु उवसग्गु खेमिण ।
इय चिंतिरु पुण-वि तह चेव विसय सेवइ पमाइण ॥
अ-वियाणंतउ क्रित्तिय वि वुड्ढि दियह थक्कंत ।
अह उप्पाय सुराहमिण तिण दंसिय पसरंत ॥

[३१९२]

लेप्पमइय विहसहिं पुत्तलय

उप्पाडिय-भमुह-जुय नियहिं चित्त-आलिहिय देवय ।
कंपंति मंदिर-सिहर तरुवरा वि दीसंति दीवय ॥
आरन्नय-सावय भमहिं सयल-पहिहि नयरीए ।
दियहि वि गह-गणु पयडिहुउ हुयउ कंपु धरणीए ॥

३१९०. ५. क. जणह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१९३]

धूमु मुंचहिं मुहिहि गह-चक्क
निवडंति उक्का-सहस हुयउ तरणि-मंडलु स-छिड्डउ ।
अंगारिहि वरिसियउ जलउ हुयउ निग्घाउ वड्डउ ॥
ससि-सूरहं वि अ-पव्वि हुउ राहु-ग्गह-आयासु ।
भमइ रुवंतु सु पाव-सुरु नयरिहिं जम-संकासु ॥

[३१९४]

नियइ नायर-जणु वि सिविणेसु
रत्तंवर-कुसुम-कय- सोहु रत्त-चंदण-विलेविउ ।
दाहिण-दिसि-सम्मुहउं अप्पु पंक-मज्झेण कड्ढिउ ॥
तयणंतरु कि-वि भविय-जण जाय-चरण-परिणाम ।
तियस-विसेसिहि नीय पहु- पुरउ हूय सुह-धाम ॥

[३१९५]

एत्थ-अंतरि पाव-तियसेण
संवत्तग-पवणु जुग- अंत-काल-सन्निहु विउव्विवि ।
तिणु कयवरु कट्ठु फलु कुसुमु दु-पउ चउ-पउ वि आणिवि ॥
पक्खंतरहं वि वारसय- जोयण-पहह गहेवि ।
वारवइहि नयरीए तहि मज्झ-पएसि खिवेवि ॥

[३१९६]

स हि नयरिहि वहिहिं कुल-कोडि-
वाहत्तरि मज्झि पुणु पिंडिऊण एगत्थ अइरिण ।
सव्वासु वि दिसिहिं पडि- भवणु खिविय वज्जग्गि अहमिण ॥
तयणंतरु सय-सहस-गुण जालोलिहि दिप्पंत ।
सा पुरि दीवायण-खिविय- वज्जग्गिण अक्कंत ॥

३१९३. २. क. सयस. ५. वड्डउं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३१९७]

तयणु नायर मुक्क-पुक्कार
परिकुट्टिर-वच्छयलु भणहिं भुवण-एक्कल्ल-मल्लय ।
परितायह कण्ह निय- लोउ सयल-जय-पिसुण-सल्लय ॥
इय विलवंत मरंत निय- नायर-जण पेक्खंतु ।
धाविरु हरि एगत्थ अवलोयइ वहुउ जलंतु ॥

[३१९८]

पडिर-कुंजर-मुक्क-चिक्कारु
डज्झंत-तुरंग-सय- सिमिसिमि-त्ति-रव-विहिय-निस्सणु ।
परिफुट्टिर-वंस-सय- तडतड-त्ति-पडिसद्द-भीसणु ॥
हा नारायण हा मुसलि हा सिरि-नेमि-जिणिंद ।
रक्खहि रक्खहि नियय-जणु जय-नय-पय-अरविंद ॥

[३१९९]

अरि तणुब्भव अहह मह मित्त
हा वंधव हा जणय हा समुद्दविजयावणिप्पहु ।
हा जायव-कुल-तिलय सउरि पणय-जणु किन्न रक्खहु ॥
इय स-करुण निय-नायरय- जण-उल्लाव सुणंतु ।
पडिउवयारु विहेउ तहं वयणेण वि अ-तरंतु ॥

[३२००]

खिविवि एगहं नियय-रह-रयणि
सह देवइ-रोहिणिहिं सउरि-राउ ता कण्ह-मुसलिहिं ।
परिचोइय रह-तुरय किंतु ते-वि डज्झंत जलणिहिं ॥
पय-मित्तु वि न समुक्खिवहिं ता उत्तरिवि सयं पि ।
धुरि लग्गिवि कड्ढियउ रहु नीलंबर-हरिहिं पि ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२०१]

अह ति निसुणिर करुण उल्लाव

नीसेस-नायर-जणहं पुरि-दुवारि कहमवि पहुत्तय ।
ता तियसाहमिण तिण पुरि-कवाड दु-वि परिजलंतय ॥
झत्ति पिहेवि नियंतियइं गाढ इंदकीलेण ।
तयणंतरु हलहर-हरिहिं हणिउण चलण-तलेण ॥

[३२०२]

चुन्न-पेसिण दु-वि कवाडाइं

लीलाइ वि पीसियइं किंतु रहु न ते तरहिं कड्ढिउ ।
सोयंति य वाहु-जल- भरिय-नयण – नणु कह सु चड्डिउ ॥
अम्ह मडप्फरु जेण लहु कोडि-सिला उक्खित्त ।
संपइ पुणु इहि अम्हि रह- आयड्ढणि वि अ-सत्त ॥

[३२०३]

इय स-खेयहं कण्ह-हलहरहं

सविहम्मि समुल्लविउ गयण-ठिइण तिण असुर-अहमिण ।
नणु भणिउ अहेसि मइं धुवु नियाणु तइयहं कुणंतिण ॥
दु-वि जि तुम्हि रक्खेसु हउं अणु-मेत्तं पि न सेसु ।
ता मिल्लहु निय-पिउ-जणणि-रक्खणि माण-विसेसु ॥

[३२०४]

तयणु सउरिण पियहिं सहिएण

संलत्तउं – नंदणहु जाहु तुम्हि अप्पाणु रक्खहु ।
मा अम्हहं कारणिण तुमि वि सुयहु जम-गेहु पेक्खहु ॥
तुम्भिहिं जीवंतेहिं धुवु जीवइ जायव-वंसु ।
इहरह जायव-नामह वि नित्तुलु हविहइ भंसु ॥

३२०३. १. क. संखेयह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२०५]

इय कहंचि-वि जणणि-जणयाहं
उत्तरोहिण हरि-मुसलि नीहरेउ जिन्नम्मि काणणि ।
परिसंठिय खणु नियहिं वाहु-जलिण धोइयइ आणणि ॥
डज्झिर नयरि रुयंत सिसु कंदिर पुर-नर-नारि ।
जंपिर पगइ वि – रक्खि हरि रक्खि तुहुं वि हलहारि ॥

[३२०६]

एम्व वहु-विह नियय-नयरीए
अ-समंजस नियवि हरि मुक्क-धाहु अइ-दीणु पलवइ ।
हा देव्व मह वाहु-वलु कत्थ कत्थ सा सुकय-संपइ ॥
कहिं ति महारा जक्ख गय कहिं त महारउं चक्कु ।
काल-कंस-जरसंध-हरु कहिं त मज्झ वलु थक्कु ॥

[३२०७]

सट्ठि-समहिय-समर-ति-सयस्सु
जय-पावणु सुकय-भरु गयउ कत्थ सो मज्झ संपइ ।
इय करुणउं विलविरह हरिहि पुरउ वलभद्दु जंपइ ॥
नणु वंधव किह तुहुं वि इम्व पागउ व्व विलवेसि ।
तसु सिरि-नेमिहि वयणु इहु कि न तुहुं हरि सुमरेसि ॥

[३२०८] जं उस्सया सिरीए पडणंता चेव इत्थ सव्वे-वि ।
रुण्ण-तण-तरुवराणं जा पज्जंतम्मि सवक्काणं ॥

[३२०९] पुन्नोदयम्मि उदओ रिद्धीणं तम्मि झिज्जमाणम्मि ।
झिज्जइ इयरो वि कमेण दो-वि भंसंति पज्जंते ॥

३२०६. ८. क. ख. जरसंधु.

३२०७. ८. तसु is added marginally in क.; ख. omits it. ९. तुहुं नरवर सुमरेसि in क. is marginally corrected as तुहुं हरि सुमरेसि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२१०] नहि इंदजाल-भव-विलसियाणं विज्जइ इहंतरं किं-पि।
किंतु निविडा स गंठी का-विहु मोहस्स जीवाणं ॥

[३२११] जेण अ-थिरं पि वत्थुं मुणंति सव्वायरेण सु-थिरं ति।
जमिहारंभ-सयाइं सासय-वुद्धीए चालंति ॥

[३२१२] ता जिणवरिंद-भणियाइं ताइं निवसंति माणसे जस्स।
सो किह पलवइ वालु व्व गरुय-वसणे वि संपत्तो ॥

[३२१३] इय सुमरसु जिण-वयणं अवलंवसु धीरिमं थिरो होसु।
साहस-धणाण पुणरवि संपत्तीओ न दुलहाओ ॥

[३२१४]

इय विवोहिउ विविह-वयणेहिं
हरि मुसलिण संचलिउ समुहु पंडु-महुराए कइमवि।
एत्थंतरि वारवइ- पुरिहिं डज्झमाणिहिं सवत्तु वि ॥
हलहर-नंदणु दीण-मुहु दीह-मुक्क-पुक्कारु।
आरुहिउण घरुवरि भणइ कुज्जयवार-कुमारु ॥

[३२१५]

सीसु जइ हउं नेमि-सामिस्सु
जइ चरम-सरीरु हउं सच्चु वयणु जइ नेमि-नाहह।
ता डज्झहुं किह णु इह मज्झि पडिउ वारवइ-दाहह ॥
इय विलविरु जंभग-सुरिहिं हरिउण पल्लव-देसि।
नियउ सु नेमि-प्पहु-पुरउ चरण-ग्गहणह रेसि ॥

[३२१६] वत्तीस-सहस्सेहिं हरि-महिलाहिं स-राम-भज्जाहिं।
जायव-नर-नारीहिं य कुमरेहिं तत्थ वि ठिएहिं ॥

[३२१७] सिरि-नेमि-जिणं चित्ते काऊणं अणसणाइं विहियाइं।
छम्मासेणं दड्ढा पुरी वि वूढा य जल-निहिणा ॥

३२१३. १. विरो for थिरो.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२१८]

कण्ह-मुसलि वि कंद-फल-मूल
उवजीविर सरिय-सर- वावि-कूव-पाणिय पियंतय ।
अन्नाय-सरूव-सिरि हत्थिकप्प-नयरम्मि पत्तय ॥
अह तण्हा-छुह-पीडियउ कण्हु भणेइ – कहं-पि ।
भाय न सक्कहुं उक्खिविउ धुवु हउं पय-मेत्तं पि ॥

[३२१९]

तयणु केसवु मुइवि उज्जाणि
मज्झम्मि उ तसु पुरह पविसिऊण अंगुलिय-रयणिण ।
कंदोइय-घरि पवरु भोयणं पि कारविउ मुसलिण ॥
अह अवगय-वइयरिण धयरट्ठय-निवइ-सुएण ।
निविण महावल-नामगिण रोहिउ मुसलि खणेण ॥

[३२२०]

ता गहेविणु करिण करि-खंभु
विक्खोहिय-पर-वलिण सीह-नाउ परिमुवकु मुसलिण ।
अह विग्गहु हुयउ कु-वि वंधुहु त्ति चिंतेवि कण्हिण ॥
उज्जाणह आविवि गहिवि एगु पओलि-कवाडु ।
मुसलि-सहिउ हरि रिउ-कुलह कुणइ दिसासु भम्वाडु ॥

[३२२१]

अत्थ-दसहं वि गयउ दिण-इंदु
किं कह-वि खज्जोयगिहि जिप्पइ त्ति जइ-वि हु विवक्खिय ।
अइ-वहुय तहा-वि हरि- वलिहिं जमह अतिहित्ति दक्खिय ॥
तयणु दुवे-वि ति पत्त-जस गंतु सरोवर-तीरि ।
भुंजिवि सिसिरु पिएवि जलु कु-वि दुहु समहिं सरीरि ॥

३२२०. २. क. विखोहिय.
३२२१. ९. क. सरीरिं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२२२]

किं तु पुणरवि सरिय-पुव्विल्ल-
वारवइ-दाह-दुह वाहु-सलिल-संपुन्न-लोयण ।
कोसुम्भ-महा-गहणि पत्त कमिय-बहु-संख-जोयण ॥
अह मउलिय-वयणंवुरुहु पूरिय-गल-सरणिल्लु ।
भणइ कण्हु तण्हा-सुसिउ तुहुं वंधवु नियइल्लु ॥

[३२२३]

भाय पाइवि सिसिरु पाणीउ
जीवावहि मइं कह-वि इहरहा उ तण्हाइ-दोसिण ।
परिफुट्ट-नयणेहिं मइं अज्ज नूण मरियव्वु अ-वसिण ॥
तयणु – अहह मा भणसु इम्व जइ मरिसहिं तुह सत्तु ।
हउं लहु अमय-विवागु जलु तइं पाएसु निरुत्तु ॥

[३२२४]

इय भणेविणु करिवि कोमलिहि
वड-पत्तिहि सत्थरउ तत्थ ठविवि कण्हडु स-हत्थिहिं ।
इयरो-वि हु पय-उवरि ठविवि पाउ कोसुम्भ-वत्थिहिं ॥
संपच्छाइय-सयल-तणु उल्लरिउण झूरंतु ।
चिट्ठइ जा ता हलहरु वि जल-कइ चलिउ तुरंतु ॥

[३२२५]

इत्थ-अंतरि विहि-निओएण
तहिं पत्तिण कर-कलिय- धणुह-वाण-अइभीम-रूविण ।
इहु चिट्ठइ सुत्तु मिगु इय मुणेउ जर-कुमर-पाविण ॥
आयन्नंतिण मग्गणिण हउ हरि चलण-तलम्मि ।
अह – अरि अरि वियरइ कवणु पय-पहारु पडियम्मि ॥

३२२२. ४. क. कोसुंव

३२२५. ७. क. तरंमि ख. लंलमि.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२२६]

अहव अज्ज-वि होउ मह समुहु
अप्पाणु पयासिउण	जेण दप्पु हउं दलउं तस्सु वि ।
अह – नूण न हरिणु इहु किंतु सहु माणुसह कस्सु-वि ॥
इय चिंतंतु जरा-कुमरु	हरि-सविहिहिं संपत्तु ।
ता जंपिउ कण्हेण – इहु वंधव को वुत्तंतु ॥

[३२२७]

तयणु दीहरु नीससेऊण
जर-कुमरु समुल्लवइ	भाय तम्मि समयम्मि नेमिण ।
जं कहिउ दुवालसहं	समहं अंति तुहुं जर-कुमारिण ॥
हम्मसि इय निसुणेवि हउं	वंधव-रक्ख-निमित्तु ।
वसिम-देसु सयलु वि चइवि इह थक्कउ आगंतु ॥

[३२२८]

किंतु मह समु हुयउ अ-कयत्थु
तहं तं-पि-हु भाय मह	कहसु केम्व हउं पावु सुज्झिसु ।
तह पच्छिम-वइयरु वि	को-वि उचिय-वयणेहिं साहसु ॥
अह नियं-वइयरु साहिउण भणइ कण्हु – वेगेण ।
गच्छसु पंडव-सविहि तुहुं सह कुत्थुभ-रयणेण ॥

[३२२९]

तयणु कुत्थुभ-रयणु वियरेवि
साहेवि स-वइयरु वि	कहिज मज्झ मिच्छामि-दुक्कडु ।
जइ पुणु तइं पेक्खिसइ	एण्हि मुसलि ता जेम्व मक्कडु ॥
तिम्व आरुहिउण सिर-उवरि तइं मारिसइ अवस्सु ।
जं मह विप्पिय-गारयह	एहु घणाइ न कस्सु ॥

३२२६. ५. क. म्माणुसह.

३२२७. ७. क. रक्खहि मित्तु.

३२२८. १. क. अकयत्थ. ६. क. साहियउण. ७. क. कण्ह.

Jain Education International 2010_05	For Private & Personal Use Only	www.jainelibrary.org

[३२३०]

इय सुणेविणु झत्ति जर-कुमरु
तह चेव करेइ अह निसुय-सयल-पुव्वुत्त-वइयर ।
अक्कंदहिं तह कह-वि जह रुयंति विहय वि स-तरुवर ॥
फोडहिं मत्थय पाहणिहिं तोडहिं केस-कलाव ।
मुच्छ-विवस निवडहिं महिहिं पयडहिं करुण-पलाव ॥

[३२३१]

इओ य–

फुरिय-वेयण-भरिण विहुरंगु
परिचिंतइ कण्हु जह धन्न ते ज्जि अक्कूर-पमुहय ।
मह बंधव नेमि-पहु- सविह-गहिय-चारित्त-धम्मय ॥
तह कय-किच्च य राइमइ- पमुह-राय-कन्नाउ ।
जाहिं इमेरिस-भव-दुहहं सलिलंजलि दिन्नाउ ॥

[३२३२]

काम-मोहिउ कूड-अहिमाणु
समरंगण-निहय-बहु- जंतु-जाउ कारुण्ण-वज्जिउ ।
अ-कयत्थउ हउं जि पर मोह-राय-सेन्नेण तज्जिउ ॥
जइ तइयहं नेमिहि पुरउ निय-बंधविहिं समेउ ।
चरणु पवज्जहुं ता न मह जायइ दुह-भरु एउ ॥

[३२३३]

अज्ज-वि पणमहुं सिद्ध गय-बंध
अरिहंत भाविण थुणहुं जाहुं सरणि आयरिय-पवरहं ।
उवज्झायहं पय सरहुं नमहुं पाय तहं साहु-वसहहं ॥
खामहुं चउ-विहु संघु हउं निंदहुं निय-अइयार ।
कुणहुं सेव नेमिहि पहुहु चयहुं पाव-वावार ॥

३२३०. १. क. भणइ corrected as झत्ति. ख. भणइ.
३२३१. ७. क. कन्नाओ. ९. क. दिन्नाओ

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२३४]

इय विसुज्झिर-चित्त-भावह वि
आराहिय-नेमिहि वि तियस-सिहरि-थिर-पगइ-मणह वि ।
पसरंत-वहु-वेयणह फुरिउ हियइ तसु असुर-अहमु वि ॥
तयणंतरु चिंतिउ हरिण अहह तेण पावेण ।
हउं असुहाविउ तवसिण वि सयल-नयरि-डाहेण ॥

[३२३५]

किं न सु हविहइ समउ मह जेण
तसु उयरह कड्ढिउण जणय-जणणि-सुहि-सयण-वंधव ।
वारवइ वि तारिसय कणय-रयण-मय स-घर-जायव ।
हउं अप्पणु इच्छिउ करिसु निग्गहिउण सु हयासु ।
इय चिंतिरु हरि नियडि-हुय- दुक्कय-काल-प्पासु ॥

[३२३६]

मरिवि पत्तउ तइय-पुहईए
पावेइ य स-कय-फल अच्छि-निमिसु अंतरु अ-पेच्छिरु ।
एत्थंतरि मुसलि जलु गहिवि पत्तु वेगेण पलविरु ॥
अह परिचिट्ठइ सुत्तु हरि इय चिंतिरु मोणेण ।
चिट्ठइ उववििसिउण सविहि किं पुण हरिहि खणेण ॥

[३२३७]

कसिण मच्छिय वयणि लग्गंत
अवलोइय हलहरिण तयणु जाव अवणीउ अंवरु ।
ता अ-गहिय-नाम दस पत्तु कण्हु दिट्ठउ अहंतरु ॥
असरिस-नेह-ग्गह-वसिण जाय-हियय-संघट्टु ।
मुच्छ-विलंघलु पडिउ वलु मउलिय-मुह-कंदुट्टु ॥

३२३६. ६. क. सत्तु. ८. क. उववेसिउण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२३८]

कह-वि कंचि-वि पत्त-चेयन्नु

उट्ठेविणु मिल्लिउण सीह-नाउ वहिरिय-नहंतरु।
साडोवु समुल्लवइ अहह अत्थि जइ इत्थ कु-वि नरु ॥
सो मह पयडीहवउ इह जिह तसु भंजहुं दप्पु ।
सुत्तह मह वंधुहु हणणि केरिसु रिउहु मडप्पु ॥

[३२३९] रोहिणि-सुयं अ-हंतुं निहयं जो मन्नए य गोविंदं ।
थोवं चिय नंदिस्सइ सो पावो को-वि मूढप्पा ॥

[३२४०] मुक्काउहं पसुत्तं मत्तं वालं मुणिं च थेरं च ।
जुवइं च निसुंभइ जो दुन्नि-वि लोगा हया तस्स ॥

[३२४१] महया सद्देणेवं भणमाणो तं वणं भमइ रामो ।
आगच्छइ य अभिक्खणमुविंद-पासम्मि दुह-तविओ ॥

[३२४२] तत्तो सो अलहंतो वि सुद्धिमेत्तं पि कण्ह-मरणस्स ।
आसा-मुक्को कण्हं अवगूहेऊण पलवेइ ॥

[३२४३] हा कण्ह महा-वल हा मह वंधव कणिट्ठ गुण-जेट्ठ ।
मोत्तूण मं अणाहं हा कत्थ गओसि अ-कहेउं ॥

[३१४४] किं होही को-वि जए सो पुरिसो जेण दिट्ठ-मित्तेण ।
कण्ह पुणो वि लहिस्सं तं तुह संगम-पमोयमहं ॥

[३२४५]

उट्ठि वंधव चयहि परिहासु

मा हविहइ किं-पि छलु तुज्झ इत्थ वण-गहणि वसिरह ।
इहु संझा-कालु इय को णु समउ तुह पणय-कुविरह ॥
कुल-देविउ वण-देविउ वि तह दिसि-वाल तुमे वि ।
कि न वुल्लावहु वंधु मह कहमवि अणुसासेवि ॥

३२३८. ८. क. सत्तह.
३२४२. १. क. ततो.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२४६]

भाय करिहि-न संझ-कायव्वु

किं कोविण मज्झुवरि करिसु तुज्झ विप्पिउ न कहमवि ।
मई सविह-ट्ठियइ तुह समुहु विसमु जोयइ न अन्नु वि ॥
सुत्तउ सीहु कु जग्गवइ करिहि कु गेण्हइ सप्पु ।
तुह अवराहु करेवि कु व भाय विगोयइ अप्पु ॥

[३२४७]

घूय विरसहिं फुरहिं सिव-सद्द

वेयाल समुल्लसहिं ललहिं भूय नच्चंति साइणि ।
कीलंति पिसाय-सय पिउ-वणेसु पसरंति डाइणि ॥
ता सोवद्दवु ठाणु इहु वंधव परिहरिऊण ।
चल्लि-न गम्मइ वसिमि पुरि हरि विलंवु चइउण ॥

[३२४८]

इय पयंपिरु पडिरु धरणीए

उट्ठंतउ पुणु खणिण खणिण गीउ गायंतु मणहरु ।
नच्चंतउ पुणु खणिण खणिण मुक्क-पुक्कारु दुहयरु ॥
खंधि करेविणु हरि-मयगु महिहिं भमिउमारद्धु ।
अह सिद्धत्थिण पत्त-सुर- भविण सु तह उवलद्धु ॥

[३२४९]

तयणु धिसि धिसि कम्म-परिणामु

सो एण्हि नासिवि गयउ कत्थ हरिहि तारिसु मडप्फरु ।
वलएवु वि हुयउ किह गलिय-वुद्धि-माहप्प-वित्थरु ॥
खंधि करेविणु मयउ किह हिंडइ देसिं देसु ।
अहव सु-पुरिसु वि किं कुणइ विवरिय-कम्म-विसेसु ॥

३२४७. ६. क. ठाण.

३२४८. ७. क. महिहिं; ख. महिं.

३२४९. ६. क. ख. गयउ for मयउ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२५०]

इय विचिंतिरु गिरि विउव्वेवि
तहिं अ-खइ उवडिरु पडिरो वि किंतु सम-भाग-धरणिहिं ।
सय-खंडिण भग्गु रहु पयडिऊण ता कट्ठ-खंडिहिं ॥
तहिं-चि जा लग्गउ घडिउ ता रहु सयहा भग्गु ।
अह वलएवु समुल्लवइ जह – धुवु तुहुं अ-विवेगु ॥

[३२५१]

सिहरि सिहरिहि अ-खउ चडिऊण
उत्तरिऊण य अ-खउ रहु जु भग्गु सम-भाग-वसुहहं ।
सो हविहइ सज्जु किह संधिओ वि तइं मुद्ध एम्वहं ॥
इयरु भणइ – जीविहइ इहु तुह वंधवु जइयाहं ।
सज्जउ हविहइ रह-रयणु एहु वि मह तइयाहं ॥

[३२५२]

अह सिलायल-कमल-वण-संड-
आरोवण-गो-मयंग- चारणाइ-वहु-संविहाणिहिं ।
नीलंवरु वोहिउण वहु-विहेहिं भव-विरइ-वयणिहिं ॥
चंचल-कुंडल-आहरणु अप्पु पयासेऊण ।
तह जर-कुमरिण निहणियउ मउ हरि त्ति कहिऊण ॥

[३२५३]

भणइ – हलहर तुज्झ पडिवोह-
कज्जेण मइं चेव इहु विहिउ पुव्व-वइयरु असेसु वि ।
ता किह णु वहेसि हरि करिवि खंधि हुय-कित्ति-सेसु वि ॥
तयणंतरु सुर-हलहरिहिं सक्कारिउ हरि-काउ ।
आसि जु छम्मासावहिण वूहउं विहिय-विसाउ ॥

३२५१. ४. क. सो विहइ; ५. क. ख. संधिउ.

३२५३. ५. क. वि for करिवि. ५. ६. हुयकित्तिसेसु वि तयणंतरु सुर व° ८. क. ज.

Jain Education International 2010_05		For Private & Personal Use Only		www.jainelibrary.org

[३२५४]

एत्थ-अंतरि नेमिनाहेण
मुणि-जुयलउं पेसियउं मुसलि-सविहि संपत्त-अवसरु ।
साहुहिं वि धम्म-कह कहिय सिट्ठु कम्मारि-वइयरु ।।
निंदिय जणणी-जणय-सुहि- सयण-विहव-आवंध ।
सलहिय असम-सुहावहय सिव-कामिणि-संवंध ।।

[३२५५]

तयणु मुसलिण चरण-परिणाम-
पसरंत-सुहोदइण दुर-चइय-निय-मोह-ललिइण ।
भव-भाव-विरत्तइण निसिय-सिद्धि-संवंध-हियइण ।।
साहुहुं तहं पायहं पुरउ पडिवन्नउं चारित्तु ।
तयणंतरु वलहद्द-मुणि कुंदिंदुज्जल-चित्तु ।।

[३२५६]

विहिय-कोसल्लु दुविह-सिक्खाए
संपाविय-कित्ति-भरु साहु-धम्मि दस-भेय-भिन्नि वि ।
चउ-जामिहि पत्त-जसु गय-ममत्तु निययम्मि अंगि वि ।।
मास-क्खमणह पारणइ पविसिरु पुरि एगम्मि ।
खुहिउ नियइ नारी-नियरु सरवर-कूव-तडम्मि ।।

[३२५७]

अह धिसि धिसि कम्म-परिणामु
हा मोहह विलसियइं हइउ हइउ विसयहं विवागु वि ।
जं जायहुं मोहयरु हउं वि विविह-तव-सुसिय-अंगु वि ।।
अहव किमन्निण जहिं हवइ रमणिहिं संचारो वि ।
तहिं न कुणहुं पारण-कइ वि पविसण-वावारो वि ।।

३२५६. ९. क. ख. सरघर°.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२५८]

इय विचिंतिरु मंगितुंगि त्ति
अभिहाणहं पव्वयहं मज्झ-देसि तव-कम्मु सेविरु ।
अइवाहइ दियह वहु- विह अरन्न-जिय-गण-विवोहिरु ॥
पुव्व-जम्म-संगय-मिगिण एगिण कय-पय-सेवु ।
अवरावसरि सु संठियउ उस्सग्गिण गय-लेवु ॥

[३२५९]

अरिरि हणि हणि वंधि वंधेहिं
इहु अम्हहं रज्ज-कइ कुणइ उग्ग-तव-कम्म एरिस ।
इय जंपिर वहु-वलिण सत्तु-राय पसरंत-अमरिस ॥
आरोविय-कोदंड-गुण संधिय-निसिय-सरिल्ल ।
वेढहिं चाउद्दिसिहिं मुणि परिकंपिर-अहरिल्ल ॥

[३२६०]

इत्थ-अंतरि तेण सिद्धत्थ-
अभिहाणिण गुज्झगिण तहिं पएसि आगंतु वेगिण ।
परिमुक्क विउव्विउण रिउहुं समुह सुर-सत्ति-जोगिण ॥
पुच्छच्छोड-प्पडिरविण वहिरिय-मज्झ-दसास ।
खर-कर-नहर-दारणिण पयडिय-पिसुण-त्तास ॥

[३२६१]

कणय-पिंगल-कंति-केसरिहिं
रेहंत-अंसत्थलय वियड-चलण-भर-खुहिय-धरयल ।
स-सरूविण डरिय-रिउ सीह-नाय-वहिरिय-नह-त्थल ॥
पुरिस-वयण सीहंग-लय नारसीह-आयार ।
भुवण-भयंकर चलिय रिउ- समुह कुणंत-पहार ॥

३२५८. ९. क. °लेसु.
३२५९. ८. क. °दिसिहि. ख. °दिसिहिं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२६२]

अहह सुहडिहिं नारसिंहेहिं
सय-सहस-कोडी-गुणिहि हणइ एहु कय-साहु-वेसु वि ।
एण्हिं पि न काउ खमु इय इमस्सु अवराह-लेसु वि ॥
इय चिंतिर पडिवक्ख-निव पसरिय-तेय-सिरिस्सु ।
भय-भत्तिहि चलणिहिं नमहिं सयलि वि राय-रिसिस्सु ॥

[३२६३]

अह ति तियसिण राय-रिसिणा वि
अणुसासिय संत निय- निय-पुरेसु गय अइर-कालिण ।
भयवंतु वि परिविहिय- मास-खवणु दिव्वाणुहाविण ॥
रहयारहं सविहिहिं गयउ मिग-दंसिइण पहेण ।
तयणंतरु परिवड्ढिरिण ससि-निम्मल-भावेण ॥

[३२६४]

मुणिण लिंतिण सुट्ठु आहारु
रहकारिण देंतइण हरिणगेण अणुमोयमाणिण ।
तं कं-पि समज्जिणिउं जं न कहिउ तीरेइ वयणिण ॥
किं पुण अद्ध-च्छिन्नइण निवडंतइण दुमेण ।
ते तिन्नि वि विणिवाइया अह निय-सुकय-वसेण ॥

[३२६५]

असम-सुहयरि कप्पि पंचमइ
तियसिंद-समाण-सिरि हूय साहु-रहयार-हरिणय ।
ता पेक्खिवि बल-सुरिण नरइ हरिहि बहु-दुहइं परिणय ॥
सुमरेविणु सो तारिसउ निय-बंधव-पडिबंधु ।
अवगणिउण सुरयणु सयलु अहिणव-हुय-संबंधु ॥

३२६२. ४. क. खगु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२६६]

तइय-पुहइहिं गंतु हरि-पुरउ
नियं-वइयरु साहिउण असुहु सयलु हरिउण स-सत्तिण ।
चलि बंधव सुर-पुरिहिं इय भणंतु सह नियय-गत्तिण ॥
उप्पाडिवि जा संचलिउ मुसलि-तियसु वेगेण ।
ताव विल(?)ज्जिवि पडिउ हरि धरणियलम्मि खणेण ॥

[३२६७]

भणइ पुणु जह – नेमिनाहस्सु
अ-गणिउण वयणु मइं न किउ धम्मु तइयहं विसुद्धउ ।
आवडिउ विवागु इहु तसु जि मज्झ गुरु-पाव-बद्धउ ॥
नासंतिहिं वि न छुट्टियइ पावहं रिउहुं रिणाहं ।
ता किं इह असुहिण कइण सुरगिरि-धीर-मणाहं ॥

[३२६८]

किंतु एक्कु जि मज्झ असुहेइ
जं तइयहं तारिसु वि दलिय-असम-माहप्प-सत्तु वि ।
वेलवियउ तवसिइण तेण गणिउ न य निमिस-मेत्तु वि ॥
इय निय-सत्तिण तह कह-वि कुणसु सहोयर एण्हि ।
जह मह तसु अवभावणह गलइ हवइ धुवु पण्हि ॥

[३२६९]

तयणु मुसलिण बंधु-नेहेण
विहि-वसिण य अ-करिउण कु-वि वियारु आयइ-सुहावहु ।
आगंतु सुरट्ठयह उवरि तियस-सत्तीए तहिं लहु ॥
सिरि-बारवई-दाहि कि-वि जे आणंदिय सत्तु ।
जे उण दूमिय सुहि-सयण तहं पडिविहिहि निमित्तु ॥

३२६६. १. क. पुहइहि; पुरओ.
३२६९. ९ क. पविहिहि

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२७०]

पाणि-संठिय-संख-गय-चक्कु

पीयंवरु कण्हु कय- उर-पएस-सिरि-वच्छ-भूसणु ।
रामो उण हल-मुसल- पाणि नील-अंवरु अ-दूसणु ॥
वेउव्विउण विमाण-ठिउ गाम-नयर-देसेसु ।
गयणिण पुरि सुहि-सयण-जुउ भमइ सु तियस-विसेसु ॥

[३२७१]

भणइ पुणु – हउं कण्हु सिजिऊण
संहरहुं असेस भुय कुणहुं पुण-वि इच्छाणुरूविण ।
वारवइ वि सिट्ठ मइं हरिवि मइं वि इह नीय गयणिण ॥
ता कत्ता भोत्ता य हउं इयरु सयलु वामोहु ।
इच्छइं जाइवि सिवि पुण-वि आवहुं निम्मल-वोहु ॥

[३२७२] मच्छो कुम्म वराहो नरसीहो वामणो य रामो य ।
रामो रामो य तहा वुद्धो कक्की वि-हु भवामि ॥

[३२७३] सव्व-गओ हं तस-थावरेसु भूएसु नूण चिट्ठामि
भूयाइं मम्मयाइं वइरित्तेहिं न भूएहिं ॥

[३२७४] ता परमप्पा अहमेव इत्थ पूएह तो ममं चेव ।
आराहह निच्चं पि-हु जइ इच्छह अप्पणो रिद्धि ॥

[३२७५]

इय परूविवि सयल-वसुहाए
काराविवि देव-उल- वावि-कूव-पव पमुह-ठाणिसु ।
ठावाविवि तेसु हरि पायडेउ तसु पूय-पगरिसु ॥
पूय कुणंतहं माणवहं वियरिवि विविह-समिद्धि ।
तेण पयट्टिय अज्ज-वि इह दीसइ जणहं कु-वुद्धि ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२७६]

तुंग-पगइ वि विमल-दिट्ठी वि
नाण-त्तय-दिणयरु वि गलियपाय-संसार-बंधु वि ।
सविहागय-सिद्धि-वहु- सुहु वि वद्ध-तित्थयर-नामु वि ॥
जत्थ पयासइ एरिसउं मोह-वसिण मिच्छत्तु ।
तहिं पागय-मणुयाभिमुहु किं तीरइ जंपित्तु ॥

इओ य –

[३२७७]

पंडुमहुरहं जरकुमारेण
परिकहियइ बारवइ- वइयरम्मि तह कण्ह-वइयरि ।
विन्नायइ जण-मुहिण सयल-लोय-अच्चंत-दुहयरि ॥
कोत्थुभ-रयणु वि कर-चडिउ अवलोइवि पुणरुत्तु ।
पलवइ पंडव-जणु सयलु सुरगिरि-गरुय-दुहत्तु ॥

[३२७८]

अवर-अवसरि तेसि पंडवहं
संसार-विहुरिय-मणहं चरण-समउ मुणिऊण नेमिण ।
सिरि-धम्मघोसु त्ति मुणि सहिउ पंचसय-साहु-विंदिण ॥
पेसिउ तहं पडिवोह-कइ आगउ सु वि अइरेण ।
काणणि ता पंडव सयल सह नियं-परिवारेण ॥

[३२७९]

किं-चि वियलिय-सोय-संताव
आगंतु सूरिहि पुरउ सुणिवि धम्म-कह समय-सारिय ।
जर-कुमरु ठवेवि निय- रज्जि दिक्ख कल्लाणगारिय ॥
पडिवज्जहिं पंच वि कमिण वियडिय-निय-अवराह ।
भाविण परिणय-जिण-वयण- वियलिय-सयलावाह ॥

३२७९. २. क. सूरिहिं; ८. क. परिण.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२८०]

सव्वि सेवहिं गुरुहुं पय-पउम

सवि कम्म-क्खय-निरय सव्वि सिद्धि-संगम-सुहासय ।
सवि पालहिं जिण-वयणु सव्वि तुट्ट-संसार-वासय ॥
अवरम्मि उ अवसरि नियमु भीमु मणिण गिण्हेइ ।
भुंजिसु ता जइ भिक्ख मह कु-वि कुंतग्गिण देइ ॥

[३२८१]

तयणु निरसणु ठियउ छम्मास

कंपाविय-धरणियलु अह कहं-चि पुन्नइ अभिग्गहि ।
कय-पारणु वहु-तविहि परिसुसंति सयलम्मि विग्गहि ॥
अह अन्नय सिरि-नेमि-जिण-चलणहं वंदण-रेसि ।
वट्टंतइ कुंदिंदु-सम- सुह-परिणाम-विसेसि ॥

[३२८२]

चलिय पंच वि ते महा-सत्त

विहरंत अणुक्कमिण भुवण-बंधु-साहिय-विहाणिण ।
भयवंतु वि भविय-मण- कमल-तरणि तित्थयर-कप्पिण ॥
मज्झ-देसि नाणा-विहिहि ठाणिहि विहरेऊण ।
रायपुराइ-महापुरिहि उत्तरहं वि गंतूण ॥

[३२८३]

अह चडेविणु गिरिहिं हिरिमंति

विहरेविणु वहु-विहिहिं मिच्छ-पुरिहि बोहेवि भवि-यणु ।
अह दाहिण-दिसिहिं गय- पव्वयस्सु तसु उत्तरेविणु ॥
इय आरियहि अणारियहि वहु-ठाणिहिं विहरेउ ।
अह केवल-नाणेण निय- आउहु अंतु मुणेउ ॥

३२८०. ४. क. जिण°.

३२८१. १. क. तियस–छम्मास; ३. क. पुन्न.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२८४]

असम-भत्तिण विहिय-पय-सेवु
एक्कारस-गणहरिहिं तह मुणीण अट्ठार-सहसिहि ।
समणीणं असम-गुण- निहिहिं सहस-चालीस-संखिहिं ॥
एगुण-सत्तरि-सहस-जुय- इग-सावय-लक्खेण ।
छत्तीसइ सहस वुहिय सावियं लक्ख-तिगेण ॥

[३२८५]

विउसत्तिण सुरिण गोमेह-
अभिहाणिण महिय-पउ विहिय-भत्ति कुसुमंडि-देविहिं ।
तियसासुर-नर-निवह- नहयरेहिं पडिवन्न-सेविहिं ॥
नव-कंचण-कमलहं उवरि विणिवेसंतु पयाइं ।
अणुसासंतउ अणुगमिर- वहुविह-भविय-सयाइं ॥

[३२८६]

कमिण पत्तउ धरणि-तिलयम्मि
सोरट्ठह मंडणइ वउल-तिलय-सहयार-सुंदरि ।
हरियंदण-अगुरु-सिरिखंड-नाय-पुन्नाय-मणहरि ॥
पसरिय-धर-संताव-हर वहु-निज्झर-झंकारि ।
अंक-पुलय-वेरुलिय-पह- अहरिय-तम-पब्भारि ॥

[३२८७]

पत्तु रेवय-सिहरि-सिहरम्मि
अह आसण-कंप-वस- मुणिय-चरम-कल्लाण सामिहिं ।
सविहिम्मि पहुत्त सुर- असुर-नाह सिव-अग्गगामिहिं ॥
अह जह-अहिगारिण कयइ समवरसणि जय-नाहु ।
निवसइ सीहासणि खविय- अंतर-रिउ-वावाहु ॥

३२८४. ४. समणीण वि ८. क. इ added marginally after छत्तीस; ख. छत्तीससहसजुय; ख. लक्ख तिग सावियणिणदक्खेण

३२८७. ९. After this line क. reads औं.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२८८]

तयणु सुर-वर थुणहिं जिण-इंद-
पय-पउमइं भत्ति-भरु जह – जु विविह-दुह-जलण-जलहरु ।
जो वंछिय-कप्पतरु जो य सिद्धि-सुह-कुमुय-ससहरु ॥
समुदविजय-निव-अंगरुहु सिरि-सिवदेविहि पुत्तु ।
तासु ति-कालु वि पय नमहु जिम्व सिवु लहहु निरुत्तु ॥

[३२८९]

जो पयासिय-भुवण-परमत्थु
जो सयल-संसय-हरणु जो समग्ग-रिउ-वग्ग-वारणु ।
जो धवलिय-ति-जय-जसु जो य भुवण-अहिलसिय-कारणु ॥
जो भव-जलहि-पडंत-जण- तारण-पवर-तरंडु ।
सो भवियहु जिणवरु सरहु गुरु-गुण-रयण-करंडु ॥

[३२९०]

तं जि वंधवु तं जि सुहि पुत्त
तं चेव मह माय-पिय तुज्झ विरहि हउं रइ न पांवहुं ।
तुह सामिय नियडतणु पुणु कयत्थु अप्पउं विभावउं ॥
इय पहु तुहं निय-पय-पुरउ तह वियरहि संवासु ।
जह मह जायइ मूलह वि दुह-दालिद-विणासु ॥

[३२९१]

चलिरि जोव्वणि धणि अ-साहीणि
चलि जीविइ छाहि-समि मह न सामि पडिवंधु कत्थ-वि ।
इय चिंतिवि किं-पि पउ देहि नाह तं वससि जत्थ-वि ॥
जं निय-भिच्च-परम्मुहा होंति न सामिय लोइ ।
इय भावेविणु कुणसु तह जह पहु जुत्तउं होइ ॥

३२८८. ९. जेम्व.

३२९०. ३. पाम्वहु; ५. कयत्थु अत्थु अप्पउं; ६. क. पुरओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२९२]

एम्व गग्गर-गिरिहिं पुणरुत्तु
सिरि-नेमि-जिणेसरह पाय-पउम थुणिऊण सुर-वर ।
अणुमच्छिर-तिरिय-नर- खयर-सिद्ध-गंधव्व-किन्नर ॥
उचिओचिय-ठाणेसु ठिय सिर-विरइय-कर-कोस ।
निसुणहिं सामिहिं धम्म-कह घण-गहीर-निग्घोस ॥

[३२९३]

अह कहेविणु उभय-भव-भावि-
सुह-कारण धम्म-कह दाउ विविह-अणुसट्ठि संघह ।
पव्वाविय पउर-नर देस-विरइ वियरेवि अन्नह ॥
के वि करिवि संमत्त-धर के-सि वि नियम-विसेस ।
किं वहुइण सिव-नयर-पहि लाइवि जीव असेस ॥

[३३९४]

एम्व-कारिण वासवि गिह-वासि
कुमरत्तिण वरिस-सय तिन्नि तयणु चारित्तु वेप्पिणु ।
चउपन्न-दिणाइं छउमत्थ- भाव-जोगिण गमिप्पिणु ॥
चउपन्नूणय-वास-सय सत्त धरइं विहरेवि ।
केवलि-परियाएण पहु भविय-कमल वोहेवि ॥

[३२९५]

अंति मासिय-तविण जय-वंधु
वग्घारिय-कर-जुयलु खविय-सयल-भव-भावि-कलि-मलु ।
पडिवोहिय-भविउ वर- नाण-चरण-दंसणिहिं पेसलु ॥
छत्तीसाहिय-पंच-सय- समण-गणिण संजुत्तु ।
आसाढह सिय-अट्ठमिहिं सेलेसीए गमित्तु ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३२९६]

दियह-पंचम-भाग-समयम्मि

चइऊण सरीरु इहु सिद्धि-रमणि-सुक्कंठ-माणसु ।
जह-रूव-सरूव-धरु उड्ढ-गइहिं गमणम्मि अणलसु ॥
सामिउ मरगय-सामलउ तियसासुर-कय-सेवु ।
सिव-नयरिहि नायगु हुयउ नेमि-जिणेसरु देवु ॥

[३२९७]

तयणु समण संब-पज्जुन्न-

रहनेमि-प्पमुह वहु- भेय साहु संपत्त सिद्धिहिं ।
सिरि-राइमइ-पमुह साहुणी वि वर-नाण-सुद्धिहिं ॥
पक्खालिय-निय-पाव-मल पत्त भवन्नव-तीर ।
सासय-ठाणि पहुत्त वर- नाण-चरित्त-सरीर ॥

[३२९८] राया समुद्दविजओ सिरि-सिवदेवी य जाइ माहिंदे ।
वर-भज्जाउ कण्हस्स अट्ठ सिज्झंति जं भणियं ॥

[३२९९] नागेसुं उसभ-पिया सेसाणं सत्त जंति ईसाणे ।
अट्ठ य सणंकुमारे माहिंदे अट्ठ अणुकमसो ॥

[३३००] आइ-जिणाणट्ठण्हं गयाओ मोक्खम्मि अट्ठ जणणीओ ।
अट्ठ य सणंकुमारे माहिंदे अट्ठ वच्चंति ॥

[३३०१]

सच्च-लक्खण-गोरि-गंधारी-

पउमावइ-जंववइ- रुप्पिणीउ तह सिरि-सुसोमय ।
उवलद्ध-केवल-गइय सिव-पुरीए हरि-दइय अट्ठय ॥
इयरु वि नर-नारिहिं नियरु नेमि-सामि-तित्थम्मि ।
तहिं अवसरि वर-नाण-धणु गउ वहुयरु सिद्धिम्मि ॥

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३३०२]

अवि य कंचण-रयण-निम्मविय-
निव्वाणिय-सिविय कय तियस-राय-वयणेण वेगिण ।
वेसमणिण तयणु जिण- अंगु तीए परिखिविउ इंदिण ॥
अह वाहाविल-नयण-दल निय-निय-पहु-वयणेण ।
अभिओगिय सुर चिह कुणहिं देवदारु-कट्ठेण ॥

[३३०३]

अहह सामिय परम-कारुणिय
जर-मरण-दुहोह-करि राय-दोस-विसहर-भयावणि ।
अइ-दुद्धर-मोह-वल- पंचवयणि संसार-काणणि ॥
नाह-विहीणउ गय-सरणु अइ-करुणउं कंदंतु ।
इहु उज्झेविणु भविय-जणु कहिं तुहुं सामि पहुत्तु ॥

[३३०४]

एम्व स-करुणु तियस-नाहेहिं
पलवंतिहिं कह-कह-वि उक्खिवेउ सिय नेमिनाहह ।
अक्कंदिरि तिहुयणि त्रि भरिय-विवरि तह सिहरि-रायह ॥
देवदारु-गोसीस-सिरिखंड- अगुरु-रइयाए ।
सामि-सरीरु ठवंति सुर- नायग मज्झि चियाए ॥

[३३०५]

अग्गि-कुमर वि तियस निय-मुहह
वज्जग्गि तहिं क्खिवहिं अह पहीण-सिय-मंस-सोणिय ।
पहु-अंगोवंग हुय तयणु गंध-उदएण झामिय ॥
अह तियसासुर-पहु पहुहु हणुय-पमुह-अट्ठीणि ।
जहरिहु गेण्हहिं अ-सिव-पह- कमण-पाणि-लट्ठीणि ॥

३३०३. ६. क. गयसणु.
३३०४. ५. क. ख. नह.

[३३०६]

कत्थ वच्चहुं को णु अणुसरहुं

पुक्कारहुं कसु पुरउ को व अम्ह रिउ-रक्ख करिहइ ।
अंधारिउ तिहुयणु वि तुह विओइ जय-नाह पडिहइ ॥
भव-कूवम्मि अ-याणिरउं मग्गामग्ग-वियारु ।
इय विलवंतु चउव्विहु वि संघ भणइ सुस्सारु ॥

[३३०७]

एम्व तुम्हहं किमिह सोगेण

कय-किच्चउ भुवण-पहु पत्तु जेण निव्वाण-मंदिरु ।
तुब्भे वि-हु पाविहह पहुहु पहिण वच्चंत सिव-पुरु ॥
इय अणुसट्ठि पयच्छिउण सयलस्स वि संघस्सु ।
तह वज्जिउण निव्वाण-सिल- उवरि नेमि-सामिस्सु ॥

[३३०८]

नाम-अक्खर-पंति तह सम्मु

पहु-लक्खण-सय-सहस उक्किरेवि सोहम्म-सुग्वइ ।
नीसेस-सुर-यण-सहिउ साम-वयणु निय-ठाणि आवइ ॥
नेमि-जिणिंदह गुणहं गणु सरिवि सरिवि झूरंत ।
सावय साविय मुणि समणि नियय-ठाणि संपत्त ॥

[३३०९]

ते-वि पंडव सामि-पय-पउम-

अभिवायण-एक्क-मण विहरिऊण धरणिहिं स-संभम ।
आगच्छिर अक्खलिर हियय-निसिय-सिव-रमणि-संगम ॥
बारस-जोयण-अंतरिण रेवय-गिरिहिं पहुत्त ।
पहु वंदिवि मासिय-तवह भुंजेसु त्ति मुणंत ॥

३३०६. २. क. पुक्कारहु.
३३०९. १. क. समियपयपउम, ख. सामिपयउम.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३३१०]

किंतु निसुणिवि पहुहु सिव-गमण
गयणंगण-गमिर-सुर- नियर-करुण-वयणाणुहाविण ।
ता पंच पंडव समण गहिय-हियय-गुरु-पच्छुताविण ।।
कय-अणसण पुंडरिय-गिरि- सिहरि समारुहिऊण ।
सिव-नयरिहिं गय अइरिण वि कम्म-नियल दलिऊण ।।

*

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[प्रशस्तिः ।]

[३३११]

पहु-अणंतरु हुयउ जिणु पासु
पासाउ वि वीर-जिणु इंदभूइ अह तह सुहम्मु वि ।
ता जंवु-सामि अह पहवु तयणु गुरु-गणु अ-संखु वि ॥
अह कोडिय-गणि चंद-कुलि विउल-वइर-साहाए ।
अइगच्छंतिहि अणुकमिण वहु-गणहर-मालाए ॥

[३३१२]

हुयउ ससहर-हार-नीहार-
कुंदुज्जल-जस-पसर- भरिय-भुवण-वडगच्छ-मंडणु ।
जिणचंद-मुणिंदु धर- वलय-भविय-जण-हियय-रंजणु ॥
तसु पुणु पट्टह जस-कलसु आसि जगुत्तिमु सीसु ।
अवितहत्थ-नामिण पयडु सिरि-सिरिचंद-मुणीसु ॥

[३३१३]

एहु पयडु वि हुयउ हरिभद्द-
सूरि त्ति विणेय-लवु असम-विविह-गुण-रयण-भूरिहि ।
सारय-ससि-विमल-जस- भरिय-धरह सिरिचंद-सूरिहि ॥
तह सिरिमाल-पुरुब्भविउ पोरुयाड-अभिहाणु ।
चिट्ठइ वंसु असंख-गुण- नर-माणिक्क-निहाणु ॥

[३३१४]

जो य संठिउ नयरि सिरिमालि
लच्छीए पयडीहविवि विहिय-असम-सव्वंग-रिद्धिउ ।
गंभूय-पूरीए गउ वद्धमाण-सुहि-सयण-वुड्ढिउ ।
हत्थि-तुरंगम-सट्ठि-सय- तय-किरियाणय-धामु ।
तम्मि वंसि सु-पसिद्धु हुय ठक्कुरु निन्नय-नामु ॥

३३१२. ३. क. भुषण.

३३१४. The last line of the stanza in क. is lost due to the damaged corner of क. ६. क. ख. सट्ठ; ७. भय.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३३१५]

अवर-अवसरि जणय-वुद्धीए
वणराय-नराहिविण नीउ संतु अणहिल्लवाडइ ।
विज्जाहर-गच्छि कय- उसह-भवण-झय-छलि भम्वाडइ ॥
नियय-कित्ति-कामिणि दिसिहिं नीसेसिहि वि ललंत ।
जइ अज्ज-वि कोउगु कसु-वि ता सु नियउ पसरंत ॥

[३३१६]

तयणु सारय-समय-रयणियर-
किरणावलि-निम्मलिहिं गुणिहि पत्त असरिस-मडप्फरु ।
हुउ निन्नय-अंगरुहु लहर-नामु दंडवइ मणहरु ॥
तेण य विंझ-गिरिहिं गइण गहिय अणेग करिंद ।
निज्जिय पुणु करि-हरण-मण वहु-विह समरि नरिंद ॥

[३३१७]

धणुहि विहियइ जीए अवयारि
लीलाइ वि रिउ जिणिय अजु-वि देवि सा विंझवासिणि ।
तिण कारिय संडथल- गामि अत्थि दुरिओह-नासिणि ॥
किंतु लहर-नामिण स तहिं धणुहावि त्ति पसिद्ध ।
हूय सयल-धरणियल-कय- पूय-विसेस-समिद्ध ॥

[३३१८]

तत्थ पत्तिण हत्थि-दंसणिण
वणराय-नराहिविण सु-प्पसन्न-चित्तेण लहरह ।
तं चेव य संडथल- गामु दिण्णु कज्जे थईयह ॥
तसु पुणु लच्छि-सरस्सइहि देविहि विहिय-पसाउ ।
महियल-विलसिर-जस-पसरु असम-गुणिहि विक्खाउ ॥

३३१५. ७ क. नीसेसिहि.

३३१७. १. वियहियइ; ३ क, विंज्झवासिणि. ४. क. संडवल. Lines 6 to 9 of 3317 and lines 1 to 5 of 3318 are added marginally in क.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३३१९]

टंक-सालहं सिरि-वरुवलद्दु
जिण ठवियउ चित्त-पडु लच्छि-निसिय-मुद्दासु जेण य ।
जसु संचिण वहइ इह मूलराय-मज्जाय तेम्व य ॥
मूलराय-चामुंडनिव- वल्लहरायहं कालि ।
दुल्लहरायह चुलुग-कुल- तिलयह रज्जि विसालि ॥

[३३२०]

दसहं एगहं सचिव-पय-भार-
उद्धरणि सु धुर-धवलु वीर-नामु हुउ सचिव-पुंगवु ।
अंतम्मि य सुगुरु-पय- मूलि चरणु सेविवि अणासवु ॥
जणिवि पुन्न सव्वायरिण निय-जीविय-फलु लेइ ।
सर-वसु-दिसि-वरिसम्मि जसे-सेसत्तणु पावेइ ॥

[३३२१]

तसु वि नंदणु विउसु सु-कुलीणु
सु-समत्थउ खंति-परु सीलवंतु सोहग्ग-सुंदरु ।
नेढु त्ति अमच्चु हुउ जसु पसन्नु सिरि-भीम-नरवरु ॥
वीउ वि दंडाहिवइ-पय- पाविय-असम-पइट्ठु ।
विमल-नामु नंदणु हुयउ असरिस-गुणहिं गरिट्ठु ॥

[३३२२]

अवर-अवसरि भीम-नरराय-
वयणेण विवक्खि-जय- हेउ विमलु चउरंग-सेन्निण ।
सिरि-चड्डावल्लि-वर- विसइ पत्तु निय-सत्ति-जोगिण ॥
अह संगहिय-विवक्ख-सिरि कय-निय-पहु-आएसु ।
तत्थ वसंतु सु सच्चवइ अव्वुउ सिहरि-विसेसु ॥

३३२१ ६. क. वीओ. ८. क. वंदणु.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३३२३]

तयणु पसरिय-गरुय-उच्छाहु
सिरि-अंबाएवि-वर- वसिण दिट्ठ-असरिस-वसुंधरु ।
तक्कालु वि लद्धु सिरि- भीम-नेढ-आएसु सुंदरु ॥
अब्बुय-गिरि-रायह सिहरि निम्मल-फालिह-वन्नु ।
उसह-जिणेसर-चेइहरु कारावेइ रवन्नु ॥

[३३२४]

तयणु हरि-करि-रयण-संगयहं
सव्वंगिय-लक्खणहं निलउ संड-नामिण य तियसिण ।
निच्चं पि-हु विहिय-बहु- सन्निहाणु गुरु-भत्ति-तरसिण ॥
नच्चाविय निय-कित्ति-बहु भुवण-रंग-मज्झम्मि ।
उवजुंजिय-मणि-कणय-धणु सयण-सुयण-कज्जम्मि ॥

[३३२५]

हुयउ नेढइ तणउ धवलु त्ति
सिरि-भीमएवंगरुह- कन्नएव-निवइहि महा-मइ ।
तस्सु वि जयसिंह-निव- रज्ज-समइ पसरंत-संपइ ॥
धणुहाविहिं पविइन्न-वरु कय-रेवंत-पसाउ ।
आणंदु त्ति जहत्थ-अभिहाणु सचिवु संजाउ ॥

[३३२६]

चंद-निम्मल-सील-कय-सोह
निक्कारण-कारुणिय सु-गुणवंत पणमंत-वच्छल ।
पउमावइ-नाम तसु हुय दइय सद्धम्म-पच्चल ॥
अह सिद्धाहिव-कुमरनिव- सुकय-भरिण भज्जंत ।
नं अवलोइवि सयल धर असुहिय-जण-संजुत्त ॥

Verse ३३२४. is added marginally in क.; ३३२४. १. क. निव is added marginally before नच्चाविय and निय after it is omitted.
३३२५. २. क. पसाओ.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३३२७]

विहिण करुणा-रसिण सित्तेण

सिद्धाहिव-कुमरनिव- रज्जकालि नय-मग्ग-निट्ठिउ ।
वयगरण-स्सिरिगरण- भार-धवलु ससि-सम्म-दिट्ठिउ ॥
सचिवाहिवइ विणिम्मविउ सिरि-आणंदह पुत्तु ।
सरसइ-वर-उवलद्धु सिरि- पुहइप्पालु निरुत्तु ॥

[३३२८]

तेण अब्बुय-गिरिहिं सिरि-विमल-

निम्माविय-जिण-भवणि असम-रूवु मंडवु कराविवि ।
तसु पुरउ करेणु-गय सत्त मुत्ति पुव्वयहं ठाविवि ॥
निय-जणयह पुणु सेव-कइ जालिहरइ गच्छम्मि ।
जणणीए वि पंचासरइ पास-जिणिंद-गिहम्मि ॥

[३३२९]

माय-मायह सीलि-नामाए

पुणु चड्डावल्लयह वीरनाह-जिणहरह पंगणि ।
इहि मंडव कारविय असम-रूव अणहिल्ल-पट्टणि ॥
तह रोहाइ य वारहइ सावणवाडइ गामि ।
स-जणणि-जणयहं दोण्हयह सेय-कज्जि अभिरामि ॥

[३३३०]

तिजय-तिलयह संति-नाहस्सु

काराविउ जिण-भवणु सयल-नीइ-सत्थत्थ-निट्ठिण ।
नर-नारि-तुरंग-करि- रयण-विसय-लक्खण-विसिट्ठिण ॥
तयणु लिहाविवि पुत्थयहं सइहि सयल सिद्धंत ।
आराहिवि तित्थाहिवइं चलण जणिय-जम्मंत ॥

३३२७. ८. क. उवलद्ध.

३३२८. ६. Lines 6 to 9 of verse 3328 and lines 1 to 5 of v. 3829 are added marginally in क. ३३२८. क. ४. मज्झि for पुरउ. In क. °र° of पुरउ is illegible due to an ink-blot.

३३२९. ४. क. इह. ८. क. जणयह.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[३३३१]

समण-संघु वि विविह-वत्थूहिं
पडिलाहिवि अप्पु कय- किच्चु करिवि सद्धम्म-कम्मिण ।
निय-जणणी-जणयहं वि धम्म-हेउ जिण-नाह-भत्तिण ॥
पुहइप्पाल-महामइहिं अब्भत्थणह वसेण ।
इहु हरिभद्द-मुणीसरिण चरिउ लइउ लेसेण ॥

[३३३२]

मह न तारिसु वयण-विन्नाणु
न य मंत-तंत-प्फुरणु जइ वि तह वि पहु-भत्ति-जोगिण ।
इहु नेमि-जिणेसरह चरिउ रइउ मइं गुरु-पसाइण ॥
इय इहु भुवण-सुहावणउं सुयणहु सुणहु चरित्तु ।
अहव सयं पि-हु लेंति वुह चिंतामणि सु-पवित्तु ॥

[३३३३]

कुमरवालह निवह रज्जम्मि
अणहिल्लवाडइ नयरि अनणु-सुयण-वुहयणह संगमि ।
सोलुत्तर-वार-सइ कत्तियम्मि तेरसि-समागमि ॥
अस्सिणि-रिक्खिण सोम-दिणि सुप्पवित्ति लग्गम्मि ।
एहु समत्थिउ कह-वि निय- परियण-साहज्जम्मि ॥

[३३३४] पच्चक्खर-गणणाए सिलोग-माणेण इह पबंधम्मि ।
अट्ठेव य सहस्सा बत्तीस-सिलोगया होंति ॥

[३३३५] जं किंचि मए अणुचियमुवइट्ठं तुच्छ-मइ-विसेसाओ ।
तं पसिउं मह सुयणा सोहंतु कय-प्पसाय त्ति ॥

[३३३६] यस्यांह्रि-द्वय-नख-मणि-मयूख-संक्रांत-सुरपति-श्रेणी ।
निज-लघुतामिव कथयति वपुषा विजयत्वसौ नेमिः ॥

[३३३७] यावच्चन्द्रो यावद्दिवाकरो यावदमर-गिरिरत्र ।
राजति तावज्जीयात् श्री-नेमि-जिनेन्द्र-चरितमदः ॥

Jain Education International 2010_05   For Private & Personal Use Only   www.jainelibrary.org

[३३३८]

उद्यल्लक्षणशास्त्रसंचयनिधीन् सद्धर्म-मुद्रावधीन्
सिद्धांतैकसहस्रपत्रतरणीन् शब्दादिचूडामणीन् ।
तर्काध्वन्यतरून् मनोभव-वधू-वैधव्य-दीक्षा-गुरुन्
साहित्यामृत-सागरान् मुनि-वरान् श्रीचन्द्र-सूरीन् स्तुवे ॥

इति

श्री-श्रीचन्द्र सूरिक्रम-कमल-भसल-

श्री-हरिभद्रसूरि-विरचितं

नवभवोपनिबद्धं

श्री-नेमिनाथ-चरितं

समाप्तम् ॥

After ३३३८. ख. ग्रंथाग्रं० ८०१००० (३२ superscribed over १०००.)

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धिपत्रम्

पद्याङ्कचरणाङ्कौ	शुद्धिः	पद्याङ्कचरणाङ्कौ	शुद्धिः
१९३४. १	धवलहर-	२४१२. ४	जग-जंतु-
१९४०. १	तियस-सत्तिण	२४१७. १	समुद्दविजयाइणो
१९६७. ७	निय तणु-उवरि	२४३७. ५	स-हल-महिहिं
१९७६. ३	चिंतिवि	२४६८. ६	भुवणब्भहिय.
१९९७. १	-उवरिम्मि	२४७८. ४	वल-हरिणुट्ठिवि दट्ठु इहु
२००४. ९	स-गुरुहु सविहि	२४८०. २	-कुंभयड
२०१७. ७	रम्मु	२५०५. ८	समुत्थरिय
२०२९. ७	-सम्मद्दिट्ठि	२५१०. ६	स-नंदणहं
२०३७. ९	सु-मुणि	२५२४. ५	वाल उ (?) वि
२०४२. ५	अहरिय	२५७६. ४	भरहू-क्खित्ति
२०५८. ८	तुह	२५९७. ७	हरण-असेस-ट्ठाण
२०५९. ५	-इंद-	२६१६. २	माहप्पु
२१०४. ७	तेसु तम्मि	२६२२. ७	संवुत्तु
२१३२. ८	पुंडु	२६३१. ९	वहु अनु माणिल्ल
२१३७. ७	किंतु	२६७४. ९	पुत्तु
२१४४. १	-मिउरंसु	२७१९. ६	अणाहिट्ठिइण
२१५१. ६	वि पट्ठविय	२७२६. ८	कुंडिणि-
२१७९. ३	नियय-	२७२९. २	किह-णु
२१८९. ७	पडिवासुदेवु	२७५४. ८	-मण-पसर
२२०२. ७	गंधसमिद्धि पुरम्मि	२७५६. ३	विसइ
२२४३. २	पय-अग्गि य	२७५८. ८	सेवहिं
,, ७	विभाविय चित्ति	२७८०. २	वासुदेवं
२२७२. ९	परितोसिय पुर गाम	२८००. ८	निजूह-दुग्गु
२२७३. ५	समुद्दिट्ठय भव-	२८५७. ५	कह-वि रोहह
२२८९. ६	वहुय-	२८७४. ३	रिउ-,-सिरि
२३०६. ५	निसुंभण	२८७६. ५	अच्छि तहुं गंतु
२३०७. ५	वाल-हावु	२८९४. २	सत्तु-
२३२८. १	तुहुं	२९०८. १	चत्तारि उ
२३३२. ६	पुव्वुप्पन्नय	२९३२. ९	कण्हह
२३३३. ४	-रयण-	३००३. ५	गणय-तणउ
२३४६. २	-विलेवण-	३०१०. ६	-भवण-
२३५१. २	सक्क-त्थवं	३०१६. ९	-जरेणं
२३५८. ३	करइ करिवि सेल्लं तओ	३०३०. ६	अभियोगिय-
२३६५. ३	कंधुरु	३०६१. १	सणंकुमारो

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पद्याङ्कचरणाङ्कौ	शुद्धिः	पद्याङ्कचरणाङ्कौ	शुद्धिः
३०७९. २	रहनेमिण	३२५५. ३	दूर-
३०८७. ६	-रहनेमि-	३२७७. ८	पंडव-
३०८८. ८	पंच-	३२८३. ३	भवियणु
३०९७. ७	-जंववईहिं	३२८४. ८	बुहिय
३११०. ५	सउरि-हरि	३२८६. ६	-हुर-
३१४१. २	तहा वि	३२८७. ७	समवसरणि
३१७५. ८	बारवइ	३२९३. ६	के-वि
३१७६. ३	-जदु-कुमर-	,, ७	केसि-त्रि
३१८३. ८	संवाहणु	३३९४	३२९४
३१९०. २	मियय-न्नाण-	३२९४. ६	चउपन्नूणय वास सय-
३१९६. १	तहि नयरिहि	३३०६. ६	अयाणिरउ
३२१५. ४	किह-णु	,, ९	संबु
३२२०. ३	परिमुक्क	३३०८. ३	-सुरवइ
३२२९. ९	वणाइ	३३१७. ९	-समिद्ध
३२३७. ५	तहंतह	३३२६. ५	हूय
३२५३. ४	किह-णु		

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

LALBHAI DALPATBHAI BHARATIYA SANSKRITI VIDYA MANDIR
L. D. SERIES

S. NO.	*Title*	*Price Rs.*
1.	Śivāditya's Saptapadārthī, with a Commentary by Jinavardhana Sūri. Editor : Dr. J. S. Jetly. (Publication year 1963)	4/–
2.	Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts : Munirāja Shri Punyavijayaji's Collection Pt. I Compiler : Munirāja Shri Punyavijayaji Editor : Pt. Ambalal P. Shah. (1963)	50/–
3.	Vinayacandra's Kāvyaśikṣā. Editor : Dr. H. G. Shastri (1964)	10/–
4.	Haribhadrasūri's Yogaśataka, with auto-commentary, along with his Brahmasidhāntasamuccaya. Editor : Munirāja Shri Punyavijayaji. (1965)	5/–
5.	Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts, Munirāja Shri Punyavijayaji's Collection, pt. II. Compiler : Munirāja Shri Punyavijayaji. Editor : Pt. A. P. Shah. (1965)	40/–
6.	Ratnaprabhasūri's Ratnākarāvatārikā, part I. Editor : Pt. Dalsukh Malvania. (1965)	8/–
7.	Jayadeva's Gītagovinda, with King Mānāṅka's Commentry. Editor : Dr. V. M. Kulkarini. (1965)	8/–
8.	Kavi Lāvaṇyasamaya's Nemiraṅgaratnākarachanda. Editor : Dr. S. Jesalpura. (1965)	6/–
9.	The Nāṭyadarpaṇa of Rāmacandra and Guṇacandra : A Critical study : By Dr. K. H. Trivedi. (1966)	30/–
10.	Acārya Jinabhadra's Viśeṣāvaśyakabhāṣya. with Auto-commentical, pt. I. Editor : Dalsukh Malvania (1966)	15/–
11.	Akalaṅka's Criticism of Dharmakīrti's Philosophy : A study By Dr. Nagin J. Shah.	30/–
12.	Jinamāṇikyagaṇi's Ratnākarāvatārikādyaślokaśatārthī. Editor : Pt. Bechardas J. Doshi (1967)	8/–
13.	Ācārya Malayagiri's Śabdānuśāsana. Editor : Pt. Bechardas (1967)	30/–
14.	Ācārya Jinabhadra's Viśeṣāvaśyakabhāṣya. with Auto-commeutary. pt. II. Editor Pt. Dalsukh Malvania. (1968)	20/–
15.	Catalouge of Sanskrit and Prakrit Manuscripts ; Munirāja Punyavijayaji's Collection. Pt. III. Compiler : Munirāja Shri Punyavijayaji. Editor : Pt. A. P. Shah. (1968)	30/–
16.	Ratnaprabhasūri's Ratnākarāvatārikā, pt. II. Editor : Pt. Dalsukh Malvania. (1968)	10/–
17.	Kalpalatāviveka (by an anonymous writer). Editor : Dr. Murari Lal Nagar and Pt. Harishankar Shastry. (1968)	32/–

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

18. Āc. Hemacandra's Nighaṇṭuśeṣa, with a commentary of Śrīvallabhagaṇi. Editor : Munirāja Shri Punyavijayaji. (1968) 30/-
19. The Yogabindu of Ācarya Haribhadrasūri with an English Translation, Notes and Introduction by Dr. K. K. Dixit. (1968) 10/-
20. Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts : Shri Āc. Devasūri's Collection and Āc. Kṣāntisūri's Collection : part. IV. Compiler : Munirāja Shri Punyavijayaji. Editor : Pt A. P. Shah. (1968) 40/-
21. Ācarya Jinabhadra's Viśeṣāvaśyakabhāṣya, with Auto-Commentary, pt. III. Editor : Pt. Dalsukh Malvania and Pt. Bechardas Doshi. (1969) 21/-
22. The Śāstravārtāsamuccya of Ācarya Haribhadrasūri with Hindi Translation, Notes and Introduction by Dr. K. K. Dixit. (1969) 20/-
23. Pallipāla Dhanapāla's Tilakamañjarīsāra. Editor : Prof. N. M. Kansara. (1969) 12/-
24. Ratnaprabhasūri's Ratnākarāvatārikā pt. III. Editor : Pt. Dalsukh Maluania. (1969) 8/-
25. Āc. Haribhadra's Nemināhacariya (Val. 1) : Editors H. C. Bhayani and M. C. Modi (1970) 40/-
26. A Critical Study of Mahāpurāṇa of Puṣpadanta. (A Critical study of the Deśya and Rare words from Puṣpadanta's Mahāpurāṇa and his other Apabhraṁśa works). By Dr. Smt. Ratna Shriyan. (1970) 30/-
27. Haribhadra's Yogadṛṣṭisamuccaya with English translation, Notes Introduction by Dr. K. K. Dixit. (1970) 8/-
28. Dictionary of Prakrit Proper Names, Part I by Dr. M. L. Mehta and Dr. K. R. Chandra. (1970) 32/-
29. Pramāṇavārtikabhāṣya Kārikārdhapādasūci. Compiled by Pt. Rupendrakumar. (1970) 8/-
30. Prakrit Jaina Kathā Sāhitya by Dr. J. C. Jain. (1971) 10/-
31. Jaina Ontology. By Dr. K. K. Dixit (1971) 30/-
32. Philosophy of Śrī Svāminārāyaṇa by Dr. J.A. Yajnik. 30/-
33. Āc. Haribhadra's Nemināhacariya (Volume II) Edited by Dr. H.C. Bhayani and M.C. Modi 40/-

* * * *

The following works are in the press :

(1) Nyāyamañjarīgranthibhaṅga.

(2) Madanarekhā Ākhyāyikā.

(3) Adhyātmabindu.

(4) Dictionary of Prakrit Proper Names. Part II.

(5) Sanatkumāracarita.

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org